सर तेज बहादुर
सप्रू

सम्पादक-मण्डल

श्री अमरनाथ गुप्त, एम० ए०, एल० टी०,
श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि   श्री मुरारीलाल शर्मा   श्री प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०

वर्ष २६ सं० २   फरवरी १६५६

सेवा

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्त नाशनम्॥

यू० पी०, सी० पी० तथा बरार, बिहार, बम्बई, अलवर, बीकानेर, ग्वालियर, जयपुर और होलकर
| राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत |

वर्ष २६] फरवरी १९४९ [संख्या २

युगारंभ

श्री गिरिजा कुमार माथुर

ज्योति की तरंग उठी दूर-दूर छा गयी,
सदियों के तिमिर पार मानवता आ गयी।
युग के विराट चरण जन-पथ पर गूँजते,
धरती के स्वर महान अम्बर को चूमते।
जगती की गंग-धार कूल नया पा गई।
सदियों के तिमिर पार मानवता आ गयी।
अविरल है मंजिल यह है न आखिरी विराम,
इस प्रशस्त मार्ग चले देश, देश, नगर, ग्राम।
मानव महान उठा एक ज्योति-ज्वार पर,
उजले इतिहासों के प्रथम सिंह-द्वार पर।
सदियों के तिमिर पार मानवता आ गई।

कार्यकर्ताओं के लिए

आचार्य विनोबा भावे

आजकल रचनात्मक काम करने वालों के मन में कांग्रेस के बारे में बहुत कुछ असन्तोष है। मैं उस असन्तोष की बात नहीं करता हूँ जो कि कांग्रेस में बढ़े हुए दोषों के सम्बन्ध में है। वह असंतोष कांग्रेस वालों को भी है। वह योग्य है और सब को होना चाहिए। लेकिन मैं एक दूसरे असन्तोष की बात कहता हूँ। वह असन्तोष इसलिये है कि गांधी जी की सूचना के अनुसार कांग्रेस ने मिट जाना पसन्द नहीं किया और लोक सेवक संघ में अपने को परिवर्तित नहीं किया। मैं मानता हूँ कि असन्तोष कांग्रेस की स्थिति ठीक न समझने के कारण है।

कांग्रेस ने अपना राजकीय रूप कायम रखने का आग्रह क्यों रखा? इसलिये कि उन लोगों को लगा कि, वैसा अगर वे नहीं करते तो देश में बहुत सारे राजकीय पक्ष खड़े हो जाते हैं जिससे अव्यवस्था होती और स्वराज के टुकड़े हो जाते। इसलिये उन्होंने सोचा कि जब तक देश में सुव्यवस्था नहीं हो जाती तब तक कांग्रेस को एक राजकीय पक्ष के रूप में रहना जरूरी है। अगर कांग्रेस का एक यह दृष्टिकोण हम समझ लें तो उसको हम अधिक दोष नहीं देंगे क्योंकि इसके पीछे एक विचार श्रेणी है। विचार भेद से वस्तु दर्शन भी भिन्न हो जाता है। राजकीय पक्ष की हैसियात से रहने में खतरा है यह वे लोग भी जानते हैं पर वैसे न रहने में वे अधिक खतरा देखते हैं। इससे उल्टे बापू ने सोचा था कि स्वराज के बाद मुख्य कार्य सामाजिक और नैतिक उत्थान का रहेगा। इसलिये कांग्रेस अगर लोक सेवा संघ के रूप में बदल जाती है तो अधिक सेवा कर सकेगी और अपना एक नैतिक तेज रख सकेगी जिससे राज का कारोबार तो अनायास ही ठीक दिशा में चलेगा।

इस तरह दो अलग अलग दृष्टिकोण हैं। दोनों में कुछ गुण हैं, न्यूनता भी हो सकती है। कांग्रेस वालों ने अपने दृष्टिकोण की न्यूनता को महसूस भी किया है। उनकी निवृत्ति के लिये उन्होंने बापू के उस अंश को स्वीकार कर लिया है जिसमें उन्होंने चर्खा संघ, ग्रामोद्योग, संघ, तालीम संघ आदि संस्थाओं को लोक सेवक संघ की रचना में जोड़ देने की बात की थी। लोक सेवक संघ तो कांग्रेस नहीं बनी लेकिन इन संस्थाओं को अपने साथ जोड़ने की उसने तैयारी बतायी। इस तरह दोनों हाथों में लड्डू रखने की कल्पना कांग्रेस वालों ने की है और कांग्रेस के इस अच्छे उद्देश्य को समझ कर उसको उचित सहकार दे दिया गया तो शायद जो लाभ वे चाहते हैं मिल भी सके। बशर्ते कि प्रविष्ट हुए और हो सकने वाले दोषों के निवारण की सावधानी रखी जाय। यह कांग्रेस की दृष्टि अगर आप ध्यान में लेंगे तो कांग्रेस के प्रति उतना असन्तोष आपको नहीं होगा।

अब दूसरी बात। रचनात्मक कार्यकर्ताओं में आजकल कुछ निराशा सी देखता हूँ। वास्तविक उसके लिये कोई कारण नहीं है। अगर हमारी आशा-निराशा हमेशा परिस्थिति पर निर्भर रही तो हमारी स्थिति डवाडोल रहेगी। परिस्थितियों से हम कभी उत्साहित होंगे कभी निरुत्साहित। हम तो एक निश्चित विचार पर खड़े हैं। उस विचार को खंडित करने वाला कोई दूसरा निश्चित विचार हमारे सामने खड़ा नहीं है। हमसे भिन्न जो विचार-धारा आज दिखाई देती है उसमें निश्चय कुछ भी नहीं है। संशय और अनिश्चय तो अन्धकार जैसे है। सामने कितना भी अन्धकार दिखाई देता हो दीपक के लिये वह अनुकूल ही है। रात अमावस्या की है आज मेरा क्या होगा ऐसा वह नहीं सोचता है, उल्टे ऐसी रात उसके प्रकाशन के लिये अच्छी पार्श्वभूमि बन जाती है। और मान लो कि कोई निश्चित विचार-धारा हमारे खिलाफ खड़ी है तो भी हम निराश क्यों बनें। तब तो बड़ा ही मौका होगा। उससे उत्साह बढ़ना चाहिये। जिसका विचार सही होगा वह आखिर जीतेगा। बात असल में यह है कि हमारे निज के विचारों की ही सफाई नहीं हुई है इसलिये निराशा मालूम होती है। मुझे अपने विचार में दृढ़ होने की जरूरत है। हमने मान लिया कि

हम कुछ निश्चित विचार रखते हैं। लेकिन जितनी गहराई से सोचना चाहिये उतनी गहराई से हमने नहीं सोचा है। अपने विचारों के बारे में हम अभी तक अनिर्णीत अवस्था में हैं। अगर ऐसा है तो मैं कहूँगा कि यह निराशा के लिये नहीं बल्कि गहराई से सोचने के लिये कारण है। अगर अपने विचारों को रखते हुए हम आशावान नहीं रह सकते हैं तो मैं कहूँगा कि उन विचारों को छोड़कर आशावान बनो। मतलब यह कि हर हालत में हमें आशावान ही रहना चाहिए।

विचार की दृढ़ता के लिये जरूरत है चिन्तन और आचरण के योग की। इसीमें जीवन की पूर्णता भी है। मैं देखता हूँ कि हममें से जो लोग सप्रसन्न काम में लगे हुए हैं वे चिन्तन कम करते हैं और जो चिन्तनशील हैं वे कोई खास प्रत्यक्ष कार्य नहीं कर रहे हैं। इस तरह जहाँ चिन्तन और आचरण का विभाजन या विच्छेद होता है वहाँ दोनों निर्जीव बन जाते हैं। अगर यह विश्लेषण ठीक है तो कार्यकर्त्ताओंको अपने काम की चिन्तन से पूर्ति करनी चाहिए और जिन्होंने चिन्तनपूर्वक अनेक वादों का परीक्षण करके हमारे विचार को सही पाया है उनको कुछ अमली काम में लग जाना चाहिए। चिन्तन के साथ आचरण होगा तभी आगे का रास्ता सुलझेगा। जो मनुष्य एक मंजिल पर चढ़कर स्थिर हो जाता है और आगे चढ़ने का इरादा छोड़कर वहीं से आंखें फाड़-फाड़ कर देखने की कोशिश करता है वह विस्तृत दर्शन नहीं पा सकता। चाहे उतने ही क्षेत्र को अधिक साफ देख लें। पहाड़पर चढ़ने का जिनको अनुभव है वे इस चीज को सहज में समझेंगे। जिस भूमि पर हम खड़े हैं उससे ऊंची भूमि पर चढ़े बिना, चंचल बुद्धि के तनाव से और आंखोंके खिचाव से दर्शन--विकास नहीं हो सकता। चिन्तकों के चिन्तनकी प्रगति आचरण के अभाव में रुक गई है। चिन्तन के अभाव के कारण काम करनेवालों को सूझ नहीं रही है। दोनों को अपनी-अपनी कमियां पूर्ण कर लेनी चाहिए। तब विचार दृढ़ होंगे, सूझ बढ़ेगी, निराशा का दर्शन नहीं होगा।

अब तीसरी बात। हमारे लोग जो अलग-अलग काम करते हैं उन्हें अपने काम के दो हिस्से समझ लेना चाहिए। एक यह कि जिस देहात में वे काम करते रहें होंगे वहां पर स्वराज के सब अंगों का विकास करना है। ऐसा समझ कर काम करें। यह काम का पहला हिस्सा हुआ। दूसरा यह कि आसपासके देहातों में वे निरंतर घूमते रहें। इसको मैंने परिक्रमा का नाम दिया है। अपने तहसील के सारे देहातों को भगवानका एक विशाल मन्दिर समझ कर उसकी परिक्रमा करें। उसका परिणाम अपने मध्यवर्ती केंद्र को निवेदन करें। घूमते घूमते देखते रहना चाहिए कि कौन सा स्थान विशेष अनुकूल है जहां बैठकर काम शुरू किया जा सकता है। फिर जो पांच-छः गांव हम चुनेंगे वहां एक आदर्श नमूना पेश करनेका काम करें। उसके साथ आसपास के देहातों में घूमने का क्रम भी जारी रखें। इस तरह नमूने से चारों ओर अच्छा वातावरण बना रहेगा जिसका असर हम जिस देहात में काम करते होंगे उस पर होगा और देहात के काम का असर चारों ओर के वातावरण पर पड़ेगा। ये दोनों बातें चलती रहेंगी तब हम आगे बढ़ेंगे। कार्यकर्त्ता किसी एक स्थान में बैठ जाते हैं और आसपास घूमते नहीं तो आसपास की मंदता का असर उन पर होता है और उनका उत्साह कम हो जाता है। वैसे ही अगर केवल घूमते हुए रहते हैं तो थक जाते हैं और मन में विचार आता है कि परिक्रमा तो बहुत कर चुके कुछ ठोस काम भी होना चाहिये। इसका उपाय यही है कि हममें से कुछ लोगों को स्थिर काम करते रहना चाहिए और कुछ को घूमते रहना चाहिए। बीच बीच में स्थिर बैठे हुए घूमने का काम करें और घूमनेवाले स्थिर काम करें। इस तरह दोनों मिलकर अनुभवों की पूर्ति करेंगे तो हमारे कार्य का प्रकाश चारों चारों ओर फैलेगा।

अब चौथी बात। देहात में जो लोग काम करेंगे वे अलग न पड़ जायें इसकी भी फिक्र रखनी चाहिए। ऐसा विभाजन नहीं होना चाहिए कि कार्यकर्त्ता कहीं दूर काम में लगे हुए हैं और नेता अपने निजधाम में बैठा हुआ हिदायतें देता रहता है। दोनों के बीच संबंध होना चाहिए। ऐसा संबंध तो प्रत्यक्ष कर्म द्वारा ही हो सकता है अर्थात् कार्यकर्त्ता जैसे काम में लगा हुआ है वैसे ही नेता के हाथ में भी कुछ काम दे जिसके अनुभव के आधार पर वह कार्यकर्त्ताओं की उलझन हल करता है। कार्यकर्त्ता के

[शेष ९वें पेज पर देखिये

पतंगे

श्री अमरनाथ गुप्त

(१)

[पण्डित जी और उनकी पुत्री रानी इंगलैण्ड से लौट रहे हैं। जहाज़ के ऊपरी भाग में खड़े, दूर से दूरबीन से बम्बई का भारत-द्वार देख रहे हैं। जहाज़ का कप्तान आता है।]

पण्डित जी--कहिए कप्तान साहब, जहाज़ कब तक किनारे लगेगा ?

कप्तान--दो-तीन घण्टे में पण्डित जी।

रानी--दो-तीन घण्टे में ?

कप्तान--देश पहुँचने की बड़ी उत्सुकता हो रही है रानी ?

रानी--(हँसती है) हो तो रही है।

[हवा तेज़ चलती है]

कप्तान--हवा तेज होती जा रही है, आप नीचे अपने कमरे में चले जायें तो अच्छा हो।

[कप्तान जाता है]

पण्डित जी--यहाँ कैसा अच्छा लग रहा है, अभी नीचे जाने को जी नहीं चाहता।

रानी--मगर तूफ़ान जो आ रहा है ?

पण्डित जी--तूफ़ान से क्या डरना। तूफ़ानों से तो रोज ही खेलना पड़ता है पगली।

रानी--भवन कैसा होगा अब ? बड़ी धुंधली सी याद पड़ती है मुझे तो उसकी।

पण्डित जी--जब विलायत गई थी तो बहुत नन्हीं सी थी तू।

रानी--समय कैसे बीत जाता है पिता जी। अब घर चल रहे हैं तो विलायत का सारा जीवन एक स्वप्न मात्र प्रतीत होता है।

[रानी आँखें मीचे विचार-सागर में गोते लगाती है]

पण्डित जी--आंखें क्यों मूंद ली रानी ? कौन सी कल्पना से खेल रही है पगली।

रानी--(चौंक कर) उफ़् ! कैसे-कैसे दृश्य हैं विलायत के जीवन के। आज जब उन पर विचार करती हूँ तो ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वप्न से उठी हूँ।

पण्डित जी--जीवन ही स्वप्न है पगली, इसमें सार कहाँ है ?

रानी--नहीं नहीं ! आप तो जब देखो फ़िलासफ़ी छाँटने लगते हैं। मेरा मतलब तो आप समझे ही नहीं, और लगे लेक्चर देने।

पण्डित जी--(हँसते हुए) अच्छा-अच्छा, ले, गम्भीर बना जाता हूँ। बता तेरा क्या मतलब था ?

रानी--देखिये पिता जी, इतने विद्यार्थी आते हैं यहाँ, इतना पैसा खरचते हैं और सीखते हैं क्या ? नाचना, तर्फ़ करना, सिनेमा जाना, पैसा पानी की तरह बहाना। क्या इसी आदर्श की पूर्त्ति के लिये वे विलायत भेजे जाते हैं ?

पण्डित जी--नहीं। गुलाम देश के रहने वाले अपने आपको अधूरा और अपने शासकों को आदर्श मान कर चलते हैं। स्वतन्त्र होने पर यह भाव भी बदल जायेंगे।

रानी--क्या उनकी शिक्षा का प्रबन्ध देश में नहीं हो सकता ?

पण्डित जी--हो क्यों नहीं सकता, होना ही चाहिये, परन्तु अभी तक विलायत की छाप की प्रभुता जो ठहरी, इसीलिये विद्यार्थियों को विलायत के हज की लगी रहती है। ऐसे हाजियों को पूजते जो हैं अंग्रेज।

रानी--कहाँ चलेंगे बम्बई से पिता जी ?

पण्डित जी--घर।

रानी--क्या पहले महात्मा जी से मिलने न चलोगे ?

पण्डित जी--नहीं, पहले घर चलेंगे। तेरे विवाह का ठीक-ठाक करना है।

रानी--ऊँह ! उसकी क्या जल्दी है ?

पण्डित जी--(चिढ़ाते हुए) हाँ, उसकी क्या जल्दी है।

रानी--तुम अकेले रह जाओगे पिता जी, तुम्हारी फिर कौन देख-रेख करेगा ?

पण्डित जी--हूँ, अभी तक तूने मेरी बहुत देख-रेख की होगी, जो अब करेगी ?

रानी--पिता जी ?

पण्डित जी--हाँ बेटी।

रानी--यदि आज माँ हमारे स्वागत के लिये घर होती तो...... ।

[आह भरती है]

पण्डित जी--वह स्वर्ग से तुम्हें आशीर्वाद दे रही है।

रानी--बिना माँ के तो घर सूना-सूना लगेगा पिता जी।

पण्डित जी--(भर्राई हुई आवाज से) हाँ, सो तो लगेगा ही बेटी।

रानी--जब घर याद आता है तो माँ याद आती है।

[हवा बहुत तेज़ चलती है]

पण्डित जी--जा नीचे जा, कहीं तुझे ठन्ड न लग जाये।

रानी--अच्छा पिता जी...

[रानी एक ओर को जाती है, और पण्डित जी दूसरी ओर को]

(२)

[पण्डित जी अकेले खड़े हैं और अपने विवाह की बात याद कर रहे हैं। युवावस्था याद आती है, और विवाह के बाद की बात। जब उनकी राधा पहले-पहल आई थी, यह सब उनकी आंखों के सामने नाच रहा है, मानो चित्रपट पर फिल्म चल रही हो--जवानी का सीन :]

पण्डित जी--(जवानी में) देखो राधा, आज हम पहाड़ पर अपने इस बंगले में रहने आये हैं।

राधा--(एक युवती) कैसा सुन्दर स्थान है, कैसा रमणीक, कैसा हरा-भरा।

पण्डित जी--यह पिता जी ने तुम्हारे ही लिये बनवाया है।

राधा--वे हमारी सुविधाओं का कितना ध्यान रखते हैं; ऐसा सुन्दर स्थान तो मैंने आज तक देखा ही नहीं।

पण्डित जी--आओ, चलें अन्दर।

राधा--ज़रा रुको, मैं अभी कुछ देर इसे यहीं से देखना चाहती हूँ।

पण्डित जी--वह देखो, त्रिशूल दिखाई दे रहा है। यह सदा बर्फ से ढका रहता है! डूबता सूरज इसकी चोटी को स्वर्णमय बना देता है, और वहाँ से प्रकृति एक जादू का पिटारा खोलती है, सुन्दर चट्टानें, कलकल करती हुई नदियाँ, हरा-भरा जंगल, रमणीक घाटियां।

राधा--तो यह सब देखने के लिये सन्ध्या तक रुकना पड़ेगा।

पण्डित जी--हाँ राधा! फिर पावस में तुम अपनी आँखों के सामने बादल बनते, बर्फ पड़ते, बिजली गरजते-सब कुछ समीप से ही देखोगी।

राधा--यह तो स्वर्ग है।

पण्डित जी--हाँ राधा, अपना स्वर्ग।

राधा--तुमने मुझे पृथ्वी से उठा कर आकाश में पहुँचा दिया है प्राणनाथ!

पण्डित जी--कैसे प्रिये।

राधा--तुमसे मिलने से पहले जीवन नीरस था, फीका-फीका। जब मैंने तुम्हारी कीर्ति सुनी, तब मैं समझी कि मानव दूसरों के लिये, देश के लिये और विश्व के लिये अपने आपको कैसे न्योछावर करता है। जब मैंने तुम्हारे दर्शन किये तो मैं गद्गद् हो गई, मैंने अपने भाग्य को सराहा कि एक मनुष्य रूपी देवता मुझे अपना बनाने आया है।

पण्डित जी--जिस प्रेम और श्रद्धा से तुम मुझे उस समय देख रही थी वह मैं कभी नहीं भूल सकता राधे! वह सुन्दर चित्र अब भी मेरी आँखों के सामने नाच रहा है, और यदि मैं सौ वर्ष का भी हो जाऊँ तो सदा तुम्हारा वही चित्र मेरी आँखों के सामने नाचता रहेगा।

राधा--मैं कितनी सौभाग्यवती हूँ।

पण्डित जी--और मैं कितना भाग्यशाली हूँ!

राधा--क्या तुम सदा मुझसे ऐसा ही प्रेम करते रहोगे?

पण्डित जी--मैं जीवन में और मरण में तुम्हारा ही हूँ राधे!

[बादल की कड़क से पण्डित जी चौंक जाते हैं, और

उनकी कल्पना का सुन्दर भवन हवा में उड़ जाता है। कप्तान का प्रवेश]

कप्तान--तूफान आ रहा है पण्डित जी, नीचे चले जाइये।

पण्डित जी--अच्छा जाता हूँ। (अलग) कैसे सुन्दर स्वप्न से जगा दिया मूर्ख ने (आह भरकर) राधे, अब तो तुम केवल स्वप्न मात्र की वस्तु हो गई।

जब से तुम स्वर्ग सिधारी हो, जीवन ही अपना नहीं रहा। अब तो यह देश का है, उसी के लिये जीता हूँ और किसी दिन उसी के लिये मरूंगा।

[रानी का प्रवेश]

रानी--यह क्या पिता जी, यहाँ खड़े हो। देखते नहीं, कैसा तूफान आ रहा है, चलो नीचे चलो।

पण्डित जी—चलो बेटी।

[दोनों जाते हैं]

(३)

[एक कमरे में पण्डित जी और कुछ देशभक्त बैठे हैं, मेज पर पण्डित जी के बराबर टेलीफोन रखा है।]

पण्डित जी--भई, समस्या बड़ी विकट है।

एक--आखिर, जिन्ना साहब कुछ कहते भी हैं ?

पं० जी वही ढाक के तीन पात--पाकिस्तान लेकर रहेंगे।

दूसरा--तो क्या गाँधी जी भी उन्हें सीधा न कर सके ?

पं० जी--जो स्वयं टेढ़ा बनना चाहे उसे कौन सीधा कर सकता है ?

तीसरा--जिन्ना साहब की हठ देखकर तो मुझे एक खिलौने की याद आती है।

दूसरा--कौन से खिलौने की ?

तीसरा--एक हब्शी था, उसे कूक भर कर रख देते थे तो वह बराबर गरदन हिलाया करता था।

पहला--बहुत ठीक, यहाँ भी तो अंगरेज ने काफी कूक भर रखी है।

दूसरा—बछड़ा नाच तो खूँटे के बल से ही रहा है।

[टेलीफोन की घंटी [illegible]जती है]

पं० जी—(टेलीफोन [illegible] कर) ह[illegible]! हलो !! जी मैं ही बोल रहा हूँ...हाँ...हाँ...अच्छा आप हैं...जय हिंद मौलाना...क्या कहा ? ...आप भी मिले थे जिन्ना साहब से...हूँ...हूँ क्या कहा ?...हूँ...हूँ...बिल्कुल अंगरेज के उभारे हुए .. हूँ...हूँ...ठीक है, देश के दो टुकड़े करा कर ही अंग्रेज यहां ठहर सकता है...हूँ...हूँ ...अगर भगवान् को यही मंजूर है तो होने फिर दो ...हूँ...हूँ...अच्छा जय-हिन्द !

[टेलीफोन रखने की आवाज]

एक --क्या खबर है पण्डित जी ?

पं०जी--मौलाना यह कहते हैं कि जिन्ना साहब चर्चिल के खिलौने बने हुए हैं। कठपुतली की तरह नाच रहे हैं।

दूसरा--चर्चिल तो दो टूक करके रहेगा।

तीसरा--इसीमें तो उसकी चान्दी है।

पं० जी—वह समझता है कि उसकी चान्दी है, परंतु वह दिन दूर नहीं है जब उसके देशवासी ही उसे ठुकरा देंगे। आज भी समझदार अंगरेज भारत से समझौता करना चाहता है। उसे यहाँ से जाना तो है ही, फिर राजी-खुशी क्यों न जाये ?

पहला--क्या चर्चिल यह बात नहीं समझता ?

पं० जी--भई भोलानाथ, तुम भी अजब बातें करते हो। समझता वह सब कुछ है, मगर आदत से मजबूर है। जिन हिंदुस्तानियों को सदा ठुकराया, उनसे बराबरी का व्यवहार ? बस यही बात उसके हलक तले नहीं उतरती।

दूसरा—बृटिश साम्राज्य के हम अछूत जो ठहरे।

[टेलीफोन की घन्टी...टेलीफोन उठाकर]

पं० जी—हलो ! जी मैं ही हूँ...हाँ...हाँ...हूँ...हूँ भई, कर लें महात्मा जी यह भी....हूँ...हूँ...देखो जी, होना हुआना कुछ नहीं .. क्यों ? ...इसलिए कि जिन्ना साहब पिघलने वाले नहीं हैं...फिर क्यों ?...इसलिए वह स्वयं नहीं बोलते, उनकी आवाज तो गुम्बद की आवाज है। बोलने वाला तो है चर्चिल...जी हां चर्चिल वही मदारी तो पर्दे के पीछे बैठा, कठपुतलियों को नचा रहा है ...भई, कर लें महात्मा जी यह भी...हूँ ..हूँ ..हाँ... हाँ...भई, फिर यह हवस तो न रहेगी कि ऐसे करते तो

शायद वह सीधे रास्ते पर आ जाते...हूँ...हूँ...अच्छा जय-हिन्द !

[टेलीफोन रखकर, पंडित जी और उनके साथी जाते हैं]

(४)

[पंडित जी, रानी और उसका नन्हा सा लड़का कमरे में बैठे चाय पी रहे हैं...टेलीफोन पास रखा है]

बालक--पापा जी, मेरा प्याला तो अभी खाला ही है।

पं० जी--अभी भरा जाता है पगले ! ले मींच आँख ...अब खोल आँख।

बालक--(हँसता है और गाता है) मेरा प्याला भरा हुआ।

पं० जी—अरे बावले, अब जो कुछ किया जा रहा है वह तेरा प्याला भरने को ही तो किया जा रहा है।

रानी—यह क्या कहा पिता जी ?

पं० जी—अरे हम तो अपनी निभा चुके, जेल रहे या बाहर रहे, इसीलिए तो रहे कि हमारी सन्तान स्वतन्त्रता का स्वाद चखे; गौरव और सुख के साथ जीवन व्यतीत कर सके। बच्चों का प्याला भरा देख कर ही कुछ संतोष होता है। अपना तो सदा खाली ही रहा।

रानी--जीवन ?

पं० जी—जीवन नहीं पगली, प्याला...दुःख-सुख से मिश्रित जीवन तो चलता ही रहा, किनारे तक भरा-भरा.. छलकता भी। न अवकाश था, न अवकाश की इच्छा ही थी। जब अंग्रेज को दया आई तो जेल भेज दिया, वहाँ विश्राम भी मिला और पढ़ने-लिखने का समय भी।

रानी (चिढ़ाते हुए) तो जेल भेज कर अंग्रेज आप पर उपकार करते थे ?

पं० जी—(हँसते हुए) उनकी इच्छा चाहे उपकार करने की न हो, परन्तु होता था उपकार अवश्य।

टेलीफोन की घन्टी, पंडित जी टेलीफोन उठते हैं]

पं० जी--जी...हां...क्या कहा ? तो आपको काश्मीर के चुनाव (plebiscite) पर शुबा है... क्या ? वहां के मुसलमान...हूँ...हूँ...जी...मैं बताये देता हूँ कि वह पाकिस्तान को राय नहीं देंगे हूँ...हूँ ...जी, जिन्होंने उन्हें लुटा और घर से बेघर किया उन्हें राय देंगे !...हूँ सिर्फ मुसलमान होने के नाते ?...नहीं ... ऐसा नहीं हो सकता...मानवता भी कोई वस्तु है ! ...हूँ...हूँ...जी, मुझे तो पूर्ण विश्वास है...हूँ...हूँ... हमारी राय देंगे हूँ...हूँ खैर, समय बता देगा...हूँ... अच्छा, जय हिंद।

[टेलीफोन रखते हैं]

बालक—एक बिस्कुट और ले लूँ पापा जी ?

पं० जी--ले ले बेटा। स्वतन्त्रता दिवस में तुझे क्या अच्छा लगा ?

बालक--सब ही अच्छा लगा पापा जी !

पं० जी--जरा बता तो !

बालक--बड़ी भीड़ थी, रोशनी थी, बाजा था...

रानी—तुझे किसी ने मिठाई दी थी ?

बालक—हां, दी थी, लाट साहब ने, और पापा जी उन्होंने मुझसे हाथ भी मिलाया था। (हँसता है)

पं० जी--कविताएँ सुनी थी उस दिन ?

बालक--हां पापा जी !

पं० जी--कोई अच्छी लगी ?

बालक – एक बहुत अच्छी लगी !

पं० जी—कोई पद याद है उसका ?

बालक --हां पापा जी।

रानी—ज़रा सुना तो

बालक--(गाता है)

"जाता तो है सय्याद मगर जाल जोड़कर,
जिस डाल पर था आशियां वह डाल तोड़कर।"

पं० जी-- देखा रानी, इसे भी कैसा पद याद रहा।

रानी--कवि भी गजब करते हैं, एक ही पद में सब कुछ कह दिया, गागर में सागर भर दिया।

[तीनों उठकर जाते हैं]

भारतीय कला का क्रमिक विकास

श्री एन० सी० मेहता

हड़प्पा तथा महेंजोदाड़ो की कला सम्भवतः मिस्र की कला की सम-सामयिक है। क्योंकि दाढ़ी वाली मूर्तियां भारतीय कला की अपेक्षा मिस्र या बेबोलेनिया की कला का अधिक स्मरण कराती हैं। महेंजोदाड़ो की कला प्राचीन कला नहीं है। यह तो उच्च सभ्यता तथा परिमार्जित संस्कृति का प्रतीक है। महेंजोदाड़ो की कला तथा यक्षों को प्रस्तर मूर्तियों के बीच एक या दो हजार वर्षों का अवश्य अन्तर है। यह तो असंभव सी बात है कि इस बीच कला का निर्माण ही न हुआ हो। आशोक-युग से पहले की हमें कुछ मूर्तियां मिलती हैं। इनमें अभिव्यञ्जना की अपेक्षा आकार प्रकार पर अधिक ध्यान दिया गया है।

अशोक-युग

अशोक के समय में (२७२ से २३२ ईसा से पूर्व) भारतीय कला का एकाएक नये विचारों और नये जीवन का संचार हुआ। इस कला का दृष्टिकोण वास्तविकता पर आधारित है। अध्यात्मवाद अथवा नैतिकवाद की यहां छाप नहीं मिलती। यह कला जीवन को वास्तविकता से सम्बद्ध है। फलतः इसमें तत्कालीन जीवन के आमोद-प्रमोदों, सुख, दुःख तथा इंद्रियवासना की झलक मिलती है।

इस समय कितने ही कला केन्द्र स्थापित हो गए हैं। इनमें से सारनाथ, सांची, तक्षशिला, अमरावती के नाम उल्लेखनीय हैं। सांची के स्तूप अब भी अपनी अमर कहानी सुना रहे हैं। इस समय बुद्ध को कितनी ही जातक कहानियां को पाषाण मूर्तियों में व्यक्त किया गया। सांची और अमरावती की कला-कृतियों की विशेषतायें शारीरिक अंगों का आनुपातिक निर्माण, रेखांक दक्षता, जीव जन्तु जगत का विशेष ज्ञान, रमणी के अंग-प्रत्यंग के लावण्य की ओर आकर्षण—सभी जानते हैं। इस समय की भारतीय कला लोगों के जीवन का एक मुख्य अंग थी। इसलिए इन रचनाओं में इंद्रियवासना का प्राबल्य मिलता है।

बौद्ध धर्म का प्रभाव भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों पर भी पड़ा। यूनान के कलाकारों को भी बुद्ध की मूर्तियां बनाने की प्रेरणा मिली। मथुरा तो अपनी कला के लिए इस समय इतनी विख्यात हो चुकी थी कि यहां की बनी देवी-देवताओं की मूर्तियां दूर-दूर के स्थानों को भेजी जाती थीं। उधर, दक्षिण में आन्ध्र कला का उदय हो रहा था। प्रकृति देवी की, प्रजनन शक्ति प्रतीक मूर्तियों की भी रचना इस समय हुई।

गुप्त काल

गुप्त काल में बौद्ध धर्म का प्रभाव घट चुका था। इस समय की चित्रकला और वास्तुकला पर गंभीर विचारों की अधिक छाप है। अजन्ता की कला उस समय की भारतीय कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है। किन्तु भारतीय कला ने और भी उन्नति की। ६ वीं और १० वीं शताब्दि की अलोफैंटा गुफाएँ भारतीय कला की सर्वोत्कृष्ट रचनायें हैं।

इसके पश्चात् भारतीय कला का ह्रास प्रारम्भ हुआ किन्तु दक्षिण भारत में सुन्दर मंदिरों और शिव की मूर्तियों का निर्माण १७ वीं शती तक जारी रहा है।

जीवन और धर्म के विभिन्न रूपों को व्यक्त करने के लिए भारतीय कलाकरों ने रचनात्मक तथा मौलिक कल्पना का परिचय दिया है। नटराज के रूप में शिव, शान्तिदूत के रूप में बुद्ध और लम्बोदर के रूप में गणेश की कितनी सुन्दर मूर्तियों का निर्माण किया गया। यक्ष, किन्नर, अप्सरा और देवताओं को विविध रूपों में व्यक्त किया गया। कोमल कमनीय रमणियों की मनोमुग्धकारी मूर्तियां भारतीय कलाकार की मौलिक कल्पना का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

भारतीय वस्तुकला और चित्रकला से नृत्यकला का गहरा सम्बन्ध रहा है। चित्रकारों और मूर्तिकारों ने अपनी रचनाओं में विभिन्न नृत्य मुद्राओं को बहुत स्थान दिया

है। कांगड़ा के चित्र तथा मन्दिरों पर विद्याधरों और अप्सराओं की मूर्तियों में नृत्यकला का प्राबल्य दिखाई देता है।

चित्रकला

अजन्ता की कला के पश्चात्, मालूम पड़ता है, चित्रकला की शैली में परिवर्तन हो गया। मुगल काल में चित्रकला का झुकाव श्रृंगार रस की ओर अधिक हो गया। अकबर, जहांगीर और शाहजहां ने चित्रकला को प्रोत्साहन दिया। इस समय के चित्रों में दरबारी व्यक्तियों और दरबारी घटनाओं का चित्रण अधिक मिलता है।

१७ वीं शताब्दि के अन्त में मुगल कला का ह्रास प्रारम्भ हो गया। १८वीं शताब्दि के प्रारम्भ में बाशोली शैली को अधिक प्रोत्साहन मिला। और इस शैली के रंग विरंगे चित्र अपने ढंग के अलग ही है। मुगल राज्य के पतन के पश्चात् चित्रकारों ने छोटे मोटे राज्यों में शरण ली और चित्रकला की कई शैलियां को जन्म दिया। इस समय के चित्रों में विशेष कर नायक और नायिकाओं के अंग प्रत्यंग का चित्रण पाया जाता है। इस समय बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, दतिया, ओरछा, चम्बा, मंडी, नाहन, टिहरी, गढ़वाल आदि इस कला के केन्द्र थे।

१६ वीं शताब्दि के मध्य में भारतीय कला का रचनात्मक युग प्रायः समाप्त हो चुका था। किन्तु लगभग ५० वर्षों के बाद फिर उसका उदय हुआ। भारत अपनी कला के ५,००० वर्ष पुराने इतिहास से संसार की कला के उत्थान में महत्वपूर्ण सहयोग दे सकता है।

[३२ पृष्ठ का शेष भाग]

साथ नेता का अगर अमली काम में हाथ न रहा तो दोनों की कल्पनाओं में कोई मेल नहीं होगा। इससे कार्यकर्त्ता नेताओं से और नेता कार्यकर्त्ताओं से असंतुष्ट होंगे। फिर वे एक दूसरे को दोष देने लगते हैं। यह दोषों की लेनदेन मिट कर गुणों की लेन देन होनी चाहिए। वह तभी हो सकती है जब आफिस में बैठे हुए मार्गदर्शक के लिये कोई प्रत्यक्ष काम भी रहेगा और उसका मार्गदर्शन अनुभव युक्त होगा कोरा काल्पनिक नहीं होगा। एक पृथ्वी पर और दूसरा हवा में ऐसा नहीं होना चाहिए।

हमारे काम में समग्र दृष्टि होनी चाहिए इस बात को तो मैं नहीं दुहराऊँगा। वह बात तो हमारे सामने आ गई है। लेकिन अभी तक इसका ठीक अमल हम नहीं कर पाये हैं। इसलिये इस विषय में एक सूचना देना चाहता हूँ। जब हम समग्र दृष्टि रखने की सोचते हैं तो पचीसों चीजों की ओर देखते हैं और एक के माहिर नहीं बनते, जिससे एक भी काम ठीक नहीं बन पाता। इसलिये हमारे पूर्वजों का एक अनुभव सिद्ध कथन है "एके साधे सब सधे सब साधे सब जाय"। समग्र दृष्टि के लिये एक ही मन्दिर में अनेक देवताओंको भर देने की जरूरत नहीं है, एक मूर्ति में सब मूर्तियों का अंश देखनेवाली प्रतिभा की जरूरत है। हम खादी या सफायी या और कोई काम करते हैं तो वह इस ढंग से करें कि यद्यपि हम एक ही काम करते हुए दिखाई दें किन्तु उसमें हमारा समग्र—दर्शन प्रगट हो सके यानी हमारी दृष्टि व्यापक हो। कृति विशिष्ट रहे। अगर दृष्टि ही विशिष्ट रखनी है तो संकुचित बनते हैं इससे उल्टे अगर कृति व्यापक करने जाता है तो हाथ में कुछ नहीं आता। विशिष्ट कृति के साथ व्यापक दृष्टि और व्यापक दृष्टि के साथ विशिष्ट कृति इस तरह हम काम करेंगे तो हमारा काम अपने आप ही समग्रता का दर्शन दे सकेगा।

रचनात्मक काम के बारे में ये मेरी चन्द सूचनाएँ हैं।

नियमावली

हिन्दुस्तान स्काउट ऐसोसियेशन यू० पी० के उद्देश्य, नीति, नियम और संगठन विधान की जानकारी के सम्बन्ध में हमारे पास प्रति दिवस पत्र आया करते हैं, किन्तु निकट भविष्य में दोनों स्काउट संख्याओं के एकीकरण के कारण हम नियमावली का नवीन संस्करण प्रकाशित न कर सकने से उसकी प्रमुख धाराएँ नीचे दे रहे हैं !—

ग्रुप

स्काउट ग्रुप में निम्नलिखित तीनों श्रेणियों के लोग या इन तीन में से किसी एक श्रेणी के लोग शामिल हो सकते हैं :—

(१) लड़कों का कब पैक या लड़कियों का फ्लाक।

(२) लड़कों का या गर्ल स्काउटस् का स्काउट ट्रूप

(३) नवयुवकों का रोवर क्रू या नवयुवतियों की रेंजर कम्पनी। इसी प्रकार की दो या तीन श्रेणियों से सम्मिलित भी एक ग्रुप हो सकता है। ऐसी सूरत में कुल श्रेणियों के लोग एक ही प्रकार की वर्दी पहिनेंगे।

नोट—लड़के तथा लड़कियों की ट्रेनिंग का प्रबन्ध अलग-अलग रखा जायगा।

रोवर क्रू या रेंजर्स कम्पनी

रोवर क्रू और रेंजर्स कम्पनी १८ या १८ से अधिक अवस्था के बालकों और बालिकाओं का दल होता है जो एक रोवर लीडर अथवा रेंजर कैप्टेन के नेतृत्व में संचालित होता है !

ट्रूप

एक ट्रूप में कम से कम १२, और अधिक से अधिक ३२ बालक या बालिकाएँ होती हैं जिनकी अवस्था १२ वर्ष से लेकर १८ वर्ष तक होती है। इसका संचालन एक स्काउटमास्टर अथवा गर्ल्स स्काउट कैप्टेन की देख-रेख में होता है। पूरा ट्रूप कम से कम ६ और अधिक से अधिक ८ बच्चों की टोली में विभाजित रहता है जिसमें लीडर भी शामिल रहता है।

(अ) प्रत्येक ट्रूप के लिये यह आवश्यक है कि उसमें स्काउट मास्टर और कैप्टेन के अलावा एक और असिस्टेंट स्काउट मास्टर अथवा एक असिस्टेंट कैप्टेन हो।

प्रत्येक ट्रूप की एक ट्रूप कमेटी होनी चाहिए जो कि उसके प्रोग्राम तथा कार्य के चलाने में सहायक हो सके।

(ब) एक स्काउट साधारणतः अपना सम्बन्ध एक ही ट्रूप से रख सकता है परन्तु आवश्यकता पड़ने पर स्थायी रूप से किसी अन्य ट्रूप से सम्बन्धित हो सकता है।

(स) प्रत्येक ट्रूप अपना नाम-करण कर सकता है और ज़िले की असोसिएशन उसका नम्बर निश्चित कर देगी।

(द) ट्रूप का कोष और चन्दा वोट द्वारा तय किया या बढ़ाया जायगा और उसके आय और व्यय के ब्यौरे की जांच उस ट्रूप का हर स्काउट और लोकल और डिस्ट्रिक्ट असोसिएशन कर सकता है।

(च) जिस ट्रूप में केवल एक ही असिस्टेन्ट स्काउट मास्टर है उसमें २४ बालकों से अधिक नहीं होना चाहिये।

(छ) स्काउटों का ट्रूप गर्ल-स्काउट की कम्पनी से बिलकुल अलग होना चाहिये।

(ज) हर ट्रूप का एक झंडा होगा जिसका नाप ४ फीट (लंबा) और ३ फीट (चौड़ा) होना चाहिये। झंडे के कपड़े का रङ्ग ट्रूप के स्काफ़ (गले के रूमाल) के रंग का होगा और उस पर हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन का बैज और ट्रूप का नाम और नम्बर दर्ज होगा। झंडे का डंडा १० फीट लम्बा होना चाहिये और उसके ऊपर इस असोसिएशन का धातु का बना सिरा होना चाहिए। भारतीय रियासत के ट्रूप स्काउट झंडे के साथ साथ अपने राज्य का झंडा भी ला सकते हैं।

(झ) पहिले तीन महीने में किसी ट्रूप में १२ अधिक स्काउट नहीं होने चाहिए।

पैक या फ़्लाक (शेर बच्चों का दल) या (बालिकाओं का बुलबुल दल)

एक पैक या फ्लाक में कम से कम १२ और ज्यादा से ज्यादा २४ बच्चे रहते हैं। ये सब कब मास्टर अथवा बुलबुल रीडर के नेतृत्व में रहते हैं। पूरा ट्रूप ६, ६, बच्चों

की टोलियों में बँटा हुआ होता है और प्रत्येक टोली 'सिक्सेस' कहलाती है।

(अ) प्रत्येक दल अपना विशेष नाम रख सकता है परन्तु उसका नम्बर ज़िले अथवा लोकल असोसिएशन द्वारा निश्चित किया जायगा।

(ब) यदि दल में एक से अधिक असिस्टेंट कब मास्टर या बुलबुल लीडर न हों तो उस दल में २४ से अधिक लड़के या लड़कियाँ कदापि नहीं होने चाहिएं।

(स) हर एक पैक का झंडा ४" × ३" होगा। झंडे के कपड़े का रङ्ग पैक के रङ्ग का होगा और उस पर स्काउट चिह्न, पैक का नाम तथा नम्बर होगा। झंडे का डंडा ८ फीट लम्बा होना चाहिये और उस पर धातु का बना हुआ सिरा लगा हुआ होगा।

पैट्रोल (टोली)

(क) हर एक पैक, ट्रूप, यू या गर्ल्स स्काउट कम्पनी में दो या अधिक पैट्रोल होंगे। हर टोली का नाम किसी आदर्श मनुष्य के या गुण विशेष के नाम पर रक्खा जायगा।

(ख) पैट्रोल अपना ख़ास झंडा रख सकते हैं।

(ग) हर एक पैट्रोल में ६ से लेकर ८ बालक (या बालिकायें) होते हैं जिनमें पैट्रोल लीडर भ होता है। रोवर या रेंजर्स के पैट्रोल में कैप्टेन को लेकर ४ से ८ तक सदस्य हो सकते हैं।

लोन स्काउट और लोन पैट्रोल (अकेला स्काउट और अकेला पैट्रोल)

(क) जहां पर ट्रूप का चार्ज लेने के लिये कोई मनुष्य या स्त्री न मिले वहां पर सबसे पुराना बालक प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स में डिस्ट्रिक्ट वा लोकल असोसिएशन द्वारा (यदि कोई है) लोन पैट्रोल बनाने (अकेला) की आज्ञा के लिए लिखेगा।

(ख) ख़ास बालकों (या बालिकाओं) को जो कि आसपास के किसी ट्रूप में सम्मिलित नहीं हो सकते प्राविंशिय हेडक्वार्टर्स में लोन स्काउट या लोन गर्ल-स्काउट बनने के लिए दरख्वास्त भेजना चाहिये।

असोशिएट स्काउट

यदि स्काउट मास्टर देखता है कि कोई स्काउट स्काउटिंग के कामों में पूरे तौर से सम्मिलित नहीं हो सकता तो उसका नाम रजिस्टर में असोशियट स्काउट की हैसियत से दर्ज रखा जा सकता है बशर्ते कि वह और सब बातों में स्काउट की जिम्मेदारियों को मानता रहे।

एक्ज़िक्यूटिव अफ़सरान कर्मचारीगण

अफ़सरान और उनके ओहदे

कोई भी फ़ौजी (जिसमें खुश्की की और समुद्री फ़ौज शामिल हैं) ख़िताब इस्तेमाल करना मना है।

चार तरह के एक्ज़िक्यूटिव अफ़सरान वारंट पा सकते हैं। (१) कमिश्नरगण (२) डिस्ट्रिक्ट तथा ऑरगनाइज़िंग स्काउट मास्टर (३) ग्रुप लीडर, रोवर लीडर, रेंजर कैप्टेन, स्काउट मास्टर, कब मास्टर, गर्ल स्काउट कैप्टेन, बुलबुल लीडर और (४) असिस्टेन्ट रोवर लीडर, असिस्टेन्ट स्काउट मास्टर अथवा असिस्टेन्ट कब मास्टर और अन्य। डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर या डिस्ट्रिक्ट स्काउट असोसिएशन की सिफ़ारिश से नं० ३ और नं० ४ को अपना वारंट हर साल सहायक गर्ल स्काउट, प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से फिर से जारी करा लेना चाहिए।

अवैतनिक पद

एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदली हो जाने या अपना पद छोड़ देने या किसी दूसरे कारणों से असोसिएशन के एक्ज़िक्यूटिव अफ़सरोंडिस्ट्रिक्ट या लोकल असोसिएशन या कमिश्नरों की सिफ़ारिश पर प्रविंशल कमिश्नर अवैतनिक कमिश्नरों के पद पर नियुक्त कर सकता है।

कब मास्टर

कब मास्टर की योग्यता स्काउट मास्टर की तरह होनी चाहिए किन्तु उन्हें 'स्काउट मास्टरों और ट्रूप

संचालन' 'कोमलपद' 'ध्रुवपद शिक्षण' और 'गुरुपद शिक्षण' के अलावा 'बालवीर या शेर बच्चा' अच्छी तरह पढ़ना और समझना चाहिए। (अंग्रेज़ी में लार्ड बेडन पावल की लिखी 'स्काउटिंग फ़ार ब्वायज़ और उल्फ़कब हैंडबुक' पढ़ो)। महिलाएँ भी इस जगह पर नियुक्त हो सकती हैं।

जहाँ पर कोई कब पैक किसी ग्रुप के साथ मिला हो वहाँ ग्रुप लीडर केवल ऊपरी निरीक्षण करेंगे। कब पैक का कुल काम वह कब मास्टर के ज़िम्मे छोड़ देंगे।

वर्दी--स्काउट मास्टरों की तरह।

स्काउट बैज का निशान--नीले रंग का बैज जिसके चारों ओर पीले रंग का किनारा (गोट) बना हो।

असिस्टेन्ट कब मास्टर

असिस्टेन्ट कब मास्टर की योग्यता असिस्टेन्ट स्काउट मास्टर की तरह होनी चाहिए। "स्काउट मास्टर और ट्रूप संचालन", कोमलपद शिक्षण', 'ध्रुवपद शिक्षण', और 'गुरुपद शिक्षण' के अलावा उन्हें 'बालवीर या शेर-बच्चा' अच्छा तरह पढ़ना और समझना चाहिए। (अंग्रेज़ी में लार्ड बेडन पावल की लिखी स्काउटिंग फ़ार ब्वायज़' और 'उल्फ़कब हैन्डबुक' पढ़ो)। उनकी आयु कम से कम १८ वर्ष की होनी चाहिए। महिलायें भी इस स्थान पर काम कर सकती हैं।

वर्दी--असिस्टेन्ट स्काउट मास्टरों की तरह। शोल्डर नोट लाल रंग की होगी।

बैज--जैसा कि कब मास्टर का होता है।

स्काउट मास्टर

स्काउट मास्टर वह व्यक्ति है जो कि हिन्दुस्तान स्काउट असोशियेशन, यू० पी० से स्काउट मास्टर का वारेन्ट पा चुका है और जिसके चार्ज में अकेले तौर से या मुश्तरका तौर से एक रजिस्टर्ड ट्रूप होता है जो उसी इलाके में होता है जिस इलाके के लिए उक्त स्काउट मास्टर को वारेन्ट दिया है।

जब कि स्काउट मास्टर अकेले तौर से या मुश्तरका तौर से एक ट्रूप के संचालन कार्य का भार छोड़ देता है और स्काउटिंग में जीवित दिलचस्पी लेना बन्द कर देता है तब उसका वारन्ट भी रद्द हो जाता है और डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर के द्वारा वह वारेन्ट प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स को लौटा दिया जाता है।

स्काउट मास्टर में निम्न-लिखित योग्यतायें होना चाहिएँ :—

(क) लार्ड बेडन पावल की लिखी 'स्काउटिंग फ़ार ब्वायज़' और इस नियमावली को अच्छी तरह पढ़ना और समझना। हिन्दी जानने वालों को 'स्काउटिंग क्या है', 'स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन', 'कोमलपद शिक्षण', 'ध्रुवपद शिक्षण', 'गुरुपद शिक्षण' और 'टोली विधि' पढ़ना चाहिए।

(ख) स्काउटिंग-शिक्षा-विधान के अन्तर्गत नैतिकता के तत्व को अच्छी तरह समझना।

(ग) स्वयं आदर्श चाल-चलन के हों जिससे बालकों पर अच्छा प्रभाव पड़े, और अपने काम को दृढ़ता, धैर्य और मेहनत से करें।

(घ) आयु २० वर्ष से कम की न हो।

(ङ) किसी ट्रूप में कम से कम ३ मास काम कर चुके हों।

(च) नेशनल या प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स-द्वारा संचालित किसी ट्रेनिंग क्लास में शिक्षा पा चुके हों। ख़ास हालतों में शिक्षा की यह शर्त ढीला किया जा सकता है।

प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से वारन्ट पाने के पहले स्काउट मास्टर डिस्ट्रिक्ट या लोकल असोसिएशन द्वारा निर्वाचित होते हैं और उनके लिए सिफ़ारिश डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर करते हैं।

[नोट—(१) वारंट प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से दिया जाता है। स्काउट मास्टरों की तरह रोवर लीडर, असिस्टेन्ट स्काउट मास्टर कब मास्टर और असिस्टेन्ट कब मास्टर को वारंट मिलते हैं। ट्रूप या पैक से सम्बन्ध छूटने पर वारंट लौटा देना चाहिये। (२) रोवर लीडर की योग्यता भी स्काउट मास्टर की तरह होनी चाहिए लेकिन उन्हें और पुस्तकों के अलावा 'रोवर-स्काउटिंग' अच्छी तरह पढ़ना चाहिए।]

वर्दी—जैसी कोमलपद की होती है, मगर निम्न-लिखित विशेषताओं के साथ :—

(क) काही रंग का स्कार्फ़

(ख) सफ़ेद रंग का फुंदना

(ग) मोज़ा और जूता या बूट जो कि काला या ब्राउन रंग का हो

(घ) स्काउट डंडे की जगह पर छड़ी

कोट नहीं पहिनना चाहिए

बैज—नीले रंग का बैज का निशान जिसके चारों ओर नीले रंग का किनारा (गोट) बना हो। बायीं जेब पर बटन के निकट ऊपर ओर पहिनना चाहिए।

फ़ौजी नक़ल की चटक-मटक वाली वर्दी इत्यादि कदापि न पहिनना चाहिए ख़ास करके जब स्काउट मास्टर ड्यूटी पर हों।

नोट—आर्गनइज़िंग स्काउट मास्टर का स्कार्फ़ काही रंग का होता है जिसके चारों ओर २ इंच चौड़ा लाल किनारा (गोट) रहता है।

असिस्टेन्ट स्काउट मास्टर

सहायक स्काउट मास्टर की भी योग्यता स्काउट मास्टर की तरह होनी चाहिए किन्तु उसकी उम्र कम से कम १८ साल की होनी चाहिए। ख़ास हालतों में डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर १८ साल से कम आयु वालों की नियुक्ति के लिए भी सिफ़ारिश कर सकते हैं।

वर्दी—स्काउट मास्टरों की तरह किन्तु कन्धे के फुदने का रंग लाल होता है।

बैज—स्काउट मास्टर की तरह।

रोवर लीडर

रोवर लीडर वह व्यक्ति होता है जिसे हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन, यू० पी०, की ओर से वारन्ट मिला हो और जिस क्षेत्र के लिए उसको वारन्ट मिला हो वह उसमें के रजिस्ट्री शुदा टोलियों का इनचार्ज हो। रोवर लीडर की भी योग्यतायें वही हैं जो कि स्काउट मास्टर के लिये होती हैं। साथ ही साथ उसे, रोवर स्काउटिङ्ग का भी पूर्ण ज्ञान हो।

असिस्टेन्ट रोवर लीडर भी आवश्यकता पड़ने पर नियुक्त किए जा सकते हैं। उनके कन्धे का फुंदना लाल रंग का होता है।

बैज—स्काउट चिन्ह नीला बैज एक लाल घेरा।

रोवर लीडर हरे रंग का रूमाल पहिनेगा जब कि उसका क्रयू अकेला हो। यदि वह किसी ग्रुप का हिस्सा बना हुआ हो तो उस ग्रुप के रंग का रुमाल पहिनेगा।

ग्रुपलीडर

ग्रुपलीडर को हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन यू० पी० से ग्रुपलीडरी का वारन्ट मिला होता है और वह किसी एक समूह की ट्रेनिंग तथा उन्नति का ज़िम्मेदार होता है। इस समूह में पैक, ट्रूप और क्रयू, कबमास्टर, स्काउट मास्टर और रोवर लीडर (सिलसिलेवार) के अधीन होता है।

ग्रुप लीडर ग्रुप स्कार्फ़ पहिनता है। ग्रुप लीडर के बैज के गिर्द हरा घेरा होगा।

कमिश्नर

प्राविंशियल कमिश्नर, असिस्टेंट प्राविंशियल कमिश्नर फ़ार गर्ल्सस्काउट्स तथा प्राविंशियल चीफ़ आर्गेनाइज़िंग कमिश्नर के अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रेड कमिश्नरों के होते हैं :—हैडक्वार्टर्स कमिश्नर, आर्गेनाइज़िंग कमिश्नर, डीवीज़नल कमिश्नर; डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, असिस्टेन्ट डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर और अवैतनिक कमिश्नर।

कमिश्नरों के काम

(क) ग्रुप, क्रयू, ट्रूप, पैक और पेट्रोलों, कम्पनियों का मुआयना करना और उनको भारतीय ढंग से संचालित करने की विधि बताना।

(ख) बैज धारण करने वालों की योग्यता की परीक्षा लेना। कमिश्नरों को बैज वापस लेने का अधिकार है यदि रोवर, स्काउट या शेर बच्चे जाँच में ठीक न उतरें।

(ग) ज़िला, डिवीज़न, या प्रान्त के स्काउट मास्टरों और कब मास्टरों में परस्पर सहयोगिता का भाव पैदा करना और आपस में मिला-जुला कर उनसे काम लेना।

(घ) प्रविंशियल हेडक्वार्टर्स में असोसिएशन, ग्रुप, क्रयू, ट्रूप, पैक और कम्पनी को चार्टर (सनद) और स्काउट मास्टर इत्यादि को वारंट देने और वापस लेने के लिये सिफ़ारिश करना। प्राविंशियल और डिस्ट्रिक्ट कमिश्नरों को अपने हल्के के किसी भी स्काउट अफ़सर

(जिसकी जाँच प्रान्तीय या लोकल असोसिएशन कर रही हो) को सस्पेन्ड (मुअत्तिल) कर देने का अधिकार है। यदि किसी अफ़सर को हटाने की सिफ़ारिश कमिश्नर तथा स्थानीय असोसिएशन दोनों ही कर रहे हों तो उसके लिए सिर्फ़ प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स वारंट वापस ले लेगा। यदि कमिश्नर और स्थानीय असोसिएशन में मत-भेद हो तो उसके लिए प्रविंशियल हेडक्वार्टर्स में फ़ैसला के लिये लिखना चाहिये।

नोट :—उपरोक्त नियम डिवीज़नल कमिश्नरों पर लागू होता है जिनका कि उनके डिवीज़न के ज़िला असोसिएशनों पर पूर्ण अधिकार है इस मामले में कि वे उनके किसी अफ़सर को मुअत्तल कर सकते हैं, ज़िला व लोकल असोसिएशन विशेष, जो नियमों का उल्लंघन करते हों, के नियम विधान को रद्द कर सकते हैं और उनके वारेन्ट छीनने की सिफ़ारिश कर सकते हैं। इस प्रकार की कार्यवाही करने की इत्तिला उन्हें प्रान्तीय कमिश्नर को देकर उनकी अनुमति प्राप्त कर लेनी आवश्यक होगा।

(ङ) अपने हल्के में ब्वाय स्काउट संस्था का प्रचार करना।

वर्दी—सब कमिश्नरों की वर्दी स्काउट मास्टरों की तरह होती है, किन्तु उसमें निम्न-लिखित भेद हैं :—

(क) स्कार्फ़ बैंगनी रंग का।

(ख) कन्धे का फुंदना बैंगनी रंग का।

(ग) बैज के पीछे की ज़मीन बैंगनी रंग की।

कमिश्नर और स्थानीय असोसिएशनों की सूची का एक रजिस्टर प्रिविंशल हेडक्वार्टर्स में रखा जाता है।

डिस्ट्रिक्ट स्काउट मास्टर—

डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर या डिस्ट्रिक्ट असोसिएशन की सिफ़ारिश पर डिस्ट्रिक्ट स्काउट मास्टर नियुक्त किये जाते हैं। उनका काम डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर की ट्रेनिंग कार्य में मदद करना है। इसकी नियुक्ति दो साल के लिए होती है। इस अवधि की समाप्ति पर वह पुनः निर्वाचित किया जा सकता है।

अपनी नियुक्ति से पहिले डिस्ट्रिक्ट स्काउट मास्टर को कम से कम २ साल तक एक सफल तथा पद स्काउट मास्टर की हैसियत से कार्य कर चुकना चाहिए। उसके ज़िम्मे विशेष कार्य सौंप देना चाहिए जैसे कि, ट्रूपों का मुआइना करना, स्काउट मास्टरों को उनके प्रोग्राम इत्यादिक बनाने में सहायता करना।

वर्दी—स्काउट मास्टर की तरह और स्कार्फ़ हरा और बैंगनी होगा।

बैज—स्काउट मास्टरों की तरह।

आर्गनाइज़िंग-स्काउट-मास्टर

डिस्ट्रिक्ट या लोकल असोसिएशन की सिफारिश पर ज़िला या म्यूनिसिपल बोर्ड के नियत क्षेत्रों में काम करने के लिये ये आर्गनाइज़िंग स्काउट मास्टर नियत हो सकते हैं।

वर्दी—डिवीज़िनल आर्गनाइज़िंग स्काउट मास्टर की तरह।

बैज—स्काउट मास्टर की तरह।

नोट :—डिस्ट्रिक्ट व ज़िला असोसिएशनों के संरक्षक, प्रधान व मन्त्रीगण स्काउट वर्दी पहन सकते हैं यदि वे दीक्षा पा चुके हैं। संरक्षक पोली ज़मीन पर बैंगनी बार्डर वाला, प्रधान केसरिया और मंत्री नीले रंग का प्रयोग कर सकते हैं।

अफ़सरों की प्रतिज्ञा

हर एक स्काउट अफ़सर से आशा की जाती है कि वह अपनी नियुक्ति होने पर निम्न-लिखित प्रतिज्ञा करेगा:—

मैं मर्यादा-पूर्वक प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं भरसक

(१) अपने देश और महेश के प्रति अपना कर्तव्य पालन करूँगा।

(२) स्काउट नियम के भावों के अनुसार काम करूंगा।

(३) हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के आदर्श और उद्देश्यों का प्रचार करूँगा।

❀ देसी रियासतों के निवासी प्रतिज्ञा में 'महाराजा' या वहाँ के शासक का उचित नाम या उपाधि जो स्टेट असोसिएशन फ़ैसला करे शामिल कर सकते हैं। ईश्वर में विश्वास न रखनेवाले सदस्य 'महेश' के स्थान में 'धर्म' या 'ज़मीर' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं।

स्काउट बैन्ड (बाजा)

स्काउट बैन्ड को किसी गिर्जे, मस्जिद, मन्दिर अस्पताल या किसी भी मकान के सामने जहां पर कोई बीमार हो नहीं बजाना चाहिए। सड़कों पर रात को ६ बजे से लेकर सुबह ५ बजे तक भी स्काउट बैन्ड को नहीं बजाना चाहिए।

राजनीति

यह संस्था किसी भी राजनैतिक संस्था से सम्बन्ध नहीं रखती, इसका कोई भी स्काउट अफ़सर अपनी वर्दी में किसी भी राजनैतिक सभा या आन्दोलन में भाग नहीं ले सकता।

फ़ार्म

निम्न-लिखित फ़ारम इस असोसिशन में प्रचलित हैं। प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स को लिखने से ये मिल सकते हैं। :—

फ़ारम ए—डिस्ट्रिक्ट या लोकल असोसिएशन की रजिस्ट्री का फ़ारम।

फ़ारम बी—ट्रूप, पैक इत्यादि को रजिस्ट्री कराने का फ़ार्म।

फ़ारम सी—वारंट इत्यादि के लिए प्रार्थना का फ़ारम।

" डी—लोकल असोसिएशन की मर्दुमशुमारी का फ़ारम।

" ई—ट्रूप, पैक इत्यादि की मर्दुमशुमारी का फ़ारम।

" एफ़—मार्के की सेवा या बहादुरी के काम के वास्ते इनाम के लिए दरख्वास्त देने का फ़ारम।

" जी—(सिर्फ कमिश्नरों और आर्गनाइज़िंग और डिस्ट्रिक्ट स्काउट मास्टरों के लिए) मुआयने की रिपोर्ट का फ़ारम।

२३ तबादले

वह लड़का किसी ग्रूप में भर्ती नहीं हो सकता जो अर्ज़ी देने के दो महीना पहिले किसी ग्रूप [क्यू, ट्रूप, पैक) या किसी अन्य बाल संस्था का सदस्य रहा हो और जिसके पास कोई तबादले का सार्टीफ़िकेट उसके पहिले अफ़सर के दस्तख़त के साथ न हो।

कोई शेर बच्चा यदि वह स्काउट होने के योग्य हो गया हो और यदि किसी दूसरे ग्रूप में स्काउट होना चाहता हो तो उसे तबादले का सार्टीफिकेट लाना चाहिये।

अगर किसी तबादले के लिये कोई झगड़ा उठे तो उसके बारे में डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर के पास फैसले के लिए लिखना चाहिए।

अगर कोई कब मास्टर या स्काउट मास्टर अपना काम छोड़ दे या उसकी तरक्की या किसी दूसरे जिले में काम करने की इच्छा करे तो उनके वारंट को लोकल असोसिएशन या डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स में भेज दें। ऐसा करने से हेडक्वार्टर्स उस वारंट को या तो पक्का कर देगा या रद्द कर देगा।

२४ पत्र-व्यवहार (ख़त-किताबत)

प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स की इच्छा है कि, जहाँ तक हो सके, उसके दफ्तर से बहुत कम लिखा-पढ़ी की जाय। जहाँ तक सम्भव हो स्काउट मास्टर को सीधे प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स के पास चिट्ठी नहीं लिखनी चाहिए। उनको हर एक बात की पूछ-ताँछ अपने डिस्ट्रिक्ट या डिवीजनल स्काउट कमिश्नर से करना चाहिए। वहाँ के मन्त्री प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से बैज, सामान, वारंट या ईनाम इत्यादि के लिए लिखा-पढ़ी करेंगे। वारंट और पदक इत्यादि के विषय में डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर की सिफारिश ज़रूरी है।

केवल आर्गनाइजिंग कमिश्नर, डिवीजनल और डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर और स्थानीय असोसिएशन के सभापतिगण और सेक्रेटरी ही प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से संगठन रैली, शासन-विधि और उद्देश्य के लिये लिखा-पढ़ी कर सकते हैं। स्काउटिंग-संगठन के बारे में यदि किसी को किसी सरकारी अफ़सर के पास या सरकारी विभाग में कुछ लिखना हो तो वह प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स के द्वारा ही ऐसा कर सकते हैं, स्वयं नहीं।

रजिस्ट्रेशन

'ए' और 'बी' फ़ारम प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से लोकल असोसिएशन के सेक्रेटरी और स्काउट मास्टरों के पास पूरा करने के लिये भेजे जाते हैं। स्काउटों के दर्ज करने के लिए रजिस्टर केवल स्काउट मास्टर और लोकल असोसिएशन के सेक्रेटरी रखते हैं।

किसी ट्रप या पैक या क्रयू की रजिस्ट्री के लिए, स्काउट मास्टर या कब मास्टर या रोवर लीडर 'बी' फ़ारम की दो प्रतियाँ भर कर उन्हें लोकल असोसिएशन के सेक्रेटरी, के पास भेज देते हैं। वे डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर का दस्तख़त करा कर एक प्रति प्राविंशियल हेड-क्वार्टर्स में ट्रुप चार्टर देने के लिए भेज देते हैं।

लोकल असोसिएशन को रजिस्ट्री :—

लोकल असोशिएशन की रजिस्ट्री के लिये उसके सेक्रेटरी 'ए' फ़ारम की तीन प्रतियाँ भर कर डिस्ट्रिक्ट असोसिएशन के सेक्रेटरी के पास भेज देते हैं।

परिवर्तन :—

यदि लोकल असोसिएशन के सेक्रेटरी बदले जाँय या उनके पता-ठिकाना में कोई परिवर्त्तन हो तो उसकी सूचना शीघ्र ही प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स के पास भेजना चाहिए।

सेल्यूट (नमस्कार)

(१) दाहिने हाथ से हर एक स्काउट अफ़सर और स्काउट तीन अंगुलियों वाला सेल्यूट करता है। कब और बुलबुल दो अंगुलियों से सेल्यूट करते हैं।

(२) जब डंडा लिये हो तो स्काउट अपने बायें हाथ से समकोण बनाते हुए उसे सीने की तरफ़ ले जाकर डंडे के पास तीन अंगुलियों से सेल्यूट करता है। तलहथी नीचे की तरफ़ हो।

(३) जब दोनों हाथ फँसे हों तो स्काउट अपनी आँख और सर को दायीं या बायीं ओर (जैसी भी ज़रूरत हो) जल्दी से घुमा कर सेल्यूट करता है। ऐसा करने की ख़ास ज़रूरत बाइसिकल पर बैठ कर जाते समय या ऐसे ही दूसरे मौक़ों पर होती है।

(४) जब कोई आदमी या अफ़सर जिन्हें सेल्यूट करना चाहिए कुछ लड़कों के झुन्ड के पास से होकर जाते हैं तो उन लड़कों का लीडर (नायक) बाक़ी लड़कों को 'अलर्ट' (सावधान) पर खड़ा करा कर स्वयं सेल्यूट करता है। सब सैल्यूट नहीं करते।

(५) 'वन्दे मातरम्' के गाये जाने या बाजा-द्वारा बजाये जाने के वक्त, अफ़सर और स्काउट सावधान पर खड़े होते हैं।

(६) जब इस संस्था या किसी दूसरी स्वीकृत स्काउट संस्था का झंडा फहराया, उतारा या क़ायदे से किसी संगठित दल द्वारा ले जाया जाता हो तो अफ़सर और स्काउट सेल्यूट करते हैं।

(७) हर एक स्काउट और अफ़सर बायें हाथ से हाथ मिलाता है।

नाटक

इस संस्था के किसी भी रोवर, स्काउट, गर्लस्काउट या शेर बच्चे को अपनी वर्दी पहन कर किसी भी अन्य संस्था-सम्बन्धी जलसे या नाट्यमंच या गाने की जगह में शरीक नहीं होना चाहिए। अपने ट्रुप सम्बन्धी जलसे, नाटक इत्यादि में वह वर्दी पहन कर भाग ले सकता है।

वारंट (नियुक्ति की सनद)

हर एक वारंट पर प्राविंशियल कमिश्नर का हस्ताक्षर रहता है और वह प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से भेजा जाता है। निम्न-लिखित पदाधिकारियों को वारंट दिया जाता है।

डिवीज़नल कमिश्नर	असिस्टेन्ट रोवर लीडर
डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर	असिस्टेन्ट स्काउट मास्टर
असिस्टेन्ट डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर	असिस्टेन्ट कब मास्टर
डिस्ट्रिक्ट स्काउट मास्टर	डिस्ट्रिक्ट गर्लस्काउट कैप्टन
आर्गनाइज़िंग स्काउट मास्टर	बुलबुल लीडर
सर्किल स्काउट मास्टर	गर्लस्काउट कैप्टेन
ग्रुप लीडर	रेंजर कैप्टेन
रोवर लीडर	इन्सट्रक्टर (शिक्षा देने वाले)
स्काउट मास्टर	
कब मास्टर	

जो अफ़सर अपना काम छोड़ रहे हों उनको चाहिए कि वे अपना वारंट खारिज किये जाने के लिए प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स में भेज दें। यदि वह उस वारंट को रख

चाहें तो वारंट खारिज किये जाने के बाद उनको लौटाया जा सकता है, लेकिन यह प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स की इच्छा पर निर्भर है।

नोट :—नं० १—प्राविंशियल पदों के अफ़सरों को वारंट नेशनल हेडक्वार्टर्स से मिलते हैं और उन पर नेशनल कमिश्नर के हस्ताक्षर होते हैं।

चार्टर आफ़ रजिस्ट्रेशन

हर एक चार्टर पर प्राविंशियल कमिश्नर का हस्ताक्षर रहता है और वह प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से भेजा जाता है। निम्न-लिखित को चार्टर दिया जाता है :—ग्रुप, क्र्यू, ट्रूप, पैक, कम्पनी, प्राविंशियल, डिस्ट्रिक्ट और लोकल असोसिएशन तथा और कोई संगठित संस्था जिसका ऐसा ही उद्देश्य हो।

नोट : १—वारंट और चार्टर इस संस्था की वस्तु है और खारिज होने पर प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स में लौटा देना चाहिये।

२— वारंट तथा ट्रूप चार्टर हर साल डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर द्वारा 'रिन्यू' किए जाते हैं। इसकी सूचना प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स को भेज दी जाती है।

कैम्प

यदि स्काउटों की कोई पार्टी अपने ज़िला के बाहर कैम्प करना चाहती है तो उस पार्टी के अफ़सर को चाहिये कि वह वहाँ के ज़िला या प्रान्तीय कमिश्नर को कम से कम एक हफ्ता पहले इसकी सूचना भेज दें।

मर्दुमशुमारी

हर साल पहिली दिसम्बर को स्काउटों की मर्दुमशुमारी की जाती है। नमूने का फ़ारम हर ज़िला के असोसिएशन के मंत्री के पास प्रान्तीय या स्टेट या प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स से भेज दिया जाता है। ग्रुप लीडर, रोवर लीडर, स्काउट मास्टर और कब मास्टरों को चाहिए कि १० दिसम्बर तक फ़ारम भर कर वे डिस्ट्रिक्ट असोसिएशन के मंत्री के पास भेज दें।

डिस्ट्रिक्ट असोसिएशन का मंत्री इन फ़ारमों के साथ एक दूसरा फ़ारम भर कर प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स के पास १५ दिसम्बर तक भेज देंगे और यह प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स पिछले साल के काम की रिपोर्ट के साथ उन फ़ारमों को १५ दिसम्बर तक नेशनल हेडक्वार्टर्स में भेज देंगे। प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स द्वारा नेशनल हेडक्वार्टर्स को १०) दस रुपये प्रति हज़ार के हिसाब से 'कोटा' दिया जाता है। यह सितम्बर तक अदा कर देना चाहिए।

इसमें लापरवाही करने से किसी डिस्ट्रिक्ट असोसिएशन या ट्रूप इत्यादि का नाम रजिस्टर से काटा जा सकता है।

नोट—ऊपर कही हुई रिपोर्ट में स्थायी सम्पत्ति का भी व्योरा होगा, अगर ऐसी कोई सम्पत्ति किसी असोसिएशन के पास होगी।

विशेष चिन्ह

अलग अलग प्रान्त या स्टेट के ग्रुप या ट्रूप इत्यादि अपने विशेष चिन्ह या तमग़े रख सकते हैं लेकिन शर्त यह है कि प्राविंशियल हेडक्वार्टर्स की राय से प्रान्तीय या स्टेट हेडक्वार्टर्स इन तमग़ों को मंजूर करें। उनको कहाँ पर और किस तरह पहिनना चाहिये, यह प्रान्तीय या स्टेट कमिश्नरों की इच्छा पर निर्भर है।

अन्य बैज

स्काउटिंग की वर्दी के साथ स्काउटिंग के बैजों के अतिरिक्त और कोई भी बैज या तमग़ा नहीं पहना जा सकता। केवल सेन्ट जान एम्बुलेन्स असोसिएशन के बैज पहिने जा सकते हैं।

परिशिष्टांश (ब)

जिला तथा लोकल असोसिएशन के नियम

१—असोसिएशन का नाम होगा "हिन्दुस्तान-स्काउट-असोसिएशन" (ज़िला का नाम)।

२—यह असोसिएशन हिन्दुस्तान स्काउट-असोसिएशन की एक शाखा होगी और नीति तथा अनुशासन के सभी कार्यों के लिए असोसिएशन पर निर्भर रहेगी तथा हिन्दुस्तान-स्काउट-असोसिएशन, इलाहाबाद से संबंध रक्खेगी।

३—इसका शासन ज़िले भर पर होगा।

४—निम्नलिखित असोसिएशन के सदस्य होंगे :—

(अ) ज़िले के निवासी तथा वहाँ काम करने वाले हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के वारन्ट पाये हुए अफ़सर।

(ब) नीचे पाँचवें नियम के अनुसार जिन्होंने प्रार्थनापत्र दिया हो और जिनका चुनाव कार्य-कारिणी-समिति से हो गया हो।

५--१८ वर्ष से अधिक आयु वाले सभी सज्जन जो कि वार्षिक चन्दा देते हों और हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के उद्देश्य तथा नीति से सहानुभूति रखते हों सदस्य हो सकते हैं।

ज़िला असोसिएशन के सदस्य हर साल अपने कर्मचारी अर्थात् सभापति, एक या अधिक उपसभापति, मंत्री और एक कार्यकारिणी समिति चुनते हैं। कार्यकारिणी में नीचे लिखे लोग होंगे :--

(अ) ज़िला-असोसिएशन के प्रेसीडेण्ट बोर्ड के चेयरमैन होंगे।

(ब) एक मंत्री।

(स) एक सहायक मन्त्री।

(द) खज़ान्ची (कोषाध्यक्ष)।

(य) डिस्ट्रिक्ट-कमिश्नर (ऐक्स-आफ़िशियो) और सहायक ज़िला स्काउट कमिश्नर (ऐक्स-आफ़िशियो)।

(फ) स्काउट मास्टरों तथा कब मास्टरों के दो प्रतिनिधि जो हर साल चुने जावेंगे।

(ज) अन्य सदस्य जिनकी संख्या ३ से ७ तक होगी असोसिएशन के सदस्यों तथा कर्मचारियों द्वारा चुने जावेंगे।

७--(च) यह असोसिएशन हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन यू० पी० द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार ज़िला असोसिएशन का सारा काम करेगा।

८--कार्यकारिणी-बोर्ड के द्वारा यह असोसिएशन उन्हीं नियमों के अनुसार स्काउटिंग के प्रचार के लिये ज़िले से पूर्ण उद्योग करेगा।

९--असोसिएशन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए तथा जनता की सदिच्छा के लिए यह असोसिएशन कार्यकारिणी बोर्ड को तथा ऐसे दूसरे मनुष्यों की जिनकी रुचि इसमें है; चन्दा माँगने तथा जनता में जागृति पैदा करने का अधिकार देता है।

१०--हिन्दुस्तान-स्काउट-असोसिएशन, यू० पी०, के नियमों तथा इन उपनियमों को ध्यान में रखते हुए कार्य-कारिणी-बोर्ड अपने नियम तथा कार्यक्रम बना सकता है और इसकी महीने में कम से कम एक बार बैठक अवश्य होनी चाहिये। एक्ज़ीक्यूटिव बोर्ड के नियम तथा कार्यक्रम असोसिएशन स्वीकृत करेगा।

११--सदस्यों की सर्वसाधारण सभा में एक्ज़ीक्यूटिव-बोर्ड अपने खर्च का ब्योरा पास करने के लिए प्रतिवर्ष रक्खेगा।

१२--वार्षिक सभा का आयोजन मन्त्री करेंगे जिसमें कि खर्च का ब्योरा रक्खा जावेगा तथा नया चुनाव होगा। सात दिन पहले सूचना देनी चाहिये।

१३--पांच सदस्यों द्वारा किसी लिखित आवश्यकता के कारण, या असोसिएशन के किसी काम से या, सभापति की प्रार्थना से ५ दिन पूर्व सूचना देकर मन्त्री बैठक का प्रबन्ध कर सकते हैं।

१४--साधारण सभाओं के हेतु ११ तथा एक्ज़ीक्यूटिव-बोर्ड की बैठकों के लिए ५ सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक है, और आवश्यकता होने पर ३ सदस्यों की प्रार्थना पर या प्रेसीडेण्ट के कहने से एक्ज़ीक्यूटिव बोर्ड की असाधारण बैठक भी की जा सकती है।

१५--असोसियेशन के स्थगित अधिवेशन फिर से नई सूचना देने के बाद होंगे, कम से कम ५ सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक है और एक्ज़ीक्यूटिव-बोर्ड में कम से कम २ सदस्यों की। ऐसे सदस्य केवल स्थगित सभा की कार्यवाही सूची पर विचार करेंगे।

१६--संशोधन के हेतु बुलाये हुये असोसिएशन के उपस्थित सदस्यों में से दो तिहाई की सम्मति से इन उपनियमों में परिवर्तन किया जा सकता है।

१७--डिस्ट्रिक्ट-स्काउट-कमिश्नर तथा सहायक-डिस्ट्रिक्ट-कमिश्नर का मार्ग-व्यय डिस्ट्रिक्टअसोसएशन देगा।

कोमलपद स्काउट और उनकी शिक्षा

पंडित श्रीराम वाजपेयी

अगर कुछ बेसिखे और अनपढ़े लोगों को लेकर चलाया जाय और ग़ौर करके देखा जाय तो तरह-तरह की चालें देखने को मिलेंगी। कुछ एँड़ी पर ज़ोर दे कर चलते हैं तो कुछ पंजों को हवाकर; किसी के पैरों के तलवे चपटे हैं तो किसी के महराबदार, कोई ठुमुक ठुमुक चलता है तो कोई लपक-झपक से, इत्यादि। अगर खोज की जाय कि पैर और टांगें और चलने की ताक़त सब में एक सी होती हुई भी चाल में भिन्नता क्यों है तो पता चलेगा कि जब ये लोग "कोमलपद" बच्चे थे और 'पैंयां पैंयां' चलना सीखते थे तब इनकी चाल-ढ़ाल पर जैसा ध्यान और ज़ोर दिया गया वैसी ही बान उनमें पड़ गई और अनायास वे उसीके पुतले बन गये।

स्काउटिंग में लड़के और लड़कियों को सिखाया जाता है कि वे किस तरह चल कर अपने जीवन मार्ग को तय करें। सब बच्चे परमात्मा के यहाँ के कमोवेश एक सी ख़ूबियाँ लेकर इस संसार में आये हैं। उन ख़ूबियों को विकसित करना और उन्हें सुमार्ग पर ले जाने की आदत डाल देना स्काउटिंग का ध्येय है। बताने की ज़रूरत नहीं कि किसी काम को बार-बार करने से आदत पड़ती है, बहुत सी आदतें मिल कर आचरण बनाती हैं और भाग्य का निर्माणकर्त्ता हर एक मनुष्य का आचरण ही होता है। स्काउटिंग में कोमलपद की शिक्षा द्वारा वही चाल सिखाई जाती है जिससे बुरी बानों का ह्रास और अच्छी बानों का विकास हो, चरित्र का गठन और सौभाग्य का निर्माण हो।

हर व्यक्ति में तीन प्रकार की शक्तियाँ होती हैं। वे हैं शारीरिक, मानसिक और आत्मिक। मनुष्य परमात्मा का बनाया पुतला है। हर पुतले में बनाने वाले की दक्षता झलकती है। परमेश्वर से अधिक दक्ष और कौन हो सकता है। इस कारण हर बच्चे में यह तीनों शक्तियाँ विद्यमान हैं। शक्ति से सुकर्म और कुकर्म दोनों ही हो सकते हैं। बिजली एक शक्ति है। उससे आज संसार की तरह तरह की सेवाएँ हो रही हैं, मगर वही बिजली असावधानी या दुरुपयोग से प्राणियों का संहार कर देती है। स्काउटिंग इन तीनों शक्तियों का विकास कर उन्हें सत्पथ पर ले जाने का प्रयास करती है।

शिक्षा का एक सिद्धान्त है—दृश्य से आरम्भ कर अदृश्य तक पहुँचो, छोटी सी मंज़िल तै कर बड़ी-बड़ी मन्ज़िलों को सुगमता से तय करने की योग्यता पैदा करो। कोमलपद की शिक्षा स्काउटिंग सीढ़ी का पहला डंडा है। अगर पहले डंडे पर सँभल कर पैर रखना आ गया तो सीढ़ी के ऊँचे सिरे तक आसानी से पहुँचा जा सकता है।

शिक्षा का असली ढंग वही है जिसके द्वारा ख़ुशी ख़ुशी बच्चा स्वयं शिक्षा ग्रहण कर ले और उसे भार न समझे। वह ढंग वही वस्तु हो सकती है जो बच्चे को अधिक से अधिक रुचती हो। बच्चे को अधिक से अधिक रुचने वाली चीज खेल है। इसीलिए स्काउटिंग में खेलों की भरमार है। ऐसा विरला ही कोई विषय है, जो खेल से न सिखाया जा सके। मनचला स्काउट मास्टर स्वयं नये-नये खेल गढ़ सकता है। यदि खेलों द्वारा शिक्षा दी गई तो दल में बच्चों के आने का तांता बंधा रहेगा, लेकिन अगर घुटाई से काम लिया गया तो पक्षी उड़ जायँगे और स्काउट मास्टर सर खुजलाते रह जाँयगे।

ऊपर तीन शक्तियों का वर्णन किया जा चुका है। उन तीनों शक्तियों में आत्मिक शक्ति प्रधान है। इस बल विशेष को प्राप्त करने के लिए स्काउट को 'स्काउट नियम और प्रतिज्ञा' का पूरा अनुयायी बनना चाहिए। उनको कंठस्थ कर लेने से ही काम न चलेगा। कंठस्थ चाहें कम हों पर वे अमल में अच्छी तरह लाये जायँ। तभी आत्मिक शक्ति प्राप्त हो सकती है।

खोज लगाने वाले चिन्हों के खेलों द्वारा बच्चों में निरीक्षण शक्ति पैदा होती है और उस शक्ति द्वारा इधर उधर की चीजों की देख और अनुमान लगा कर स्काउट बड़ी बड़ी गुप्त बातें निकाल सकता है। यह चिन्ह मिनटों में सीखे जा सकते हैं पर निरीक्षण शक्ति महीनों के

लगातार अभ्यास से आती है। आशा है कि स्काउट इन्हें सिर्फ याद करके ही छुट्टी न पा लेंगे, बल्कि इनके खेलों को बीसियों बार खेल-खेल कर शेरलाक होम्स के भी गुरू बन जायँगे। तभी उनमें मानसिक शक्ति की उन्नति होगी।

कोमलपद की शिक्षा में ग्रन्थि-विद्या पहली सीढ़ी है। इस विद्या द्वारा दूसरों को समय पर मदद देने के अलावा स्काउट की उंगलियों में चपलता और कार्य कुशलता आती और स्वावलम्बन की बान पड़ती है। मगर गाँठ लगाने का अभ्यास इतने ऊँचे दर्जे का होना चाहिए कि नाम लेते ही उँगलियाँ उसी प्रकार गाँठ लगा कर रख दें, जैसे, अंधेरा हो या उजेला, हाथ ग़लती नहीं करता खाना मुँह में ही डालता है।

कोमलपद स्काउट को व्यायाम का भी अभ्यास करना चाहिए। जो लोहा इस्तेमाल में रहता है वह सदा चमकता रहता है मगर जो लोहा बेकार पड़ा रहता है उसमें केवल जङ्ग ही नहीं लगती बल्कि वह खिया-खिया कर मिट्टी में भी मिल जाता है। यही दशा शरीर की है। व्यायाम शरीर को सबल, स्वस्थ और कांतिमय बनाता, उसे बीमारियों का शिकार होने से बचाता और चिरायु करता है। शर्त यह है कि स्काउट नियमित रूप से व्यायाम करे। कोमलपद की शिक्षा में इसे भी स्थान है।

स्काउट में जातीयता और देश प्रेम कूट-कूट कर भरे होते हैं। इनके भरने के भी साधन हैं। वह साधन हैं—राष्ट्रीय पताका में अटूट प्रेम और अपने जातीय राग में प्रगाढ़ लगन। यह दोनों साधन कोमलपद की शिक्षा के अंग हैं। आशा है कि स्काउट उन पर यथा-विधि अमल कर दूसरों के लिये देशभक्ति और राष्ट्रीयता में मिसाल बनेंगे।

कोमलपद नाम से ही कमजोरी टपकती है। आशा है कि लड़के और लड़कियाँ 'कोमलपद' के गढ़े में पड़ कर नहीं सड़ेंगे। उन्हें जल्द से जल्द 'ध्रुवपद' और 'गुरुपद' स्काउट बनना चाहिए।

गेहूँ

श्री केदारनाथ अग्रवाल

(१)

आर-पार चौड़े खेतों में
चारों ओर दिशायें घेरे
लाखों की लम्बी संख्या में
ऊँचा गेहूँ डटा खड़ा है।
मुट्ठी ताकत से बाँधे है;
नोकीले भाले ताने है;
वीरों की प्यारी सेना-सा
मर मिटने को झूम रहा है।

(२)

फागुन की मस्ती के झोंके
दौड़े आते हैं उड़-उड़ के,
अंगों में बाहों में कस के
उसकी मति को मंद बनाने;
वैभव की चितवन के नीचे
गोदी में आतप के रख के
मीठी-मीठी नींद सुला के
उसका दृढ़ अस्तित्व मिटाने!

(३)

लेकिन गेहूँ नहीं हारता,
नहीं प्रेम से विचलित होता;
हँसिया से आहत होता है,
तन की-मन की बलि देता है;
पौरुष का परिचय देता है,
घातक दुख-संकट सहता है
अन्तिम बलिदानों से अपने
सबल किसानों को करता है।

कराची में समुद्र

श्री हर्षवर्द्धन वर्मा

मालूम नहीं कि कराची दूसरी बार कब जा सकूँगा। सन् १९४६ के दिसम्बर में हिन्दुस्तान स्काउट मेले के अवसर पर मैंने जो पहले-पहल कराची देखी और उसकी सजावट और शोभा से जिस तरह प्रभावित हुआ उनकी सुखद स्मृति अभी तक बनी है।

कराची स्काउट मेला एक शानदार मेला हो गया है और हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के इतिहास में चिर-स्मरणीय रहेगा। मेले के प्रबन्ध और सफलता के बारे में 'सेवा' के पाठकों ने पढ़ा और सुना होगा। मैं तो यहाँ अपने कराची-भ्रमण और कराची-अवलोकन के प्रोग्राम के एक भाग का, कराची में समुद्र देखने का वर्णन इस छोटे से लेख में करूँगा।

जैसे ही हमारी पार्टी कराची के केमारी के प्रसिद्ध बन्दरगाह पर ट्राम से उतरी और पोर्टिकों के अन्दर से प्लेटफ़ार्म पर आई मैंने देखा कि सौ वर्ग गज़ में एक तालाब की तरह जल खंड है; जो चारों ओर ज़हाज़ों और बड़े-बड़े पाल के नावों से भरा हुआ है। यह दृश्य देखने में अत्यन्त सुन्दर था। लेकिन मैं एकदम आश्चर्य में पड़ गया और निराश भी हुआ, क्योंकि मैंने तो पढ़ा और सुना था कि समुद्र हज़ारों मील लम्बा और चौड़ा होता है, जिस पर लम्बे-लम्बे और ऊँचे जहाज़ होते हैं और जहाज़ों पर लोग टेनिस और बेडमिंटन भी खेला करते हैं। लेकिन यहाँ तो एक बड़ा तालाब था। खैर, इसी बड़े तालाब में हमने एक 'शमशेर' नाम का जंगी जहाज़ देखा, जिसने पिछले महायुद्ध में दुश्मन के छक्के छुड़ाये थे। वह वैसा लम्बा-चौड़ा न था जैसा कि एक जहाज़ मैंने कलकत्ते में हुगली में देखा था, लेकिन जंगी जहाज़ होने के कारण एक लड़ने वाले सिपाही की तरह सुसज्जित था।

इतने ही में मोटर लेंच किनारे में लगी। हम लोग दौड़ कर उसमें जा बैठे और वह फड़-फड़ करती हुई चल दी। थोड़ी देर चलने के बाद वह एक जहाज़ के पास से निकली, तब मुझे मालूम हुआ कि मैं पढ़ने में महेन्द्र से दीघाघाट स्टीमर में जाने की तरह यहाँ भी जा रहा हूँ। उस समय हम लोगों की मोटर लेंच फ़ी घंटा १० मील की रफ्तार से ऊँची-ऊँची लहरों का सामना करती हुई और तीर की तरह उनको काटती हुई मनोरा टापू पर सीढ़ी के पास जा लगी। हम लोग उतर गये।

मनोरा टापू काफ़ी लम्बा चौड़ा है। इस पर लाइट हाउस (प्रकाश गृह) ब्रेक वाटर वाल (पानी के वेग को रोकने वाली दीवारें) है। लाइट हाउस बाहर से आने वाले जहाज़ों को रास्ता दिखाता है और ब्रेक वाटर वाल से धाराओं की गति किस ओर है मालूम होता है। यही दो चीज़ें मनोरा में मुख्य हैं। वैसे तो नेवी का स्कूल, नाटक, सिनेमा घर है और एक छोटा सा काम चलाऊ बाजार और कई होटलें भी हैं। वहाँ एक हिन्दू मन्दिर है, जहाँ दर्शकों को प्रसाद के रूप में पूरी और चटनी मिलती है। इसी के पीछे खुला समुद्र है। इसे देख कर मैं आश्चर्य में पड़ गया और समझ गया कि समुद्र सचमुच अनन्त होता है। जब उसकी लहरें दौड़ती हुई आगे बढ़ती थीं और फिर पीछे लौट जाती थीं तो समुद्र बहुत सुन्दर मालूम पड़ता था।

सबसे सुन्दर सूरज के डूबने का दृश्य मालूम हुआ, जब उसका प्रकाश धीरे धीरे समुद्र में धसता जा रहा था। सारा समुद्र मानों सूरज की लाली में रंग गया था। इसको देखने से मालूम हुआ कि कोई स्वर्गीय चीज़ देखी।

इस स्थान पर समुद्र को देख कर मैं समझ गया कि आरम्भ में जो तालाब की तरह दीखता था। वह समुद्र का एक घिरा हुआ भाग है. जहाँ बन्दरगाह के दफ्तर इत्यादि हैं। केमारी और मनोरा के अलावा क्लिफटन पर भी समुद्र तट की सैर का आनन्द मैंने लिया। क्लिफटन एक बहुत ही सुन्दर स्थान है और वहाँ समुद्र-तट पर पहले सजी हुई फूलों की लम्बी फैली हुई वाटिका, फिर रेत का मैदान और तब कुछ शांत, स्थिर जलराशि है। मैंने इस सुन्दर स्थान की शोभा रात में देखी और रात भी अंधेरी थी। शांत समुद्र कुछ डरावना सा मालूम होता था पर मैंने पानी में कुछ दूर चलने का साहस किया और सोचा कि कभी दिन में आकर क्लिफटन की शोभा देखूँगा। लेकिन अगले ही दिन मुझे इलाहाबाद के लिए प्रस्थान करना पड़ा।
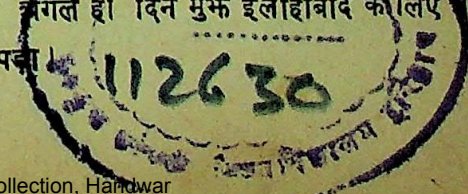
क्या स्काउटिंग अब भी है ?

श्री पुरुषोत्तमलाल चूड़ामणि

प्रश्न से स्पष्ट मालूम होता है कि स्काउटिंग पहिले से ही चली आ रही है। तीस वर्ष के जीवन में स्काउटिंग द्वारा युवकों और युवतियों में राष्ट्रीय भावनाओं का समावेश हुआ। संतुलित और स्वस्थ नागरिकों को इस संस्था ने जीवन के भिन्न-भिन्न विभागों की सेवा करने के लिये, तैय्यार किया। स्काउट शिक्षण ने शिक्षार्थियों में सामूहिक जीवन, समस्या का सामना करना, निर्भयता और देशभक्ति आदि गुण कूट-कूट कर भरे। यह कार्य उस समय किये जबकि ब्रिटिश शासन काल में हम पर कड़ी दृष्टि रखी जाती थी और समय-समय पर साम्प्रदायिक और राजनैतिक संस्था कहकर आघात किया जाता था। कठिनाइयों के काल में युवक और युवतियों के लिए वैधानिक रूप से हमारी ही संस्था शिक्षण देने के लिये उनका स्वागत करती थी और उनको समाज सेवा के लिये भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भेजकर तैय्यार करते थे। मनुष्य मात्र के लिये दरवाज़ा खुला था किसी जाति विशेष के लिये और किसी समय विशेष चीज़ न थी।

इसके कार्य की प्रशंसा समय-समय पर बापू जी, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री सरदार पटेल, डा० राजेन्द्र प्रसाद मौलाना आज़ाद आदि महानुभाव करते आये हैं। हमारे युक्त प्रान्त के मंत्रिमंडल ने साधारणतः और विशेषकर पं० गोविन्द वल्लभ पंत, श्री लालबहादुर शास्त्री, श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन, श्री केशवदेव मालवीय, श्री चन्द्रभान गुप्त और श्री सम्पूर्णानन्द जी ने एक ध्वनि से सराहना की है। जहाँ तक जनता का सम्बन्ध है, इस संस्था को ब्रिटिश काल में उन्हीं से धन और शक्ति प्राप्त हुई। यह सारी बातें इसके पक्ष में होते हुये स्वतंत्र भारत में इसने सर्वप्रियता का पद क्यों नहीं प्राप्त किया। क्या स्काउटिंग अब भी है? इस तरह की बात सुनने को मिलती है।

बहुत से छोटे छोटे कारण मिलकर इसकी इच्छित उन्नति न होने का विशेष कारण बनते हैं। आर्थिक संकट, नयी-नयी संस्थाओं का आविर्भाव, इसकी बागडोर अधिकांश में स्कूल शिक्षकों पर ही होना, स्काउट संस्था का देश की उथल पुथल को देखकर सरकार को उसकी योजनाओं में सहायता और सहयोग देना, ज़िला स्काउट संस्थाओं के स्थानीय कार्यकर्ताओं के मार्ग प्रदर्शन का अभाव, प्रचार और संगठन कार्यकर्त्ताओं और स्काउटों का नियम से कम से कम वार्षिक सम्पर्क का न होना, केवल ट्रेनिंग संस्थाओं के छात्रों को स्काउट मास्टर शिक्षण में अपने कार्य की समाप्ति समझना और साम्प्रदायिकता आदि कारणों ने मिलकर स्काउटिंग को केवल जीवित ही रहने दिया है।

स्काउट संस्था इस बात पर बल देती है कि स्काउट समस्याओं का हल करना सीखें। देश की उथल-पुथल ने स्काउट संस्था को भी विवेक बुद्धि दी कि संस्था देश के भिन्न-भिन्न निर्माण कार्यों के लिये स्काउटिंग वातावरण में दीक्षित युवक सरकार को देने में अपना गौरव और कर्त्तव्य अवश्य समझे परन्तु बालकों और बालिकाओं के शिक्षण पर ही अपनी शक्ति केन्द्रित रखे।

स्काउटिंग कार्य के शैथिल्य का कारण कुछ भाई बालकों की उदासीनता, रुपये की कमी, स्काउट शिक्षकों की अरुचि आदि बतलाते थे। मेरा अनुभव बिल्कुल इन बातों के विरुद्ध है। वास्तविकता के अभाव में मनुष्य कल्पना को कारण मानकर संस्था की या अपनी हानि बहुत कर बैठता है। स्काउट कैम्प में या स्काउट कार्यों में स्काउट शिक्षक के बिना भी आने को तैय्यार रहते हैं—एक दो जगह नहीं बल्कि अनेकों ट्रूपों से आते हुये देखा है। स्काउट बालक अपने-अपने घरों से खाने-पीने का सामान और उचित व्यय के लिए पैसे माँ-बाप की आज्ञा से लेकर आते हैं। डिस्टिक स्काउट कैम्पों में जिला—स्काउट संस्था और शिक्षालयों को नहीं के बराबर व्यय करना पड़ा है। स्काउट शिक्षकों की अरुचि को सतत सम्पर्क से ८०% प्रतिशत कम किया जा सकता है।

व्यायाम और संयम

श्री कर्नल शिवनाथ मिश्र

व्यायाम के उद्देश

शारीरिक व्यायाम का उद्देश है कि प्रत्येक मनुष्य का शरीर एवं चरित्र ठीक हो और उसमें उत्साह तथा देश-प्रेम की भावना भर जाय।

शारीरिक व्यायाम से मनुष्य के सभी अंगों का विकास होना चाहिए जिससे दिमाग, शरीर के और भागों पर अपना प्रभाव जल्द डाल सके। हर एक काम ठीक तरीके से किया जावे। यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि शरीर के अंग ही दिमाग के कल-पुर्जे हैं इसलिए दिमाग को इन्हीं अंगों के द्वारा बढ़ाया जा सकता है। शारीरिक व्यायाम केवल शरीर की उन्नति के लिए ही लाभदायक नहीं है बल्कि दिमाग को शिक्षित करने और चरित्र को सुधारने में भी सहायक होता है।

आवश्यकता

मनुष्य के शरीर की बनावट एक घड़ी या मशीन की तरह है। अगर घड़ी या मशीन को यों ही छोड़ दिया जावे कभी उसकी सफाई आदि पर ध्यान न दिया जावे तो थोड़े ही दिनों में वह बहुमूल्य वस्तु बेकार हो जावेगी। उसके सब पुर्जों पर मोर्चा लग जावेगा और सदैव के लिए वह कमजोर हो जावेगी। यही दशा मनुष्य के शरीर की है। मनुष्य का जीवन रक्त अथवा खून की चाल पर निर्भर है। व्यायाम उसकी चाभी है जिसके लगाने से शरीर के कल-पुर्जे चौबीस घंटे के लिए अपना-अपना काम ठीक तरह से करने को तैयार हो जाते हैं इसलिए व्यायाम प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए जिससे उसका शरीर स्वस्थ हो और ठीक से काम करता रहे। यह साबित हो चुका है कि जो मनुष्य नित्य प्रति व्यायाम करता है उसके पास रोग कभी फटक नहीं सकता।

व्यायाम मुख्यतः दो प्रकार से हो सकता है

(१) कसरत के रूप में यानी व्यक्तिगत तथा
(२) खेल कूद के रूप में यानी सामूहिक।

कसरत के रूप में—इसे अकेला व्यक्ति बहुत कम समय मिलने पर भी अपने आप कर सकता है। इसके लिए उत्तम यह होता है कि प्रातःकाल शौच तथा स्नान-ध्यान से निपटकर कम से कम १० मिनट नित्य प्रति पहले दंड फिर बैठक करें। प्रथम दिवस में १० दंड १० बैठक ही से प्रारम्भ करे और क्रमानुसार बढ़ाकर १०० तक पहुँचाया जावे। इसमें किसी प्रकार के खर्च की आवश्यकता नहीं है। दो ईंटों से दंड हो सकता है। कसरत करने के पूर्व, शरीर के कपड़े उतार कर खुली हवा में कसरत करना चाहिए। अधिक ठंडक की हालत में बनियाइन पहना जा सकता है। परन्तु उत्तम यही होगा कि शरीर एकदम खुला रहे। जिससे रोम के छेदों से पसीना निकल सके, और शुद्ध वायु का प्रवेश भीतर होता रहे। मुगदर भांज कर कसरत करने से भी बदन के कुछ हिस्सों पर विशेष लाभ पहुँचता है। दौड़ने के कसरत से भी बदन के अधिक हिस्सों को लाभ होता है। दौड़ के लिए भी खुली हवा ही ठीक है। केवल कसरत से शारीरिक पुष्टि तो अवश्य होती है परन्तु दिमागी शिक्षा नहीं हो सकती। इसके लिए खेल विशेष लाभदायक होता है। यों तो खेल कई प्रकार से खेले जा सकते हैं लेकिन, हाकी, फुटबाल, बास्कट बाल, वालीबाल, कबड्डी खो-खो आदि विशेष लाभप्रद हैं।

खेलों में मनुष्य को सोचना पड़ता है और जल्द से जल्द फैसला करना पड़ता है। जिससे शारीरिक और मानसिक दोनों शिक्षायें उत्तम रूप से व्यायाम के द्वारा पूरी हो जाती हैं। साथ ही साथ अपने साथियों पर इससे प्रेम भाव, मेल जोल बढ़ता है। इसलिए कसरत से खेल-कूद के व्यायाम विशेष लाभदायक समझे गए हैं। क्योंकि इसमें दिमागी और शारीरिक कल-पुरजे सभी एक साथ काम करते हैं। कोई भी पुरजा बेकार नहीं रहता। इन

स्काउटिंग को किसी से और किसी काल में घबड़ाने की गुंजाइश नहीं है। अन्य आंशिक योजनायें इसका मुक़ाबिला नहीं कर सकती हैं। इसके द्वारा मानव मात्र की शारीरिक, मानसिक और नैतिक उन्नति होती है और अन्यों से केवल एकाङ्गी। सर्वाङ्गीन स्काउट-शिक्षण की सफलता तभी सम्भव है जबकि प्रत्येक स्काउट कार्यकर्त्ता पहिले स्काउट हो और बाद में स्काउट-अधिकारी।

दोनों का मेल होनेसे कोई भी काम मानसिक या शारीरिक जल्द से जल्द किया जा सकता है। क्योंकि सोचने की शक्ति भी शारीरिक शक्ति के साथ बढ़ती जाती है।

संसार में वही राष्ट्र बड़ा शक्तिशाली समझा जाता है जिसके देश की जनता आरोग्य और शक्ति-सम्पन्न होती है। विदेशी राज्य होने के कारण हमारे मुल्क की संस्कृति-सम्यता, तथा स्वास्थ्य की विशेष हानि हो चुका है इसके ही कारण तरह-तरह के रोग भी हमें आकर घेर लिए — जिनसे छुटकारा मिलना बहुत कठिन हो रहा है। विशेष धन—डाक्टरी दवाओं में विदेश चला जाता है। इस लाभ से विदेशियों की लालसा पूरी हो रही है।

राष्ट्र को ऊँचा उठाने के लिए तथा बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए व्यायाम ही एक अमृत है इस अमृत का पान प्रत्येक प्राणी को करना चाहिए। व्यायाम करना हर मनुष्य का पैदायशी कर्त्तव्य है। इसी से कहा भी है कि :—

जो सुख से रहना चाहो तो।
व्यायाम करो व्यायाम करो,
जीवन को सफल बनाना हो,
व्यायाम करो व्यायाम करो।
निर्बल को सबल बनाने में,
रोगी को निरोग करने में।
भोजन का अन्न पचाने में,
शरीर को स्वस्थ्य बनाने में।
व्यायाम एक बढ़िया कल है,
व्यायाम करो व्यायाम करो,
सब अंग पुष्ट हो जाते हैं,
शत्रु हिय से भय खाते हैं।
सब काम सुलभ हो जाते हैं,
व्यायाम करो व्यायाम करो।
बल साहस, धैर्य्य बढ़े इससे,
सेवा में बढ़े कदम इससे।
हरि आनन्द बढ़े इससे,
व्यायाम करो व्यायाम करो।

प्रत्येक मनुष्य को यह गीत याद करना चाहिए और लिख कर अपने मकान पर टांग देना चाहिए। जिससे इसका प्रभाव प्रत्येक पार के प्राणी पर पड़े। यह तो हर एक आदमी देखता है कि फौज के जवान सदैव पुष्ट रहते हैं। उसका कारण केवल यही है कि वह लोग प्रति दिन नियमित व्यायाम करते हैं और शुद्ध वायु में रहते हैं।

युक्त प्रान्तीय सरकार ने इसी दृष्टि-कोण से रक्षक दल का निर्माण किया है कि प्रत्येक ग्राम में सेक्शन लीडरों के द्वारा गाँव के प्रत्येक प्राणी को व्यायाम करा कर रोगों का नाश किया जा सके और स्वास्थ्य, धन तथा उच्च भावना का पूर्ण विकास किया जा सके।

यह बहुत ज़रूरी है कि व्यायाम करने के बाद शरीर की मशीन को भोजन मिले। जिसके लिए हर मनुष्य अपने माली हालत के अनुसार कुछ अवश्य खावे। कम से कम १२ घंटे के भीगे हुए चने नमक से मिलाकर खाने से शरीर के पुरजों को काफी पुष्टि मिल जाती है। यदि सूखे मेवे, या हलुवा और दूध मिले तो और भी उत्तम है। १ पाव गरम दूध में १ चम्मच स्वच्छ घी १ चम्मच शक्कर से व्यायाम के बाद बड़ा लाभ हो सकता है।

संयम

यह अति आवश्यक है कि व्यायाम संयम और नियमपूर्वक किया जावे व्यायाम करने का उत्तम समय प्रातःकाल ही है। हर रोज एक निश्चिय समय पर काम करना चाहिए। यदि २-४ दिन व्यायाम किया जावे और फिर २-४ दिन छोड़ दिया जावे, तो उससे लाभ के बजाय हानि होगी। मनुष्य को समय पर दृढ़ रहना चाहिए। प्रत्येक काम के लिए खाना-पीना व्यायाम करना सोना आदि के लिए समय निश्चित करना चाहिए और नियमानुसार समय-समय पर प्रत्येक काम करना चाहिए।

योरप में खाने-पीने का संयम नियम बहुत दृढ़ है प्रत्येक मनुष्य उसी समय पर भोजन करता और सोता है जो समय निश्चित है। इससे उन देशों में स्वास्थ्य और धन दोनों है। अपने देश में स्वास्थ्य और धन दोनों बढ़ाने के लिए हमको अपनी पुरानी पद्धति जो लाभदायक थी उसी पर पुनः चलकर अपने राष्ट्र को सुदृढ़ और सुन्दर बनाना है।

अन्तरप्रान्तीय समाचार

उज्जैन

मध्य भारत व्वाय स्काउट व गर्लगाइड रैली ता० ३, ४, ५ व ६ मार्च १७४८ को उज्जैन में हो रही है। रैली का उद्घाटन करने की चीफ स्काउट हिजहायनेस राज-प्रमुख मध्य भारत ने कृपावन्त होकर स्वीकृति प्रदान की है तथा प्रदर्शनी का उद्घाटन करने का श्रीमती अखंड सौ० महारानी साहिबा सिंधिया ने स्वीकार किया है।

आबूरोड

आबूरोड 'मालवीय ग्रुप तथा कस्तूरबा ग्रुप के स्काउटों और वीरबालाओं ने ता: ३०-१-४६ को 'पूज्य बापू की बरसी' मनाई। बापू की स्मृति में इस दिन स्काउटों तथा वीरबालाओं ने आबूरोड से लगभग तीन मील दूर स्थित 'शान्तपुर' नामक गाँव के हरिजनों के सबसे गन्दे मुहल्ले की सफ़ाई की।

स्काउटों तथा वीरबालाओं ने जुलूस, सभा, और कीर्तन आदि में भी पूर्ण रूप से भाग लिया।

अखिल भारतीय कांग्रेस के ५५ वें अधिवेशन में, जो गान्धी नगर में हुआ था, (१५ दिसम्बर' ४८ से २० दिसम्बर' ४८) आबूरोड से भी मालवीय ग्रुप के लगभग ४० स्काउट तथा कस्तूरबा ग्रुप की लगभग २० वीरबालाएँ स्वयंसेवक व सेविकाएँ बनकर स्काउटर सोहन लाल कटारिया के नेतृत्व में, जो आबूरोड के दलपति थे, सेवार्थ गये। वहाँ स्काउटों ने "नेतानिवास" में सफाई का कार्य किया। वीरबालाएँ भी सफाई विभाग में थीं। १२ दिन गान्धीनगर में सेवा करने के पश्चात् निर्भीकिता, उत्साह फुर्ती, स्वावलम्बन, प्रेम, सेवा, आज्ञापरायणता, एवं सहनशीलता आदि शिक्षाएँ ग्रहण कर आनन्दपूर्वक आबूरोड लौट आये।

ता० १-६-४८ सोमवार को कस्तूरबा ग्रुप की वीरबालाएँ विजयासिनी देवी के आसपास के पहाड़ों और जंगलों में भ्रमणार्थ गयीं। दिन भर भ्रमण करके आनन्दपूर्वक लौटीं। इस भ्रमण में उन्हें निम्नांकित विषयों का ज्ञान प्राप्त हुआ —

स्काउट चाल, प्राथमिक चिकित्सा, पेड़, पत्थर, घास और चाकू के निशान, सीटी के इशारे, स्काउट गीत और सिंहनाद।

समस्तीपुर (बिहार)

३० जनवरी १६४८ को परम पूज्य बापू जी की वर्षी "प्रह्लाद ट्रुप हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन मगरदही के स्काउटों ने नीचे लिखे कार्य-क्रम द्वारा मनाई गई।

कार्य-क्रम

१—४॥ बजे सुबह रामधुन के साथ प्रभात फेरी।

२—अपने पास के हरिजन मोहल्लों की सफाई।

३—कताई और रामधुन तथा गीता पाठ।

४—अपने पास के नदी के घाट पर स्काउट टोलियाँ बनाकर कीर्तन करते हुए जाकर श्रद्धाञ्जली अर्पित कर समाप्त किया।

दिल्ली

हीरा लाल जैन हाई स्कूल सदर बाजार दिल्ली में स्काउटों द्वारा आयोजित सभा में श्री मोहन लाल सक्सेना पुर्नवास मंत्री ने अपने भाषण में कहा कि हमें अपने देश को ऊंचा उठाने के लिये अपने सारे समाज को, सच्चा एवं आदर्श नागरिक बनाना होगा। आपने उदाहरण देते हुये नागरिकता के प्रत्येक अंगों का तात्पर्य समझाया।

स्काउटिंग की सराहना करते हुये उन्होंने कहा कि यह संस्था देश के लिये हितकर है। स्काउटों को चाहिये कि अपने आदर्श जनता के सम्मुख उपस्थित करें। परतंत्रता की पुरानी भावनाओं को त्याग कर अपने दृष्टि-कोण को परिवर्तित कर और समझें कि कर्तव्य ही हमारे अधिकार हैं।

श्री मोहन लाल सक्सेना ने सभापतित्व के कार्य को संपन्न करते हुये स्काउटिंग से अपने पुराने सम्बन्धों को बताया। आपने आशा प्रगट की कि स्वतंत्र भारत में स्काउटिंग को अधिक पुष्पित-पल्लवित होने के सौभाग्य प्राप्त होंगे।

श्रीमती सरला शंकर, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, बालिका-विभाग ने हरद्वार, सहारनपुर, मेरठ, अलीगढ़, मथुरा और आगरा का दौरा किया।

हरद्वार

१२ जनवरी को पहुँच कर स्काउटिंग के कार्य को देखा। वहाँ इस समय ७० बालिका स्काउट शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। कार्य अत्यन्त उत्साह के साथ हो रहा है।

सहारनपुर

गवर्नमेन्ट गर्ल्स स्कूल में १७ से २३ जनवरी सन् ४६ तक बालिका स्काउट कैप्टेन और पैट्रोल लीडर्स को ट्रेनिंग दी गई। उनकी सम्मिलित संख्या ४० थी। इनमें से बहुत सी लड़की रुड़की, गंगों आदि स्थानों से आई थीं।

मेरठ

शहर की ३०० बालिका स्काउटों के कार्य का निरीक्षण किया गया।

अलीगढ़

२६ से २६ जनवरी तक टीकाराम गर्ल्स कालेज में ७० बालिका पेट्रोल लीडर्स तथा ४ स्काउट कैप्टन को स्काउटिंग की ट्रेनिंग दी गई। कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए महिला स्काउट कार्यकर्त्ताओं की सभा की गई। जिसमें वेमेंस कालेज की प्रिंसिपल श्रीमती मुमताज बेगम को अध्यक्ष और टीकाराम गर्ल्स कालेज के प्रिंसिपल श्रीमती शान्ती जी को मंत्री चुना गया। इसमें अन्य स्कूलों की प्रधानाध्यापिकाओं ने भी भाग लिया। इसके पहले वहाँ कोई महिला स्काउट संगठन नहीं था।

मथुरा

३१ जनवरी से ४ फरवरी ४६ तक किशोरीरमण गर्ल्स कालेज में गर्ल्स स्काउट कैप्टन और पैट्रोल लीडर्स की ट्रेनिंग हुई जिनकी संख्या १०७ थी। २ फरवरी को २४ घंटे के लिए ब्राह्मण घाट पर बनोपसेवन के लिए जाया गया। कैम्प फायर उत्सव में अन्य प्रतिष्ठित महिलाओं के साथ श्रीमती उमा देवी धर्मपत्नी जिलाधीश भी उपस्थित हुईं। इस कैम्प की सफलता का अधिकांश श्रेय श्रीमती गायत्री गुप्ता डि० स्का० कमि० बालिका विभाग एवं प्रिंसिपल किशोरीरमण गर्ल्स कालेज को है जो सदैव ऐसे कार्यों में भाग लेती रहती हैं।

आगरा

५ से ७ फरवरी तक प्रेम विद्यालय गर्ल्स कालेज दयालबाग में लगभग १०० बालिका स्काउटों को ट्रेनिंग दी गई। ७ फरवरी को ३४ बालिका स्काउटों का दीक्षा संस्कार किया गया और ८ फरवरी को शहर के बालिका स्कूलों का और जिलों के स्काउट कार्य का निरीक्षण किया गया।

× × ×

श्री हरिदास पाण्डेय री० स्का० आ० प्रधान कार्यालय के आदेशानुसार स्थानीय बालिका शिक्षालयों में सेवा शिक्षा तथा स्काउटिंग शिक्षा दे रहे हैं। डिस्ट्रिक्ट बालिका विभाग की ओर से एक वृहत् बालिका शिविर का आयोजन किया गया है जो कि १६-१७ तथा १८ फरवरी को होगा और जिसमें लगभग सभी स्थानीय

बालिका शिक्षालयों के स्काउट भाग ले रहे हैं। शिविर के अन्तिम उत्सव को सम्पन्न करने के लिये श्रीमती सरोजनी नाइडू गर्वनर युक्त प्रान्त भाग लेंगी।

× × ×

श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर और श्री एच० विलियम्स रीजनल स्काउट आर्गनाइजर ने बहराइच, गोंडा, नबाबगंज का दौरा किया। बहराइच में स्काउट कार्यकर्त्ताओं की एक सभा श्री भगवानदीन वैद्य, एम० एल० ए० के सभापतित्व में हुई जिसमें नये जिला स्काउट कमिश्नर श्री भगवत प्रसाद रिटायर्ड चीफ़ जस्टिस चुने गये और डि० बो० से ६००) स्काउट कार्य को चलाने के लिए प्राप्त हुये जिसमें एक स्काउट आर्गनाइजर के रखने का प्रबन्ध किया गया।

गोंडा में भी स्काउट कार्यकर्त्ताओं की सभा की गई। उसमें शर्मा जी ने नये ढंग से कार्य को चलाने का सुझाव दिया।

नवाबगंज में श्री शिवकुमारलाल श्रीवास्तव के प्रयत्न से डी० ए०वी० हायर सैकंडरी स्कूल में स्काउट रैली हुई। उसमें शर्मा जी ने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि स्काउटिंग के द्वारा ही नागरिकता, आंतरिक अनुशासन और उत्तरदायित्व की भावना पैदा की जा सकती है।

सर तेज बहादुर सप्रू का देहावसान २० जनवरी की रात्रि को ७३ वर्ष की अवस्था में हुआ। वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के प्रसिद्ध वकील, राजनीतिज्ञ तथा देशभक्त थे। वे अखिल भारतीय ब्याय स्काउट संस्था के चीफ कमिश्नर भी रह चुके थे।

ता० २१ को प्रान्तीय हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के कार्यालय में शोक सभा मनाई गई तथा उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। उस दिन कार्यालय बन्द किया गया।

श्री डी० एल० आनन्द राव प्रान्तीय प्रचार कामिश्नर तथा श्री प्राणनाथ शर्मा और श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर ने उनके निवास स्थान पर जाकर असोसिएशन की ओर से उनके शव पर पुष्पों की मालाएँ चढ़ाईं।

फ़ैजाबाद

स्काउटिंग द्वारा ग्राम सुधार योजना के अनुसार ग्राम भदौली में १४ जनवरी सन् ४६ को एक ग्राम स्काउट रैली का आयोजन किया। रैली में ६० ग्राम स्काउटों ने भाग लिया। झन्डारोहण के बाद स्काउट प्रदर्शन हुये और स्काउटों द्वारा मार्चपास्ट का निरीक्षण श्री धीरेन्द्र भाई मजूमदार ने किया। स्काउटों के प्रदर्शन से जनता बहुत ही आकर्षित हुई और आसपास के गाँवों में इस कार्य को उनके यहाँ प्रारम्भ की माँग की गई। यह कार्य भदौली, द्वारकापुर, जगदीशपुर, तथा मेदनीपुर में शुरू किया गया है और इसके संचालन का भार श्री रामवरन त्रिपाठी, सुरेशदत्त तथा अम्बिका प्रसाद ग्राम स्काउट आर्गनाइज़र ग्राम सुधार विभाग पर है। इस ज़िले के लगभग ४५ आर्गनाइज़र्स को श्रीयुत प्रियपाल गुप्ता डिप्टी रजिस्ट्रार डेवलपमैन्ट के आदेशानुसार ग्राम सुधार की शिक्षा देकर गाँवों में भेजा गया है।

रात को एक विराट कैम्पफ़ायर किया गया जिसे जनता ने ख़ूब पसन्द किया। धीरेन्द्र भाई तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। श्री ओमप्रकाश शास्त्री डि० स्काउट आर्गनाइज़र ने स्काउटिंग द्वारा ग्राम सुधार योजना पर पूर्ण प्रकाश डाला और स्काउटों को स्काउटिंग तथा उनके कर्त्तव्य समझाये।

ज़िले के लगभग ४० केन्द्रों पर यह प्रयोग किया जा रहा है।

स्काउट-मास्टर शिक्षण शिविर आजमगढ़

स्थानीय हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन के तत्वावधान तथा श्री पौहारी पाण्डेय रीजनल आर्गनाइज़र की अध्यक्षता में सिधारी स्थित प्रायमरी स्कूल में स्काउट मास्टरों का एक शिक्षण शिविर ४-१-४६ से १३-१-४६ तक चलाया गया। जिसमें ज़िले के भिन्न-भिन्न हायर सेकेण्डरी स्कूल के अध्यापक सम्मिलित हुये। वनोपसेवनार्थ शिक्षार्थी चन्डेसर के बाग में डेरा डाल कर रात्रि निवास किये और वहीं पर श्री ब्रह्मचारी जी के सभापतित्व में एक कैम्पफ़ायर का आयोजन किया गया जिसमें हजारों की संख्या में ग्रामीण एकत्रित होकर इस अवसर से लाभ उठाये। प्रदर्शनों एवं व्याख्यानों द्वारा पंचायत राज्य ऐक्ट का प्रचार किया गया। १२-१-४६ को श्री शोलापुरकर के सभापतित्व में

बृहत कैम्पफ़ायर किया गया और १३-१-४६ को श्री सीता राम अष्ठाना के सभापतित्व में स्काउटों को दीक्षित किया गया और स्काउटों ने उपस्थित जनता को अपने प्रदर्शनों द्वारा प्रभावित किया। बाबू गंगाराम हेडमास्टर श्री दुर्गा जी हायर सेकेण्ड्री स्कूल चन्देसर, बाबू भवानी प्रसाद वकील, श्री वाई थियोफिलस ज़िला स्काउट कमिश्नर, श्री एम० एस० शोलापुरकर तथा श्री सीताराम अष्ठाना ने भाषण दिये। श्री महेन्द्र नाथ ने शिविर संचालन में सहयोग दिया। श्री राजनाथ सिंह जिला आर्गनाइजर ने सहायक संचालक का कार्य उत्तमता से सम्पन्न किया।

× × ×

स्काउट मास्टर्स कौंसिल की बैठक श्री अब्दुल समद स्काउट मास्टर शिवली हाई स्कूल के सभापतित्व में शिविर में हुई और नये सदस्यों के भर्ती एवं कौंसिल के कार्य-क्षेत्र को और विस्तृत करने पर विचार विनिमय हुआ।

स्काउट मास्टर ट्रेनिंग कैम्प बलिया

ज़िला हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन बलिया के तत्वविधान में स्थानीय राजकीय दीक्षान्त विद्यालय में स्काउट मास्टरों का एक शिक्षण शिविर १७-१-४६ से २७-१-४६ तक सम्पन्न हुवा। शिविर का संचालन श्री पोहारी पाण्डेय रीजनल आर्गनाइज़र ने किया। श्रीकपिल-देव पाण्डेय सहायक इन्सपेक्टर ग्राम-सुधार-विभाग के सहयोग से स्काउटों ने गोठौली ग्राम में समाज सेवा कैम्प किया जहाँ पर रात्रि में एक कैम्पफायर किया, जिसके द्वारा ग्राम-सुधार पंचायत राज्य तथा अन्य शिक्षा सम्बन्धी बातों का प्रचार किया। श्री पौहारी पाण्डेय ने स्काउटिंग द्वारा ग्राम-सुधार पर सुन्दर प्रभावपूर्ण भाषण दिया। प्रातःकाल झण्डा प्रार्थना के बाद स्काउट दल फावड़ा, झाड़ू, डलिया, खुरपा आदि लेकर राष्ट्रीय गीत गाते हुये गोठौली तथा जीरा बस्ती ग्राम में चल पड़े। ग्राम सफाई सोख्तों का निर्माण तथा रास्ते आदि बनाने के बाद ग्राम-स्काउट-दल तथा शिविर के स्काउटों से खेल प्रतियोगिता रस्साकशी, गोला फेंकना आदि कार्यक्रम चला।

२६-१-४६ को स्थानीय राशनिंग ऑफीसर के सभा-पतित्व में सुन्दर प्रभाव पूर्ण बृहत कैम्पफायर हुआ जिसे जनता ने बहुत पसंद किया। २७-१-४६ को श्री परमात्मा-नन्द सिंह, एम० एल० सी० के सभापतित्व में स्काउटों को दीक्षित किया गया। इस अवसर पर एक रैली का भी आयोजन किया गया था। इसी समय पर नव दीक्षित स्काउटों की परीक्षा आँधी और तूफ़ान ने किया जिसमें स्काउट सफल रहे।

नारमल स्कूल के ५३ छात्राध्यापकों के अतिरिक्त ५ हाई स्कूलों के अध्यापक भी इसमें शामिल रहे। कार्य-क्रम के सफलता का श्रेय श्री लक्ष्मण प्रसाद खन्ना हेड-मास्टर नौर्मल स्कूल के सक्रिय सहयोग ही को दिया जा सकता है।

× × ×

श्री पौहारी पाण्डेय रीजनल आर्गनाइज़र पड़रौना में ३०-१-४६ से स्थानीय नारमल स्कूल में शिक्षण शिविर का संचालन कर रहे हैं। जिसमें ६६ छात्राध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

बस्ती (बांसी)

१७ दिसम्बर से २० दिसम्बर तक शिविर कैम्प की योजना आरगैनाइजिंग स्काउट मास्टर श्री कौशल किशोर ने की, कैम्प में शिक्षण को लेकर कुल ४० व्यक्ति शरीक थे। शिक्षक, श्री आनन्द प्रसाद गौड़, श्री महेश्वर प्रसाद स्काउट मास्टर श्री कृपाशंकर एजीलिटी मास्टर तथा श्री कौशल किशोर थे।

कैम्प का उद्घाटन श्री कृपाशंकर एम० एल० ए०, श्रीमान राजा बहादुर बांसी, दीवान बांसीराज तथा श्री सुलेमान अदहमी मैनेजर रतनसेन हाईस्कूल द्वारा हुआ और विसर्जन श्री मुंसिफ साहेब बांसी द्वारा हुआ। कैम्प के अन्त में मिठाई, प्रमाण-पत्र, तथा बैज और पुरस्कार दिए गए।

झांसी डिवीजन

श्री प्रेम बिहारी भान, रीजनल स्काउट आर्ग-नाइजर ने झांसी तथा लखनऊ डिवीजन के निम्नांकित शिक्षण शिविरों का संचालन किया।

३-१२-४८ से ७-१२-४८ तक कालपी में टोली नायकों के लिए शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ६३ टोली नायकों ने भाग लिया। कैम्प का उद्घाटन श्री चन्द्रभान विद्यार्थी, प्रधान मंत्री हिन्दी

भवन कालपी ने किया और अन्तिम उत्सव श्री काशीनाथ मिश्र, प्रधान हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन कालपी की अध्यक्षता में हुआ।

× × ×

८-१२-४८ से १२-१२-४८ तक उरई में ४६ टोली नायकों का ट्रेंनिग कैम्प हुआ कैम्प का उद्घाटन श्री चतुर्भुज शर्मा, एम० एल० ए० ने किया और अन्तिम उत्सव पं० श्रीधर दुबे, वकील की अध्यक्षता में हुआ।

× × ×

१५-१२-४८ से २२-१२-४८ तक मौदहा (हमीरपुर) में टोली नायकों का ट्रेनिंग कैम्प किया गया, जिसमें ४६ टोली नायकों ने भाग लिया। कैम्प का उद्घाटन प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ता श्री रामगोपाल गुप्त ने किया। अन्तिम उत्सव श्री अब्दुल रशीद सबडिप्टी इन्सपैक्टर की देख-रेख में हुआ।

× × ×

८ जनवरी से १० जनवरी ४९ तक स्काउट बालिकाओं का शिक्षण शिविर गवर्नमेन्ट गर्ल्स नार्मल स्कूल झांसी में किया गया जिसमें विभिन्न अवस्थाओं की ८९ बालिकाओं ने शिक्षा प्राप्त की।

झांसी जिला असोसिएशन कैम्प ता० ११ से १४ जनवरी तक उन्नाव (बालाजी) में किया। इसमें झांसी के समस्त स्कूलों के स्काउट, रोवर स्काउट तथा गर्ल स्काउट ने भाग लिया। जिनकी संख्या १४९ थी। अन्तिम कैम्प फायर के दिन दर्शकों की उपस्थिति हजार के लगभग थी। कैम्प की सफलता का अधिकांश श्रेय गर्ल स्काउट असोसिएशन झांसी की मंत्राणी, प्रधानाध्यापिका गवर्नमेन्ट गर्ल्स् स्कूल झांसी, श्री पी० के० चटर्जी, जिला स्काउट कमिश्नर, श्री ए० के० मुखर्जी सहायक मंत्री तथा श्री बालिकाप्रसाद शुक्ल, वि० दि० इन्टर कालेज झांसी को है।

× × ×

सीतापुर (खैराबाद)

२० जनवरी से २३ जनवरी तक खैराबाद में कब मास्टरों तथा शेर बच्चों का कैम्प किया। अन्तिम कैम्पफायर में बालवीरों ने अत्यन्त ही मनोरंजक तथा आकर्षक खेल दिखाये। इस कैम्प को सफल बनाने में श्री भोलानाथ चौधरी शिक्षा सुपरिन्टेन्डेन्ट म्युनिसिपल बोर्ड से विशेष सहायता प्राप्त हुई।

लखीमपुर खीरी

२४ जनवरी से २७ जनवरी तक शेर बच्चों तथा टोली नायकों को कैम्प हुआ जिसमें १२९ शेर बच्चों तथा ४० टोली नायकों ने भाग लिया। स्काउट मास्टरों तथा कब मास्टरों की संख्या १३ थी। २६ जनवरी को अन्तिम कैम्प फायर में नगर के लगभग सभी उच्चाधिकारियों ने भाग लिया। श्री गुप्त जी सिविल जज तथा श्री रैवन्यू अफसर महोदय ने कविता पाठ किया।

श्री पुरुषोत्तमलाल चूड़ामणि ने ६ जनवरी से ६ फरवरी तक खैराबाद, लखीमपुर, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, सीतापुर, उन्नाव, लखनऊ, बरेली, उझानी, हाथरस, फ़िरोजाबाद, मुरसान का दौरा किया। इस अवधि में स्काउट मास्टर-सम्पर्क सभायें, ट्रूप निरीक्षण, स्काउट ट्रेनिंग, रैली और केम्प फायर आयोजन, स्काउट दीक्षा भाषण, समाज सेवा आदि कार्य साधारणतः किये, स्थान वार निम्न प्रकार है—

खैराबाद

रैली में भाषण दिया-कब मास्टरों और स्थानीय प्रमुख महानुभाओं की सभा थी। असोसिएशन का निर्माण हुआ। श्री भोलानाथ चौधरी सहायक स्काउट कमिश्नर चुने गये।

लखीमपुर

स्थानीय ट्रूपों के स्काउटों को सम्मिलित रूप से ट्रेनिंग और स्थानीय कार्यकर्त्ताओं से भेंट की। स्काउट केम्प का आयोजन निश्चित हुआ।

पीलीभीत

शेर बच्चों और स्काउटों को दो दिन तक ट्रेनिंग दी। ज़िला स्काउट केम्प के आयोजन का स्काउट कार्यकर्त्ताओं की सभा में निश्चय हुआ। श्री ओमप्रकाश गोयल रीजनल स्काउट और गनाइज़र ने शहर के स्काउटों को एक दिन का चार मील की दूरी पर केम्प कराया और सायंकाल को केम्प फायर कराया।

शाहजहाँपुर

रात्रि पाठशाला का निरीक्षण डा० जयनारायण सक्सेना ज़िला स्काउट कमिश्नर के साथ किया, स्काउट केम्प आयोजन का निश्चय हुआ। राजकीय हाई स्कूल और मुसलिम हाई स्कूल में स्काउटिंग पर भाषण दिये।

सीतापुर

असोसिएशन कार्यकर्त्ताओं की सभा में दो दिन के स्काउट-केम्प का होना निश्चय हुआ। म्यूनिसपल बोर्ड के विद्यार्थियों को भाषण दिया और शिक्षकों को स्काउटिंग कार्य संचालन की विधि बतलाई।

उन्नाव

पं० विश्वम्भर दयाल के सभापतित्व में सुभाष कालेज के छात्रों को भाषण दिया। असोसिएशन के कार्यकर्त्ताओं ने दो दिन के ज़िला स्काउट केम्प का निश्चय किया। संस्था की प्रगति से उन्हें परिचित कराया।

प्रयाग

खादी विद्यापीठ के भाइयों को श्री प्रभूदासजी गांधी संचालक के इच्छा प्रगट करने पर स्काउट ट्रेनिंग की उपयोगिता क्रियातत्मक रूप से अनुभव कराई गई। भाई प्रभूदास जी गांधी विद्यापीठ के प्रत्येक भाई को स्काउटिंग से लाभान्वित चाहते हैं।

लखनऊ

पूअर हाउस के स्काउट-ट्रुप का निरीक्षण श्री० पी० के० रौय आँरगैनाइज़िंग मंत्री ने कराया। स्काउटों को खेल कराये और उपयोगी बातें बतलाईं। बखशीताल में हरिजन सहायक केम्प में हरिजन और उनके उद्धार पर भाषण दिया। सांयकाल को केम्प फायर कराया गया।

बरेली

श्री तिलक हाईस्कूल, मिशन हाईस्कूल, सरस्वती विद्यालय और गुलाबराय हाईस्कूल में छात्रों को भाषण दिये। स्थानीय ट्रुपों के स्काउटों को शहर में आयोजित ट्रेनिंग का निरीक्षण किया। स्काउट कार्यकर्त्ताओं की ज़िला स्काउट केम्प आयोजन के लिये मीटिंग कराई। केम्प फायर का सभापतित्व ग्रहण किया। ३० जनवरी को बरेली स्काउटों को लेकर सैदपुर ग्राम में समाज सेवा का कार्य कराया।

श्री कृष्ण मुरारीलाल और श्री ओमप्रकाश गोयल रीजनल ऑरगैनाइज़र ने रचनात्मक प्रोग्राम को सफल बनाया। ग्राम सफाई ग्राम-समस्याओं और उनका सुधार-कार्य स्काउटों द्वारा सराहनीय ढंग से किये।

उझानी

म्यू० बोर्ड हाई स्कूल के छात्रों और स्काउटों को भाषण दिया गया। दीक्षा संस्कार भी सम्पन्न किया।

हाथरस

बागला कौलेज और राजकीय हाईस्कूल के छात्रों को भाषण दिये और स्काउटिंग कार्य संचालन के लिये साहित्य मँगाने और स्काउट शिक्षा को शिक्षण दिलाने के लिये प्रिंसिपल साहिबान को सलाह दी।

मुरसान

मुरसान हाई स्कूल के छात्रों को भाषण दिया और स्काउट ट्रुप का निरीक्षण किया।

मथुरा

श्रीमती सरला शंकर प्रचार कमिश्नर बालिका विभाग के सभापतित्व में किशोरी रमन कौलेज की छात्राओं और स्काउटों को स्काउट उपयोगिता पर भाषण दिया।

फिरोजाबाद

फिरोज़ाबाद में असोसिएशन का निर्माण करवाया और दयानन्द सैकन्डरी हाईस्कूल के छात्रों को उनके कर्तव्य और स्काउटिंग पर भाषण दिया। स्काउट केम्प का निश्चय किया।

लखनऊ

लखनऊ जिला स्काउट असोसियेशन के तत्वाधान में प्रेमविहारी भान रीजनल स्काउट आगर्नाइजर ने एक ३ दिन का कैम्प अलीगंज के निकट किया। इस कैम्प में ध्रुवपद शिक्षण की शिक्षा दी गयी। नेशनल हायर सैकंडरी स्कूल, नवयुवक संघ स्काउट दल, तथा सोसल सर्विस लीग के बालचरों ने भाग लिया। ध्रुवपद-बालचरों के साथ शेर बच्चों ने भी कैम्प में भाग लिया और उन्हें भी सेकंड क्लास की शिक्षा दी गयी। भाग लेने वालों की संख्या लगभग ६० थी। कैम्प का निरीक्षण

जिला कमिश्नर श्री श्रीनारायण तिवारी और सहायक जिला कमिश्नर श्री गंगाप्रसाद भट्ट ने किया। उक्त दोनों सज्जनों ने रात्रि के कैम्प फायर में भी भाग लिया। गाँवों में जाकर नशाबन्दी और शिक्षा प्रचार का कार्य किया गया। कैम्प में श्री चरण सिंह, ग्रुप लीडर नवयुवक-संघ, श्री प्रतापनारायण सिंह ग्रुप लीडर, मोतीलाल ग्रुप और श्री रामदयाल स्काउट मास्टर नवयुवक दल ने विशेष उत्साह से कार्य किया।

× × ×

श्री रामदेव भार्गव रीजनल ऑरगेनाइज़र ने जनवरी माह में २० दिन बुलन्दशहर, आगरा, मथुरा, महावन, गंजडुडवारा का दौरा किया। दस ट्रुपों का निरीक्षण किया। सैकिन्ड क्लास उतीर्ण रोवर स्काउटों के लिये तीन स्काउट मास्टर्स कैम्प अन्य स्काउट शिक्षकों की सहायता से किये। सी० टी० और नारमल स्कूल महावन में स्काउट मास्टर्स ट्रेनिंग कैम्प हुआ। आखिरी जलसे के सभापति इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल मथुरा थे। स्काउट मास्टर ट्रेनिंग कैम्प का अन्तिम उत्सव बुलन्दशहर में ज़िला शिक्षा निरीक्षक के साथ किया। तीसरा कैम्प गंजडुडवारे में नार्मल स्कूल के छात्रों के लिये किया। दो रैली और तीन वनोपसेवन किये।

शाहजहाँपुर

इस्लामियाँ हायर सेकेन्डरी स्कूल, शाहजहाँपुर में स्कूल के स्काउटों द्वारा एक कोर्ट आफ आनर ता० ४-१२-४८ को बनाया गया। तत्पश्चात् श्री रामप्रकाश दीक्षित 'साहित्यरत्न', स्काउट मास्टर के उद्योग व समस्त स्काउटों के प्रयत्न से स्थानीय जिला स्काउट कमिश्नर, ज़िला विद्यालय निरीक्षक तथा स्कूल के प्रिन्सिपल श्री आस मुहम्मद मलिक, एम० ए०, बी० टी, एवम् श्री फ० र० खाँ एम० एल० ए० का स्वागत किया गया। जिला स्काउट कमिश्नर श्री० जैय नारायण सक्सेना ने स्काउटिंग पर एक सारगर्भित भाषण दिया।

ता० १२ जनवरी सन् १९४९ को सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि ने स्कूल में आकर स्काउट रूम व स्काउटों का निरीक्षण किया और स्काउटों के सम्मुख वनोपसेवन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्काउट मास्टर श्री रामप्रकाश दीक्षित के कार्य की प्रशंसा की।

चाँदपुर (बिजनौर)

बिजनौर की डिस्ट्रिक्ट इन्सपेक्टर्स के चाँदपुर की वैदिक कन्या पाठशाला का निरीक्षण करते समय इच्छा प्रकट की कि गर्ल स्काउट और बुलबुल कुछ कार्य दिखायें, फलस्वरूप ता २९-१-४९ को गर्ल स्काउट तथा बुलबुलों के व्यायाम, खेल तथा चिह्न इत्यादि दिखाये गये। वे प्रसन्न हुईं और उन्होंने एक स्काउट सम्बन्धी भाषण स्काउट तथा बुलबुलों को दिया। लड़कियों ने उन्हें धन्यवाद दिया। उसके बाद वह स्काउट कैप्टेन के साथ-साथ उनके घर पर आईं। आज बसन्त पञ्चमी के उत्सव पर गर्ल स्काउट तथा बुलबुलों ने ३-४ एकांकी नाटक किये। जिसमें "पन्ना धाय" का नाटक और "पाण्डवों" का नाटक अच्छा रहा। स्त्रियों की भीड़ बहुत थी। अन्त में श्रीमती सरला शंकर का लेख "हमारा उत्तरदायित्व" पढ़ कर सुनाया गया। जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा।

देहरादून

हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन देहरादून ने काश्मीर से वापिस होने वाले ६०० फौजी सिपाहियों का स्वागत स्टेशन पर धूमधाम से किया। मिलिटरी बैंड के साथ साथ स्काउट बैंड भी शान के साथ बज रहा था। स्काउटों ने सिंहनादों के साथ सब नौजवानों के गले में फूलों की मालायें पहनायीं और बिस्कुट के पैकट आदि दिये। यह कार्यक्रम श्री नरेन्द्र कुमार जैन, जिला स्काउट कमिश्नर ने कर्नल नीमचा के साथ सम्मिलित रूप से रखा था।

टिहरी-गढ़वाल—

१५ ता० को यहाँ के हिंद स्काउटस् तथा गर्लस् गाइड ने टिहरी स्वतंत्रता की प्रथम वर्षगांठ आजाद मैदान में बड़े समारोह के साथ मनाई। ४ बजे शाम अपने माननीय प्रिय अतिथि श्री जगन प्रसाद रावत, पार्लियामेंटरी सेक्रेट्री संयुक्त प्रान्तीय सरकार को मोटर अड्डे पर "गार्ड आफ आनर" दिया। तत् पश्चात् रावत जी ने आजाद मैदान में असोसिएशन का झन्डा फहराया और एक वृहत रैली हुई। अपने भाषण के दौरान में

आपने बताया कि हिन्द स्काउटस् का इतिहास अत्यन्त उज्वल है और देश के युवक और युवतियों को जाग्रत करने में जो कार्य इस संस्था ने किया है वह अत्यन्त सराहनीय है। रात को कैम्पफायर हुई। आइटम इतने मनोरंजक थे कि श्री रावत जो जल्दी में होने पर भी अन्त तक उपस्थित रहे। पी० आई० कालेज ग्रुप का "रेडियो प्रोग्राम" वाला आइटम अत्यन्त लोकप्रिय रहा। आइटमों के अत्यन्त सुन्दर प्रदर्शन के लिये उपस्थित मंत्री वर्ग ने १००) रु० असोसिएशन को प्रदान किये।

हरिद्वार—

जनता में मद्यनिषेध का प्रचार अधिक तीव्र गति से करने के लिये एक विराट प्रदर्शन हर की पैड़ी आफिस पर आयोजित किया गया। युक्त प्रांत सरकार ने उसे तैयार करने में अपनी सिनेमा मशीन और उच्च अफसरों को भेज कर प्रचार कार्य में अधिक सहायता प्रदान की। श्री एच० एच० त्यागी प्रोहीबीशन और शोसल अपलिफ्ट आफीसर-मेरठ रीजन स्वयं पधारे। डा० प्यारेलाल श्रीवास्तव ने आयोजन कार्य में उत्साह से कार्य किया। ५००० के लगभग जनता ने उस कार्य को देखा। जिसमें फोक डांस और फोक सोंग भी शामिल थे।

श्री शान्तिस्वरूप वर्ग रीजनल अर्गनाईज़र ने सहारनपुर, देहरादून और मांगलौर का दौरा किया। और मांगलोर में एक दिन का कैम्प तथा समस्त विद्यार्थियों की एक सभा की जिसमें स्काउटिंग द्वारा शिक्षा और सुनागरिक बनने पर जोर दिया। कैम्प में १५ पेट्रोल लीडर थे। सहारनपुर में जिला स्काउट कैम्प में सहायता प्रदान करने के सबब ३ दिन सहारनपुर कैम्प में रहे।

हरिद्वार में महिला विद्यालय में स्काउट ट्रेनिंग शुरू कर दी गई है। श्रीमती सरला शंकर, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर बलिका विभाग ने हरिद्वार आफिस का निरीक्षण किया तथा महिला विद्यालय में पधार कर एक दिन की ट्रेनिंग भी पेट्रोल लीडरर्स को दी। ट्रेनिंग क्लास के रूप में रोज़ाना चलाई जा रही है।

स्थानीय ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्य विश्वविद्यालय में भी स्काउटिंग का क्षेत्र स्थापित कर दिया गया है और ६० छात्रों को दो हिस्सों में बांटकर सात दिन की ट्रेनिंग दी गई। ध्यान देने योग्य बात है कि ये धर्म प्रचार वाली संस्थायें भी अब स्काउटिंग शिक्षा को योग देने लगी हैं इनके लिये ऋषीकुल ब्रह्मचर्य्य विश्वविद्यालय के समस्त पदाधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

ता० २७ जनवरी और २८ जनवरी को शांति स्वरूप वर्ग ने ३८ बालचरों का कैम्प किया। ये विद्यार्थी सिंध फ्रान्टीयर तथा पंजाब के आये हुये थे। यह कैम्प श्री रतन लाल बासदेव स्काउट मास्टर एम-डी० हाई स्कूल कनखल द्वारा अयोजित किया गया था।

बरेली

६ जनवरी को सिविल लाईन मुहल्ला ट्रूप व कन्हैया टोला ट्रुप के स्काउटों ने समाज सेवा के लिये बरेली से ५ मील पर बिरया बहेटी में एक कैम्प किया। गाँव का सर्वे तथा सफ़ाई करने के पश्चात् दवा बाँटी गई तत्पश्चात एक जलूस निकाला गया उसमें सहकारी इन्स्पैक्टर श्री भाटिया ने ग्राम पंचायत का अर्थ तथा कर्त्तव्य बताये। रीज़नल आर्गेनाइज़र ओ३म प्रकाश गोयल ने अशिक्षा तथा नशीली वस्तु के प्रयोग पर प्रकाश डाल कर गाँववासियों को प्रभावित किया।

पीलीभीत

ता० १० जनवरी से १२ जनवरी तक पीलीभीत में एक पैट्रोल लीडर्स शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया इसमें पीलीभीत के सभी म्युनिस्पल स्कूलों के बच्चे तथा अध्यापक एवं हायर स्कूलों के स्काउटस सम्मिलित थे। कैम्प का श्रीगणेश श्रीयुत पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर द्वारा हुआ। संचालन का भार श्री ओ३म प्रकाश गोयल रीज़नल आर्गेनाइज़र पर था। ता० १५ से शाहजहाँपुर में ३१ मील दूर डेरे लगा यहाँ के सब स्कूलों का एक टोली नायक शिक्षण शिविर ओ३म प्रकाश गोयल द्वारा सञ्चालित किया गया। इस कैम्प में श्री डाक्टर जय नारायण सक्सेना ज़िला स्काउट कमिश्नर तथा मुमुक्षु आश्रम का विशेष सहयोग रहा जिससे कैम्प में पूर्ण सफलता मिली।

"...श के युवक-युवतियों को ट्रेन करने के लिए आपकी संस्था जो कार्य कर रही है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है।"

—पंडित जवाहरलाल नेहरू

प्रकाशक—श्रीयुत प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन, यू० पी० इलाहाबाद।

मुद्रक—श्रीयुत मंगलकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद।

प्रयाग की बालिका स्काउट
का
मार्च पास्ट

वर्ष २९ सं० ४

अप्रैल १९५९

विषय-सूची

सेवा के नियम

(१) 'सेवा' महीने के प्रथम सप्ताह तक प्रकाशित होकर सब ग्राहकों के पास भेज दी जाती है, यदि किसी ग्राहक को १५ ता० तक प्राप्त न हो तो इसकी सूचना स्थानीय पोस्टमास्टर के प्रमाणपत्र सहित कार्यालय को भेजना चाहिए।

(२) 'सेवा' का वार्षिक मूल्य तीन रुपया और डाक-व्यय चार आना अतिरिक्त है। एक अंक का मूल्य पाँच आना है।

(३) 'सेवा' के ग्राहक किसी भी अंक से बन सकते हैं, किन्तु साल भर से कम के लिए ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

(४) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या लिखनी आवश्यक है, जिन पत्रों में ग्राहक संख्या न लिखी होगी, उनका उत्तर देने में देरी हो सकती है।

(५) 'सेवा' में प्रकाशनार्थ लेख सम्पादक के नाम भेजने चाहिये तथा मूल्य आदि मैनेजर के नाम। यदि आवश्यक हों तो चित्र भी लेख के साथ भेजना चाहिए।

(६) सम्पादक को अधिकार रहेगा कि वह किसी लेख को प्रकाशित करे, न करे या उसमें आवश्यक संशोधन करे। जो लेखक साथ में टिकट भेज देंगे, उनका लेख अस्वीकृत होने पर तुरंत लौटा दिया जायगा।

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्त नाशनम् ॥

यू० पी०, सी० पी० तथा बरार, बिहार, बम्बई, अलवर, बीकानेर, ग्वालियर, जयपुर और होलकर
राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

वर्ष २६] अप्रैल १६४६ [संख्या ४

भारत संतान

श्री यज्ञदत्त 'अक्षय'

(१)

धीर वीर कर्त्तव्य परायण,
दृढ़ प्रतिज्ञ पौरुष साकार।
अनुपम ब्रह्मचर्य व्रत पालक,
नीति निपुण सद् ज्ञानागार ॥
मृत्युंजय उन भीष्म समान ॥
हम सब हों भारत संतान ॥

(२)

सखा स्नेहमय, नेता निर्भय,
शक्ति संगठन कला निधान।
अतुल पराक्रम शील, संयमी,
आनंदी, नीतिज्ञ महान ॥
कर्मवीर श्री कृष्ण समान।
हम सब हों भारत संतान ॥

(३)

रामभक्त, संजीवन दाता,
बलविक्रम गुण साहस धाम।
सदा समुद्यत, सुधी शिरोमणि,
तेजवान्, शुचिचरित्र ललाम ॥
महावीर हनुमान समान।
हम सब हों भारत संतान ॥

आर्थिक समस्या का हल

पं० जवाहर लाल नेहरू

[विगत २४ जनवरी को नई दिल्ली में केंद्रीय परामर्शदात्री उद्योग परिषद् के प्रथम अधिवेशन में पं० जी ने देश के लिए एक सुदृढ़ आर्थिक व्यवस्था का महत्व और इस दिशा में किये गये सरकारी प्रयत्नों पर प्रकाश डाला है। इसमें नवयुवकों मजदूरों एवं पूँजीपतियों से सहयोग करने की अपील के साथ उनके लिए आशा एवं उत्साह का आकर्षक सन्देश है।]

पिछले डेढ़ वर्ष में भारत सरकार को अनेक कठिन परिस्थितियों और समस्याओं का सामना करना पड़ा है। इनमें से कुछ हल हो रही हैं और कुछ हल होने के लिए अवशिष्ट हैं। आप जिन समस्याओं पर विचार कर रहे हैं, वे दूसरे और तीसरे प्रकार की समस्याएं हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं की शान्ति काल तथा युद्धकाल में भारत के क्रियाकलापों का आधार देश की सुदृढ़ आर्थिक अवस्था होना चाहिए, क्योंकि इसी पर सब कुछ निर्भर है। यदि आधार दृढ़ न होगा, तो उस पर खड़ी की हुई दीवार अधिक दिन नहीं टिक सकेगी।

हमें स्पष्टवादिता पर विशेष ध्यान देना है। मैं वर्तमान परिस्थिति के तथ्यों को छिपाने में विश्वास नहीं करता। तथ्यों को छिपाने से कोई समस्या हल नहीं हो जाती। ऐसे मामलों में हमें ब्रिटेन का अनुकरण करना चाहिए। ब्रिटेन की सरकार ने वहां की जनता को अपने विश्वास में ले लिया है, अपनी सब कठिनाइयां उसके सामने रख दी हैं और उन कठिनाइयों का सामना करने में उससे सहायता की मांग की है।

दृढ़ मनोबल

हमारे सामने गम्भीर कठिनाइयां अवश्य हैं, परन्तु जब मैं अपने साधनों और मनोबल की दृढ़ता पर विचार करता हूं तो मुझे यह असंदिग्ध रूप से विश्वास हो जाता है कि हम केवल उन कठिनाइयों से पार ही नहीं पा लेंगे, अपितु उनसे आगे भी बढ़ जायेंगे। यदि मुझे इसमें सन्देह होता तो मैं इस पद पर नहीं रह सकता था। परन्तु मैं स्पष्ट रूप से आपको यह बता देना चाहता हूँ कि भारत सरकार इस आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में भी हतोत्साह अथवा निराश नहीं है। हम अत्यन्त शीघ्रता, गम्भीरता और दृढ़ता से इस समस्या को हल करना चाहते हैं। हमें आशा ही नहीं, विश्वास भी है कि हम इसका हल करके ही छोड़ेंगे।

गत डेढ़ वर्ष से हम नई और पुरानी हजारों समस्याओं पर विचार कर रहे हैं। इन समस्याओं के हल में हम कहां तक सफल हुए और कहां तक असफल हुए, इसका निर्णय आप और इस देश की जनता तथा अन्त में इतिहास करेगा, क्योंकि अंत में सफलता या असफलता ही शेष रह जाती है। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि कोई आदमी यह नहीं कह सकता कि हमने समस्याओं के हल के लिए यथाशक्ति प्रयत्न नहीं किया तथा सफल नहीं हुए। यदि हम अतीत पर एक दृष्टि डालें, तो हम को यह पता लग सकता है कि वर्तमान में हम सफल हुए या असफल। सफलता और असफलता के अनुभव से भी लाभ उठाना चाहिए।

इस सम्मेलन में आप उत्पादन और वितरण आदि की आधारभूत आर्थिक समस्याओं पर विचार करना चाहते हैं। ये ही समस्याएं हमारे सामने भी हैं। इन समस्याओं के सम्बन्ध में भी लोगों में बहुत मतभेद है। अधिकांश देशों में ऐसी समस्याओं का हल राजनीतिक दलों द्वारा उपस्थित किया जाता है। प्रजातन्त्रवाद के प्रसार के साथ इस देश में भी ऐसे दल अवश्य बनेंगे। परन्तु यहां पर मैं केवल यह बताना चाहता हूं कि प्रत्येक आर्थिक सिद्धांत का कुछ न कुछ आधार होता है, यह कल्पना के बल पर नहीं चल सकता। सिद्धांत का क्रियान्वित होना साधन और योग्यता पर निर्भर है और इस प्रकार का सर्वोत्तम साधन

शिक्षित जन सम्पत्ति का होना है। अन्तिम विश्लेषण में, किसी भी देश के लिए कोई वस्तु इतनी महत्वपूर्ण नहीं ठहरती जितनी कि शिक्षित जन शक्ति। अन्य ..ब वस्तुएँ दूसरे स्थान पर आतीं हैं।

हमारे युवक

मैंने देखा कि हमारे युवकों में काम करने और आगे बढ़ने की उच्च क्षमता और योग्यता है। इनके आगे बढ़ने में जो रुकावटें थीं, वे अब तेजी से दूर होती जा रही हैं। हमारे वैज्ञानिकों को लीजिए। मुझे भारत के वैज्ञानिकों से बहुत वास्ता पड़ा है और मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि यद्यपि हमने वैज्ञानिक क्षेत्र में बहुत उन्नति नहीं की है, फिर भी दो बातें निश्चित हैं। एक तो यह कि इस देश में कुछ वैज्ञानिक तो परमोच्च स्तर के हैं, जो उच्च से उच्च कार्य कर सकते हैं। दूसरे हमारे पास वैज्ञानिक युवक अच्छी संख्या में हैं जिनको आगे बढ़ने का अवसर बहुत कम मिला है। किन्तु अब पर्याप्त अवसर मिलेगा। विज्ञान के क्षेत्र में हमारे पास बहुत अच्छे मानव साधन हैं। यदि हमारे युवकों को अवसर मिले तो वे सभी क्षेत्रों में चमक सकते हैं। मानव साधनों के अतिरिक्त भौतिक साधनों के सम्बन्ध में तो आप जानते ही हैं कि भारत इनसे भरपूर है।

हम देखते हैं कि हमारे पास जनशक्ति की कमी नहीं है और भौतिक साधन भी प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। अब समस्या यह है कि इन दोनों में तालमेल कैसे बैठाया जाय। यह कोई सरल बात नहीं है, किन्तु जब हमारा सामान हमारे पास मौजूद है तो कुछ कठिनाइयों को पार करने के बाद हम इसे हल ही कर लेंगे। इसलिए भारत के उज्ज्वल भविष्य में मेरा अटूट विश्वास है। इसमें किसी को सन्देह नहीं होना चाहिए।

हो सकता है कि देश में इस समय जो कुछ हो रहा है उसमें से कुछ बातें मुझे पसन्द न हों। इनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका मनोविज्ञान से सम्बन्ध है। मैं आज सामूहिक रूप से देश के दृष्टिकोण को पसन्द नहीं करता। मैं आज सामूहिक रूप से देश के उद्योगपतियों का रुख पसन्द नहीं करता। मुझे आज सामूहिक रूप से देश के मजदूरों का रुख भी पसन्द नहीं है। मैं ये बातें बहुत स्पष्ट कह रहा हूँ।

मनोवैज्ञानिक समस्या

आज हमारे सम्मुख मनोवैज्ञानिक समस्या एक प्रमुख समस्या है। यह केवल भारत की ही समस्या नहीं है। यह तो अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है और वह सभी देशों में मौजूद है। किन्तु हमें तो भारत में इसका मुकाबला अपनी विशिष्ट परिस्थितियों के साथ करना है।

इस समय देश की शक्ति प्रमुख समस्याओं के हल करने में नहीं लगायी जा रही है। इससे तो हम छोटी-छोटी और संकुचित बातों पर लड़ने-झगड़ने में नष्ट कर रहे हैं। यह कहा जाता है और मेरे विचार में यह ठीक ही कहा जाता है कि पूंजीपति अपना रुपया उद्योगों में इसलिए नहीं लगाते कि वे घबराये हुए हैं और वे डरते हैं कि पता नहीं कल कैसी स्थिति होगी। कुछ लोग राष्ट्रीयकरण के नाम से भी भ्रमात्मक धारणा पैदा कर लेते हैं। जहां तक मजदूरों का सम्बन्ध है, बहुत सी बातों में वे हमारी सहानुभूति के पात्र हैं। निस्सन्देह उनकी बहुत सी कठिनाइयां हैं। किन्तु यह भी सच है कि आज-कल मजदूरों ने जो रवैया अख्तयार कर रखा है, उसे मैं देश के लिए घातक समझता हूँ। यह दृष्टिकोण दूरदर्शिता-पूर्ण नहीं है।

आज मजदूरों को कुशलता से काम करके उत्पादन में वृद्धि करने की ओर ध्यान देना चाहिए। उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि उनकी बातें मनवाने का यही सबसे अच्छा समय है। मैं इस समय यह नहीं कह रहा हूँ कि उनकी मांगें उचित हैं या अनुचित। मैं तो इस समय केवल दृष्टिकोण का जिक्र कर रहा हूँ। हमें हड़ताल करने की धमकी दी जाती है। मैं मानता हूँ कि न्यायोचित अवस्था में मजदूरों को हड़ताल करने का अधिकार होना चाहिए। जब तक हमारा सामाजिक ढांचा नहीं बदलेगा और जब तक हड़ताल जैसा कोई कुशल अस्त्र नहीं निकलेगा तब तक मजदूरों को हड़ताल करने का अधिकार होना ही चाहिए। किन्तु देश की परिस्थिति को ध्यान में रख कर ही इस हथियार का उपयोग करना चाहिए।

थोड़ा सा भी विचार करने पर प्रत्येक व्यक्ति स्पष्ट तौर पर यह अनुमान कर सकता है कि देश में किसी भारी औद्योगिक उथल-पुथल से केवल समस्त देश को ही बड़ी हानि नहीं होगी अपितु विशेष समुदायों और विशेषतः मजदूर वर्ग को भी बड़ी हानि होगी। मैं यह नहीं जानता कि भविष्य में इसका परिणाम क्या होगा। आपको यह निश्चय करना है कि देश में किसी आकस्मिक और पूर्ण उथल-पुथल द्वारा या किसी अन्य प्रक्रिया द्वारा परिवर्तन करना चाहते हैं।

मैंने राष्ट्रीयकरण तथा उसके विषय में पूंजीपतियों तथा अन्य वर्गों के भय के बारे में जिक्र किया है। सब से पहले तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि होने वाली घटनाओं से डरने वाले व्यक्तियों के लिए न मेरी कोई सराहना है और न सहानुभूति। जीवन भर खतरे मोल लेने का आदी होने के कारण मैं उन व्यक्तियों को पसन्द करता हूँ जो खतरे मोल लेते हैं। जो व्यक्ति डरपोक है और विशेषतः आर्थिक मामलों में घबरा जाता है, उसकी मैं प्रशंसा नहीं कर सकता। आज के संसार में घबरा जाने वाला व्यक्ति कहीं भी जीवन की दौड़ में विजयी नहीं हो सकता। वही पुरुष और नारी जिनमें साहस की भावना है और जिनमें नये कार्य करने की हिम्मत है और जो अपनी स्थिति पर विषाद नहीं करता और असफलताएँ होने पर भी आगे बढ़ता है। जीवन में सफल होता है।

महान् घटनाएं

आज के ससार को देखिये कि वह कितना विचित्र है और कितनी शीघ्रता से परिवर्तित हो रहा है। सर्वत्र महान् घटनाएँ हो रही हैं। हमें उन महान् परिवर्तन के अनुकूल बनना है और इतना ही नहीं, किन्तु हमें भविष्य के विषय में भी विचार करना है, जिससे कि हम अन्य व्यक्तियों को भी उचित दिशा में ले जा सकें। पूँजी एक ऐसी वस्तु है जो पूंजीपति के लिये बहुत अधिक श्रेय का कारण नहीं। केवल कुछ व्यक्ति ही पूंजीपति नहीं परन्तु यह पूंजी बहुत सारे व्यक्तियों में विभक्त है और मध्य श्रेणी के व्यक्तियों की बड़ी भारी संख्या देश में अपनी पूंजी लगाती है। परन्तु तो भी उच्च श्रेणी के व्यक्ति ही प्रायः नेतृत्व करते हैं।

कोई भी सरकार यह नहीं कह सकती कि वह कब तक बनी रहेगी और इसलिये शीघ्रता से परिवर्तन होने वाले संसार में कोई सरकार भविष्य के लिये गारंटी नहीं दे सकती। कोई सरकार यह भी नहीं कह सकती कि वह कुछ नीति निर्धारित करेगी जिनका वह अपनी पूरी शक्ति से पालन करेगी। यदि आप गारंटी की बात कहें तो उससे यह प्रतीत होता है कि आप आज बदलने वाले संसार और भारत की प्रकृति को नहीं समझते।

राष्ट्रीयकरण को ही लीजिये। अन्ततोगत्वा राष्ट्रीयकरण का निर्धारण इस सरकार द्वारा निश्चित की गयी किसी नीति से उतना नहीं होगा जितना कि वाह्यकरण से। न तो राष्ट्रीयकरण के विरोधी व्यक्ति राष्ट्रीयकरण को रोक सकते हैं और न ही वे व्यक्ति राष्ट्रीयकरण में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं जो परिणामों की परवाह किये बिना राष्ट्रीयकरण के समर्थक हैं। अन्ततः वाह्य कारणों से ही राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया का निर्धारण होगा।

जैसा कि कई बार घोषित किया जा चुका है, हमारी नीति उत्पादन बढ़ाने की है। केवल वर्तमान संस्थाओं और वस्तुओं पर निर्भर न रहकर हमें सरकार के समस्त साधनों का प्रयोग करते हुए नवीन वस्तुएं पैदा करनी हैं। उत्पादन में वृद्धि का कार्य देश में बदलने वाली स्थिति और सामाजिक शक्तियों पर निर्भर है। मेरे विचार में आगामी कई वर्षों तक प्रभावशाली रूप में पूर्ण राष्ट्रीयकरण नहीं हो सकता कुछ उद्योगों का ही राष्ट्रीयकरण हो सकता है।

औद्योगिक झगड़े

मैं यह नहीं चाहता कि मजदूर या पूंजीपति अपने विशेष सिद्धांत का त्याग करें। सिद्धान्तों के संघर्ष की भी मुझे कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि संघर्ष से नवीन वस्तु का निर्माण होता है। किन्हीं विचारों या सिद्धान्तों को दबाने अथवा उन्हें स्वतन्त्रता न देने का मैं पूर्ण विरोधी हूँ। मजदूरों, पूंजीपतियों अथवा अन्य समुदायों के व्यक्तियों से मैं यह मांग नहीं करता कि वे अपने विश्वासों को छोड़ दें, चाहे वे विश्वास कैसे भी हों। किन्तु दो बातें अवश्य करनी चाहिएं। पहली तो यह कि समस्त भारत और

[शेष भाग पृष्ठ ६ पर]

चन्द्रमा

श्री महाबीर प्रसाद श्रीवास्तव

चन्द्रमा हमारे सबसे निकट है। पृथ्वी से इसकी दूरी दो लाख अड़तीस हज़ार २,३८,००० मील है जब कि सूर्य की दूरी नौ करोड़ तीस लाख ९,३०,००,००० मील के लगभग है। इसका व्यास केवल २१६० मील है जब कि हमारी पृथ्वी का व्यास लगभग ७९०० मील और सूर्य का व्यास ८,६४,००० मील है। जैसे पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाकर जाड़ा, गरमी और बरसात उत्पन्न करके वर्ष का मान बतलाती है उसी प्रकार चन्द्रमा हमारी पृथ्वी के ही चारों ओर चक्कर लगाता हुआ महीने का मान बतलाता है। चन्द्रमा में अपना प्रकाश नहीं होता। यह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है इसी लिए भिन्न भिन्न स्थितियों में इसका आकार प्रति दिन बदलता हुआ दिखाई पड़ता है। यह पच्छिम क्षितिज के पास पतले हंसिये की तरह दिखलाई पड़ता है और बढ़ते बढ़ते चौथाई, आधा, तीन चौथाई और पूरा गोल हो जाता है। जब पूरा गोला हो जाता है तब सूर्यास्त के समय वह पूरब में उदय होता हुआ दिखलाई पड़ता है। इसके बाद यह फिर छोटा होने लगता है और घटते-घटते तीन-चौथाई, आधा और एक-चौथाई होकर बहुत पतला हो जाता है और दो-तीन दिन तक अदृश्य हो जाता है। पूरा गोल होने के बाद यह प्रति दिन दो घड़ी या ४८ मिनट के लगभग देर में निकलता है। जब यह पूरा गोल होता है तब पूर्णमासी होती है। इस रात चन्द्रमा सूर्यास्त से ही उदय होता है और सारी रात पृथ्वी को प्रकाशित करके सूर्योदय काल में पच्छिम में अस्त हो जाता है। इस प्रकार पूर्णमासी को रात भर चन्द्रमा का प्रकाश हमको मिलता है और दिन में तो सूर्य का प्रकाश मिलता ही है। इस लिए पूर्णमासी के दिन गंगा स्नान तथा अन्य उत्सवों का पर्व मानने से हमको इस आकाशीय प्रकाश से बड़ी सहायता मिलती है। वर्षा समाप्त होने के बाद शरद ऋतु की निर्मल चाँदनी में कार्तिकी पूर्णमासी का मेला सभी मुख्य मुख्य स्थानों में लगता है। बिहार का सोनपुर का मेला युक्त प्रान्त के हरिहर क्षेत्र, गढ़मुक्तेश्वर, ददरी और डलमऊ के मेले प्रसिद्ध हैं।

चन्द्रमा के घटने बढ़ने के कारण नीचे के चित्र से समझ में आ जायगा
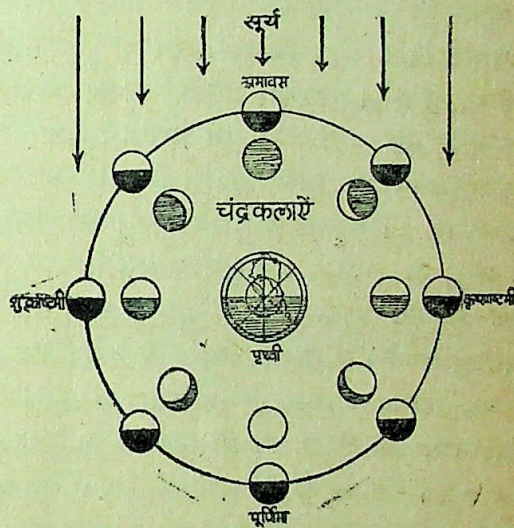
चन्द्रमा की कलाएँ

जैसे सूर्य का प्रकाश सभी गोल वस्तुओं के सामने वाले आधे भाग पर पड़ता है वैसे ही चन्द्रमा पर भी पड़ता है परन्तु चन्द्रमा की स्थिति प्रतिदिन बदलते रहने के कारण उसका कुल प्रकाशित भाग हमको नहीं दिखलाई पड़ता। पूर्णमासी को जब सूर्य पच्छिम में अस्त होता रहता है तब चन्द्रमा पूर्व में उदय होता रहता है और पृथ्वी इन दोनों के बीच में रहती है इसलिए चन्द्रमा का पूरा प्रकाशित भाग हमारे सामने भी रहता है। इसलिए वह पूरा गोल दिखलाई पड़ता है। इसके बाद उसकी स्थिति बदल जाने से उसका प्रकाशित भाग हमारी दृष्टि से कुछ ओझल होता जाता है इसलिए आकार बदलता हुआ दिखाई पड़ता है। पूर्णमासी से आठवें दिन चन्द्रमा सूर्य से नब्बे अंश पर हो जाता है इसी लिए जब सूर्य उदय होता रहता है तब चन्द्रमा मध्य आकाश में केवल अर्ध व्यास के आकार का देख पड़ता है। जब चन्द्रमा

सूर्य और पृथ्वी के बीच में आ जाता है तब इसका प्रकाशित भाग हमें बिल्कुल नहीं दिखलाई पड़ता इसलिए यह भी अदृश्य हो जाता है। इसी दिन अमावस होती है। अमावस की रात में सारे संसार में अँधेरा रहता है। अमावस के दूसरे या तीसरे दिन चन्द्रमा फिर पच्छिम आकाश में पतले हँसिए की तरह सूर्यास्त के बाद दिखाई पड़ता है और घन्टे डेढ़ घन्टे में अस्त हो जाता है। इसी दिन से मुसलमा[illegible] [illegible]हीने का आरम्भ होता है। इसके दूसरे दिन चन्द्रमा कुछ [illegible] और आकाश में कुछ ऊँचा दिखाई पड़ता है। डूबने का समय भी दो घड़ी के लगभग बढ़ जाता है। इस प्रकार प्रति दिन चन्द्रमा आकाश में कुछ ऊँचा और बड़ा होता हुआ दिखलाई पड़ता है। डूबने का समय भी प्रति दिन दो दो घड़ी के लगभग बढ़ता जाता है। अमावस से आठवें दिन इसका आकार आधा गोल हो जाता है और सूर्यास्त काल में यह मध्य आकाश में देख पड़ता है। इस रात यह आधी रात के लगभग डूबता है। इस प्रकार चन्द्रमा की कलाएँ देखकर और यह हिसाब लगाकर कि अमावस या पूर्णमासी से कितने दिन बीत गये हैं रात में समय का पता लगाया जा सकता है। अमावस से पूर्णमासी तक के १५ दिन को शुक्लपक्ष या उजेला पाख और पूर्णमासी से अमावस तक के १५ दिन को कृष्णपक्ष या अँधेरा पाख कहते हैं। शुक्लपक्ष में चन्द्रमा सूर्यास्त काल में ही दिखलाई पड़ता है। परन्तु कृष्णपक्ष में यह सूर्यास्त के बाद पूर्व क्षितिज में उदय होता है और प्रातःकाल सूर्य के उदय होने के समय भी दिखलाई पड़ता है।

यदि अमावस के दूसरे दिन अर्थात् दूइज के दिन से प्रति रात यह देखा जाय कि चन्द्रमा किस तारे या तारा समूह के पास से होता हुआ आकाश में पच्छिम से पूरब की ओर बढ़ता है और उन तारों की स्थिति चन्द्रमा के साथ कागज पर दिखलाई जाय तो एक बड़ी आवश्यक बात का ज्ञान हो जायगा। इस प्रकार दो तीन महीने तक चन्द्रमा के आस पास के आकाश का अध्ययन करने से यह निश्चय हो जायगा कि चन्द्रमा कुछ विशेष तारों के पास से होता हुआ आकाश में चक्कर लगाता है। इन्हीं विशेष तारा या तारा समूहों को हमारे प्राचीन साहित्य में नक्षत्र कहा गया है। इस अध्ययन से यह भी पता लग जायगा कि किसी एक तारे से चलकर उसी तारे तक पहुँचने में २७ दिन से कुछ घन्टे ऊपर लग जाते हैं। वास्तव में तारों के बीच चन्द्रमा का एक चक्कर २७ दिन ८ घन्टे में पूरा होता है। इसीलिए आकाश चक्र को २७ भागों में बाँट दिया गया है। ऐसे प्रत्येक भाग को भी नक्षत्र कहते हैं। इन २७ नक्षत्रों को पहचान लेने और हिन्दी महीनों के नाम याद कर लेने पर रात में नक्षत्रों को देख कर ही अनुमान से समय का पता लगाया जा सकता है। क्योंकि सूर्यास्त से दो घड़ी पहले या पीछे वही नक्षत्र पूर्व में उदय होता है जिसके पास चन्द्रमा के रहते उस महीने की पूर्णमासी होती है। वही नक्षत्र आधी रात को मध्य आकाश में और प्रातःकाल पच्छिम क्षितिज पर रहता है। जैसे वैशाख मास में सूर्यास्त के लगभग विशाखा नक्षत्र पूर्व में उदय होता है, आधी रात को याम्योत्तरवृत्त से पास दिखलाई पड़ता है और प्रातःकाल पच्छिम में डूब जाता है।

नक्षत्रों के साथ मासों का यह संबंध हज़ारों वर्षों से चला आ रहा है और बड़ा महत्वपूर्ण है। सूर्यास्त के बाद देखो कि पूर्व क्षितिज में कौन नक्षत्र उदय हो रहा है या उदय हो चुका है। बस समझ लो कि उसी नाम का महीना चल रहा है। इस महीने में यह नक्षत्र आधी रात को मध्य आकाश में अथवा ठीक दक्षिण की ओर और सूर्योदय काल में पच्छिम क्षितिज पर रहेगा। यदि किसी समय अन्य कोई नक्षत्र मध्य आकाश में हो तो सहज ही जाना जा सकता है कि समय क्या है।

दो चार रात भी आकाश को ध्यान से देखा जाय तो पता चलेगा कि सत्ताइसों नक्षत्र दिन रात में पृथ्वी की एक परिक्रमा कर लेते हैं। यथार्थ में यह दृष्टिभ्रम है जो हमारी पृथ्वी के ही दैनिक आक्षिक भ्रमण के कारण देख पड़ता है। इस आक्षिक भ्रमण से २७ नक्षत्र २४ घंटे में एक चक्कर लगाते हुए देख पड़ते हैं, इसलिए एक नक्षत्र $\frac{२४}{२७}$ घंटे अथवा ५३ मिनट में अपना स्थान बदल देता है, और उसकी जगह दूसरा नक्षत्र ले लेता है। इसलिए यदि वैशाख मास में ज्येष्ठा नक्षत्र मध्य आकाश में दिखलाई पड़े तो समझना चाहिए कि रात का डेढ़ वा पौने दो बजे का समय है क्योंकि इस मास में आधी रात को विशाख नक्षत्र मध्य आकाश में रहता है, विशाखा से ज्येष्ठा तीसरा

नक्षत्र है इसलिए जब ज्येष्ठा नक्षत्र मध्य आकाश में आवेगा तब दो नक्षत्रों के चलने का समय ५३ × २ मिनट अथवा १ घंटा ४६ मिनट या पौने दो घंटा बीत जायगा। परन्तु यह स्थिति इस मास के तीसों दिन नहीं रहेगी, इसलिए इस रीति से जो समय आता है वह स्थूल है।

चन्द्रमा तारों के मध्य २७ दिन ८ घंटे में पृथ्वी की एक परिक्रमा कर लेता है परन्तु इतने समय में पृथ्वी अपनी वार्षिक गति के कारण २७ अंश आगे बढ़ जाती है इसलिए चन्द्रमा को इतनी दूरी और पूरी करने में लगभग दो दिन और लग जाते हैं। इसलिए इसकी कलाओं की वृद्धि और क्षय का एक फेरा लगभग २६ दिन १२ घंटे में होता है। इसी समय को मास कहते हैं। ऐसे बारह मास में ३५४ दिन और ६ घंटे होते हैं। परन्तु पृथ्वी का सूर्य के चारोंओर वाला एक चक्कर लगभग ३६५ दिन ६ घंटे में पूरा होता है इसलिए १२ चन्द्रमासों का वर्ष प्राकृतिक वर्ष से जिसमें ऋतुओं का फेरा होता है लगभग ११ दिन छोटा होता है। यदि हम १२ चन्द्रमासों का ही वर्ष माने जैसा कि हमारे मुसलमान भाई करते हैं तो तैंतीस महीने बाद यह वर्ष प्राकृतिक वर्ष से एक महीना पहले हो जायगा। जिससे हमारे त्योहार भी जो ऋतुतों से घनिष्ट संबंध रखते हैं एक महीना पहले ही होने लगेंगे। इस प्रकार बढ़ते बढ़ते जब दोनों का अन्तर तीन महीने का हो जायगा तब वर्षा के त्योहार जाड़े में होने लगेंगे और जाड़े के त्योहार गरमियों में। इसी गड़बड़ को मिटाने के लिए हमारे यहाँ तीसरे वर्ष एक चन्द्रमास मलमास या लोंद का महीना समझ कर छोड़ दिया जाता है जिसकी गिनती ही नहीं होती। पहले न तो महाजन लोग इस महीने का सूद जोड़ते थे और न नौकर चाकर इस महीने की तनख़ाह लेते थे। परन्तु जब से लोग इसकी माँग करने लगे तबसे अंग्रेजी महीने के अनुसार हिसाब किताब होने लगा, जो शुद्ध प्राकृतिक वर्ष है।

जिस देश में १२ चन्द्रमासों के वर्ष के अनुसार त्योहार मनाये जाते हैं वहाँ खेती बाड़ी का काम करने के लिए, जो ऋतुओं पर आश्रित होता है, दूसरे प्रकार के वर्ष का चलन है जो ३६५ वा ३६६ दिन का होता है। मुसलमानी देशों में इसे समशी या सौर वर्ष कहते जो प्राकृतिक वर्ष के समान होता है। परन्तु हिन्दुस्तान केमुसलमान खेतिहरों को यह कठिनाई नहीं पड़ती क्योंकि उनकी खेती बाड़ी भी हिन्दी महीनों के अनुसार ही होती है।

ग्रहण

यह बतलाया गया है कि चन्द्रमा अपने एक मास के चक्कर में अमावस के दिन सूर्य और पृथ्वी के बीच में आ जाता है। इस दिन यदि यह सूर्य के ठीक सामने पड़ जाता है तो सूर्य को उसी प्रकार ढक लेता है जैसे हमारी अँगुली आँख के सामने आ जाने पर सूर्य या चन्द्रमा को ढांक लेती है। ऐसी अवस्था में सूर्य का प्रकाश हमारे पास नहीं आने पाता और सूर्य कटा हुआ दिखलाई पड़ता है। या थोड़ी देर के लिए बिलकुल अदृश्य हो जाता है। इसी को सूर्य ग्रहण कहते हैं।
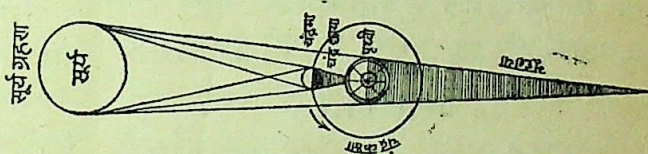
जब पूर्णिमा की रात में हमारी पृथ्वी सूर्य और चन्द्रमा के ठीक बीच में आ जाती है तब चन्द्रमा पृथ्वी की छाया में पड़ जाने से पूरा या अंशतः अदृश्य हो जाता है। इसी को चन्द्र ग्रहण कहते हैं।
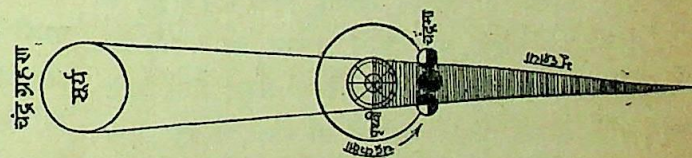
यह घटना प्रत्येक अमावस या पूर्ण मासी को नहीं होती क्योंकि चन्द्रमा और पृथ्वी की कक्षाएँ दोनों इक ही तल में नहीं हैं वरन् एक दूसरे से पाँच अंश का कोण बनाती हैं। ये दोनों तल एक दूसरे से दो स्थानों पर मिलते हैं जिनके बीच १८० अंश का अंतर होता है। जब अमावस या पूर्ण मासी के दिन सूर्य या चन्द्रमा इन मिलन-बिन्दुओं के पास होते हैं तभी ग्रहण लगता है। इन मिलन बिन्दुओं का दूसरा नाम पात है। जिस पात पर आकर चन्द्रमा क्रान्तिवृत्त के उत्तर हो जाता है उसे राहु और दूसरे पात को केतु भी कहते हैं। इसलिए जब

चन्द्रमा अमावस या पूर्णमासी के दिन राहु या केतु के पास होता है तभी ग्रहण लगता है। यही बात हमारे पुराणों में रूपक के रूप में बतलायी गई है। राहु और केतु राक्षस माने गये हैं जो सूर्य और चन्द्रमा से इसलिए बैर रखते हैं कि समुद्र मंथन के समय जब राहु देवता का भेष धारण करके अमृत पी रहा था तब सूर्य और चन्द्रमा ने ही इसकी पोल खोली थी। इसी का बदला लेने के लिए राहु और केतु सूर्य और चन्द्रमा को ग्रस लेते हैं।

ये पात आकाश में एक स्थान पर स्थिर नहीं हैं वरन् उलटे पीछे की ओर चलकर पूरे क्रान्तिवृत्त का लगभग १६ वर्ष में चक्कर लगा लेते हैं। इस लिए ग्रहणों की तिथियाँ सदैव पीछे की ओर खसकती रहती हैं और जाड़ा, गरमी, वर्षा सभी ऋतुओं में ग्रहण लगता है। १८ सौर वर्ष और ११ दिन में ग्रहणों का एक फेरा पूरा होता है। खाल्दिया निवासी इसी फेरे के क्रम के अनुसार ग्रहणों का समय जान लिया करते थे और इस अवधि को सरो युग कहते थे।

ज्वार भाटा

समुद्र के पास रहने वाले देखते हैं कि समुद्र का पानी दिन में दो बार साढ़े बारह घंटे के अंतर पर उठता है और जहाँ पहले पानी नहीं होता वहाँ भी बहुत गहरा पानी हो जाता है। इस उठान के ६ घंटे बाद जल नीचे उतर जाता है और जहाँ पहले पोरसों पानी देख पड़ता था वहाँ कीचड़ ही कीचड़ दिखाई पड़ता है। समुद्र के पानी के ऊपर चढ़ने और नीचे उतरने का प्रभाव उन नदियों में भी कुछ दूर तक पड़ता है जो समुद्र में मिलती हैं। कलकत्ते की हुगली नदी में भी पानी का यह चढ़ाव उतार दिखलाई पड़ता है। पानी के चढ़ने को ज्वार और उतरने को भाटा कहते हैं। यह घटना समुद्र में तथा समुद्र के पास की नदियों में प्रतिदिन सवा छ घंटे के अंतर पर होती है। इसका कारण सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी का परस्पर आकर्षण है। सभी पिंड एक दूसरे के आकर्षण से बँधे हैं। इसी कारण पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है और चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। पूर्णमासी या अमावस को जब चन्द्रमा सूर्य और पृथ्वी लगभग एक ही रेखा होते हैं उस समय तीनों का आकर्षण एक साथ काम करता है, जिससे समुद्र का जल बहुत चढ़ जाता है। परन्तु अष्टमी के दिन चन्द्रमा और सूर्य के आकर्षण विपरीत दिशाओं में पड़ते हैं जिससे इस दिन सबसे कम पानी चढ़ता है। अमावस या पूर्णमासी के ज्वार भाटे को परम ज्वार भाटा (Spring tide) और अष्टमी के दिन ज्वार भाटे को लघ्र ज्वार भाटा (Neep tide) कहते हैं। चन्द्रमा और सूर्य अलग-अलग
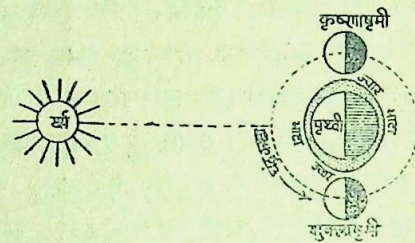
परम ज्वार भाटा
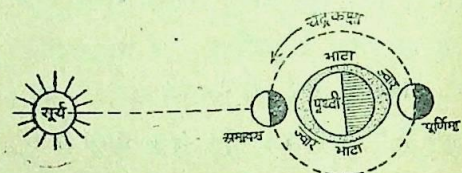
लघ्र ज्वार भाटा

जल पर प्रभाव डालते हैं। प्रत्येक पिंड के आकर्षण के कारण समुद्र का जल उसकी ओर तथा पृथ्वी की विपरीत दिशा में एकत्र हो जाता है। क्योंकि प्रत्येक का आकर्षण उसकी ओर के जल पर पृथ्वी की अपेक्षा जो दूर पड़ जाती है अधिक पड़ता है। परन्तु विपरीत दिशा के जल पर जो आकर्षण होता है उससे पृथ्वी पर का आकर्षण अधिक होता है इसलिए चन्द्रमा या सूर्य के ठीक नीचे (सामने) वाला पानी खिंचकर इकट्ठा हो जाता है और दूसरी ओर के पानी से पृथ्वी पर अधिक आकर्षण होने के कारण पृथ्वी के सूर्य-चन्द्रमा की ओर खिंच जाने से दूसरी ओर के पानी उलटी दिशा में एकत्र हो जाता है। इसलिए एक साथ ही पृथ्वी की विरुद्ध दिशाओं में पानी चढ़ता है।

चन्द्रमा सूर्य से बहुत छोटा है परन्तु पृथ्वी के बहुत निकट होने से इसका प्रभाव अधिक पड़ता है। इससे चन्द्रमा से उत्पन्न ज्वार सूर्य से उत्पन्न ज्वार की अपेक्षा ढाई गुना अधिक होता है। इसलिए जब सूर्य और

चन्द्रमा एक ही रेखा में होते हैं अर्थात् अमावस या पूर्णमासी के दिन तब दोनों का प्रभाव जुड़ जाता है और उच्चतम ज्वार होता है । परन्तु जब सूर्य से चन्द्रमा नवें अंश पर होता है अर्थात् शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की अष्टमी को तब इन दोनों के अन्तर के अनुसार जल चढ़ता है इसे लघु ज्वार भाटा कहते हैं। सूर्य और चन्द्रमा की अन्य स्थितियों में दोनों का प्रभाव एक दूसरे को कुछ काट देता है। परन्तु सभी दशाओं में इन दोनों के संयुक्त प्रभाव के कारण समुद्र का जल चन्द्रमा की सीध में पृथ्वी के दोनों ओर ऊपर उठता है। इसलिए हल्का ज्वार प्रतिदिन बारह घंटा। २५ मिनट के अन्तर पर देख पड़ता है क्योंकि चन्द्रमा अपनी गति के कारण किसी स्थान की मध्याह्न रेखा पर प्रतिदिन ५० मिनट विलंब से आ जाता है। चूँकि पृथ्वी अपने अक्ष पर पच्छिम से पूरब को घूमती है इस लिए पानी का चढ़ाव पच्छिम की ओर चलता है । भूपृष्ठ के स्थल भाग की विषमता के कारण ज्वार उस समय अपनी पूरी बाढ़ पर नहीं आता जिस समय चन्द्रमा मध्याह्न रेखा पर होता है वरन् कुछ देर के बाद, जिसकी गणना प्रत्येक स्थल के लिए अलग अलग होती है।

[४ पृष्ठ के आगे से]

समस्त विश्व के व्यापक अर्थों में विचार कीजिए और दूसरा यह कि हमें सदा और सब तरह से औद्योगिक झगड़े रोकने चाहिएं और औद्योगिक संघर्ष सुलझाने के लिए प्रभावशाली उपाय सोचने चाहिएं। हमने कुछ उपाय खोजने की चेष्टा की है। यदि वे पूर्णतः संतोषजनक नहीं हैं तो हमें उनमें सुधार करना चाहिए।

यदि हम इस समय की कठिनाइयों को दूर नहीं करते, तो हमारी गति धीमी पड़ जायगी और हमारा आन्दोलन भी सीमित हो जायगा। फिर यह सवाल भी बड़ा महत्वपूर्ण होगा कि हम किस दिशा में गति करें। निस्संदेह जब हम सब मिल जुल कर विचार करेंगे तो हम अपने निर्णय के अनुसार एक विशेष दिशा में प्रगति कर सकेंगे। हमारी दिशा और प्रगति की सच्ची तथा अन्तिम परीक्षा इस बात के आधार पर होगी कि हमारे प्रयत्नों का उद्देश्य जनता का कल्याण हो। परन्तु जनता के कल्याण का यह अर्थ नहीं कि हमें प्रत्येक व्यक्ति को भारतीय जनता के जीवन स्तर पर लाना चाहिए। हमारा उद्देश्य आय और संपत्ति की भारी विषमताओं को दूर करके जनता-स्तर को उच्च करना है। आय और संपत्ति में बहुत अधिक विषमताएं होने से संघर्ष होते हैं और इसलिए भावुक व्यक्ति उन्हें पसन्द नहीं करते। किन्तु इसका यह भी अर्थ नहीं कि हमें बौद्धिक और भौतिक रूप से अपने देश को एक जड़ स्तर पर लाना है क्योंकि इससे वास्तविक नूतन का आरम्भ और प्रगति समाप्ति ।

ग्रीष्मकालीन स्काउट-शिक्षण शिविर

२० मई से १५ जून तक

उद्देश्य—इस शिक्षण शिविर का उद्देश्य योग्य स्काउट आर्गनाइज़र तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता तैयार करना है जो कि सेवा तथा राष्ट्रीयता के भावों से ओत-प्रोत होकर अपने कार्य में पूर्ण रूप से दक्षता प्राप्त कर सकें।

स्थान—शीतलाखेत। (ज़िला अल्मोड़ा) जो कि ६२०० फीट की ऊंचाई पर घने चीड़ के वृक्षों और आकर्षक दृश्यों के मध्य में स्थित है। वहाँ से हिमालय के हिम-आच्छादित शिखरों की अपूर्व छटा अत्यन्त रोमांचकारी प्रतीत होती है।

शीतलाखेत जाने के लिये बरेली से छोटी लाइन से हलद्वानी का टिकट लेना चाहिये। हलद्वानी स्टेशन पर १८ से २१ मई तक स्थानीय स्काउट ड्युटी पर मिलेंगे जो पथ-प्रदर्शक का कार्य करेंगे। हलद्वानी से कठपुरिया तक मोटर मिलेगी। यदि १९ मई को कैम्प में जाने वालों की संख्या १५ तक हो जावेगी तो सीधे शीतलाखेत तक मोटर का प्रबंध करने का प्रयत्न किया जायगा। इस बात की सूचना कैम्प संचालक के पास १५ मई तक पहुँच जानी चाहिये। कठपुरिया से शीतलाखेत ६½ मील की दूरी पर है। पहले से लिखने पर पैदल जाने वालों के लिये वहाँ कुलियों का प्रबंध किया जा सकता है।

प्रार्थना पत्र—बालक-विभाग के लिये सीधे शिविर संचालक, श्री डी० एल० आनन्दराव प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, यू० पी०, १ कटरा रोड, इलाहाबाद, को

और

बालिका-विभाग के लिये श्रीमती सरला शंकर, स्थानापन्न प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, बालिका विभाग, १ कटरा रोड, इलाहाबाद को लिखिये।

प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि—प्रान्तीय कार्यालय में प्रार्थना पत्र पहुँचने की अन्तिम तिथि ३० अप्रैल होगी। प्रार्थना पत्र के साथ ५) प्रवेश शुल्क का आना आवश्यक है, अन्यथा प्रार्थना-पत्र पर विचार नहीं किया जायगा। प्रार्थना-पत्र ज़िला स्काउट कमिश्नर अथवा ज़िला एसोसिएशन के किसी अन्य पदाधिकारी, जिनको ज़िला कमिश्नर ने इस कार्य का अधिकार सौंपा हो, की सिफारिश के साथ आना चाहिये।

प्रवेश के लिये चुनाव—शिक्षण शिविर में प्रवेश करने के लिये कैम्प संचलान शिक्षार्थियों का चुनाव करेंगे। चुने हुए शिक्षार्थियों के पास आवश्यक सूचना और प्रवेश पत्र १० मई तक पहुँच जायेंगे। उस तारीख तक प्रवेश पत्र न पाने वाले शिक्षार्थियों को समझना चाहिये कि उन्हें शिविर में प्रवेश होने की आज्ञा प्राप्त नहीं हो सकी है। शिक्षार्थियों की भरती की कुल संख्या केवल ३० होगी। इतनी ही संख्या बालिका स्काउटर्स की भी होगी।

शिविर में प्रवेश-प्राप्त करने के लिये आवश्यक योग्यताएं :—

१—शिक्षार्थी की आयु कम से कम १८ वर्ष और अधिक से अधिक ४० वर्ष होनी चाहिये।

२—वह शरीर से सुस्वस्थ और फुर्तीला हो। पहाड़ों पर चढ़ने उतरने और भाग-दौड़ करने के भार को सहन करने की शक्ति रखता हो। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में एक प्रमाण पत्र किसी डाक्टर या वैद्य या ज़िला असोसिएशन के किसी अधिकारी का प्रार्थना-पत्र के साथ आना चाहिये।

३—स्काउटिंग की कम से कम ध्रुवपद (सैकेण्ड क्लास) परीक्षा पास हो।

४—कम से कम १ वर्ष तक किसी स्काउट दल के साथ टोली नायक, दल नायक या चर-शिक्षक अथवा (गर्ल स्काउट कैप्टेन) का कार्य करने का अनुभव रखता हो।

५—वह मैट्रिक (हाई स्कूल) अथवा इसके बराबर कोई अन्य परीक्षा पास हो। विशेष परिस्थितियों में शिविर संचालक को इस योग्यता में छूट देने का अधिकार होगा। बालिका विभाग के कैम्प में प्रवेश करने वाली शिक्षार्थिनियों के लिये

स्काउटिंग के ज्ञान और तथा कार्य के अनुभव की योग्यताओं में छूट दी जा सकती है।

शिक्षण के विषय—उच्चकोटि के स्काउटिंग के विविध विषय, वन-विद्या, पद-प्रदर्शन, शिविर-जीवन, संकेत-विद्या, शरीर रक्षा, चरित्र गठन, समाज सेवा, ग्रामीण नृत्य तथा वाद-विवाद, नाट्य कला, प्रहसन, मनोविज्ञान, रचनात्मक कार्य, ग्राम सुधार और दस्तकारी, । साहस तथा स्वावलम्बन उत्पन्न करने के प्रयोग । मनोविनोद, खेल, भ्रमण इत्यादि ट्रेनिंग ही के भाग होंगे।

दैनिक कार्यक्रम—प्रातःकाल ४½ बजे से ११ बजे तक ट्रेनिंग का कार्य होगा; तदू नन्तर ३ घंटे का समय स्नान, कपड़े धोना, भोजन इत्यादिक के लिये मिलेगा; फिर २ बजे से ६ बजे सायंकाल तक ट्रेनिंग का दूसरा प्रहर होगा। रात्रि को भोजन उपरान्त मनोरंजन तथा वादविवाद का कार्यक्रम रहेगा । और १० बजे रात्रि में सो जाना होगा । पूर्ण विवरण शिक्षण शिविर-विवरण नामक पुस्तिका (प्रासपेक्टस) में मिलेगा जो कि प्रार्थना पत्र के साथ ही ।≈) के टिकट भेजने पर प्रान्तीय कार्यालय, १, कटरा रोड, इलाहाबाद से प्राप्त हो सकती है।

खाना पकाना, पानी लाना, अपने खाने के बरतन मल लेना, रहने के स्थान को साफ करना इत्यादिक काय शिक्षार्थियों को स्वयं ही टोली-प्रणाली के अनुसार कर लेना होगा।

सामान की सूची जो प्रत्येक शिक्षार्थी को अपने साथ लाना चाहिये (बालक विभाग के लिए)

नोट बुक और लिखने का सामान, एक जोड़ा चमड़े का और १ कैनवेस का जूता तथा चप्पल, खाकी निकर और वर्दी के कमीज कम से कम २ जोड़े, ५ फीट लम्बा डन्डा, हजामत बनाने का सामान, पहनने के साधारण कपड़े, धोती, पजामा, कुरता और तौलिया। खाना खाने के लिये एक चम्मच, एक गिलास या मग, एक लोटा, एक छोटी थाली या प्लेट, २ कटोरियाँ, एक लालटेन और छोटी बाल्टी, गरम लेकिन हलका विस्तर (एक दरी, एक बिछावन, दो कम्बल, दो चादर, १ तकिया और उसके गिलाफ) प्रातः और सायंकाल पहनने के लिये गरम कपड़े, सूई, धागा, बटन, मोमबत्ती, दियासलाई, टार्च (यदि हो तो), बूट पालिश व ब्रश, कपड़े धोने और नहाने का साबुन और तेल, चाकू, सीटी, रस्सी छोटी कुल्हाड़ी और हैवर सैक और रग सैक (हाइक पर जाने के लिये पीठ पर सामान लादने का थैला यदि हो तो)। जिनके पास कैमरे हैं वे अपने कैमरे भी लेते आवें।

(बालिका विभाग के शिक्षार्थिनियों के लिए)

कपड़े :—

२ सलवार सफ़ेद हो तो अच्छा है क्योंकि वर्दी का रंग अभी सफ़ेद ही रखा गया है।
२ सलवार के साथ के कुर्ते।
२ चुन्नी (ओढ़नी)
४ सफ़ेद साड़ी वर्दी की। किनारा कैसा भी हो।
२ रंगीन साड़ी
४ ब्लाउज़
२ ऊनी ब्लाउज़ या पुलोवर इत्यादि
४ पेटी कोट
४ बोडीज़

ओढ़ने बिछाने के कपड़े

१ हल्का सा गद्दा
२ ओढ़ने के लिये कम्बल
१ तकिया
४ चादरें

अन्य आवश्यक वस्तुएं

१ सीशा
२ कंघा
३ तेल इत्यादि (साबुन)
१ लालटेन
२ मोमबत्ती
१ टॉर्च
सूई डोरा
पानी भरने की सूत की पतली रस्सी १
१ बाल्टी
१ थाली
२ कटोरी
१ सालगि
१ चम्मच
कापी

पैनसिल
कलम की रोशनाई
होल्डर या पैन

अनुमानतः व्यय—प्रवेश शुल्क ५)
भोजन व जलपान २) प्रति दिन (२७ दिन का)
५४) हलद्वानी से मोटर का किराया कठपुरिया तक और वापस ६)
कठपुरिया से शीतलाखत तक आने जाने का २)
फुटकर व्यय हाइक इत्यादि के लिये) १५)
इनके अतिरिक्त रेल का किराया का अनुमान आपके स्थान से हलद्वानी की दूरी पर निर्भर है।

रेल के किराये में किफायत—जिन स्थानों से ४ या उससे अधिक स्काउटों की पार्टी चलेगी उन्हें रेलवे से स्काउट कन्शेशन टिकट आधे मूल्य पर मिल सकते हैं। स्काउट कन्सैशन का प्रबंध अपने ज़िला स्काउट कमिश्नर या प्रान्तीय कार्यालय की मारफत उचित समय से कर लेना चाहिये।

पत्र व्यौहार का पता—श्री डॉ० एल० आनन्दराव, शिविर संचालक तथा प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, १, कटरा रोड, इलाहाबाद।

गीत

श्रीमती ज्ञानवती सक्सेना; 'किरण'

मन्थर गति से मलय पवन आ,
सौरभ से नहला जाती।
कुहू कुहू करके कोकिल जब,
मंगल गान सुना जाती।

हरित स्वर्ण शृंगर साज जब,
अवनि उमंगित होती थी।
स्वागत को ऋतु राज तुम्हारे,
सुख स्वप्नों में खोती थी।

भर फूलों में रंग पराग के कुंकुम से भरकर झोली।
आते थे ऋतु राज खेलने तुम प्रति वर्ष यहाँ होली।

किन्तु आज आहों की ज्वाला
हृदय कुञ्ज को जला रही
निज पुत्रों के बलिदानों से
अब बसुधा तिल मिला रही।

अब न कुहू की मधुरतान में,
मंगल मय सन्देश भरा।
दुखिया दीन मलीन वेष में,
प्रस्तुत है ऋतुराज धरा।

वीर देव ने मुँदीहुई सदियों को अब आँखें खोली।
लाल रक्त से दिवानों के आ बसन्त खेलो होली।

आचार्य विनोबा भावे के प्रवचन

स्वराज्य में व्यक्तिगत चरित्र-शुद्धि

व्यक्तिगत चरित्र-शुद्धि ही प्रधान वस्तु है। उसे गौण मानकर सत्ता के बल पर काम होगा, ऐसा आभास होता हो तो वह आभास ही है, वस्तु-स्थिति नहीं। अगर मैं कहूँ कि चरखे के द्वारा सूत कतता है, तो वह गलत नहीं होगा, क्योंकि हम जानते हैं कि चरखा चलाने वाला चरखे के द्वारा सूत कातता है। चरखा स्वयं सूत नहीं कातता। चरखे के दोष मैं दुरुस्त कर सकता हूँ, लेकिन मेरे दोष, चरखा नहीं दुरुस्त कर सकता। सत्ता में दोष हो तो चरित्रवान व्यक्ति उस दोष को सुधार सकते हैं, और सत्ता को कल्याणकारी बना सकते हैं। लेकिन हमारे में ही दोष हों तो उसे निकालने की शक्ति सत्ता में नहीं है, क्योंकि सत्ता असतता है; वह जड़ है, चेतन नहीं। जड़ की महिमा गाओगे भी, तो कितनी गाओगे? विवेकानन्द ने एक जगह दृष्टान्त दिया है, कि ट्रेन इतनी शक्तिशाली होते हुए भी, एक तुच्छ चींटी को खत्म नहीं कर सकती; क्योंकि ट्रेन जड़ और बुद्धिहीन है। चींटी चेतन और बुद्धियुक्त है। वह पटरी पर से जरा भी खिसक जाय, तो अपना बचाव कर लेती है, जबकि ट्रेन अन्धे के मुआफिक पटरी पर से दौड़ती जाती है। ट्रेन भी जो थोड़ा काम करती दीखती है, वह उसे चलाने वाले चेतन के आधार पर ही। इसलिये हम अगर चेतन के बाहर शक्ति का आधार मानते हैं, तो वह एक मृगजल है और उस मृगजल का मोह अगर हमारे में रहा तो हम, चाहें या न चाहें, हिंसा में पड़ते हैं। अहिंसा की वृत्ति रखकर भी, मोह अगर अचेतन शक्ति पर अधिक रहा, तो उसके पीछे हम पड़ते हैं, जिसके फलस्वरूप हम गहरे गढे में गिरते हैं। इस महान भय से हमें बचना चाहिये।

जब वेद का "यते महि स्वराज्ये" स्वराज्य के लिए हम सब यत्न करें यह अत्रि ऋषि का मन्त्र मैंने पढ़ा, तो मन में सोचने लगा कि क्या ऋषि के जमाने में परतन्त्रता थी? तो जवाब मिला, कि यद्यपि उस समय सत्ता परकीय नहीं थी, फिर भी अत्रि ऋषि को वह स्वराज्य नहीं मालूम होता था।

जब तक हमारे मन में चेतन से, अचेतन की ही अधिक प्रतिष्ठा है, और जब तक सत्तादि के मोह के पीछे चेतन दौड़ता है, तब तक सच्चे स्वराज्य का उदय हो नहीं सकता—सर्वोदय का तो हरगिज नहीं। इस तरह का स्वराज्य हिन्दुस्तान में नहीं है, इतना ही नहीं बल्कि दुनिया के किसी भी देश में नहीं है। न वह इंग्लैंण्ड और अमरीका में है, और न उस रशिया में ही है, जिसका इतना बोलबाला है। उन देशों में उतना ही दास्य है, जितनी किसी गुलाम देश में हो सकता है। सत्ता के बारे में अपने और पराये का भेद एक भ्रम ही है। अगर दुनिया में कोई अमिट भेद है या सच्चा वर्ग विग्रह है, तो वह सज्जनता, दुर्जनता यही दो वर्ग हैं। अपने हाथ में सत्ता हो, तो वह अच्छी होगी, यह एक भ्रान्त कल्पना है। हमारा स्वराज्य वैसा ही होगा, जैसा हमारा "स्व" होगा। हम अगर बिगड़े हैं, तो हमारा स्वराज्य कभी शुद्ध नहीं हो सकता।

श्रम का महत्त्व

हममें से हर एक को खाने व पहिनने के लिये तो कुछ न कुछ चाहिये ही। और हम जानते हैं कि हमारे देश में इसकी कमी है। तो जैसी कि उपनिषदों की आज्ञा है, हमें पैदायश का व्रत लेना चाहिये। हम सब वकील, डाक्टर, प्रोफेसर, व्यापारी, न्यायाधीश आदि रोज कुछ न कुछ निर्माण कार्य करेंगे तो हमारी गरीबी दूर हो सकेगी। इसलिये गांधी जी ने सबको सूत कातने की सलाह दी थी। सूत कातना तो इसलिए सुझाया कि कपड़े की जरूरत भी हर एक को होती है और वह सब कर सकें ऐसा आसान काम है। मतलब इसका यही है कि हर एक को निर्माण-कार्य करना है। कर्ममयी उपासना दृढ़ करनी है। गीता ने हमको यह सिखाई थी लेकिन हम उसका मूल्य समझ नहीं सके हैं।

मुझे तो इस विचार से अत्यन्त स्फूर्ति मिलती है। हिन्दुस्तान के विचारकों ने इस पर पूरी तौर से सोचा नहीं

था। भक्ति मार्गी भजन करते हैं, ध्यान-योगी ध्यान में रमते हैं, ज्ञानी चिंतन में मस्त हैं, पर ये सब ऐसा नहीं सोचते कि चूँकि हमें रोज कुछ न कुछ खाने को चाहिये तो कुछ पैदायश का काम भी कर लें, ताकि एक ही कर्म से चित्त-शुद्धि भी हो, भक्ति भी सधे और श्रमिकों का बोझ भी कुछ कम हो।

हमारे यहां बीच के जमाने में श्रम की प्रतिष्ठा न रही। कारीगरों को हमने नीच जाति और अछूत समझा। मनु ने कहा था, 'सदा शुची कार हस्त' यानी काम करने वाले के हाथ निरन्तर पवित्र होते हैं। किन्तु हम यह चीज भूल गये। हर कोई काम छोड़ने लगा। संन्यासी ने काम छोड़ा, विद्यार्थियों ने छोड़ा, भक्तों ने भी छोड़ा और इस तरह जो काम करने वाले रह गये उनका बोझ बढ़ गया और उनकी तथा उनके काम की प्रतिष्ठा भी जाती रही। इसलिए अगर हमें स्वराज्य को सम्पन्न बनाना है तो श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ानी चाहिये। अर्थात् श्रम का मूल्य भी बढ़ाना होगा। बढ़ई, प्रोफ़ेसर और न्यायाधीश के वेतन के भेद मिटाने होंगे। जिस तरह सूर्य सबको समान प्रकाश देता है, चन्द्र सबको समान रूप से शीतलता पहुँचाता है, और पृथ्वी, हवा, पानी सबके लिये समान हैं, उसी प्रकार आजीविका के साधन सबको समान रूप से मिलने चाहिये।

लोगों को डर लगता है और पूछते हैं कि सब समान हो जावेंगे तो हमारी प्रतिष्ठा कैसे रहेगी? हम तो ऊँचे काम करने वाले हैं। मैं पूछता हूँ कि आपने भगवान कृष्ण से तो अधिक ऊँचा काम नहीं किया है, कृष्ण से बढ़कर कोई तत्वज्ञान हमें नहीं दिया है, वह कृष्ण क्या करता था? ग्वालों के बीच काम करता था, गौवें चराता था, घोड़ों को खरारा करता था। धर्म राजा के यहाँ यज्ञ में जूठन उठाने का काम अपने लिये उसने माँग लिया। हिंदुस्तान का किसान गीता भी नहीं जानता। परन्तु आज पाँच हजार वर्ष हुए वह गोपाल कृष्ण की जय बराबर करता जा रहा है। यह कैसे बना? क्योंकि उसने देखा कि गोपल कृष्ण ने तत्वज्ञान भी दिया, राज भी किया और मजदूरी का काम भी किया।

विज्ञान एवं हिंसा

मैं तो कहता हूं कि अहिंसा बनाम हिंसा के बीच चुनाव करने का सवाल नहीं है। चुनाव तो विज्ञान और हिंसा के बीच करना है। विज्ञान और हिंसा दोनों साथ नहीं चलेंगे। दोनों मिलकर हमें खा जायँगे। अगर हिंसा पर कायम रहना है तो विज्ञान को छोड़ दीजिये और पुराने जमाने में चले आइए जिससे हिंसा चलेगी तो कम से कम, आज के जैसा नुकसान नहीं करेगी। अगर विज्ञान को रखना है तो हिंसा को खतम करना चाहिये। विज्ञान में महान शक्ति है और अगर हिंसा छोड़ दें तो विज्ञान की मदद से दुनिया पर स्वर्ग को उतार सकते हैं। पर विज्ञान के साथ हिंसा जोड़ देंगे तो वह मानव को ही खतम करेगा। इसलिये जो भी विज्ञान की कदर करता है उसे हिंसा के खिलाफ आवाज उठानी चाहिये। शिक्षण शास्त्र को भी यही समझना है। हिंसा उसकी बैरी है। जहाँ हिंसा आई वहाँ शिक्षण तो हो ही नहीं सकता। समाज-शास्त्र को भी यही समझना है। समाज का आधार हिंसा नहीं, अहिंसा ही है। अहिंसा के बगैर समाज-शास्त्र ही मिट जाता है। इस तरह से सोचेंगे तभी यह हिंसा का असुर हट सकता है।

हरिनाम

हरिनाम एक संकल्प है। संकल्प का बल महान होता है। संकल्प द्वारा ही आत्मा की अनुभूति होती है। "शये प्राये जिगीव सः स्याम" जिसको अपने संकल्प का बल है उसके कोष में हार का शब्द ही नहीं। उसकी हमेशा जीत ही रहती है। मैं जो चाहूँगा, वही मेरे लिये होगा, यह बल संकल्प में होता है। वह रोना जानता ही नहीं। आपत्ति भी उसके लिये कसौटी होती है, सम्पत्ति भी। दुख-सुख दोनों भाई हैं। लेना हो तो दोनों को, और छोड़ना भी हो तो दोनों को। ख़तरे में पड़ने वाले मित्र को हम सावधान करते हैं। सुख में पड़े हुए मित्र को भी इसी तरह सावधान करने की ज़रूरत है। गाड़ी को उतार और चढ़ाव दोनों जगह धोखा है, धोखा तो समतल भूमि पर ही नहीं होता। हमारा जी[illegible]-शकट भी समतल पर चलना चाहिये।

विवाहित महिलायें एवं स्काउटिंग

श्रीमती सी० मोहिनी, सहायक राष्ट्रीय स्काउट प्रचार कमिश्नर

महिला स्तंभ

चार वर्ष बीत गए जब अमृतसर में हमने अपने मुहल्ले में गर्ल-स्काउट्स का एक ट्रुप शुरू किया था। वहाँ पर एक दिन मैं ट्रेनिंग से लौट रही थी तो कुछ औरतों को कहते सुना, "शादी हो जाएगी तो ससुराल वालों को क़वायद सिखाया करेंगी।" मेरे मन में यह प्रश्न उठा कि क्या लड़कियां शादी के बाद स्काउटिंग में भाग नहीं ले सकतीं?

जो लोग ऐसा सोचते हैं वह केवल वर्दी पहिन कर ड्रिल करने को ही स्काउटिंग का नाम देते हैं। वास्तव में स्काउटिंग हमें वही सब सिखाती है जिन गुणों को ग्रहण करने पर ही हम मनुष्य कहला सकते हैं। सबसे मुख्य चीज़ जो हमें दिखाई जाती है वह है 'सेवा'। दूसरों की सेवा करना प्रत्येक स्त्री का धर्म है। घर के अन्दर या बाहर जब भी समय पड़े, उसे सेवा से नहीं चूकना चाहिए। परन्तु अपने आपको इस योग्य बनाने के लिए आवश्यक है वह स्काउटिंग की शरण में आए जिससे वह जान सके कि किसी रोगी की सेवा कैसे की जाती है, किसी बच्चे को चोट आ जाए तो डाक्टर के आने तक किस तरह से उसे जीवित रखा जाता है इत्यादि।

स्काउटिंग में हम यह भी सीखते हैं कि किस तरह अनुशासन में रह कर अलग-अलग परिवार व जातियों के लोग बिना किसी वैर-भाव के अपना जीवन व्यतीत करते हैं। कैम्प में हमने देखा है कि बहुत छूआछूत को मानने वाली औरतें भी सभी जाति वाली औरतों के साथ बैठ कर खाना खाती हैं। इस प्रकार सब के लिए हृदय में प्रेम रखने वाली स्त्री ही हर जगह मान पाती है। स्त्री को तो प्रेम की देवी कहा जाता है। कोई भी स्त्री जो स्काउट रही है और जानती है कि आपस में सप्रेम रहने से जीवन कितना सुखकर व आनन्दमय होता है, यह सहन नहीं कर सकेगी कि वह दूसरों के साथ कलह का कारण बने।

देश का भविष्य देश की सन्तान पर निर्भर होता है। सन्तान को बनाना या बिगाड़ना माता के ही हाथ में है। सुनागरिक बनने का पहला पाठ बच्चा अपने ही घर में सीखता है। लेकिन जो माता स्वयं नहीं जानती कि कर्त्तव्य परायणता किसे कहते हैं तो वह बच्चों को क्या सिखाएगी? स्काउट को पहला पाठ जो पढ़ाया जाता है वह यही है कि एक अच्छा नागरिक बनने के लिए उसे कौन-कौन से नियम व प्रतिज्ञाओं का पालन करना चाहिए। इस तरह से हम देखते हैं कि स्काउटिंग हमें कोई भी ऐसा काम नहीं सिखाती जो हमारे जीवनको सफल बनाने के लिए आवश्यक न हो। यदि हम यह कहें कि लड़कियां शादी के बाद स्काउटिंग में भाग नहीं ले सकतीं तो इसका मतलब यह होगा कि शादी से पहले अगर कोई लड़की अपने गुणों के कारण सर्वप्रिय है तो बाद में उसे वह सब गुण अपने से अलग करने पड़ेंगे।

यहां इलाहाबाद में मैंने कुछ महिलाओं को देखा है जो स्काउटिंग में ख़ूब मेहनत से काम करती हैं। घर का भी सब काम वह स्वयं देखती हैं। इनमें से एक तो यहां की डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर हैं। इनके बच्चे भी बड़े साफ़ सुथरे व सभ्य हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक कार्य में जहां भी आवश्यकता हो लोग इन्हीं का नाम याद करते हैं।

किसी पैरेड में लड़कियों को देख कर कुछ बहनें यह कह उठती हैं, "कितना अच्छा था वह समय जब हम भी स्काउट थीं"—तो उन बहनों से मैं यह कहूंगी कि वह इस विचार से अपने को दुखी न करें। वह अगर अपने जीवन में उन नियमों को नहीं भूलीं जो उनको सिखाए गये थे तो वह अब भी स्काउट हैं और हमेशा एक सच्ची स्काउट बनी रह सकती हैं।

देश की निर्माता

श्रीमती सरला शंकर, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, बालिका विभाग

किसी भी देश को बनाने के लिये सबसे पहले वहां की बालिकाओं की शिक्षा पर ध्यान देना चाहिये। जिन बालिकाओं को प्रायः प्रारम्भ ही से तुच्छ समझा जाता है यदि वास्तव में देखा जाय तो वही देश की भाग्य-विधाता हैं। देश का गौरव तथा उसकी संस्कृति और सभ्यता सब कुछ इन्हीं पर निर्भर है। जो बालिकाएँ आज अबोध हैं आगे जा कर वे ही गृहणी और माताएं बनती हैं। इन्हीं के आचार-विचारों तथा सभ्यता का प्रभाव नवशिशु पर पड़ता है जो कि आगे जा कर हमारे समाज के स्तम्भ माने जाते हैं।

संसार भर में पहली गुरु माता को माना गया है, जब बालक गर्भ में होता है उसी समय से उस पर माता के विचारों और शिक्षा का प्रभाव पड़ता है जिन्हें हम प्रारम्भिक संस्कार कहते हैं। जब बालक उत्पन्न होता है तो माता की देख रेख में उसका लालन-पालन होता है। वह चौबीस घन्टे माता के साथ रहता है जिसका उस पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इसके पश्चात पांच, छैः वर्ष तक उसकी पहली गुरु माता ही है जिसकी शिक्षा और देख रेख में वह पलता और बड़ा होता है।

जितने भी सभ्य देश हैं वहां बालकों की शिक्षा पर सबसे अधिक ध्यान दिया गया है और यह सिद्ध किया है कि बालकों के लिये स्त्रियां ही एक कुशल शिक्षक हो सकती हैं। कारण कि जितनी अच्छी तरह स्त्रियां इनके मनोभावों को [illegible] सकती हैं, उतने पुरुष नहीं। यह प्राकृतिक नियम है कि बालिकायें उत्पत्ति से ही [illegible] [illegible] समय वे खेलने योग्य होती हैं उसी समय से उनकी प्रवृत्ति का झुकाव किसी वस्तु के बनाने तथा सजाने की ओर होता है। वे गुड़ियों के घरौंदे बनाती हैं उसे सजाती हैं। गुड़ियों के कपड़े तथा आभूषण बना कर उसे सजाती हैं। उनके विवाह आदि में बे सारी रीति-रिवाज करती हैं और बहुत सी बालिकाएं एकत्रित होकर नृत्य और गान करती हैं। वे गुड़ियों के प्रति उतना ही प्रेम रखती हैं कि माता का अपने बालक के प्रति। उनकी भावनाएं कोमल और प्रेम से परिपूरित होती हैं। वे उत्पत्ति से सौंदर्य और कला की उपासिका हैं।

भारतवर्ष की प्रारम्भिक शिक्षा उतनी सफल न होने का एक बहुत बड़ा कारण है कि छोटे स्कूलों में पुरुष अध्यापक रक्खे जाते हैं। जोकि बालकों के मनोविज्ञान से बिलकुल अनभिज्ञ होते हैं। इससे शिक्षक और बालक के बीच एक बड़ा अन्तर पाया जाता है। उनकी दशा एक गूंगे और बहरे के समान होती है। शिक्षक बालकों का कार्य ठीक न पाकर निर्दयता से उन पर मार लगाते और नाना प्रकार की यातनाएं देते हैं। जिससे बालक में ढीठता तथा नीरसता आ जाती है। इसमें शिक्षकों का दोष न होकर शिक्षा सम्बन्धी योजना बनाने वालों की कमी है जिस पर ध्यान नहीं दिया गया। इसका प्रभाव यह है कि वास्तविक शिक्षा का अभाव है।

मध्यकालीन युग से हमारे देश का कुछ ऐसा ढांचा बना जिसके कारण देश की आधी से अधिक शक्ति क्षीण होगई और पूरा देश कुरीतियों का घर होगया। इस समय से पहले जो बालिकाएं देवी के समान मानी जाती थीं वे ही उसके पश्चात अपने माता पिता पर भार के समान प्रतीत होने लगी। उनके माता-पिता इनकी उत्पत्ती से अपने को अभागा समझने लगे कारण कि उस समय बालिकाओं का अपहरण एक साधारण सी बात थी। इस कारण बाल-विवाह तथा पर्दे की कुप्रथा आरम्भ हुई। विवाह के पश्चात उस बालिका पर सारे परिवार का उत्तरदायित्व आजाता था जिससे कि वह स्वयं अनभिज्ञ थी। धीरे-धीरे यह एक प्रथा बन गई जो कि आज भी प्रचलित है। बालिकाओं की मानसिक और नैतिक उन्नतियों के रास्ते में सामाजिक नियम उन भयानक रोड़ों के के रूप में बाधक पाये गये जिसके कारण देश की बहुत बड़ी शक्ति क्षीण होगई। यह बनी हुई बात है कि जिस

देश में स्त्रियां अपने वास्तविक अधिकारों से विमुख रक्खी जाती हैं उस देश का निश्चय ही पतन है ।

आज हमारा देश स्वाधीन है जिसकी सेवा के लिये स्त्री और पुरुष दोनों ही को एक सचरित्र के रूप में इसके प्रति अपने कर्तव्य पालन करने के लिये तैयार होना है । बिना इस संगठित शक्ति के उन्नति के मार्ग में दिन पर दिन अवनति की आशंका है । देश स्वतंत्र हो गया परन्तु यदि देशवासियों की आत्मा पवित्र नहीं हो पाई तो देश का एक भारी संकट में फसने का भय है । देखने में तो यह आता है जिस देश को हमको एक सच्चे नागरिक के नाते उसकी दूषित बातें दूर कर स्वर्गमय बनाना चाहिये उसके स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों की माँग लिये स्वार्थ साधन में मग्न है, जिस कारण देश उन्नति के स्थान पर अवनति की ओर जा रहा है ।

एक सच्चे नागरिक और देशभक्त के नाते हमको इस पर अवश्य ध्यान देना है कि वे कौन से साधन हैं जिनको अपनाने से हम देश की दशा सुधार सकते हैं । इस महान कार्य में हम तभी सफलता प्राप्त कर सकते हैं जब कि बालकों के समान बालिकाएं भी अधिक से अधिक मात्रा में स्काउटिंग के क्षेत्र में कार्य करें । जैसा कि हमने ऊपर लिखा है कि बालिका आगे जाकर देश की निर्माता बनती है । सबसे पहले किसी भी इमारत को तैयार करने के पहले उसकी 'नींव' को देखना है । यदि बालिकाओं में बचपन से वे सारे गुण आजाते हैं तो वह अपने मातृत्व-पद पाने पर अपने बालकों के प्रति सच्चे कर्तव्यों का पालन कर सकती हैं ।

स्काउटिंग द्वारा बालक और बालिकाओं का चरित्रगठन होता है । उनमें निरीक्षण शक्ति का विकास, स्वावलम्बन साहस, सहनशीलता, वीरता, सेवा भाव, प्राण रक्षा, और स्वाभिमान आ जाता है । इन गुणों द्वारा हम बड़े से बड़े कार्य सरलता के साथ कर सकते हैं ।

बालकों के अभिभावकों तथा संरक्षकों से

श्री पुरुषोत्तमलाल चूड़ामणि

हर माता और पिता अपने जीवन की सफलता घर में बालक होने पर समझता है। बिना बालक के परिवार या घर अभागे गिने जाते हैं। क्या इस भावना के साथ हम लोग अपने बालकों को वास्तविक शिक्षा देते हैं। बालक की शिक्षा विद्यालय, समाज और माता और पिता पर निर्भर है। अब तक हम यह समझते रहे हैं कि केवल स्कूल का ही कर्त्तव्य बालक को शिक्षा देना है। चौबीस घन्टे बालक शिक्षा पाता रहता है। शिक्षा ग्रहण करना केवल शिक्षा-संस्थाओं में रहने के समय तक ही सीमित नहीं रहता है। हम सब को अपने दृष्टिकोण को बदलना होगा। अतः घर और नगर का वातावरण ऐसा हो जिससे बालक पर अच्छे संस्कार पड़ें।

अभिभावकों के लिये ध्यान देने योग्य बातें—

१—अभिभावक और शिक्षक एक दूसरे से परिचित हों। अध्यापक तथा प्रधानाध्यापक से उनके घर पर या विद्यालय में जाकर अपने बालक की शिक्षा, और संग के बारे में जानना चाहिये और अपने बालक के स्वभाव और रुचियों का ज्ञान संरक्षक अध्यापक को करा दें।

२—बालकों को माता-पिता कुसंग से बचावें। कुसंग के कारण गाली देना, सिगरेट पीने की आदत, सैकिंड हैंड पुस्तकें चुरा कर बेचना; घर से स्कूल के लिये जाना परन्तु गुमराह बालकों के साथ अपने को ख़राब करना, गंदे सिनेमा देखने की लत पड़ना आदि का बालकों में पैदा होना स्वाभाविक है।

३—माता-पिता ध्यान रक्खें कि बालक प्रत्येक दिन के पाठ को घर पर दोहरायें और दिये हुये कार्य को तैयार करके विद्यालय पहुँचे। इस साधारण बात से ही परीक्षा के समय माता-पिता और बालक दोनों को कष्ट न उठाना पड़ेगा।

४—बालक को हम लोग दुनिया में सफलता प्राप्त करने के लिये बाल्यकाल में तैयार करते हैं अतः बचपन से उसके खाने-पीने, रहन-सहन, और पढ़ने-लिखने पर हमें ध्यान रखना चाहिये। बाल्यकाल में ही उसमें समय की पाबन्दी, नियमित जीवन, सफाई, कर्त्तव्यशीलता, सामूहिक जीवन आदि गुण पैदा किये जा सकते हैं।

५—उनको परेशानियों का मुक़ाबिला करना और स्वतंत्र रूप से और मिल-जुलकर सोचने की आदत बनानी चाहिये। यह तभी सम्भव है जब माता-पिता और समाज बालकों को अन्य देश के बालकों की तरह स्वावलम्बी बनावें। इस गुण की प्राप्ति तभी हो सकती है जब बालकों से गुरू और मां-बाप दैनिक आवश्यकताओं और निज व्यवसाय में परिश्रम करावें।

६—बच्चों में अच्छी पुस्तकें और पत्रिकायें पढ़ने का भी शौक पैदा किया जावे—आगे बढ़ो, सदाचार, जीवन की उपयोगिता, महात्मा गाँधी की आत्म कथा, पिता के पत्र पुत्री के नाम, हमारा देश इत्यादि पुस्तकें और सेवा, बालसखा, शिशु, आरोग्य, कर्मवीर, सैनानी आदि पत्रिकायें पढ़नी चाहिये।

७—बालकों की रुचियों का अध्ययन कर उन्हें तैरना, नाव खेना, समाज सेवा, संगीत, वन विद्या, वस्तुसंग्रह, कविता, मनोरंजन कला, हस्तकला, चित्रकला, फोटोग्राफी आदि की ओर आकर्षित करना चाहिये ताकि वह समय का सदुपयोग अपने विकास के लिये करें।

८—बच्चों में मानव धर्म का प्रचार होना चाहिये। जातिपांति के भावों से मनुष्य मात्र को अन्त में दुखी होना पड़ता है। योग्यता और कर्त्तव्य का स्थान जन्म और अयोग्यता ले लेती है।

जानने योग्य बातें

१—हमारे देश में १३० करोड़ रुपये का अनाज दूसरे देशों से आता है।

२—भारतवर्ष में प्रति एकड़ १२०० पौंड चावल होता है परन्तु चीन में प्रति एकड़ २४०० पौंड और जापान में प्रतिएकड़ ३५०० पौंड होता है।

३—सन १९४९ और ५० में भारतवर्ष अपनी आय का ४८.७% सेना पर व्यय करेगा। परन्तु पाकिस्तान अपनी आय का ६५.४% व्यय करेगा।

४—स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारत में ८००० ब्रिटिश अफसर थे अब २०० से भी कम हैं।

५—१३०,००० टन बनस्पति तेल का खर्च भारतवर्ष में प्रतिवर्ष होता है।

६—हमारे प्रान्त में प्रति हज़ार नागरिकों के लिये एक पुलिसमैन है परन्तु इटली में १८३ नागरिकों पर एक, पंजाब में ९१३ पर और लंदन में १७५ पर है।

७—हमारे देश की अनुमानित आबादी ३६ करोड़ है।

आयु

मनुष्य की आयु साधारणतः १०० वर्ष मानी गयी है। लेकिन आचरण अच्छा रखने से यह बढ़ भी सकती है।

कछुए की आयु भी अधिक बतायी जाती है। कहते हैं कि यह ४०० वर्ष तक आसानी से जी सकता है, लेकिन साधारणतः ३०० वर्ष तो जीता ही है।

सबसे लम्बी आयु मेंढक की होती है। वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है यह बिना कुछ खाए-पीए मिट्टी के नीचे २,००० वर्ष तक जिन्दा रह सकता है। अन्य पशु-पक्षियों की औसत उमर नीचे दी जाती है :—

खरगोश	५ वर्ष
मुर्गा	१० ,,
भेड़	१२ ,,
बिल्ली	१३ ,,
तीतर	१५ ,,
कबूतर	२० ,,
गाय	२५ ,,
घोड़ा	२७ ,,
मोर	४० ,,
ऊंट	४० ,,
कुत्ता	४० ,,
सिंह	५० ,,
हंस	७० ,,
तोता	१५२ ,,
कौआ	१०० ,,
गिद्ध	१०० ,,
हाथी	२०० ,,
कछुआ	३०० ,,
मेंढक	४०० ,,
ह्वेल मछली	५०० ,,

इनके अलावा संसार में ऐसे हजारों तरह के भी जीव हैं, जिनकी उमर सिर्फ १ मिनट से अधिक नहीं होती।

अचम्भे की बातें

मंगोल जाति के बच्चों में एक विचित्र बात होती है। उस जाति में पैदा होने वाले हर बालक के पुट्ठे पर एक पैसा के बराबर काला दाग होता है। ६ वर्षों तक यह धब्बा रहता है और बाद में हल्का होते-होते बिलकुल मिट जाता है।

—चीनी लोगों के शरीर से पसीना नहीं बहता।

—पिछले ८० वर्षों में ६ मार्च १९४८ लन्दन का सबसे अधिक गरम दिन कहा गया है। इस दिन का तापमान ७२ डिग्री हो गया था। वहाँ हिन्दुस्तान की तरह ११६ और १२० डिग्री गर्मी नहीं पड़ती।

आलू की फसल काटने की एक मशीन बनी है। यह मशीन २० मजदूरों के बराबर काम करती है।

आंवले की उपयोगिता

वैसे तो सभी ताजे फलों और तरकारियों में विटामिन (पौष्टिक तत्व) 'सी' की कुछ-न-कुछ मात्रा मौजूद रहता ही है, लेकिन आंवला में यह जितना पाया जाता है, उतना

शायद और किसी खाद्य वस्तु में नहीं। इसीलिए कहा गया है, कि जितने खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध में अब तक छान-बीन की गई है, उन सबमें आंवला ही ऐसा पाया गया है, जिसमें विटामिन 'सी' सबसे अधिक है।

विटामिन 'सी' लवणरक्त नामक चर्म रोग को होने से रोकता है। और उसे दूर भी करता है। भिन्न-भिन्न फलों में विटामिन भी भिन्न-भिन्न मात्रा में पाया जाता है, जैसे कि सन्तरे में, जो बहुधा बच्चों को सबसे अधिक दिया जाता है, लगभग ४० मिलीग्राम 'सी' विटामिन होता हैं जब कि केले में इसका दसवां भाग ही होता है। इसी प्रकार एक छोटे से ताजे आंवले में सन्तरे की अपेक्षा बीस गुना 'सी' विटामिन अधिक होता है।

ये सब अन्वेषण मद्रास की वायकेमिकल लैबरेटरी और बङ्गलोर के इंडियन-इंस्टीट्यूट आफ साइन्स में हुए हैं।

आंवले को बारहों महीना सुरक्षित रख सकते हैं। वैसे तो जब आंवलों की ताजगी निकल जाती है तब उनका विटामिन 'सी' नष्ट हो जाता है, लेकिन आंवले को सुरक्षित रखने की जिन प्रणालियों का पता लगाया गया है उनसे आंवले का 'सी' विटामिन बहुत कम नष्ट होता है।

आंवले को सुरक्षित रखने की प्रणालियों में से सबसे सरल प्रणाली आंवलों को कुचलकर उन्हें छाया में (धूप में नहीं) सुखा लेना है। सूखने पर चूर्ण में 'सी' विटामिन काफी मौजूद रहता है, जो कई महीने तक ज्यों-का-त्यों बना रहता है।

दूसरी प्रणाली में आंवलों को पहले गरम पानी में दो-चार मिनट भिगोना चाहिए और फिर निकाल कर नमकीन पानी में डाल देना चाहिए। इस प्रणाली से भी बहुत कम विटामिन नष्ट होता है। स्मरण रखना चाहिए कि आंवलों का मुरब्बा या अचार बनाने में उन्हें उबालने से उनका बहुत पौष्टिक गुण चला जाता है। बहुत सी आयुर्वेदीय औषधियों में भी आंवले का उपयोग होता है, फिर भी भारत में अभी इसका बहुत कम उपयोग होता है। बच्चों के शरीर में 'विटामिन-सी' पहुँचाने के लिए आंवले से बढ़कर और कोई चीज नहीं हो सकती, क्योंकि वह रुचिकर भी होता है और पचता भी है जल्दी। आंवले का एक चम्मच रस दैनिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए पर्याप्त है।

संगीतमय मच्छर जाल

क्यूबा की दलदलों में अमेरिका के एक डाक्टर ने मच्छर पकड़ने के लिए नवीन ढंग निकाला है, और इस के परीक्षण में सफलता प्राप्त हुई है। इससे मादा मच्छरों की आवाज़ का रिकार्ड भर लिया जाता है, जिससे वह बड़ी चतुराई से नर मच्छर को अपनी ओर बुलाती है। नर मच्छर जाल में आ कर फंस जाते हैं, और नष्ट हो जाते हैं। यह यंत्र एक बकसा सा है, जो ६ फुट ऊँचा और ३ फुट चौड़ा है। मच्छरों के इस जाली में घुसने के लिए बिजली दार रास्ते हैं। इस बक्स में एक लाउडस्पीकर लगा होता है, जिस से मादा मच्छर की आवाज मिलाप के लिए दूसरे मच्छरों को बुलाती है। इस नए यंत्र का मूल्य लगभग २०० डालर होगा।

बिजली की आँख

एक अमरीकन व्यवसायी ने एक पतले लोहे की छड़ तैयार की है, इसका नाम "बिजली की आँख है" और इसके द्वारा धरातल से ३ मील की गहराई तक का पैट्रोल देखा गया है। ये छड़ें ३ से १८ फीट तक लम्बाई की हैं। जब इनमें बिजली प्रचारित कर दी जाती है तो अर्धचन्द्राकार तीव्र प्रकाश इसके चारों ओर होने लगता है। पानी के अन्दर जाने पर तेल में पहुँचने की अपेक्षा इसका प्रकाश अधिक होता है।

कितनी मोटरें हैं

अमेरिका में प्रति चार व्यक्ति पीछे एक मोटर है, और इस वर्ष स्वयंचालित वाहन तथा तत्सम्बन्धी उद्योगों में कार्य करने वाले लोगों को समस्त राष्ट्रीय आय का पांचवां भाग मिला है। ब्रिटेन में प्रति १७ व्यक्ति के पीछे, फ्रांस में २५ के पीछे, रूस में ७० के पीछे, और शेष देशों में कुल मिला कर प्रति २२२ व्यक्ति के पीछे एक कार है।

चरित्र-बल

श्री शिवचरन दास जाखेटिया, प्रचार स्काउट मास्टर

नंगे पैर चिथड़े पहने हुए लड़के ने आगे बढ़ कर एक रास्ते चलते सज्जन ने कहा—महाशय, कुछ दियासलाई ख़रीद लीजिये।

सज्जन ने कहा—"नहीं, भाई मुझे दियासलाई नहीं चाहिए।"

"ले लीजिये, एक ही पैसा तो दाम है।" कह कर लड़का उनके मुंह की ओर देखने लगा। फिर भी इन महाशय ने कहा—

"मुझे इनकी जरूरत नहीं है"

"अच्छा तो, एक पैसे की दो डिब्बी ले लीजिए।"

किसी तरह लड़के से पिंड छुड़ाने के लिए महाशय ने एक डिब्बी ले ली, पर जब देखा कि पास में पैसा नहीं है तो डिब्बी वापस कर दी और कहा—"मैं कल ख़रीद लूंगा।" लड़के ने फिर नम्रता से कहा—"आज ही ले लीजिए, मैं पैसा भुना कर ला दूंगा।"

बालक की बात सुन कर उन्होंने उसे एक रुपया दे दिया। थोड़ी देर तक वह खड़े रहे, पर लड़का नहीं आया। सोचा कि शायद अब बाकी का पैसा न मिलेगा, और थोड़ी देर राह देख कर वह अपने घर चले गये!

शाम को नौकर ने आकर ख़बर दी की एक लड़का आपसे मिलना चाहता है! उत्सुकता से उन महाशय ने उसे अन्दर बुलाया! देखते ही वह समझ गये कि शायद वह उस लड़के का छोटा भाई है? यह उसकी अपेक्षा और भी अधिक चीथड़ों से लिपटा हुआ था! उसके शरीर पर हड्डियां ही दीख पड़ती थीं, पर चेहरे पर एक प्रकार की चमक थी!

थोड़ी दर चुप रहने के बाद उसने कहा—"क्या आपने ही मेरे भाई से दियासलाई की एक डिब्बी खरीदी थी।"

"हाँ"

"लीजिये ये बाकी पैसे! वह स्वयं नहीं आ सका—उसकी तबियत ठीक नहीं है। एक गाड़ी से वह टकरा गया और गाड़ी उसके ऊपर होकर निकल गई। उसकी टोपी, डिब्बी और आपके शेष पैसे न मालूम कहा गये, और उसके दोनों पैर टूट गये। वह अच्छा नहीं है? डाक्टर कहते हैं वह बचेगा नहीं! उसने किसी तरह ये पैसे भेजे हैं।" कह कर बालक रोने लगा। उन सज्जन का हृदय पिघल गया। वह उसे देखने गये!

जाकर देखते हैं कि वह अनाथ बालक एक वृद्ध शराबी के घर में रहता है। लड़का फूस पर लेटा हुआ था। इन्हें देखते ही वह पहचान गया और लेटे लेटे बोला "मैंने पैसे भुना तो लिये थे लेकिन लौटकर आ ही रहा था कि घोड़े के टकरा कर नीचे गिर पड़ा और मेरे दोनों पैर टूट गये" इतना कहकर लड़का दर्द से कराहते हुये अपने छोटे भाई से बोला, "प्यारे भैया मेरी मौत आ रही है पर तुम्हारा क्या होगा? तुम्हारी देखभाल कौन करेगा। मेरे जाने पर हाय, तुम क्या करोगे।"

यह कहते हुये उसने उसे गले से लगा लिया। उसकी आंखों से आँसू बह रहे थे।

इन सज्जन ने दुखी बालक के हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा—बेटा!—तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हारे भाई की रक्षा करूंगा। बालक समझ गया।

उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी फिर भी शेष शक्ति के बल पर उसने इनकी ओर देखा—आंखों से धन्यवाद और कृतज्ञता के भाव साथ-साथ निकल रहे थे! हृदय कुछ कहना चाहता था। पर शब्द मुँह से नहीं निकलते थे! उसी समय उसकी आंखें बन्द हो गईं और इस क्षणभंगुर शरीर को त्याग कर उसकी आत्मा जगतपिता की गोद में जा पहुँची!

भगवान ने उस छोटे से घायल और मरते हुये लड़के को बहुत बड़े सिद्धांत सिखाये थे। बड़े बड़े धनियों की अपेक्षा वह कहीं अधिक ईमानदारी, सत्य, महानता, सहृदयता के मूल्य को समझाता था ये ही सद्गुण मनुष्य को देवता बना देते हैं। इन्हीं के कारण मनुष्य इस लोक में तथा परलोक में पूजे जाते हैं*।

*स्वेड मार्डेन की 'पुशिंग टु दि फ्रन्ट' से अनूदित

अन्तरप्रान्तीय समाचार

मध्य भारत स्काउट व गाइड रैली, उज्जैन

मध्य भारत संघ के निर्माण के पश्चात सम्मिलित होने वाली रियासतों के बाय स्काउट्स और गर्लगाइड्स को एकत्रित करने के उद्देश्य से प्रथम रैली का आयोजन गत ३ से ६ मार्च तक उज्जैन में किया गया। विभिन्न छोटी-छोटी रियासतों में काम करने वाले दलों से अलग-अलग रहकर किसी विशेष कार्य की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी और आवश्यक था कि मध्य भारत की बिखरी हुई स्काउट शक्ति एकत्रित हो और एक दूसरे को नज़दीक से समझे।

रैली के स्वप्न को कार्यान्वित करने के लिये उज्जैन स्काउट हेडक्वार्टर्स के रोवर्स और गाइड्स ने हरिकृष्ण प्रेमी के "आहुति" नाटक का अभिनय किया एवं उसके लाभ से रैली कोष का बीजारोपण किया। शीघ्र ही स्थानीय उत्साही सत्पुरुषों की तरफ से धन व जन की सहायता प्राप्त होने लगी और श्रीमन्त राजप्रमुख श्री जीवाजी राव सेंधिया ने रैली का उद्घाटन कार्य स्वीकार कर कार्यकर्ताओं के उत्साह को बहुगुणित कर दिया।

देवास रोड परेड ग्राउण्ड पर स्काउट नगर का निर्माण किया गया। मध्य-भारत के प्रत्येक जिले से आकर स्काउट्स व गाइड्स ने ४ दिन तक शिविर जीवन व्यतीत किया। अनुमानतः १५०० स्काउट्स और ५०० गाइड्स ने इस रैली में भाग लिया। बिजली और पानी की व्यवस्था से परिपूर्ण स्काउट नगर में चुस्त और फुर्तीले स्काउट्स की चहल-पहल के कारण स्काउट नगर एकबारगी ही स्थानीय जनता का आकर्षण केन्द्र बन गया।

दिनांक ३ मार्च, १९४९ को सायंकाल ५ बजे श्रीमंत राजप्रमुख ने महारानी सेंधिया के साथ पधार कर रैली का उद्घाटन किया। ध्वजारोहण के उपरान्त २००० स्काउट्स और गाइड्स का मार्च पास्ट हुआ एवं सम्पूर्ण समय तक खड़े रह कर श्रीमन्त ने सलामी ली। तदुपरान्त सामने के विस्तृत खाड़े में (प्रांगण) विभिन्न स्काउट्स क्रेफ्ट व खेलों का प्रदर्शन किया गया।

रैली की कार्यवाही जनसाधारण को विगतवार मालूम हो सके तथा आगामी कार्यक्रम की सूचना मिल सके इसलिये रैली के संयोजकों ने दैनिक "स्काउट मेला समाचार" के प्रकाशन का प्रबन्ध किया था। रैली के सचित्र समाचारों से युक्त यह पत्र जितना जनप्रिय हुआ उसे देखकर तो यही कहा जा सकता है कि इस प्रकार के स्वस्थ एवं उपयोगी आयोजनों की हमें कितनी आवश्यकता है।

दिन ४ मार्च, १९४९ ई० को सुबह ११ बजे श्रीमती महारानी साहिबा सेंधिया ने प्रदर्शिनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शिनी का आयोजन दो भागों में किया गया था। प्रथम भाग में स्काउट और गाइड्स ने प्रयोगात्मक प्रदर्शन किया। आसन बनाना, चुड़ियां बनाना, पीतल व लोहा गलाना तथा ढालना, जूते सीना, रस्सी और निवार बनाना, बिजली व नल का काम करना इत्यादि कई प्रकार के हस्त-कौशल दिखलाये। दूसरे भाग में बनी बनाई हुई वस्तुओं का लकड़ी, धातु, मिट्टी, कागज, कपड़ा, प्लास्टर तथा अन्य सामग्रियों से बनी हुई वस्तुओं का प्रदर्शन था।

श्रीमन्त राजप्रमुख व श्रीमती महारानी साहिबा ने स्काउट्स कैम्प का निरीक्षण किया। बालक व बालिकाओं ने अपने डेरे सजाये थे डेरे पर्याप्त संख्या से उपलब्ध न होने से निवास-पेण्डाल बनाये गये—उनकी बनावट व सजावट प्रशंसनीय रही। मध्याह्न काल आर्गनाइजर्स कांफ्रेंस हुई जिसमें विभिन्न स्थानों के आर्गनाइजर्स ने स्काउटिंग के उत्थान हेतु प्रस्ताव स्वीकृत किये।

सायंकाल को समस्त स्काउट्स और गाइड्स ने नगर भ्रमण किया। ग्वालियर और उज्जैन के स्काउट्स के बैण्डों के पीछे अपना-अपना झण्डा लिये हुए वर्दीधारी दलों की पंक्तियाँ बहुत भली लगती थीं। गोपाल मन्दिर के चौक में नागरिकों की तरफ से स्काउट्स और गाइड्स की इस शोभा यात्रा का स्वागत किया गया।

दिनांक ५-३-४९ ई० को प्रातःकाल व मध्याह्नकाल स्काउट्स व गाइड्स क्रेफ्ट स्पर्धाएं हुईं तथा मध्याह्न काल स्काउटर्स सम्मेलन हुआ।

संध्या को छत्रपति महाराजा कोल्हापुर और श्रीमन्त राजप्रमुख महाराजा संधिया ने शिविर विनोद (कैम्प-फायर) का अवलोकन किया। हाथी और घोड़े की बरात, बिच्छू, भैरव बाबा आदि अनेक मनोरंजक नकलें की गईं। गाइड्स की तरफ से कुछ कलापूर्ण नृत्यों का प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम समाप्ति पर श्रीमन्त राजप्रमुख ने धन्यवाद प्रस्ताव के उत्तर में कहा कि मैं तो आप ही लोगों में से हूँ। साथ ही स्काउट आन्दोलन के महत्व को संक्षेप में बतलाते हुए निकट भविष्य में एक अखिल भारतीय रैली आयोजन का मन्तव्य प्रकट किया।

रैली के अन्तिम दिन दि० ६-३-४९ की प्रातःकाल बची हुए प्रतियोगिताएँ हुईं तथा संध्या को मध्य भारत प्रधान सचिव माननीय श्री लीलाधर जी जोशी के हाथ से पुरस्कार वितरण हुआ और उत्सव समाप्त हुआ।

पुरुषोत्तम शास्त्री, बी० ए० एल०-एल० बी०

अमरावती (मध्य प्रदेश)

हिन्दुस्तान डिस्ट्रिक्ट स्काउट एसोसिएशन की ओर से बालबीर शिक्षण के दो वर्ग संचालित किये। एक वर्ग ता० १-३-४९ ई० से ता० १०-४-४९ तक डिप्टी इन्स्टीट्यूट आफ मेन अमरावती में संचालित किया गया जिसमें डिप्टी इन्सटीट्यूट फिज़ीकल कल्चर के १३ व डिप्टी इन्स्टीट्यूट आफ मेन के ५४ एवं बलगाँव हायर स्कूल के १ शिक्षक ने भाग लिया। इस प्रकार शिक्षा प्राप्त करने वाले अध्यापकों की कुल संख्या ६८ थी। इसवर्ग का पूर्ण शिक्षण कार्य अखिल भारतीय स्काउट एसोसियेशन के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत जानकी शरण जी वर्मा इलाहाबाद के द्वारा संपादन किया गया। श्री वर्मा जी ने यहाँ के अध्यापकों को उच्च शिक्षण दिया। श्रीयुत डाक्टर अलनारे ने प्रथम उपचार का शिक्षण दिया। इसके अतिरिक्त श्रीयुत पटवर्धन व श्रीयुत अन्धारे आदि महानुभावों का भाषण रेडियो एवं किंडर गार्डन सम्बन्धी विषयोंपर क्रमशः हुए।

दूसरा वर्ग लड़कियों के लिये ता० ३-३-४९ ई० से ता० १०-३-४९ ई० तक डिप्टी इन्सटीट्यूट आफ वूइमेन अमरावती में श्रीयुत जी० वाई० काले प्राविन्शीयल आरगनाईज़िंग कमिश्नर ने शिक्षण दिया। जिसमें नार्मल स्कूल फार वूइमेन गर्ल्स हायर स्कूल एवं डिप्टी इन्स्टीट्यूट आफ वुइमेन आदि संस्थाओं की ५४ अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

इस केम्प का उद्घाटन श्रीयुत सहस्त्रबुध्दे डी० एस० ई० ईस्ट बेरार के द्वारा ता० १-३-४९ ई० को हुआ जिसमें अमरावती के मुख्य लोग भी सम्मिलित थे। ता० १०-३-४९ ई० को श्रीमान दस्तूर साहब डी० सी० की अध्यक्षता में स्काउट की एक रैली हुई व श्रीमती दस्तूर साहिबा के कर-कमलों द्वारा स्काउट अध्यापकों एवं गर्ल्स स्काउट को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये।

इस वर्ग को यशस्वी एवं सफल बनाने के लिये श्रीयुत डाक्टर पडोले डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर व श्रीयुत ज० के० मुले सिटी स्काउट कमिश्नर इन व्यक्तियों ने बड़ा कष्ट उठाया। श्रीयुत प्राचार्य ने श्रीमान रावसाहेब राजवाड़े व मकेले गनोजेकर आदि व्यक्तियों ने भी कार्य सफल बनाने में पूर्ण हार्दिक सहयोग दिया।

समस्तीपुर (बिहार)

प्रह्लाद स्काउट ट्रूप,

हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन मगरयही समस्तीपुर के स्काउटों ने ३ मार्च १९४९ को युक्त प्रान्त की गवर्नर श्रीमती सरोजिनी नायडू के देहान्त पर हार्दिक वेदना प्रकट की तथा उनके प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित की।

स्काउटों का होली उत्सव (अजमेर)

"भारतवर्ष में शुद्ध विनोद भावना, सामाजिकता और पवित्र व्यवहार की अत्यन्त आवश्यकता है। होली के त्योहार को अपवित्रता, हानिकर और क्रूर मजाक व कुप्रथाओं से मुक्तकर प्रेम, पवित्रता और पारस्परिक प्रसन्नतावर्धक तरीकों से मनाना चाहिए" ये हैं वे शब्द जो टीकमचन्द जैन हाई स्कूल के प्रधान अध्यापक श्री मनोहर लाल जी तेजस्वी चरपुंज द्वारा आयोजित कैम्प फायर के सभापति पद से भाषण करते हुए कहे।

स्काउट होली के कार्यक्रम के अंतर्गत १३ मार्च को रात्रि के ७ बजे से टीकमचन्द जैन हाई स्कूल में एक सुन्दर केम्पफायर हुआ जिसमें बाहुबली दल के अभिनय, तेजस्वी चरपुंज के छद्मवेष प्रदर्शन और बालबीर शिक्षक बालकृष्ण जी के गायन बहुत सराहे गये। हिन्दुस्तान

स्काउट असोसियेशन के सभापति रा०ब० मिट्ठन लाल जी भार्गव ने होली मानने के स्काउटों के इस सुन्दर ढंग की प्रशंसा करते हुए इसकी उपादेयता पर प्रकाश डाला। श्री परमात्मा स्वरूप जी एडवोकेट आदि कई मान्य सज्जन भी उक्त अवसर पर पधारे थे।

दूसरे दिन १४ मार्च को शाम के ४ बजे जैन औषधालय में हास्य सम्मेलन हुआ जिसमें हास्य रस की कविता, कहानी, गाने और चुटकुले सुनाये गये। श्री बालकृष्ण जी की 'तेजस्वी रामायण' और त्रिलोक चन्द जी की 'मैं और तू' कविता बहुत पसंद की गयी।

१५ मार्च मंगलवार को दिन के ११ बजे से शाम के ५॥ बजे तक स्काउट झन्डे के साथ चंग पर वीर रस व देशभक्तिपूर्ण सामूहिक गायनों से जनपथों को गुँजाते हुए जो स्काउट गैर निकली, उसने चन्दन और फुलों की पंखड़ियों द्वारा जो मातापिताओं व अन्य राह में मिलने वाली 'रंगीन' गैरों का स्वागत किया और होली मनाने का जो सभ्य श्रेष्ठ और अनुकरणीय तरीका सामने रक्खा उसको माता-पिताओं और अन्य सभ्य पुरुषों ने ही नहीं 'असभ्य' होली मनाने वालों ने भी सराहा। स्काउटों के घरों पर ठंडाई, संतरे, रसभरी, सौंफ, इलायची आदि से गैर का स्वागत किया गया। कैम्पफायर के संयोजक श्री सुशील चन्द जी और गैर के संयोजक श्री बाल कृष्ण जी को अपने कार्य में काफी सफलता प्राप्त हुई।

अमृतसर

३५० चर शिक्षक बालचर एवं बालिका स्काउट स्थानीय हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के नेतृत्व में वनोपसेवनार्थ बाहर गये। हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन से सम्बन्धित लगभग सभी शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि इस दल में सामिलित थे। नदी के किनारे शिविर डाल कर दिन में स्काउटों ने निशान ढूंढ़ने के खेल, नौका विहार तथा अन्य मनोरंजन किये। चुने हुए स्काउटों के दल ने सैनिक शिविर में सुन्दर एवं मनोरंजक प्रदर्शन किये जिसकी सैनिकों ने बड़ी सराहना की।

मदुरा

४-३-४६ को कुमारी अन्ना मैंथ्यूज़, ज़िला गर्ल गाइड कमिश्नर, ने स्थानीय लेडी डोक कालेज के छात्रावास में हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन तथा गर्ल गाइड के कार्यकर्त्ताओं की संयुक्त बैठक का आयोजन किया। श्रीमती गौरी राज गोपालन, अवैतनिक प्रान्तीय शिक्षक, गर्ल गाइड, तथा सहायक प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन ने दोनों संस्थाओं के विलनीकरण पर व्याख्यान देते हुए बताया कि अब तक इस सम्बन्ध में क्या किया जा चुका है। श्रीमती गौरी ने महिलाओं से अनुरोध किया कि वे अधिक से अधिक संख्या में आयोजित शिक्षण शिविरों में सम्मिलित हों। कार्यकर्त्ताओं में स्काउट सम्बन्धी अन्य-विषयों पर भी विचार विनिमय हुआ।

ज्ञानामन्दिरम्, नववतरवाना स्ट्रीट में श्री मती एस० गिरी सुन्दरी सहायक स्काउट कमिश्नर हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन के सभापतित्व में आयोजित स्थानीय म्युनिस्पल स्कूल के प्रधान अध्यापिकाओं तथा फ्लाक लीडरों की सभा में श्रीमती गौरी ने भाषण दिया। सर्व प्रथम श्रीमती सरोजनी नायडू के निधन पर सब लोगों ने खड़े होकर शोक प्रस्ताव पास किये।

श्रीमती अमृथा रमा सुब्रनिअम प्रान्तीय शिक्षा परामर्शदात्री संस्था एवं म्यूनिस्पिल सदस्य के सभापतित्व में भिन्न-भिन्न महिला संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें श्रीमती गौरी ने बालिकाओं के लिये स्काउट शिक्षण की उपयोगिता पर व्याख्यान देते हुए महिला संस्थाओं से अनुरोध किया कि वे बलिकाओं के स्काउट दलों का संगठन करें। मन्त्री ज़िला हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन के धन्यवाद देने के पश्चात सभा विसर्जित हुई।

श्रीमती गौरी राज गोपालन सहायक प्रचार कमिश्नर मदरास के स्वागतार्थ, स्काउटर और कार्यकारिणी कमेटी के स्काउट सदस्यों की बैठक, ज़िला कार्यालय पर ता० ५-३-४६ को हुई। अपने संक्षिप्त भाषण में श्रीमती गौरी ने बताया कि सदस्य लोग किस प्रकार शिक्षकों को स्काउटिंग के काम में सहायता कर सकते हैं।

हमारी गतिविधि
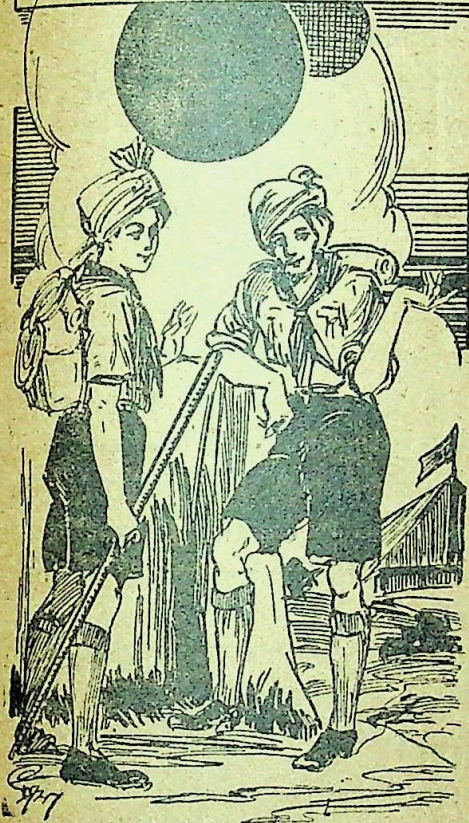
श्री एच० बी० शराफ को विदाई में वृहत रैली

मालवीय तथा कुँजरू कप के लिये प्रतियोगिता

ज़िला स्काउट असोसिएशन कानपुर के जिला स्काउट कमिश्नर और हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, यू० पी० के बहुत ही पुराने निर्भीक और कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री एच० बी० शराफ ने अपने डिप्टी डाइरेक्टर आफ इन्डस्ट्रीज, यू० पी० के पद से २५ मार्च १६४६ को अवकाश प्राप्त किया। आपकी अपूर्व योग्यता एवं कार्यकुशलता के फलस्वरूप यहाँ से अवकाश प्राप्त करते ही आपकी नियुक्ति बम्बई प्रान्त के एक बहुत बड़े व्यवसाय के जनरल मैनेजर के पद पर हो गयी। अतएव उस पद का कार्य-भार ग्रहण करने के लिये श्री शराफ को २६ तारीख ही को कानपुर छोड़ देना पड़ा। लगभग सन् १६२१ से आप इस प्रान्त में कार्य करते रहे हैं। इतने लम्बे और घनिष्ट सम्पर्क के पश्चात आपका विछोह कितना असहनीय होगा। इसका अनुमान "जिस तन के लोग सोई जन जाने"

जिला हि० स्का० अ० ने श्री शराफ की विदाई में २५-३-४८ को सायंकाल एक बहुत बड़ी रैली का आयोजन किया जिसमें कानपुर के शहर ही के नहीं बल्कि जिले भर के ग्रामों से लगभग ६०० स्काउट भी सम्मिलित हुये।

श्री एच० बी० शराफ को जिला बोर्ड के स्काउटों की ओर से एक मानपत्र रामचन्द्र बाजपेयी जिला आर्गनाइजिंग स्काउट मास्टर ने भेंट किया। श्री हर प्रसाद टंडन ने शहर के स्काउटों की ओर से एक मानपत्र भेंट किया। नये स्काउट कमिश्नर श्री बी० नी० मेहरोत्रा और कानपुर के विख्यात रईस श्री सीताराम जी जयपुरिया ने अति सुन्दर भाषणों द्वारा श्री शराफ की सराहना करते हुये श्री शराफ साहब को श्रद्धाञ्जली अर्पित की। विदाई में लिखी हुई कवितायें सुनाई गयीं और अभिनय भी प्रदर्शित किये गये।

प्रान्तीय कार्यकारिणी की सिफारिश पर अखिल भारतीय कार्यकारिणी समिति ने श्री शराफ को असोसिएशन की अनन्य सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्हें एक पदक प्रदान किया जिसे मेडेल आफ मेरिट कहते हैं।

प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स की ओर से श्री शराफ को सम्मानित करने और उनकी इस संस्था के लिये सेवाओं के लिये धन्यवाद की भावना प्रकट करने के लिये श्री प्राण नाथ शर्मा सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर (पूर्व) इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषण में श्री शराफ की सराहना करते हुये बड़े गर्व के साथ हर्ष ध्वनि के बीच में उन्हें विशेष पदक (मेडेल आफ मेरिट) से सुशोभित किया और कहा कि श्री शराफ वह व्यक्ति हैं जिन्होंने कानपुर में असोसिएशन के झण्डे को सदा इज्जत के साथ ऊंचे रखा है और ऐसे समय में भी जब कि इस संस्था के साथ सम्बन्ध रखने वालों को हर प्रकार की हानि पहुँचाई जाती थी। उन्होंने बड़ा त्याग करके

असोसिएशन के मान मर्यादा की रक्षा की। श्री शर्मा जी ने कहा कि हमें निस्संदेह श्री शराफ को कानपूर से जाने का बहुत दुःख है परन्तु यह संस्था संपूर्ण देश व्यापी है इसलिये बम्बई अमलनेर (पूर्वी खानदेश) में पहुँच कर भी वे संस्था में अपने कार्य को जारी रख सकते हैं। अतः यू० पी० की हानि बम्बई प्रान्त के लाभ में परिणत हो जायगी। प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स की प्रार्थना पर नेशनल हेडक्वार्टर्स ने बम्बई की प्रान्तीय शाखा को श्री शराफ के परिचय का पत्र लिख दिया।
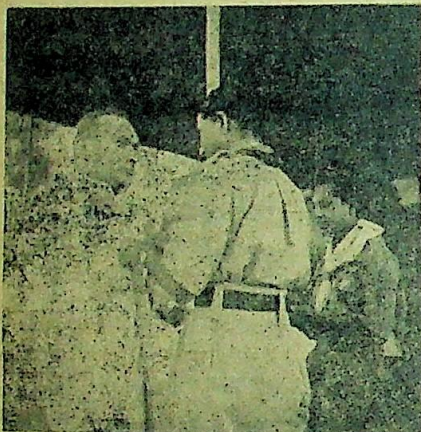
मैडल आफ मेरिट से सुशोभित किया जा रहा है।

अन्त में श्री शराफ ने सब को हार्दिक धन्यवाद देते हुये भविष्य में यथा प्रकार हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन की यथाशक्ति सेवा करते रहने का आश्वासन दिया और आशा प्रकट की कि नये जिला कमिश्नर के नेतृत्व में कानपूर में एसोसिएशन की दिनोदिन उन्नति होती रहेगी।

प्रतियोगिता तथा रैली का सभापतित्व श्री सीताराम जयपुरिया ने किया और प्रतियोगिता में जूनियर हाई स्कूल बरौर को मालवीय कप प्राइमरी स्कूल पथना को कुँजरू कप प्रदान किया गया।

× × ×

२१ फरवरी से २१ मार्च तक श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि लखनऊ, आगरा, मेरठ, बरेली, शीतलाखेत, अलमोड़ा, भीमताल, हरद्वार, टेहरी, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, पौड़ी-गढ़वाल स्थानों में रहे। स्थान वार कार्य निम्न प्रकार है।

लखनऊ

श्री श्रीनारायण तिवारी डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर द्वारा आयोजित महिला सभा में २१ फरवरी को स्काउटिंग की उपयोगिता और संचालन-विधि पर प्रकाश डाला। बहिनों ने उत्साह के साथ अपने कार्यकर्त्ताओं का निवाचन किया, और कार्य की रूपरेखा तैय्यार की। ज़िला इन्स्पैक्ट्रैस ने सभानेत्री का आसन ग्रहण किया था।

श्री भैरव दत्त सनवाल एडमिनिस्टेटर लखनऊ के साथ शेर बच्चों को नियमित शिक्षण के बारे में विचार विनियम हुआ। स्थायी रूप से यू० बोर्ड के लिये स्काउट शिक्षक नियुक्त करने का निश्चय किया। श्री भैरव दत्त जी सनवाल स्काउटिंग के बड़े समर्थक हैं।

आगरा

श्री रामदेव जी भार्गव के साथ श्री चूड़ामणि जी ने दयालबाग स्काउटों द्वारा की गई कृषि-योजना को देखा जिसका एकमात्र उद्देश्य देश के अनाज की कमी को दूर करना है। श्री बद्रीप्रसाद माथुर प्रिंसिपल तथा डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर ने श्री प्रधानाध्यापक और एक शिक्षक से प्रार्थना की कि आगन्तुक महोदयों को उचित स्थान दिखला दें।

श्री भार्गव जी के साथ आगरा और मेरठ ज़िलों का भ्रमण करने का भी विस्तृत प्रोग्राम बना।

अलमोड़ा

शीतलाखेत स्काउट विद्यालय सम्बन्धी कार्यों के कारण शीतलाखेत रहे। श्री हरिश्चन्द्र जोशी डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर के सहयोग से अलमोड़ा में पहुँचे हुये स्काउट-जगत के अतिथियों के लिये ठहरने की व्यवस्था की। प्रान्तीय रक्षक दल के ग्रुप लीडरों को 'जनता के लिये उनके कर्त्तव्य' पर श्री चूड़ामणि जी का भाषण हुआ। श्री भुवन चन्द्र जोशी डिस्ट्रिक्ट आरगैनाइज़र, श्री हरिश्चन्द्र जोशी डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर, श्री अमरनाथ अग्रवाल मंत्री स्काउट असोसिएशन भी उपस्थित थे।

भीमताल

श्री कर्नाटक प्रिंसिपल भीमताल हायर सैकंडरी स्कूल ने अपने यहाँ की स्काउटिंग-शिक्षण प्रणाली से अवगत कराया और कैम्प का आयोजन कराने की प्रान्तीय कार्यालय से प्रार्थना की 'भीमताल केम्प में प्रान्तीय रक्षक दल

के भाइयों और नार्मल स्कूल के छात्रों को 'स्काउटिंग की दैनिक जीवन और शिक्षा में उपयोगिता' पर क्रमशः भाषण हुये।

हरिद्वार

श्री शान्ति स्वरूप जी रीजनल ऑर्गनाइज़र के साथ स्थानीय ट्रूपों द्वारा समाज-सेवा प्रणाली को देखा। समय समय स्काउट हरि की पौड़ी पर कार्य करते हैं और स्काउटिंग परीक्षाओं के लिये अपने को योग्य बनाते हैं। श्री सनातनधर्म हाई स्कूल के छात्रों को "आजकल के बालक" विषय पर भाषण दिया।

गढ़वाल

श्री धर्मसिंह जी इन्सपैक्टर शिक्षा-विभाग गढ़वाल ने ज़िला स्काउट संस्था बनवाने में प्रशंसनीय सहयोग दिया। श्री गौरी जी हैडमास्टर नार्मल स्कूल डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर पद के लिये चुने गये। आप स्काउटिंग से भली प्रकार परिचित हैं। शिक्षण कैम्प के बारे में भी निश्चय हुआ। इस अवधि में निम्नलिखित संस्थाओं में स्काउटिंग के बारे में बालकों और अध्यापकों के लिये भाषण भी हुये राजकीय हायर सैकंडरी स्कूल, कर्णप्रयाग, स्वामी सच्चिदानन्द हायर सैकंडरी स्कूल रुद्रप्रयाग और बालिका विद्यालय रुद्रप्रयाग नेशनल हायर सैकंडरी स्कूल, श्रीनगर राजकीय हायर सैकंडरी स्कूल श्रीनगर और बालक विद्यालय श्रीनगर मिशन हायर सैकंडरी स्कूल, पौड़ी, दयानन्द एंग्लो विद्यालय और हिन्दू स्कूल पौड़ी—

बस्ती

२१-२-४९ से २५-२-४९ तक गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल बस्ती में गर्ल स्काउट कैप्टिन्स, बुलबुल मास्टर तथा पैट्रोल लीडर्स की ट्रेनिंग हुई। इन लोगों की कुल संख्या १०० थी जिसमें से २० स्काउट कैप्टिन्स तथा बुलबुल मास्टर्स और बाक़ी गर्ल स्काउट्स थी। २४ ता० को एक बड़ा प्रभावशाली कैम्प फ़ायर हुआ जिससे लगभग चार-पाँच सौ दर्शकों की संख्या थी। कार्य में बड़ी सफलता प्राप्त हुई।

इलाहाबाद

२३-३ से १०-३-४९ तक प्रान्तीय स्काउट दफ़्तर में म्युनिसिपल बोर्ड की अध्यापिकाओं का गर्ल स्काउट कैप्टिन्स का ट्रेनिंग कैम्प हुआ इनकी संख्या २१ थी। ८ ता० को ये लोग द्रोपदी घाट हाइक पर गई और ९ को कैम्प फ़ायर हुआ।

दरभंगा कौंसिल इलाहाबाद

श्रीमती प्रभा बनर्जी सहायक प्रान्तीय कमिश्नर की अध्यक्षता में शरणार्थी लड़के और लड़कियों के लिये स्काउट ट्रेनिंग दिलाने का आयोजन किया गया है। श्री० एच० विलियम री० स्का० आ० इस काम को सँभालेंगे।

× × ×

नजीबाबाद

श्रीमती सरोजनी नायडू की अचानक मृत्यु पर नगर में हड़ताल रही दोपहर को जलूस निकाला गया रात्रि में एक सभा की जिसमें श्रीमती नायडू को श्रद्धांजली दी गई और एक शोक प्रस्ताव सर्व स्काउट तथा गर्ल स्काउट ने पास किया।

बहराइच

श्री चुन्नी लाल साहनी, शिक्षा संचालक के स्वागत करने के लिये श्री जयशंकर हजैला डिप्टी इन्सपेक्टर एवं सहायक स्काउट कमिश्नर के प्रयत्न से श्री बुद्धि सागर श्रीवास्तव स्काउट आर्गनाइज़र ने स्काउट रैली एवं कैम्प फायर १०-३-४९ को किया जिसमें १५० स्काउट एवं ५० स्काउट अध्यापकों ने भाग लिया। अन्त में श्री राय बहादुर भागवत प्रसाद एम० ए०, एल-बी०, भूतपूर्व प्रधान न्यायाधीश जिला स्काउट कमिश्नर एवं सहायक स्काउट कमिश्नर श्री जयशंकर हजैला के भाषण के पश्चात उत्सव समाप्त हुआ।

द्वारकापुर फैज़ाबाद

द्वारकापुर, भदौली, मेदनीपुर व जगदीशपुर में स्काउट दल तैयार किये गये हैं। इन दलों का संचालन श्री रामबरन जी त्रिपाठी श्री सुरेशदत्त तिवारी तथा श्री अम्बिका प्रसाद सिंह कर रहे हैं। स्काउट दलों को रचनात्मक कार्य में लगाया जा रहा है। इन दलों ने गावों में लगभग ६० खाद के खत्ते तैयार किये हैं। स्काउटों द्वारा एक लम्बी सड़क तैयार कराई जा रही है। यह रास्ता १ फ़र्लांग के लगभग है जिस पर २ फुट मिट्टी डाली जा रही है। गाँव वालों ने इन स्वयंसेवकों की वर्दी बनाने के लिए आर्थिक सहायता दी है। लगभग ६०) द्वार-

कापुर, १००) भदौली से प्राप्त हुआ है इसका श्रेय श्री पाटनदीन वर्मा, श्री विश्वनाथ तिवारी, रामसमझ वर्मा ठाकुर त्रिपुरार सिंह व अहिवरन सिंह को है। आप लोग इन दलों की सहायता करते हैं। जगदीशपुर गाँव की पंचायत स्वयं वर्दी की प्रबन्ध कर रही है।

आज़मगढ़

श्री बाबा राघव दास, एम० एल० ए० के सभापतित्व में सराय रानी (आज़मगढ़) में एकता सम्मेलन का आयोजन २० तथा २१-३-४६ को किया गया। इस अवसर पर स्थानीय सहयोग बीज भण्डार की ओर से श्री अब्दुल सत्तार खाँ आर्गनाइज़र ग्राम-सुधार विभाग की देखरेख में एक कृषि प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। केन्द्र तथा प्रान्त के नेता इस अवसर पर आकर जनता को उपदेश दिये।

हिन्दुस्तान स्काउट संस्था के प्रायमरी स्कूल सराय रानी तथा इसलामिया स्कूल छौंऊ के ४० स्काउटों ने भी इस समारोह में श्री नाज़िम अली के नेतृत्व में भाग लिया। श्री शमशुल हक़ हेडमास्टर तथा स्काउट मास्टर इसलामिया स्कूल ने अपने स्काउटों के सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण प्रदर्शन से जनता को प्रसन्न किया।

बरेली

ता० ७ से ६ फ़रवरी तक सेकन्ड क्लास स्काउटों की परीक्षा बरेली गवर्नमेंट हाई स्कूल में ली गई। जिसमें २४ स्काउटों ने सफलता प्राप्त की।

× × ×

ता० २१ फ़रवरी को कन्हैया टोला मुहल्ला ट्रूप के स्काउट कोठी रामपुर में बिलाइन्ड रिलीफ़ कैम्प में सहायता के लिये ओ३म प्रकाश गोयल रीज़नल स्काउट की अध्यक्षता में गये।

मिलक

(रामपुर) ता० ११ से १३ तक मिलक में रोवर स्काउटों का एक कैम्प ओ३म प्रकाश जी गोयल ने किया। यह कैम्प स्काउटिंग का असली ही नहीं आदर्श कैम्प था। आसपास के कई ग्रामों से शिक्षार्थी आये और जंगल में कैम्प लगाया। १२ ता० को ओलों की वर्षा तथा हवा ने भयानक रूप धारण किया और कैम्पर्स की अच्छी परीक्षा हुई। १३ ता० को कैम्प का समाप्ति उत्सव स्काउट प्रदर्शन के साथ वहाँ के सहायक स्काउट कमिश्नर की अध्यक्षता में हुआ। अन्त में श्री पूरनप्रसाद जी शर्मा ने सब स्काउटों तथा उपस्थित जन समूह को मिठाई अपनी ओर से बांटी। भाई पूरन प्रसाद जी के परिश्रम से ही यह कैम्प पूर्ण रूप से सफल हुआ।

रिठौंडा

(रामपुर) ता० २५ फ़रवरी से २८ फ़रवरी तक रिठौंडा में ६३ रोवर स्काउटों का एक समाज सेवा कैम्प श्री ओ३म प्रकाश जी गोयल रीज़नल स्काउट आर्गनाइज़र की अध्यक्षता में चला। श्री पूरन प्रसाद जी इन्चार्ज की पुलिस ड्यूटी विशेष सराहनीय रही।

श्री अलगू राय जी शास्त्री ने २७ फ़रवरी को कैम्प का निरीक्षण किया और स्काउटों के कर्तव्यों पर प्रकाश डाला।

मुरादाबाद

ता० २२ फ़रवरी को हरप्रसाद एन० एस० बी० स्कूल में श्री गोयल जी ने ५० स्काउटों की जाँच ली तथा ३३ स्काउटों ने सफलता प्राप्त की।

दल व टोली नायकों की सभा

झाँसी तथा लखनऊ कमिश्नरी के दल व टोली नायकों की सभा ता: ६, १०, ११ मई ४६ को लखनऊ में होगी जिसमें प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय स्काउट संस्था के उच्चाधिकारियों से प्रार्थना की गई है कि इस सभा में भाग लेकर हम लोगों का उत्साह बढ़ावें। आशा है इस सभा से दल व टोली नायक लाभ उठावेंगे।

इस सभा में भाग लेने वाले नायकों को चाहिये-कि वे अपने जिला स्काउट कमिश्नर से विचार विनिमय करके तथा कार्य को आगे बढ़ाने के हेतु सुझाव लेकर आवें। हर स्काउट को जो सभा में भाग लेने आवेंगे अपने जिला स्काउट कमिश्नर से स्काउट होने का परिचय-पत्र लाना होगा तथा वर्दी में ही इस सभा में भाग ले सकेंगे।

संयोजक-सरदार चरनसिंह कटरा मकबूलगंज लखनऊ।

ता० १५ व १६ को रीज़नल प्रचारक ओ३मप्रकाश गोयल ने मुरादाबाद के विभिन्न स्कूलों में स्काउट शिक्षा दी। १६ फरवरी को गवर्न० इन्टर कालेज में टैन्ट पिचिंग व होने वाले बृहत् कैम्प फ़ायर की जांच ली, तथा निरीक्षण किया इस स्कूल में श्री कुलजीत राय जी का कार्य सराहनीय है।

फ़रीदपुर

ता० १७ से २० फ़रवरी तक फ़रीदपुर के ८० स्काउटों का कैम्प किया गया १९ ता० को रात्री कैम्प के लिये फ़रीदपुर से ५½ मील दूरी पर सब स्काउट ओ३म प्रकाश जी गोयल की अध्यक्षता में गये। स्काउट चिन्ह द्वारा निश्चित स्थान पर पहुँचने के बाद के ग्राम बच्चों को खेल खेलाये गये रात में कैम्प फ़ायर हुआ जिसमें लगभग ७५० ग्रामवाली प्रभावित हुए। प्रातःकाल प्रभात फेरी हुई गांव की सफ़ाई की गई। शाम को ४ बजे लौट कर फ़रीदपुर आ गये।

श्री सुभाष ट्रूप आँवला का महायज्ञ

१-३-४९ को श्रीमती सरोजनी नाइडू की आत्मा की शान्ति के लिये दसवें के अवसर पर समस्त आँवला के बालचर गणों ने श्री महानन्द सेवक के आदेशानुसार एक महायज्ञ किया जिसमें शहर के समस्त बड़े-बड़े रईस तथा सरकारी पदाधिकारी शामिल हुये। ४॥ बजे से ५॥ बजे तक हवन, ५॥ से आत्म शान्ति के लिये मन्त्र तथा रात भर गीता तथा रामायण का अखंड पाठ हुआ जिसमें साधना बालचरों तथा नगर निवासियों ने भाग लिया।

ज़िला स्काउट रैली बुलन्दशहर

ज़िला हिन्दुस्तान स्काउट एसो० बुलन्दशहर की ओर से नुमायश गाह बुलन्दशहर के मैदान में एक विराट स्काउट रैली का आयोजन कप्तान भगवान सिंह आई० ए० एस० की अध्यक्षता में किया गया। इस रैली में लगभग ५०० स्काउट्स ने भाग लिया। मुकाबले के खेल तथा अन्य स्काउट प्रदर्शन हुये जिसमें लगभग ३००) के इनाम स्काउट दलों व स्काउटों को बाँटे गये।

२ स्काउट बैन्डस के साथ नगर तथा अन्य प्रमुख मार्गों से होकर २० फ़रवरी को स्काउट रूच मार्च किया गया। स्काउट गीतों, सिंहनादों तथा सुरीली बंसरियों में वातावरण गूँज गया। ग्राम स्काउट दलों तथा अन्य शेर बच्चों के प्रदर्शन सराहनीय थे।

स्वतंत्र भारत के सर्वप्रथम कमान्डर इनचीफ़ ने २२ फ़रवरी को महिला स्काउट ट्रूप के प्रदर्शन को देखा और बड़ी सराहना की। आपने इस कार्य के लिए १५ मिनट समय विशेष रूप में दिया।

इस रैली के लिए ५००) की रक़म श्रीयुत प्रियपाल जी गुप्त ग्राम सुधार अफसर यू० पी० ने स्वीकृत की। रैली की सफलता का श्रेय श्री भोलानाथ जी मिश्र इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स बुलन्दशहर, श्री भगवती प्रसाद जी वैश्य ज़िला सहकारी अफ़सर, श्री भगवती प्रसाद जी तिवारी ज़िला स्काउट कमिश्नर, श्री यशवन्त लाल शर्मा मन्त्री जि० हि० स्का० ऐसो० बुलन्दशहर को है। रैली का संचालन श्री ओमप्रकाश जी शर्मा ने किया। ज़िला स्काउट ऐसो० उन संस्थाओं तथा ग्राम स्काउट दलों का आभारी है जिन्होंने रैली में भाग लेकर अवसर को सफल बनाया।

हरद्वार

हरिद्वार स्काउट असोसिएशन के बालचरों ने कार्यालय में एक शोक सभा की जिसमें गवर्नर महोदया की अचानक मृत्यु पर शोक प्रगट किया तथा ईश्वर से प्रार्थना की गई।

× × ×

स्थानीय असोसिएशन द्वारा रैली तथा प्रदर्शन ता० ५-३-४९ को श्री प्रियव्रत जी आचार्य गुरुकुल विश्व विद्यालय के सभापतित्व में समाप्त हुआ। रैली का स्थान आर्य हाई स्कूल कनखल रोड पर रखा गया था। रैली में गुरुकुल विश्व विद्यालय, राजकीय नारमल स्कूल, भल्ला कालिज, आर्य हाई स्कूल, एस० डी० हाई स्कूल, ज्वालापुर हाई स्कूल, हरिद्वार, कनखल, ज्वालापुर के समस्त म्यु० प्राइमरी स्कूल, महिला विद्यालय तथा लोकल ट्रूप के स्काउट, शेरबचों, रोवर स्काउटों तथा गर्ल्स स्काउटों ने प्रतियोगताओं और प्रदर्शनों में भाग लिया। संख्या स्काउट, रोवर, स्काउट व शेर बच्चों, गर्ल्स स्काउट्स की ७०० थी। संचालन कार्य श्री शान्ति स्वरूप गर्ग द्वारा किया गया। श्री रघुनाथ सहाय जैन जिला स्काउट कमिश्नर भी रैली में पधारे थे। अन्य विशेष दर्शकों में स्था-

नीय संस्थाओं के आचार्य तथा प्रधान अध्यापक, एवं अध्यापक थे। पुरस्कार श्री प्रधान जी के कर-कमलों द्वारा दिये गये। जिसका भार श्रीचरण दास जी हरिद्वार ने अपने ऊपर लिया और ४०) दिये यह धन्यवाद के पात्र हैं। मंत्री महोदय ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। स० स्काउट कमिश्नर महोदय ने आगामी प्रोग्राम पर कुछ प्रकाश डाला तथा प्रधान जी ने बच्चों को व्यायाम और खेलों द्वारा अच्छे नागरिक बनने तथा स्काउटिंग शिक्षा को पाने पर विशेष जोर दिया। और देश-प्रेम का आदेश कर अपना भाषण समाप्त किया।

टिहरी राज्य में स्काउट प्रचार

टिहरी राज्य में सामन्तसाही के पतन के साथ साथ बहुत सी सामाजिक कुरीतियों तथा दुर्व्यवस्थाओं का पतन हो गया। यह स्वाभाविक भी है कि राज्य बदलने के साथ-साथ राज्य की अवस्था भी बदलने लगती है। अब राज्य में अनेकों सामाजिक व शिक्षा सम्बन्धी संस्थाओं को विकास का अवसर प्राप्त हुआ।

हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन जो टिहरी राज्य में सामंतशाही के जमाने में ही अपनी जड़ जमा चुकी थी अब और दृढ़ हो गई है। राज्य हिन्दुस्तान स्काउट असोशिएशन के निमंत्रण पर यू० पी० के स० प्रा० प्रचार कमिश्नर श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि तथा श्री शान्ति स्वरूप गर्ग रीजनल ऑर्गनाइजर हरिद्वार ता० ६ मार्च को टिहरी पधारे। श्री मेधाकर जी नोटि-याल स्काउट कमिश्नर, श्री पांडे जी मंत्री श्री सकलानी जी जि० स्का० मास्टर तथा श्री बहुगुणा जी ने स्वागत किया। उनके स्वागत में राज्य के स्वागत की भावना भरी थी।

ता० १० मार्च को टिहरी में विशेष कार्यक्रम रखा गया। एक सभा की गई जिसमें समस्त शिक्षा संस्थाओं के प्रधान अध्यापक के साथ साथ टिहरी राज्य के शिक्षा विभाग के सुपरिटेन्डेन्ट भी आमंत्रित किये गये। राज्य में स्काउटिंग शिक्षा प्रचार पर विचार किया गया। श्री चूड़ामणि जी के भाषण के पश्चात् सुपरिन्टेन्डेन्ट महोदय ने राज्य शिक्षा विभाग की ओर से पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की। श्री शांती स्वरूप गर्ग ने प्रस्ताव रखा कि राज्य में स्काउट प्रचार के लिये एक स्काउट आर्गनाइजर रखा जाय। सर्व सम्मति से प्रस्ताव का समर्थन किया गया और निश्चय किया कि अगले वर्ष से एक आर्गनाइजर रख लिया जाय। श्री भगवन्त राय सुपरि-टेंडेंट और श्री भगवती प्रसाद सकलानी प्रिंसिपल ने प्रशंसनीय सहयोग दिया।

पश्चात् चार बड़ी बड़ी संस्थाओं में वर्षा होते हुये भी भाषण किये गये। संध्या को प्रताप कालिज के स्काउटस तथा शेर बच्चों का दीक्षा संस्कार किया गया।

दीक्षांत भाषण में श्री चूड़ामणि जी ने बच्चों को आधुनिक समस्याओं से अवगत कराते हुये राष्ट्र की जिम्मेदारी की बहुत सी बातें कहीं। भीनी-भीनी बूंदों में दीक्षा समारोह समाप्त हुआ।

लोकल असोसिएशन की भी एक मीटिंग की गई जिसमें स्काउट कार्य को प्रगति देने तथा अन्य बातों पर विचार हुआ।

ता० ११-३-४६ को श्रीनगर को पैदल जाने का निश्चय किया गया। टिहरी के श्री सकलानी, श्री जगदम्बा प्रसाद तथा श्री पूर्णसिंह जी भी कार्यक्रम में शामिल हुये। प्रातः ७॥ बजे श्रीनगर के लिये प्रस्थान किया। रास्ते के चट्टियों पर ठहरते हुये गडोला स्थान पर पहुँचे जहाँ पानी की धारा के बीच बैठ कर भोजन आदि किया गया। यहाँ पर एक छोटे बच्चों का "जागदार" नाम का स्कूल भी था। स्कूल के बच्चों को सफाई के बारे में बहुत सी बातें बताई तथा खेल खिलाये। कुछ सिंहनाद भी कराये गये। मनोरंजन के साथ साथ यह अनोखा ढंग शिक्षा का अति सफल रहा। स्कूल में प्राइमरी कक्षा के बच्चे तख्तों पर मिट्टी फैला कर उंगली से लिख रहे थे। इसी पर कुछ हिसाब भी उंगली की सहायता से निकाल रहे थे।

इसी प्रकार एक और स्कूल जो रास्ते में पड़ा था बच्चों को खेल आदि खिलाये तथा सिंहनाद आदि बत-लाये। इस प्रकार पहाड़ों की तलेटियों तथा चट्टानों को पार करते हुये रात्रि के ८॥ बजे २५ मील पर डाँगचारा स्थान पर पहुंचे। यह स्थान राज्य में महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर जूनियर हाई स्कूल भी है। रात्रि को

स्कूल के बच्चों को छात्रावास से बुलाकर अंताक्षरी, गायन तथा सिंहनाद आदि के तरीके की बातें की।

रात्रि को भोजन बनाया गया। पूर्णसिंह के गाने जोश दिलाते रहे।

ता० १२ की सुबह ६ बजे फिर चल दिये। मलेथा और कीर्तिनगर होते हुये १० बजे सभी लोग श्रीनगर पहुँच गये। कीर्तिनगर एक अच्छा स्थान है यहाँ तक ऋषिकेश से मोटर भी गंगा जी के किनारे किनारे आती है। यहाँ पर अलखनन्दा का दृश्य देखने योग्य है पुल लकड़ी का बना है।

श्रीनगर पहाड़ी हिस्सों में आधुनिक प्रकार की बस्ती बसी हुई है। यह सन् १६२४ की भीषण बाढ़ में बह गया था। बाद में दुबारा बसाया गया है, बाजार चोपड़ की भांति डाला गया है, मकान अति सुन्दर बनाये गये हैं। मकानों में बगीचा आदि का विशेष प्रबन्ध है। श्रीनगर में श्री अभिलाष चन्द जी प्रिंसिपल नेशनल-हाई-स्कूल से परिचय हुआ। होली के कारण स्थानीय संस्थायें पाँच दिन के लिये बन्द थीं। अतः अवकाश अवधि में भ्रमण कार्य बन्द रहा।

टेहरी

टेहरी राज्य में टिहरी हिन्दुस्तान स्काउट संस्था ग्रीष्मकाल में एक वृहत शिविर का स्काउट शिक्षकों के लिए आयोजन करा रही है। हि० स्का० अ० के प्रान्तीय प्रधान केन्द्र के आधीन इसका संचालन होगा। निश्चित समय आगामी अंक में प्रकाशित किया जायगा।

गढ़वाल

कर्ण प्रयाग में श्री धर्मसिंह जी जिला शिक्षा निरीक्षक के विशेष सहयोग से जिला स्काउट संस्था का निर्माण श्री पुरुषोत्तम लालजी चूड़ामणि की उपस्थिति में पौड़ी में हुआ। श्री आर० गौरी प्रधानाध्यापक गवर्नमेन्ट नार्मल स्कूल सर्वसम्मति से जिला स्काउट कमिश्नर निर्वाचित हुये। आप स्काउटिंग का विशेष ज्ञान रखते हैं। कर्ण प्रयाग में श्री चंचला वल्लभ पंत, प्रिंसिपल राजकीय हायर सैकडरी स्कूल, श्रीनगर में श्री अभिलाषचन्द्र-सक्सेना प्रधानाध्यापक नेशनल हायर सैकंडरी स्कूल और रुद्रप्रयाग में हीरा वल्लभ प्रिंसिपल स्वामी सच्चिदानन्द हायर सैकिंडरी स्कूल बड़ी लगन से स्काउटिंग का संगठन करा रहे हैं।

देहरादून

इस वर्ष मंसूरी में एक समर ट्रेनिंग कैम्प के आयोजन का विचार किय जा रहा है। कैम्प यदि निश्चय हुआ तो लगभग १८ मई से ३ जून तक होगा। ठहरने व ट्रेनिंग का प्रबंध निशुल्क होगा। १८ वर्ष से ऊपर से सेकंड क्लास स्काउट भाई व बहिनें व स्काउटर इस कैम्प में भाग ले सकेंगे। कैम्प फीस केवल ५) और लगभग खाने आदि पर व्यय ३५) होगा। रेल का खर्च देहरादून तक अलग होगा। देहरादून से मंसूरी तक खर्च आदि कैम्प की ओर से होगा। विशेष जानकारी के लिये लिखिये—नरेन्द्र कुमार जैन ज़िला स्काउट कमिश्नर, राजा रोड देहरादून।

पुस्तक परिचय

"और लोगों के घर"—कृष्णकुँवारी और अमृता कपूर, ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।

आज तक ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस केवल अंग्रेज़ी की ही पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित करता रहा। किन्तु यह सन्तोषप्रद है कि अब उसकी भारतीय शाखा हिन्दी की पुस्तकों के प्रकाशन की ओर आकर्षित हुई है। प्रस्तुत पुस्तक में कहानी के रूप में संसार के विभिन्न भागों में बने विभिन्न प्रकार के घरों का उल्लेख है। सचित्र होने के कारण पुस्तक अधिक बालोपयोगी हो गई है।

हिन्दी में इस प्रकार की पुस्तकें कम देखने में आती हैं। प्रस्तुत पुस्तक तृतीय श्रेणी के बालकों के लिए उपयुक्त है तथा प्राइमरी एवं मिडिल पाठशालाओं के लिए उत्तम सहायक पुस्तक है।

श्री अरविंद

जनशिक्षण पत्रिका: प्रकाशकः विद्याभवन सोसायटी, उदयपुर, वार्षिक मूल्य ३) एक प्रति का।)

'बालहित' जनवरी १६४६ से १४वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। तेरह वर्ष तक इसने माता-पिता तथा शिक्षकों के सामने बाल मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले दृष्टिकोण को सफलता से रखा है, अब पत्र ने नया नाम रखा है।

'बालहित' ने साहित्य की अपेक्षित सेवा की। इसके

सम्पादक तथा उनके सहयोगी लेखकों ने हिन्दी को एक नई विचारधारा दी। आशा है कि अब 'जन शिक्षण पत्रिका' द्वारा वे अपना उद्देश्य पूरा करने में सफल होंगे।

हम अपने पाठकों से अनुरोध करेंगे कि वे इस उच्च कोटि की पत्रिका को अवश्य पढ़ें।

—अविनाश

हमारा बिक्री विभाग

स्काउट सम्बन्धी पुस्तकें तथा अन्य वस्तुएँ हमसे मंगाइए।

टैस्ट कार्ड

कब्स, स्काउटस् रोवर्स तथा ग्राम अलग-अलग कार्ड =)

बैज (धातु)

१. रोवर	=)॥
४. स्काउट मास्टर	।)
५. कब मास्टर	।)
६. रोवर लीडर	।)
७. कमिश्नर	।)
८. सेक्रेटरी	।)
६. प्रेसीडेन्ट	।)
१०. गर्ल स्काउट साड़ी पिन (नीला)	।=)॥
११. गर्ल स्काउट साड़ी पिन (पीला)	।=)॥
१२. गर्ल स्काउट पिन (पीला)	।=)॥
१३. गर्ल स्काउट साड़ी पिन (लाल)	।=)॥
१४. सर्विस स्टार एक साल	= ॥
१५. सर्विस स्टार पाँच साल	=)॥
१६. सर्विस स्टार दस साल	=)॥
१७. मेडिल ऑव मेरिट	२॥)
१८. मेडिल ऑव गेलेंटरी	२॥)
१६. थैंक्स बैज	२॥)
२०. टोपी का बैज	॥।)

बैज (कपड़ा)

२१. टैंडर फुट	=)॥
२२. टैंडर पैड	=)॥
२३. रोवर	=)॥
२४. स्काउट फ़र्स्ट क्लास	=)॥
२५. स्काउट सेकेंड क्लास	=)॥
२६. कब फर्स्ट क्लास	=)॥
२७. कब सेकेंड क्लास	=)॥
२८. रोवर फर्स्ट क्लास	=)॥
२६. दक्षता बैज	=)॥
३०. हिमालय बैज	=)॥
३१. हवाई स्काउट बैज	=)॥
३२. हवाई स्काउट का दक्षता का बैज	।)॥
३३. डिप्टी कैम्प डाइरेक्टर बैज	१॥)
३४. टोपी बैज (चमड़ा)	।)॥

झंडे

३५. असोसिएशन का झंडा (६'×४')	७॥)
३६. ट्रुप का झंडा (४×३')	४॥)
३७. टेबिल का झंडा	१॥)

नोट—(१) झंडों पर नाम लिखवाने का दाम अलग से १) चार्ज किया जायगा (२) ट्रुप के झंडे का आर्डर भेजते समय झंडे का रंग और उस पर लिखवाने का विषय अवश्य लिख भेजिये।

गले में बाँधने के हर प्रकार के रूमाल १॥) तक के दाम पर मिलते हैं। रूमाल का रंग आर्डर देते समय लिखना न भूलिये। ग्राम स्काउट दलों के विशेष रूमाल यहाँ से मिलते हैं। वर्दियों का भी प्रबन्ध किया जा सकता है।

हर ट्रुप को असोसियेशन की मासिक मुख पत्रिका 'सेवा' अवश्य मँगवानी चाहिये। इससे स्काउटिंग दुनिया की जानकारी होगी। वार्षिक चन्दा मय डाक खर्च केवल ३।)

स्काउट ब्लाक

लेटर हेड तथा अन्य पुस्तकों आदि पर छापने के लिए उपयोगी १॥)

सीटियाँ

गोल } इन पर स्काउट बैज बना हुआ है।	१।)
लम्बी }	॥।=)
३८. हाइक झोला सामान ले जाने के लिये	६)
३६. स्ट्रेचर	३०)
४०. वागिल (चमड़े का)	=)
४१. ,, (लकड़ी का)	=)॥
४२. फर्स्ट एड बौक्स दवा सहित	२०)
४३. ग्राउन्डशीट (किरमिच)	५॥)
४४. पेटी (कपड़ा)	१॥)
४५. पेटी (चमड़ा)	१।) व १)
४६. स्प्लिन्ट (लकड़ी)	५)
४७. हैवर सैक	२।)

अध्यक्ष, बिक्री विभाग, हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन, १ कटरा रोड, प्रयाग

"देश के युवक-युवतियों को ट्रेन करने के लिए आपकी संस्था जो कार्य कर रही है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है।"
—पंडित जवाहरलाल नेहरू

हिन्दस्काउट सहकारी प्रकाशन

कुल बिकाऊ हिस्से दस हजार

एक हिस्से का मूल्य दस रुपया

५) प्रार्थना-पत्र के साथ देने होते हैं। शेष ५) दो किश्त में प्रत्येक मास की दस तारीख तक लिए जायँगे। शेयर की पूरी रक़म एक बारगी भी दी जा सकती है।

जनता की संस्था

इस संस्था को सच्चे मानी में जनता की संस्था बनाने के लिए यह निश्चय किया गया है कि किसी को भी दस से अधिक शेयर न दिये जाएँ। इसका नतीजा यह होगा कि अधिक से अधिक लोग इसके शेयर खरीद सकेंगे और पैसे वालों के प्रभुत्व से यह संस्था मुक्त रहेगी।

संस्था की विशेषताएँ

- अपने ढंग की यह पहली प्रकाशन संस्था है जो सहयोग और सहकारिता की नींव पर स्थापित की गई है और जन-साधारण को अपना आधार बना कर जो चल रही है। देश के युवकों और बच्चों के लिए राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत साहित्य प्रकाशित करना इसका उद्देश्य है। इस संस्था को अपना कर अपना बनाइए।

सरदार पटेल की राय

"आज़ाद भारत के आज़ाद नागरिकों का निर्माण करने के लिए आपकी संस्था जो कार्य कर रही है, उसकी मैं हृदय से प्रशंसा करता हूँ।"

आज ही शेयर खरीदिए

शेयर-फार्म तथा प्रास्पेक्टस के लिए लिखें

हिन्दस्काउट कोआपरेटिव पब्लिशर्स लि०

यू० पी०, इलाहाबाद

प्रकाशक—श्रीयुत प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन, यू० पी०, इलाहाबाद।

मुद्रक—श्रीयुत मदनकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद।

गत वर्ष पिण्डरी गल यात्रा में हमारे स्काउट

वर्ष २६ सं० ५

मई १६५६

विषय-सूची

सेवा के नियम

(१) 'सेवा' महीने के प्रथम सप्ताह तक प्रकाशित होकर सब ग्राहकों के पास भेज दी जाती है, यदि किसी ग्राहक को १५ ता० तक प्राप्त न हो तो इसकी सूचना स्थानीय पोस्टमास्टर के प्रमाणपत्र सहित कार्यालय को भेजना चाहिए।

(२) 'सेवा' का वार्षिक मूल्य तीन रुपया और डाक-व्यय चार आना अतिरिक्त है। एक अंक का मूल्य पाँच आना है।

(३) 'सेवा' के ग्राहक किसी भी अंक से बन सकते हैं, किन्तु साल भर से कम के लिए ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

(४) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या लिखनी आवश्यक है, जिन पत्रों में ग्राहक संख्या न लिखी होगी, उनका उत्तर देने में देरी हो सकती है।

(५) 'सेवा' में प्रकाशनार्थ लेख सम्पादक के नाम भेजने चाहिये तथा मूल्य आदि मैनेजर के नाम। यदि आवश्यक हों तो चित्र भी लेख के साथ भेजना चाहिए।

(६) सम्पादक को अधिकार रहेगा कि वह किसी लेख को प्रकाशित करे, न करे या उसमें आवश्यक संशोधन करे। जो लेखक साथ में टिकट भेज देंगे, उनका लेख अस्वीकृत होने पर तुरंत लौटा दिया जायगा।

सेवा

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्त नाशनम्॥

यू० पी०, सी० पी० तथा बरार, बिहार, बम्बई, अलवर, बीकानेर, ग्वालियर, जयपुर और होलकर
राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

वर्ष २९] मई १९४९ [संख्या ५

चित्रकार ?

श्री शेख़ दमड़ी

हे चित्रकार ? हे चित्रकार ?
अंकित कर दे इस पाटीपर
बापू का ले वह सौम्य चित्र ?
भर देता उर में स्नेह, भाव
सेवा का जो निर्मल पवित्र
वह वीरवेष ? वह साधुवेष ? कर रहे अहिंसा का प्रचार।

हे चित्रकार ? हे चित्रकार ?
चित्रित कर दे नोआखाली
के पथ पर कोमल बढ़े पाँव
हिंसा की आग अहिंसा से
जा रहे बुझाने गाँव-गाँव।
त्रसितों, दीनों, दुखियों को भी छाती से करते लगा प्यार।

हे चित्रकार ? हे चित्रकार ?
ले थाम तूलिका ? काँप रहे
कर क्यों तेरे हे चित्रकार ?
वाणी में कम्पन, आँखों में
आते आँसू क्यों बार बार ?
बापू से सीखो मरना भी,
जीना भी सीखो बापू से
कटु गरल, सुधा के हँस प्याले
पीना भी सीखो बापू से।
अंकित कर दे अनमोल प्राण! सेवा-पथ पर करते निसार
हे चित्रकार ? हे चित्रकार ?

मन तरंग

पंडित श्रीराम वाजपेयी, राष्ट्रीय प्रचार कमिश्नर, हि० स्का० अ०

संसार का कोई-कोई ढङ्ग विचित्र होता है। उदाहरण के रूप में कुछ शब्दों के अर्थ कुछ, और अर्थ उनसे कुछ और लगाया जाता है। इसी तरह जिन सभा या सोसायिटियों के नाम से प्रगतिशीलता टपकती है, उन्हें कार्य रूप में इस तरह परिणत किया जाता है कि उनके उद्देश्यों का पूरी तरह से हनन हो जाता है। उदाहरण के लिए शब्द गाड़ी के अर्थ हैं जो कहीं पर गड़ गई हो और इधर-उधर चल फिर न सके। किन्तु जब हमारे कानों में शब्द गाड़ी आकर पड़ता है तो हमें तुरन्त चलने-फिरनेवाली वस्तु का ध्यान पैदा हो जाता है और क्षण मात्र भी यह विचार में नहीं आता कि गाड़ी का अर्थ अचल चीज है।

मेरी इस बात का दूसरा उदाहरण अँगरेजी शब्द स्काउट मूमेंट (स्काउट आन्दोलन) है। स्काउट मूमेंट को सुनते ही मन में एक ऐसी चीज का ध्यान होता है जिसका लक्ष्य प्रगतिशीलता हो। किन्तु स्काउटिंग के संचालकों ने स्काउटिंग को अगाड़ी-पिछाड़ी लगाकर उसे शब्द गाड़ी की तरह अचल कर दिया। जो चीज अचल हैं, जो प्रगतिशील नहीं, समझ लेना चाहिये कि उसका अंत भी निकट आ गया है। मैंने सच्ची सहानुभूति रखने वाले पर सत्यवादी लोगों को कहते सुना है कि स्काउटिंग की पिछली आकर्षण शक्ति जाती रही। अब स्काउटिंग ने एक चिन्ताजनक मरीज की दशा प्राप्त करली है, उसकी नब्ज देखने वाले अपनी समझ-बूझ के अनुसार अलग-अलग बयान देते हैं। कुछ का कहना है कि वह मरणासन्न है और समय आ गया है कि उसके मुंह में गंगा-जल, सोना और तुलसी के पत्ते डाल दिये जाँय। कुछ लोग इस विचार के भी हैं कि 'जब तक साँस रहे तब तक आस है; मैं भी पिछले विचार के लोगों में से हूँ कि स्काउटिंग में कमजोरी जरूर आ गई है और उस कमजोरी का मुख्य कारण फुदक-कुदक कर चलने वाली चीज़ को संकुचित बाड़े के अन्दर रखना है। जिस प्रकार चलता और कार्य-शील हाथ स्वस्थ एवं सुखी रहता है पर यदि उसी हाथ को हिलने-डुलने न दिया जाय और एक ही अवस्था में अधिक नहीं ६ महीने ही रक्खा जाय तो हाथ क्रमशः दुर्बल होता चला जायगा और उसके कार्य करने की शक्ति का भी दिनोदिन ह्रास होगा। यही दशा वर्तमान स्काउटिंग पर अच्छी तरह घटित हो सकती है। यदि हम अपनी स्काउटिंग को वर्तमान संकुचित सीमा से निकाल कर उसे इधर-उधर चलने फिरने और कूद-फांद करने का मौका दें तो एक बार पुनः सजीव हो कर जनता को पहले की तरह चकित कर सकेगी।

उदाहरण के लिए मैं केवल दो बातों को कह कर अपने मंतव्य को समझाने की कोशिश करूँगा। कुछ लोग मुझसे इसलिए नाराज रहते हैं और आजकाल विशेष नाराज हैं कि मैं पिटी लकीर को ही पीटता न रह कर नये-नये प्रयोग करता हूँ और पुरानी चीजों में नवीनता लाने और नयी चीजों को शिक्षा क्रम में समाविष्ट करने का प्रयत्न करता हूँ। मैं शुरू से ही इस बात के पक्ष में रहा हूँ कि हमारे भारतीय बालकों में स्फूर्ति लाने और उन्हें चटक बनाने के लिए ड्रिल पर काफी जोर देना चाहिए और स्काउटिंग क्षेत्र में इसे समुचित स्थान देता आया हूँ। किन्तु मेरे प्रतिकूल विचार रखने वाले सज्जन इसे नापसंद ही नहीं करते बल्कि आपे से बाहर भी हो जाते हैं। कहने लगते हैं कि ड्रिल सिखलाना बालक एवं बालिकाओं को फौजी सिपाही बना डालना है और वे अपनी इस बात की पुष्टि में स्काउटिंग के जन्मदाता लार्ड बैडन पावेल महोदय के वेद वाक्य कह सुनाते हैं। मैंने भी उन वाक्यों का अध्ययन किया है, सम्भव है कि उस समझ और योग्यता से नहीं जिस समझ एवं योग्यता का दूसरों को दावा है। बैड़न पावेल साहब ने लिखा भी है कि कल्पना विहीन स्काउटर केवल ड्रिल की शरण लेते हैं। किन्तु मैंने यह कभी नहीं कहा है और न किया ही है कि और विषयों पर ध्यान न देकर केवल ड्रिल की ही माला फेरी जाय। मैंने सदा कहा है और किया है कि बालक में जिस विषय की विशेष कमी हो

उसके ऊपर ध्यान विशेष भी देना चाहिये। इसलिए यदि किसी बालक में तेजी-तर्रारी और उसकी चालढाल में फुर्ती लाने के लिये मैंने विशेष ध्यान दिया है तो मैंने अपनी तुच्छ सम्मति में कोई घोर अपराध नहीं किया है।

आज चारों तरफ से आवाज गूँज रही है कि अब भारतवर्ष स्वतंत्र हो गया है, इसलिये प्रत्येक स्त्री-पुरुष को अपने आपको केवल सैनिक समझना ही नहीं चाहिये बल्कि समय आने पर सैनिक का काम भी करके दिखा देना चाहिए। इस लक्ष्य के अनुसार यदि मेरी गलती से बालक एवं बालिकाएँ सैनिक भी बन जाते हैं तो मैं अपने अपने आप को घोर अपराधियों का श्रेणी में नहीं समझता।

एक बात और। इधर देश में स्वतंत्रता के मिलते ही अपने राष्ट्रीय झण्डे का मान केवल अपने देश में ही नहीं प्रत्युत अन्य-अन्य देशों में भी हिमालय की चोटी के समान ऊँचा बढ़ गया। जिस झण्डे को सलाम करते हुए और फहराते हुए लोग घबड़ाते थे उसी झण्डे को अब अपने मकान की ऊँची से ऊँची चोटी पर उड़ाने में अपना गौरव समझने लगे हैं। इधर मैंने भी राष्ट्रीय झंडे और स्काउट मंडल के झंडे की प्रतिष्ठा एवं महत्व को बढ़ाने के लिए हर सैन्य में कलरपार्टी (झंडा उठाने वालों की टोली) की आयोजना की है। जनता का झंडे की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए झंडा बरदारों की वर्दी में कुछ आकर्षक चीजों का समावेश किया। उस टोली की रचना और व्यवहार के लिए कुछ नये नियम बनाये और लागू किये। सुनते हैं कि इस कलर-पार्टी को देख कुछ लोग बहुत हाय-हाय कर रहे हैं। किन्तु मैंने कलरपार्टी को इसलिए नहीं खड़ा किया कि हमारे कुछ मित्र कलरपार्टी को लाल चिथड़े की तरह देख सांड की तरह भड़क उठें। किसी भी वस्तु के अच्छी एवं बुरी होने का प्रमाण यह है कि उसका उद्देश्य क्या है और जिनके बीच में वह जारी की गई उनमें वह रोच-कता पैदा करने में सफलीभूत हुई या नहीं। उस उद्देश्य की उच्चता के बारे में जिसको मैंने सामने रख कर कलर-पार्टी जारी की है कभी दो रायें नहीं हो सकतीं। रोच-कता की मात्रा के बारे में एक इसी बात से पता लग जायगा कि कलर पार्टी के सामान की माँग इतनी अधिक है कि नेशनल हेडक्वार्टर्स इस चिन्ता में है कि उसे किस तरह से पूरा किया जाय।

एक बात और लिखकर मैं अपने कथन को समाप्त करूँगा। रोफक्राफ्ट (रज्जु-विद्या) का महत्व स्काउटिंग में बहुत बड़ा है। किन्तु बहुत से लोग ६-७ प्रचलित गांठे ही सीखकर अपने को इस विषय का पंडित समझने लगते हैं। कुछ लोग यदि और जोश में आये तो पायन-रिंग का काम सीख कर इस विद्या के आचार्य बन बैठते हैं। लेकिन मैं उन अनाड़ी लोगों में हूँ जिनका विचार है कि केवल पायनरिंग को ही इस विद्या की पूर्णाहुति नहीं समझनी चाहिए। रज्जु-विद्या में तागे, डोरी और रस्सी से नाना प्रकार के और भी काम किए जा सकते हैं। जैसे सीटी की डोरी, वैडमिन्टन या टेनिस का जाल, सब्जी लाने का जालीदार झोला, चौकड़ी और छैकड़ी चारपाई बिनना, कुर्सियों की मरम्मत करना और उन्हें नये सिरे से बुनना, रस्सियों के बनाने के लिए छोटी-छोटी मशीनों को हाथ से बना लेने की योग्यता प्राप्त करना आदि-आदि।

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ उमंगे होती हैं। इन उमंगों को प्यार या व्यंग से पागलपन की झोंक कहते हैं। कुछ ऐसी झोंके मुझमें भी हैं। मुझमें एक विशेष झोंक यह है कि मैं अपने पागलपन को कार्य रूप में भी परिणत करना चाहता हूँ।

आशा है कि देश के योग्य स्काउटर गण मेरे इस दृष्टिकोण पर गम्भीर विचार करेंगे और यह निश्चय करेंगे कि क्या बालक और बालिकाओं के लिए आज सन् १९४९ में स्काउट शिक्षा का वही ढङ्ग रहे जो ४२-४३ वर्ष पहले सन् १९०७ में, वह भी इङ्गलैंड में निश्चित हुआ था या उसमें युग और भारतीय आवश्य-कताओं के अनुसार कुछ संशोधन और परिवर्द्धन किया जाय।

स्काउट संगठन की सफलता

श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर

स्काउट संगठन के कार्य भार को वहन करने वाले मुख्यतः अवैतनिक कार्यकर्ता ही होते हैं। स्काउट आन्दोलन के प्रान्तीय अध्यक्ष जिन्हें प्रान्तीय कमिश्नर कहते हैं अवैतनिक कार्यकर्त्ता हैं। प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य मुख्यतः अवैतनिक कार्यकर्ता हैं और इसी प्रकार डिवीजन तथा असोसिएशनों के अधिकारी तथा सदस्य अवैतनिक कर्ता ही हैं। जबतक अपना पूरा समय देकर कार्य करने वाले कुछ व्यक्ति दिन-रात किसी आन्दोलन के लिए कार्य न करें उसका कार्य पूरी प्रगति से आगे नहीं बढ़ पाता। अतएव कुछ वैतनिक कार्य-कर्ता भी स्काउटिंग के संगठन में कार्य करते हैं।

अवैतनिक तथा वैतनिक कार्यकर्त्ताओं को किस प्रकार कार्य करने से सफलता प्राप्त हो सकती है और स्काउट संगठन कैसे सबल और सुदृढ़ हो सकता है मैं इस विषय पर अपने कुछ विचार 'सेवा' के पाठकों के सामने रखना चाहता हूँ।

पहले मैं अवैतनिक कार्यकर्ताओं के लिए कुछ आवश्यक बातें लिखता हूँ। यदि उनके अनुसार वे कार्य करने की चेष्टा करेंगे तो वे इस आन्दोलन की अधिक मात्रा में सेवा कर सकेंगे और उनके सहयोग से ज़िला असोसिएशनें भी मजबूत संगठन के रूप में चल सकेंगी।

अवैतनिक कार्यकर्त्ता जो असोसिएशन का कार्य करने का निश्चय करते हैं उन्हें अपने मन में यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये कि सेवा भाव से प्रेरित होकर ऐसा कर रहे है और वह इस संगठन में आकर त्याग और निःस्वार्थ भाव से कार्य करेंगे। किसी पद या मान प्राप्ति के लिये नहीं।

अवैतनिक कार्यकर्त्ताओं में सब से बड़ा उत्तरदायित्व स्काउट कमिश्नर के पद को सुशोभित करने वाले व्यक्तियों पर होता है। अपने कार्य भार को निभाने के लिये उन्हें निम्नलिखित योग्यता प्राप्त करना बहुत आवश्यक है, तभी प्रत्येक जिले में जिला कमिश्नर और उनके सहायक अपने जिले के कार्य को सुचारू रूप से संचालन करने की पूरी जिम्मेदारी ले सकते हैं।

१— उनके लिये आवश्यक है कि स्काउटिंग के प्रति उन के मन में दिलचस्पी हो, इस आन्दोलन में लग्न और तत्परता के साथ कार्य करने की एक अन्तर-प्रेरणा हो। किसी बाहरी दबाव या लालसा के कारण इसमें फांसे न गये हों।

२—कुछ बंधा हुआ समय इस आन्दोलन द्वारा देश के नवयुवकों के सेवा हित देने का संकल्प करें। केवल पंद्रह मिनट भी यदि प्रति दिन पूर्ण रूप से इस कार्य को सफल बनाने के सम्बन्ध में बिचार करें तो सच्चे रूप में वे एक पथ प्रदर्शक का कार्य करने योग्य हो जायेंगे।

३—वे स्वयं स्काउटिंग के नियमों और सिद्धान्तों को जानते हों और उनमें विश्वास रखते हों और स्काउट शिक्षण की उपयोगिता को समझते हों। इस सम्बन्ध में मोटी-मोटी बातों की जानकारी रखते हों जिसे प्राप्त करने के लिये कभी—कभी समय निकाल कर कुछ स्वाध्याय भी करते हों।

४. वे अपने को सेवक समझ कर निःस्वार्थ भाव से काम करने को तैयार हों। अफसर या बड़ेपन का छोटा बिचार मन में न आने देते हों।

५. व्यवहारिक रूप से जाति-पाँत्ति के भेद-भाव तथा ऊँच-नीच अथवा—छूत-छात के संकुचित विचारों को पास न आने देते हों।

इतनी योग्यतायें तो स्काउट असोसिएशन के प्रत्येक ही कार्यकर्त्ता के लिये आवश्यक हैं। अब आगे कुछ ऐसी बातों को लिखूँगा जिन्हें विशेष रूप से स्काउट कमिश्नरों को जानने का प्रयत्न करना चाहिये।

६. स्काउट नियम, प्रतिज्ञा, उद्देश्य, नीति, संगठन झंडा चढ़ाने और उतारने की विधि जानना, झंडे के सम्मान के सम्बन्ध में आवश्यक नियमों को जानना और आवश्यकता पड़ने पर उन पर अमल करना।

७. तीन अंगुली का प्रणाम करने की ठीक विधि

जानना। अभ्यास द्वारा उसे ठीक-ठीक करना, सीख लेना और उसका अर्थ जानना।

८. दीक्षा संस्कार करवाना जानना और राष्ट्रीय गान, झंडा गान, और कम से कम चार सिंहनाद जानना।

९. स्काउट दलों के निरीक्षण करने की विधि जानना, और अपने अधिकृत सब स्काउट दलों का निरीक्षण करके निरीक्षण फार्म की पूर्ति करना।

१०. भारतवर्ष में स्काउटिंग के इतिहास की पूरी जानकारी रखना और यदि संभव हो तो इस आन्दोलन की अन्तर्राष्ट्रीय प्रगति का ज्ञान प्राप्त करने का भी प्रयत्न करते रहना।

११. असोसिएशन के विभिन्न फार्म तथा उनका प्रयोग और उन्हें ठीक-ठीक भरने, निरीक्षण करने, और उन पर उचित कार्यवाही करने की विधि जानना।

१२. जिला और लोकल असोसिएशन के केन्द्र में कौन कौन से रजिस्टर और सूचियां इत्यादि होने चाहिये जानना और उन्हें उचित रूप से रखवाना।

१३. विभिन्न बैजों की पहिचान और उन्हें लगाने के ठीक स्थान जानना, ताकि दल निरीक्षण के समय अनुचित स्थान पर लगाये हुये बैजों की ओर स्काउटों का ध्यान आकर्षित कर सकें।

१४ स्काउट शिक्षा प्रणाली का मोटा-मोटा ध्यान रखना तथा, मनोविज्ञान के आधार पर शेर बच्चा, स्काउट, (बालचर) और रोवर (लोक सेवक) की श्रेणियों में स्काउट शिक्षा के विभाजन की महत्ता को समझना।

१५. अपनी संस्था की अखिल भारतीय तथा प्रान्तीय प्रधान केन्द्र के मुख्य कार्य कर्त्ताओं के नाम जानना।

१६. अवकाश पाकर एक बार नियमावली का आद्योपान्त पढ़ जाना चाहिये और इसकी एक प्रति सदैव अपने पास रखना चाहिये। कमिश्नर्स कम्पैनियन की भी एक प्रति पास रखना लाभप्रद होगा।

१७—जब कभी स्काउट कमिश्नर्स ट्रेनिंग कैम्प का आयोजन हो तो उसमें सम्मिलित होकर आवश्यक शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये!

१८—वर्ष में एक बार अवश्य ही बनोपसेवन में भाग लेना चाहिये।

१९—स्काउटिंग के विषयों पर भाषण देने की योग्यता होनी चाहिए।

२०—वर्ष में कम से कम एक बार अपनी आय में से कुछ न कुछ आर्थिक सहायता के रूप में संस्था को प्रदान करे जो कि दूसरों के लिये आदर्श रूप बन सके।

मुझे आशा है कि ऊपर लिखित विचारों पर हमारे कार्यकर्त्ता ध्यान देंगे और इन पर पूर्ण रूप से मनन करके इन्हें व्यवहार में लाने का प्रयत्न करेंगे और इस प्रकार अपनी योग्यता को बढ़ाते हुए स्काउटिंग के संगठन को सफल बनाने में समर्थ होंगे।

जो सज्जन स्काउट आन्दोलन में केवल किसी पद को प्राप्त कर लेते हैं और ऊपर लिखी आवश्यक जानकारी प्राप्त नहीं करते हैं तो वे स्वयं अपने हृदय से अनुभव करेंगे कि इस प्रकार वे न स्काउट आंन्दोलन को सफल बना सकेंगे और न तो इस अन्दोलन से अपने आप को ही लाभ पहुँचा सकेंगे। परिणाम यह होगा कि दोनों की उन्नति में बाधा पड़ेगी।

अगले अंक में मैं इस लेख के दूसरे भाग के सम्बन्ध में लिखूंगा। वैतनिक कार्यकर्त्ताओं को किस प्रकार अपना काय करना चाहिये इस विषय पर प्रकाश डालूँगा।

उत्तराखंड के यात्रियों के लिए कुछ आवश्यक निर्देश

श्री सूरजप्रसाद

हम भारतवासी कितने सौभाग्यशाली हैं जो इस हरे भरे देश में जन्म लिया। भारत एक ऐसा देश है जहाँ कि हमें अनेक प्रकार की जलवायु प्राप्त है। यदि हम उत्तर की ओर जाएँ तो हमें हिमालय की सघन चोटियां एक दृढ़ योद्धा की भाँति अटल दीख पड़ेंगी और दक्षिण की ओर प्रस्थान करें तो भाँति-भाँति के जङ्गल और घाटियाँ मिलेंगी। इसी प्रकार पूर्व और पश्चिम में भी हमें हरे-भरे खेत तथा राजपूताने के रेगिस्तान आदि के दर्शन होंगे। हमें यह कहते हुए गर्व होता है कि ऐसे ही रमणीक दिशाओं से घिरा हुआ भारतवर्ष, हमारा भारत, सर्व सुख सम्पन्न देश है, एक स्वतन्त्र देश है।

यह तो सत्य ही है कि एक मनुष्य जब अपना घर छोड़ कर एक दूसरे अनभिज्ञ देश में जाता है तो उसे वहीं के खाद्य व अन्य पदार्थों को ग्रहण करना पड़ता है और यदि वह ऐसा न करे तो कदाचित उसे अपने प्राणों की भेंट भी दे देनी पड़े।

यह हमारे जन समुदाय का विश्वास है कि वृद्धावस्था ही में मनुष्य को यात्रा करनी चाहिये परन्तु वास्तव में यह एक भूल है। हम जानते हैं कि वृद्धावस्था में मनुष्य का शरीर जर्जर हो जाता है, तो वह यात्रा क्या करेगा। दूसरी बात यह है कि यात्रा अपने और दूसरों को शिक्षा देने और ग्रहण करने के लिए ही की जाती है। प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ नवीन वस्तुओं का आविष्कार करके ही तो वापस लौटता है।

भारत के ६०,००० से लेकर ८०,००० प्राणी प्रति वर्ष बद्रीनाथ, केदारनाथ इत्यादि की यात्रा करने के लिए जाते हैं। जब वह अपने शहर से जाने के लिए तैयार होते हैं तो पड़ोसियों और कुटुम्बियों का एक बृहत् समुदाय उनको आशीर्वाद देता है कि "बाबा, यदि इसी प्रकार प्रसन्नचित लौट आओ तो नई जिन्दगी होगी।"

लोग ऐसा क्यों समझते हैं इसलिए कि वह बिना जाने हुए यात्रा की तैयारी में लग जाते हैं। उनको यह विदित नहीं होता है कि रास्ते में किन किन वस्तुओं का साथ रखना आवश्यक है। सब ईश्वर के भरोसे पर छोड़ देते हैं। मैं यह बात मानता हूँ कि ईश्वर हमारे प्रत्येक कार्य में सहायता करता है पर उन लोगों का सहायक नहीं होता जो आलसवश या अपनी मूर्खतावश जानने का प्रयत्न नहीं करते।

ऐसे लोगों से हमारी यह प्रार्थना है कि वह लोग यात्रा न करें नहीं तो उनका जीवन सदा आपत्तिजनक होगा।

हिमालय प्रदेश में यात्रा करने वालों के लिए कुछ आवश्यक बातें लिखी जातीं हैं और इन्हीं लिखी हुई बातों पर यात्री अग्रसर हों तो हमें आशा है कि पहाड़ पर के जाने वाले सदा शारीरिक दुखों से बचे रहेंगे।

१. जो लोग मैदान से पहाड़ पर यात्रा के लिए जाते हैं, उनको एक या दो रोज कुछ उँचाई वाले स्थान पर रुक जाना चाहिए। इसलिए कि वह पहाड़ की जलवायु को सहन कर सकें।

२. सदा ४॥ या ५ बजे प्रातः ही यात्रा के लिए प्रस्थान कर देना चाहिए और तीन बजे तक रुक जाना चाहिए। इस प्रकार प्रति आदमी साधारणतः १५ से २० मील की यात्रा को पूर्ण कर सकता है।

३. पहाड़ों पर खाना आसानी से शाम का पकाया हुआ सुबह खाया जा सकता है। इसलिए खाना शाम को चार बजे पका लिया जाय जिससे आदमी दूसरे दिन सुबह भी खा सके। इस प्रकार वह दो बार खाना बनाने के कष्टों से बचा रहेगा।

४. यात्री को चाहिए कि वह सदा अपने पास तीन चीज़ रक्खे। १. काली मिर्च, लौंग और गुड़। खाने के बाद या चाय में थोड़ी काली मिर्च और लौंग मिला लिया जाय तो वह दस्त, ठंड व बीमारी से बचता रहेगा। यदि कभी यात्री को प्यास लगे और वह पहले गुड़ खा कर पानी पिये तो उसे दस्त की बीमारी कभी न होगी। यह बात प्रमाणित की हुई है। रास्ते में चलते हुए कभी कोई चीज़ न खानी चाहिए। लोगों का यह विचार बिल्कुल गलत है कि पहाड़ पर हम जितना खायेंगे वह पच जायगा। जलवायु का असर हमारी पाचन शक्ति पर भी पड़ता है और हम जितना ही ऊँचे पर जायेंगे उतनी भूख भी मरती जायगी। इसलिए दो बार से अधिक यात्री को न खाना चाहिए। मैदान के यात्रियों को चाहिये कि वे अपने साथ सूखे फल, सत्तू इत्यादि अवश्य ले जाँय।

५. कभी कभी यह देखा गया है कि जो लोग बर्फ के ऊपर जाते हैं वे अज्ञानता के कारण दो बीमारियों से पीड़ित हो जाते हैं। १. हाथ, पैर व कान ठीक से न ढकने की वजह से उनको Frost bite हो जाता है जसकी वजह से वे अङ्ग बिल्कुल खराब हो जाते हैं। इसलिए उनकी रक्षा के लिए दस्ताने, गर्म ऊनी मोजे इत्यादि अवश्य ले जायँ। २. सूरज की किरणें बर्फ पर पड़ने की वजह से कभी कभी लोग अन्धे हो जाते हैं जिसको अंग्रेजी में Snow blind कहते हैं। इससे बचने के लिए यदि वे गाढ़े रङ्ग का चश्मा ले जायं तो अच्छा है। यदि किसी को यह बीमारी हो जाय तो उसी समय उसकी आँख में Castor oil छोड़ देना चाहिए। वह शीघ्र ही अच्छा हो जायगा।

६. दस्तावर दवाई का पहाड़ पर ले जाना बहुत ही आवश्यक है और निद्रा देवी की गोद में जाते समय नित्य यदि एक बार ले लिया जाय तो वह पेट की खराबी से सदा बचा रहेगा।

७. हमने अक्सर देखा है कि यात्री लोग जब पहाड़ पर सुबह सोकर उठते हैं तो कहते हैं आज ठंड लग गई और सारा बदन दर्द कर रहा है। पहाड़ की वायु में नमी है इसलिए वहां की जमीन में भी नमी रहती है। जब मनुष्य नमी वाले स्थान में सोयेगा तो उसको अवश्य ही दर्द का अनुभव होगा। इससे बचने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि वह एक Water proof sheet ले जाय और उसको बिछा कर तब सोये। इसके बिछाने से वह ऊपर वाली वस्तुओं से बचा रहेगा।

दो एक बात हम उन लोगों के लिए बताना चाहते हैं जो हाइक आदि में जाते हैं।

१. वे लोग अपने पैरों में बांधने के लिए पत्तियां अवश्य ले जायं। इसकी वजह से पैरों में थकावट बहुत कम मालूम होती है।

२. यदि हो सके तो थोड़ी सी Brandy भी अपने साथ ले जायं। जब दिन भर की यात्रा समाप्त हो जाय तो वह चाय इत्यादि में १० या २० बूँद मिलाकर पीलें तो सारी थकावट का लोप हो जाता है।

३. अपने साथ एक नुकीली लोहा लगी हुई छड़ी अवश्य ले जाँय इससे पहाड़ पर चढ़ने में बहुत सहायता मिलती है।

अन्तिम घूँट

श्री सुरेश वर्मा

"भूल जाओ उन बीती बातों को मुकेश ! क्योंकि उसी में हमारी सब की भलाई है ! समय तो परिवर्तनशील है ही और फिर यदि दुःख न हो तो सुख का वैभव कैसे जाना जा सकता है। मृत्यु ही मनुष्य को जीवित रहने की प्रेरणा देती है समझे न"।

"लेकिन मेरे लिये अतीत को भूलना यह भूलना होगा कि मैं मनुष्य हूँ। मदिरा की मादकता भुलाई जा सकती है पर हलाहल की ज्वाला नहीं ! अँग्रेज़ों ने हमें कहीं का न रक्खा और तुम कहते हो हम उन्हें जीवित रहने दें ! हमारे हाथ का टुकड़ा छीन कर खाने वाले इन कुत्तों को तुम दूध पिलाना चाहते हो ! खैर। प्रशान्त तुम कर सकते हो ऐसा। मेरे लिये यह असम्भव और नितान्त असम्भव।" मुकेश का मुख सिन्दूरी हो गया।

"हमारे बापू का तो," प्रशान्त ने सहास्य कहा, "यह मार्ग नहीं। उन्होंने पाप से घृणा करने का आदेश दिया है पापी से नहीं तुम सम्भवतः यह भूल गये हो मुकेश ! अहिन्सा कायर का कवच नहीं वरन् वीर का अमोघ अस्त्र है..."प्रशान्त भावनाओं की उमंगों पर बहा जा रहा था और बहता रहता यदि अखबार वाला आकर मेज पर टाइम्स न रख देता !

समाचार पत्र के शिखिर-समाचार को पढ़ते ही दोनों भाई चौंक पड़े। "डचों" ने "इन्डोनेशिन्स" के ऊपर हमला कर दिया है ! बस इतना ही काफ़ी था मुकेश को गर्म करने के लिये।

"देखा न" वह भभक उठा, "इन बदमाश सभ्यता और स्वतंत्रता के ठेकेदारों को। रंगे सियार हैं। मैं कहता हूँ पूरे बगुला भगत हैं और प्रशान्त तुम कहते हो कि इन भेड़ियों को जीवित रहने दिया जाये। मेरा बस चले तो एक-एक को बीन कर भून दूँ।"

"मुकेश यह अवसर बकने का नहीं कुछ करने का है। तुम और मैं दोनों ही डाक्टर हैं और धनवान भी ! बोलो चलोगे इन्डोनेशिया उन विचारों की सहायतार्थ ?" प्रशान्त ने मुकेश के हृदय की थाह लेते हुये कहा।

"वाह प्रशान्त भइया ! तुमने तो मेरे मुँह की बात छीन ली ! मगर पिता जी..."

"तुम अभी तक नहीं पहचाने उन्हें मुकेश ! भारतीयता के पुराने उच्चतम आदर्शों का रक्त उनकी रग रग में प्रवाहित है। वह कभी मना न करेंगे यदि उनका पुत्र अपने देश का मस्तक संसार में ऊँचा करते हुये मर भी जावे।"

और तीसरे दिन ही वह दोनों भाई और उनके अन्य मित्र गणों की एक टुकड़ी जहाज पर खड़ी थी। भोंपू बज चुका था ? किनारे पर मुकेश-प्रशान्त के पिता प्रेमाश्रु पूरित नेत्रों से खड़े थे ! जहाज़ ने एक बार फिर एक गहरी साँस ली और चल पड़ा उस ओर जहाँ असंख्य नर नारी अपलक नयनों से बाट जोह रहे थे उसकी। उनकी मिटती आशाओं की टेक बहा जा रहा था ! भारत का दिव्य सन्देश लिये। और बापू का अमर वरदान।

× × ×

जहाज बन्दरगाह में प्रवेश कर रहा था ! अनेक इन्डोनेशिया वासियों की भीड़ उसके स्वागतार्थ खड़ी थी। जहाज़ ठहर गया ! और वह छोटी सी टुकड़ी "भारत माता" के जय घोष के साथ उससे नीचे उतरी ! "हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद" की गर्जना ने उसका भव्य स्वागत किया ! मुकेश के करों में एक "बिजयी विश्व तिरंगा प्यारा" था और प्रशान्त के हाथों में एक श्वेत पताका ! कुछ ही घंटों के पश्चात वह टुकड़ी जागजोकार्टा के लिये चल पड़ी।

जागजोकार्टा की भव्य सड़कों और उच्च भवनों ने उस टुकड़ी के प्रत्येक सदस्य का मन मोह लिया था। नगर अच्छा था ! चहल पहल थी। इन्डोनेशिया की राजधानी होने के नाते वह नगर सदैव गर्म रहता ! मुकेश को वहाँ के अस्पताल में डाक्टर नियुक्त कर दिया गया और प्रशान्त तथा अन्य सहकारियों को इधर उधर भेज दिया।

मुकेश बैठा था। सामने ही ऑपरेशन आदि के यंत्र पड़े थे! दो क्षण के उस विश्राम में उसे अपना अतीत याद आने लगा। एक बार तो झुँझला उठा कि नाहक ही यहाँ आकर ज़हर पिया!...कि एक कर्मचारी ने आकर सूचना दी कि डच फौजें मनोवेग के समान राजधानी की ओर बढ़ती आ रही हैं! जनरल पिकारनो की आज्ञा है कि शीघ्र ही नगर ख़ाली कर दिया जावे।

एक ओर कर्तव्य था और दूसरी ओर आत्म रक्षा! युद्ध हुआ और अंत में कर्तव्य ने विजय पाई! यही भारत का इतिहास है। प्रशान्त भी वहाँ आ गया था! दोनों ने अस्पताल न छोड़ने का ही निश्चय किया! सच्चे वीरों के पग बढ़ कर पीछे नहीं हटते!

और कुछ ही देर बाद सारे नगर में कोलाहल मच गया! बन्दूकों की "धाँय धाँय", बमों के भीषण धड़ाके, हवाई ज़हाज़ों की गड़गड़ाहट कानों के पर्दे फाड़ने लगे! सारा नगर विषाक्त धुँये के घने तिमिर में छिप गया। मुकेश और प्रशान्त आमने सामने बैठे थे और कर रहे थे प्रतीक्षा मृत्यु की। मुकेश का अँगूठा रिवाल्वर के घोड़े पर चिपका हुआ था!

एक चरचराहट की भयानक आवाज़ से दरवाज़ा खुला और अँदर आया एक भीमकाय गौरवर्ण पुरुष। साथ में अनेक डच सिपाही थे और बन्दी रूप में जागजोकार्टो का सेनापति जनरल पिकारनो!

मुकेश ने निशाना साधा कि कड़कती हुई आवाज़ में चीख़ कर प्रशान्त ने कहा "मुकेश ठहरो! बापू का यह आदेश नहीं! यह सन्देश भारत का नहीं" और दूसरे ही क्षण वे दोनों भी बन्दी थे।

"तुम हिन्दुस्तानी! यहाँ लड़ने आया है! पागल! जीना नहीं जानता। खुद मौत के पंजे में फँसा है आकर! मिस्टर गांधी ने तुमको मरना सिखाया है जीना नहीं।" और उस डच जनरल के भयंकर अट्टहास से कमरा गूँज उठा!

"सिपाहियो रिहा कर दो इन दोनों को और सामने लाओ उस कुत्ते को जो आज़ाद रहना चाहता है!" और दूसरे क्षण तीनों एक साथ उस जनरल के सामने खड़े थे।

"तुम इधर आओ" उसने प्रशान्त को देखते हुये कहा! गाय स्वयं कसाई के आगे सींग झुका कर खड़ी थी! यह रिवाल्वर लो और हम देखना चाहते हैं कि तुम्हारी गोली किस को मारती है! एक के मरने पर दूसरा रिहा कर दिया जावेगा!" डच जनरल ने रिवाल्वर प्रशान्त के काँपते हाँथों में थमाते हुये कहा!

प्रशान्त ने सामने देखा! एक ओर तो खड़ा था उसका छोटा भाई और दूसरी ओर था वह इन्डोनेशियन जनरल! उसका हृदय स्थिर था और दूसरे ही क्षण उसके काँपते हाथ भी स्थिर हो गये!

"जल्दी करो" डच जनरल ने कड़कते हुए आदेश दिया!

प्रशान्त एक बार काँपा! उसे याद हो आया बापू का वचन कि दूसरे की रक्षा के लिये अपना सब कुछ निछावर कर दो! और दूसरे ही क्षण भयानक शब्द हुआ, "धाँय! धाँय!!" और मुकेश का निर्जीव शरीर कमरे की फर्श पर पड़ा था!

एक! दो!! तीन!!! और डच जनरल ने पिकारनो की ओर निशाना साध कर रिवाल्वर का घोड़ा दबा दिया। और साथ ही साथ उसके अट्टहास ने कमरे को भर दिया एक अजीब भयानकता से। गोली का धुआँ मिटने पर दूसरे क्षण उसने देखा कि पिकारनो के आगे प्रशान्त का निर्जीव शरीर लहू से लथपथ पड़ा था। जनरल ने फिर घोड़ा दबाया पिकारनो की ओर! पर रिवाल्वर एक "टुट" की आवाज़ मात्र कर के रह गयी। वह ख़ाली था! मानों प्रशान्त से भयभीत होकर हार मान चुकी हो। वह उसकी अन्तिम गोली थी!!! प्रशान्त मानों उसका अन्तिम घूँट था!!!

बिहार प्रान्त की रैली

श्री जानकी शरण वर्मा, नेशनल सेक्रेटरी

तारीख ८, ६, और १० अप्रैल को बिहार प्रान्तीय हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन की रैली बड़े उत्साह और समारोह से पटने में हुई। तारीख ७ की शाम को पंडित श्रीराम बाजपेयी, नेशलल आॅर्गनाइजिंग कमिश्नर, और श्रीमती चंचल मोहिनी, बी० ए०, बालिका विभाग के लिए सहायक आर्गनाइजिंग कमिश्नर, के साथ मैं भी पटने पहुँचा।

कैम्प का स्थान बाँकीपुर का प्रसिद्ध लॉन, जो अब गांधी मैदान के नाम से प्रसिद्ध है, नियत किया गया था। मैदान में पहुँच कर एक ही आकार-प्रकार की सैकड़ों छोलदरियों को देख कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ, पर मेरे हृदय में यह आशंका हुई कि क्या इनमें से आधी छोलदारियाँ भी भर सकेंगी या इतने सारे डेरे गाँधी मैदान की शोभा ही बढायेंगी।

रैली में मेरा कोई खाश काम न था और न मैं चाहता ही था कि मुझे कोई काम दिया जाय। ऐसे अवसरों पर मैं अपनी ड्यूटी अपने लिए आप ही लगा लेता हूँ—(१) पुराने मित्रों से मिलकर प्रसन्न होना। (२) नये मित्र बना कर स्काउटिंग के विशाल भ्रातृत्व के गौरव का अनुभव करना, और (३) नेशनल हेडक्वार्टर्स के झंझटों से दूर रह कर अपने आपको प्रसन्न रखना और अपना वज़न बढ़ाना। इसीलिए जब कि वृद्ध श्री बाजपेयी जी और श्रीमती चंचल मोहिनी जी सभी तरह के कामों में अस्त व्यस्त रहते थे मैं चक्कर लगाता था और स्काउटिंग के एक महत्वपूर्ण अंग निरीक्षण का अभ्यास करता था।

मैंने ७ तारीख को ही निरीक्षण का अभ्यास आरम्भ किया और सारी रात जगकर यह देखने और जानने की चेष्टा की कि छोलदारियाँ भरती हैं या खाली ही रह जाती हैं। मुझे हँसी आती थी कि बिहार प्रान्तीय संस्था के कर्मचारी ऐसे आशावादी हैं कि वे अप्रैल जैसे महीने में दूर-दूर के स्काउटों के आने की आशा रखते हैं। इस तरह का कैम्प और रैली भारतीय स्काउटिंग के इतिहास में शायद पहिली बार आयोजित हुई थी क्योंकि इससे पहले अप्रैल महीने में कैम्प और रैली का होना मैंने न कहीं देखा था और न सुना था। मैं तो यह समझ रहा था कि बिहार के कर्मचारी बुरी तरह निराश होंगे और व्यावहारिक बातों में अपनी भूल मान कर आगे के लिए पाठ ग्रहण करेंगे। लेकिन सारी रात निरीक्षण करने का फल यह हुआ कि मुझे ही अपने मुँह की खानी पड़ी। तारीख ८ के सूर्योदय के पहले लगभग ६५० बालक और बालिका स्काउट और स्काउटर कैम्प में आ चुके थे। इनका ताँता आज सारे दिन बँधा रहा और कुछ तो ६ तारीख के सवेरे तक भी कैम्प में आये। इस तरह कुल मिला कर लगभग १००० स्काउट, जिनमें ३०० बालिकाओं की संख्या थी इकठे हो गये। मैं मान गया कि बिहार निवासी होता हुआ भी मैं अपने प्रांत के उत्साह से अच्छी तरह परिचित नहीं हूँ।

मेरे हृदय में एक और आशंका थी और न सिर्फ वह दूर हुई बल्कि मेरा एक छिपा हुआ गर्व भी चकनाचूर हुआ। बात यह है कि १६४४ से १६४६ तक, दो वर्ष, मैंने भी अपने प्रान्त में प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर का काम किया था। वे दिन बेढब थे। प्रान्त ६३ धारा के अनुसार शासित और संचालित था और नौकरशाही का बोलबाला था और हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन जैसी राष्ट्रीय संस्था के नाम से ही स्कूल और कालेज के अध्यक्ष डरते थे। अपने सहकारियों, श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी, श्री कैलाश प्रसाद सिंह और श्री आनन्द किशोर झा की अमूल्य सहायता से मैंने सन्तोषजनक काम कर दिखाया था। मेरा लक्ष्य यह था कि हम चाहे थोड़े हों या ज्यादा स्काउट स्काउट कला से अभिज्ञ हों। इस दिशा में भी थोड़ा बहुत काम हुआ था और इसका श्रेय भी उन्हीं तीनों मेरे सहकारियों को है। लेकिन अब मैं समझता था कि संख्या भले ही बढ़ी हो स्काउट-कला का ध्येय अतीत की ही बात रह गई होगा। इस सम्बन्ध में भी मेरे निरीक्षण ने [illegible]

आवश्यक कर दिया कि मैं अपनी राय बदल दूँ। स्काउट स्काउट कला में पहले से अच्छे थे।

श्री बाजपेयी जी के मुँह से प्रशंसा निकलना आकाश में फूल खिलने की तरह है। लेकिन एक दिन उन्होंने गदगद हो कर कहा कि यदि बिहार में इसी तरह कार्य होता रहा तो निश्चय ही सारे हिंद में बिहार प्रान्त स्काउटिंग के मामले में बहुत ऊँचा सम्भवतः सर्वप्रथम, स्थान ग्रहण करेगा। मेरे मुँह में पानी आ गया और मैंने सोचा कि कैलाश प्रसाद सिंह की जगह मैं ही होता तो अच्छा था।

इस रैली में स्काउटों ने स्काउट कला की होड़ों में अच्छा भाग लिया। श्री बाजपेयी जी और श्रीमती मोहिनी जी और कुछ और स्काउट कला विशारदों ने सारा दिन और कभी-कभी रात को १० बजे तक 'जज' का काम किया। दुर्भाग्यवश बहुत पीछा छुड़ाने पर भी श्री देवनाथ सहाय जी की कृपा से ४-६ विषयों में मुझे भी 'जज' का काम करना पड़ा था। जो कुछ देखा उससे यह मानना पड़ा कि स्काउटों ने स्काउट कला की ओर भी काफी ध्यान दिया है। श्री बाजपेयी जी तो इससे विशेष प्रसन्न थे कि अधिकतर लड़के—लड़कियों के पैर चलते समय मिलते हैं।

मैं रैली के संचालकों और प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स के कार्यकर्त्ताओं को रैली की सफलता पर हार्दिक बधाई देता हूँ। जहाँ मैंने इतनी सराहना की है मेरे हृदय में एक लालसा और है। वह यह कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में स्काउटगण हिमालय बैज की शिक्षा प्राप्त करें और ज्यादा से ज्यादा स्काउट गुरुपद की योग्यता से आभूषित हों। क्या संस्था के प्रचारकगण इस ओर ध्यान देंगे?

रैली के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें यह हैं:—

१. प्रान्त के सभी डिवीजन और तीन जिलों को छोड़ कर सभी जिलों के प्रतिनिधि रैली में सम्मिलित थे।

२. प्रान्त में अभी हाल में मिले हुये विवादग्रस्त सराँयकेले से एक दल आया था।

३—बालिका स्काउटों ने बड़े उत्साह से रैली में भाग लिया। यह गया, मुंगेर, भागलपुर और छपरे से आई थी। इनकी नृत्य और संगीत की होड़ें बहुत ऊँचे दरजे की थी। बालक स्काउटों में भी कुछ बालकों ने अच्छे गवैया होने की परिचय दिया।

४ कैम्प में स्काउटों का अनुशासन सराहनीय रहा। कुछ असुविधाएँ जरूर थी लेकिन स्काउटों ने हँस कर ही असुविधाओं का सामना किया।

५. कैम्प का उद्घाटन माननीय आचार्य बद्रीनाथ वर्मा, प्रान्तीय शिक्षा सचिव, रैली का उद्घाटन माननीय श्री जयरामदास दौलत राम, बिहार के भूतपूर्व गवर्नर और हिन्द के खाद्य मंत्री, एक कैम्प फायर का सभापतित्व, माननीय श्री जगलाल चौधरी, प्रान्तीय स्वास्थ्य मंत्री, और अन्तिम जलसे का सभापतित्व, माननीय डाक्टर श्री कृष्ण सिंह, प्रान्तीय प्रधान मन्त्री ने किया। इनके अतिरिक्त माननीय डाक्टर सैयद महमूद, विकास मन्त्री, और पंडित प्रजापति मिश्र प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष भी रैली में पधारे थे।

६. रैली को सफल बनाने का श्रेय लक्ष्मीनारायण, कैलास प्रसाद, आनन्द किशोर, नर्मदेश्वर को है, लेकिन इन सबों में कुछ न बनता यदि प्रान्तीय कमिश्नर श्री जगतनारायण लाल जी ने अपने सहयोग और परिश्रम से रैली और कैम्प जैसे गोवर्धन को उठाने का मुख्य भार अपने ऊपर न लिया होता। सहायक प्रान्तीय कमिश्नर श्री कन्हैया जी का भी रैली की सफलता में काफी हाथ रहा।

क्या ऐसी ही रैली बिहार में निकट भविष्य में न होगी?

सफल माता

श्रीमती सरला गुप्ता, बी० ए०

आजकल हमारे हिन्दुस्तान में देखा जा रहा है कि सब तरह की उन्नति का प्रयत्न हो रहा है लेकिन क्या कभी हम लोगों के विचार में सब से गम्भीर बात भी आई कि जननी, माँ जो कि सृजन करती है उसका इन सब बातों में कितना भारी उत्तरदायित्व है। वही है जो कि भविष्य के नागरिकों को तैयार करती है जिनसे कि संसार चलता है। हाँ जब वह इतनी आवश्यक प्राणी है तो क्या उसके उत्थान या उसकी उन्नति के लिए भी कोई साधन है, नहीं हम लोग इस विषय पर उतना ध्यान ही नहीं देते या हम लोग उसकी आवश्यकता नहीं समझते।

मेरे विचार में मां का उत्तरदायित्व बहुत ही गम्भीर और प्रमुख है। उनके बिना बच्चे की मानसिक व शारीरिक उन्नति असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। तो पहले यही देखना है कि एक सफल मां के क्या क्या कर्त्तव्य हैं।

सफल मां वही है जिसने कि बच्चे को न केवल जीवन दिया बल्कि उसको अपने जीवन को कायम रखने का साधन भी दिया है, जो कि भविष्य में जाकर नागरिक जीव होगा और जिससे कि देश का कुछ उत्थान होगा। देश में काफी संस्थाएं हैं जो कि बालकों को शारीरिक शिक्षा इत्यादि देती हैं। यह सब बालकों के उत्थान को ही होता है उसी तरह मां को भी शिक्षा की आवश्यकता है हर मां बच्चे को पाल सकती है और वह स्वाभाविक है लेकिन बच्चे को सच्चा नागरिक बनाना दूसरी बात है। उसके लिए प्यार, त्याग और कर्त्तव्यपरायणता का होना आवश्यक है। मां अपने बच्चे को चाहती है कि होनहार हो पर विवशता है कि उसके पास साधन नहीं हैं और न इन बातों के लिए सरकार की ओर से कोई इंतजाम है।

६६ फीसदी स्त्रियाँ बच्चों को भोजन व कपड़ा भी पर्याप्त रूप से नहीं दे सकतीं—आर्थिक संकट जो सामने रहता है-फिर मां का उसमें क्या दोष।

तो हमें देखना है कि एक सफल मां बनने के लिए हमारे लिए क्या-क्या ध्यान देने योग्य बातें हैं।:—

मां को शुरू से ही अपनी तन्दुरुस्ती का ख्याल बच्चे के स्वास्थ्य के लिए रखना होता है उसी के ऊपर बच्चे की जिन्दगी निर्भर होती है। बच्चा पैदा होने के बाद उसकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है उसको अपना ख्याल रखने के साथ-साथ सदैव यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि उसके बच्चे की किस में भलाई है उसी को उसको करना है! चाहे उसको इसमें कितनी भी तकलीफ झेलनी पड़े, यहीं से मां के त्याग की सीमा आ जाती है। तो मुख्य चीज़ त्याग है, कि अपना सब कुछ देकर भी यदि बच्चा सफल नागरिक हुआ तो मां का जीवन कृतकृत्य है।

दूसरी बात देखनी है कि मां होने से पहले मां को कुछ शरीर-विज्ञान का ज्ञान होना चाहिए और कैसे शरीर एवं मस्तिष्क की उन्नति होगी इसका कोई प्रयोगिक शिक्षण अगर संभव हो तो मिलना जरूरी है अगर नहीं तो पढ़ लिख कर ही कुछ ज्ञान होना जरूरी है।

माँ को बुद्धिमानी और धैर्य्य की बहुत आवश्यकता है। माँ को अपने ऊपर काफी संयम रखना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है माँ अपनी झुंझलाहट बच्चों पर उतारती है और गलत न होते हुए भी बालक को सजा भुगतनी पड़ती है। पर यह माँ की ज्यादती है, अतः माँ को धैर्य्य-पूर्वक काम लेना होता है। बच्चों का नियंत्रण हम तभी कर सकते हैं जब कि हम अपने ऊपर संयम रखते हैं। माँ का इसमें स्वयं भी काफी विकास हो जाता है। क्योंकि बच्चे माँ को बहुत बुद्धिमान समझते हैं। माँ को स्थिरता की भी बहुत जरूरत रहती है। माँ को अपनी प्रधानता रखनी पड़ती है। बहुधा देखा जाता है कि माँ बच्चों को धमकाती है कि आने दो तुम्हारे पापा को कैसा पिटवायेंगी। लेकिन यह रास्ता गलत है इससे बच्चे

माँ को कुछ नहीं समझते और नियंत्रण से बाहर हो जाते हैं।

माँ बच्चे को अच्छी तरह से समझ करके अगर काम करे तो बच्चा बिना किसी परेशानी के वश में रह सकता है। गुस्सा में, लड़ाई में, किसी बात में अगर बच्चा हार जाता है तो वह मां की सहायता ही चाहता है। तो मां को बच्चे की मानसिक अवस्था अध्ययन करके ही काम करना पड़ता है और इसमें धैर्य्य की बड़ी भारी जरूरत है।

संक्षेप में सफल मां को धैर्य्य, प्यार, त्याग एवं क्षमा की बहुत बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए उसे अपने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान रखना चाहिये। अतः बालक की उन्नति के लिए मां को सदैव सतर्कता से काम लेना होता है। बालक से हार मान लेने से कि यह तो संभलता ही नहीं, इससे मां का कर्तव्य नहीं पूरा होता। मां को हर समय यह विचार करना है कि किस प्रकार मेरा बालक उत्तम नागरिक बन सकता है और उसके लिए सुझाव निकालना ही है।

बालक में आरम्भ से ही ऐसी आदतें डालनी चाहिए जिससे कि मां और बालक दोनों सरलता से अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व का पालन करते हुये जीवन को सुखमय बना सकें। सफल मां वही है जो बालक को सावधानी से, विचार से, प्यार से, बिना किसी दंड के पाल-पोस कर बड़ा बनाती है और उसमें अपना गौरव समझती है कि मेरी संतान एक योग्य नागरिक है जिसकी देश एवं जाति को महान आवश्यकता है।

साथ ही सरकार को भी इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे माताएँ पूर्णरूप से अपने कर्तव्यों को पूर्ण कर सकें। सरकार को नरसरी का प्रबन्ध करना आवश्यक है। बालकों के खाने इत्यादि सभी प्रकार का प्रबन्ध करना सरकार का कर्तव्य है क्योंकि ९९ प्रतिशत माताएँ अपने बच्चों को उचित खाद्य पदार्थ देने में समर्थ नहीं होती। यही है हमारे भारत की माताओं की दशा जिसमें सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है।

बालिकाओं के लिए स्काउटिंग

श्रीमती सरला शंकर, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, बालिका-विभाग

एक ओर यह बात देखने को मिलती है कि साधारणतः भारतीय समाज में स्त्रियों और बालिकाओं का दर्जा पुरुष और बालकों से नीचा समझा जाता है और उनकी उन्नति के ऊपर कुछ कम ध्यान दिया जाता है। दूसरी ओर यह भी देखने को मिलता है कि यहाँ की स्त्रियाँ अखिल भारतीय सरकार की मन्त्री (माननीय राज कुमारी अमृत कौर) सूबे की गवर्नर (श्रीमती सरोजनी नायडू) और राजदूत (श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित जैसे ऊँचे और उत्तरदायित्व के पदों को सुशोभित किया है। यह सचमुच एक बड़ी विचित्र बात है कि इसदेश में यदि स्त्रियों का स्थान बहुत नीचा है तो बहुत ऊँचा भी है। सच्ची बात तो यह है कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता में स्त्रियों का स्थान ऊँचा ही रक्खा गया है और यदि वह किसी भी प्रकार नीचा हुआ तो उसका दोषी हमारा समाज है जिसने उनकी उन्नति के रास्ते में नाना प्रकार के रोड़े अड़ा दिये हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि भविष्य में स्त्रियों का स्थान बहुत ऊँचा होगा और वे न सिर्फ राज्य चलाने में बल्कि ज्ञान और विज्ञान के प्रचार में अन्वेषण और आविष्कार में, सांसारिक और आध्यात्मिक विषयों में, सभी में पुरुषों की बराबरी करेंगी। जो कल्पना शक्ति के सहारे भविष्य का यह चित्र देखता है वही सचमुच देश का भाग्य का निर्माता हो सकता है।

हमें यह समझना होगा कि स्काउटिंग अगर बालकों के लिए आवश्यक है तो बालिकाओं के लिए और भी आवश्यक है। यदि यह आवश्यक है कि बालकगण और भी अच्छे नागरिक बनें तो यह और भी आवश्यक है कि हमारी बालिकाएँ भी जिन पर बालकों से कम ध्यान दिया जाता है अच्छी नागरिक हों। स्काउटिंग का उद्देश्य बालक और बालिकाओं को स्वस्थ, सदाचारी, स्वावलम्बी और सेवा भाव सम्पन्न बनाना है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्काउट दलों की शिक्षा से इन उद्देशों को पूरा करने की चेष्टा की जाती है, लेकिन यदि हमारी स्त्रियाँ इ[illegible] योग्य हों कि वे घरों में भी बच्चों की सुशिक्षा पर ध्यान [illegible] सकें और उन्हें स्वस्थ, सदाचारी, स्वावलम्बी और सेव[illegible] भाव सम्पन्न बनाने की चेष्टा करें तो यह अनुमान कि[illegible] जा सकता है कि घर और स्काउट दल की सम्मिलि[illegible] चेष्टाओं से बच्चों के जीवन पर कितना सुन्दर प्रभा[illegible] पड़ेगा, और वे कितने अच्छे और योग्य नागरिक ब[illegible] सकेंगे। यह तभी सम्भव है जब कि स्त्रियाँ अपनी बाल्या[illegible]वस्था में स्काउट शिक्षा प्राप्त करें और स्वयं इस योग[illegible] हो जायं कि नारीत्व प्राप्त करने के पश्चात् ये अपने बालकों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दे सकें।

स्काउटिंग में निरीक्षण शक्ति को पुष्ट करने प[illegible] अधिक ध्यान दिया जाता है। कहा जाता है कि जो अच्छ[illegible] निरीक्षक है, जो सभी बातों को अच्छी तरह देखता भालत[illegible] और परिस्थिति को अच्छी तरह समझता है वही जीवन [illegible] किसी भी क्षेत्र में सफल हो सकता है और क्षेत्रों में सफ[illegible] होना तो आवश्यक है ही, पारिवारिक क्षेत्र में सफल होन[illegible] अत्यन्त आवश्यक है। अधिकतर यह देखा जाता है [illegible] अधिकांश घरों में अनबन रहती है, और इसका मुख्[illegible] कारण यह है कि एक घर में साथ रहनेवाले एक दूसरे [illegible] मनोवृत्ति को नहीं समझ पाते हैं और न समझने [illegible] प्रयत्न ही करते हैं। उनमें निरीक्षण शक्ति की कमी हो[illegible] है। इसी से स्त्री और पति के बीच बाप और बेटे के बीच भाई-भाई के बीच जो प्रेम रहना चाहिये, वह नहीं रहता[illegible] यदि एक परिवार वाले एक दूसरों के मनोभावों को सम[illegible] तो निस्सन्देह पारिवारिक जीवन स्वर्ग तुल्य सुखमय जी[illegible] हो जाय। साथ ही साथ यह भी है कि जो अपने परिव[illegible] वालों की सेवा नहीं कर सकता, उन्हें सुखी नहीं [illegible] सकता, वह दूसरों की सेवा क्या करेगा, और इस कि[illegible] में यह बराबर ही याद रखना होगा कि निरीक्षण श[illegible] वाला ही दूसरों की सेवा कर सकता है।

स्काउटिंग में बहुत सी छोटी-छोटी बातें सिखाई जाती हैं, जिनका दैनिक जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध है। यदि हमारी बालिकाओं को इन बातों की शिक्षा दी जाय तो उनमें वह पूर्णता आयगी, जिससे वह पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में सच्चे पथ-प्रदर्शक का कार्य कर सकेंगीं। अभी हमारे समाज में रूढ़ियों की भरमार है और नाना प्रकार के अंधविश्वास हैं, जो कि हमारे जीवन को संकुचित और कुंठित किये हुये हैं। इन रूढ़ियों को पोषित करनेवाली और उन्हें जीवित रखने वाली विशेष कर हमारी अशिक्षिता स्त्रियां हैं, कारण कि उनकी सुशिक्षा पर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया गया। जब तक कि हमारी सामाजिक सभ्यता इन रूढ़ियों से मुक्त न हो जायेगी, हमारे समाज और देश का कल्याण न होगा। इन सभी बातों को सोचते हुये हमें बालिकाओं की शिक्षा और विशेषकर व्यावहारिक निपुणता की शिक्षा पर जो कि स्काउटिंग से ही मिल सकती है उतना ही ध्यान देना होगा जितना कि बालकों की शिक्षा पर।

स्काउटिंग से बालकों और बालिकाओं के चरित्र में नीचे दिए हुए गुणों को विकसित करने की चेष्टा की जाती है।

(१) निरीक्षण में निपुणता, जो वन-विद्या के अभ्यास से आती है।

(२) स्वावलम्बन जिसे केम्पिंग में सीखा जाता है।

(३) साहसपूर्ण अन्वेषण जो पायनियरिंग के कामों से सफल होता है।

(४) सहनशक्ति जो नियमित व्यायाम से प्राप्त होती है।

(५) वीरता का भाव जो दूसरों का दुख दूर करने के लिये प्रेरित करती है।

(६) प्राण-रक्षा जिसके योग्य बनने के लिये स्काउटिंग में प्राथमिक चिकित्सा, अग्निकांड में सेवा, डूबतों को बचाना इत्यादि बातों की शिक्षा दी जाती है।

(७) देश सेवा जिसके योग्य बनाने के लिये ही स्काउटिंग शिक्षा का सारा कार्यक्रम है।

अब पाठकगण स्वयम् ही सोचें कि स्काउटिंग हमारी बालिकाओं के लिये कितनी आवश्यक है।

गृह सम्बन्धी कुछ उपयोगी बातें

प्रायः देखा गया है कि असावधानी के कारण बहुत सी वस्तुएं क्षण भर में बरबाद हो जाती हैं। जैसे एक बढ़िया पौलिशदार मेज पर नौकर पानी, दूध के गिलास या चिकनईदार पदार्थ की तश्तरी रख देता है जिसके कारण मेज़ पर उसका दाग़ पड़ जाता है। उसको साफ़ करने की तरक़ीब।

यदि मेज़ तथा अन्य फ़रनीचर बारनिशदार है तो पहले रेगमाल से उसको मलना चाहिये। जब उस पर से सारी बारनिश साफ़ हो जाय तब स्पिरिट से उसे पोछना चाहिये और उसके पश्चात् बारनिश कर देनी चाहिये। इससे दाग़ निकल जायगा।

यदि मेज पौलिशदार है तो उसे सबसे पहले साबुन भीगे कपड़े में लगाकर उस दाग़ पर ख़ूब रगड़ना चाहिये और उसके पश्चात स्पिरिप से पौंछ कर......

फ़रनीचर पर साल भर में एक बार पौलिश-वारनिश या रंग कराना चाहिये इससे उसकी आयु चौगुनी हो जाती है।

कपड़ों पर से फलों के रस या मेंहदी का दाग छुड़ाने के उपाय—पानी में कबूतर की बीट को औटा कर कपड़े को जहाँ दाग़ हो दो मिनिट के लिये उसे भिगो देना चाहिये। उसके पश्चात साबुन से धोकर सुखा डालना चाहिये।

रेशमी कपड़े पर से चिकनई छुड़ाने का उपाय—जहाँ चिकनई का दाग़ हो पहले उस पर सूखा चूना और नमक पीस कर लगा देना चाहिये। उसके पश्चात अलसी पीस कर उस पर रखनी चाहिये और उतनी देर रक्खा रहे कि सारी चिकनई को वह सोख ले। उसके पश्चात् लक्स या रीठे के झाग से मल कर धोकर सुखा दिया जाय।

कपड़े पर से स्याही का दाग निकालने का उपाय—सिरके को पानी में गरम करके दो मिनिट तक कपड़े को पानी में भिगो देना चाहिये। उसके पश्चात साबुन से धो डाला जाय। इसकी दूसरी तरक़ीब यह भी है कि कच्चे दूध या नीबू के रस तथा चूना लगा कर कुछ देर रखने के पश्चात् उसे धो डालना चाहिये।

[१७वें पेज पर

खेल ही शिक्षा है

श्रीमती सी० मोहिनी, सहायक राष्ट्रीय स्काउट प्रचार कमिश्नर

पिछले वर्ष जब हमें यह बताया गया कि सुकेत रियासत की राजधानी सुन्दरनगर में एक ट्रेनिंग कैम्प होने जा रहा है, उस समय सर्दी अभी पूरी तरह से शुरू नहीं हुई थी। शाम की गाड़ी में बैठ कर हम लोग अगले दिन प्रातः ही पठानकोट पहुँच गए। वहाँ से सुन्दरनगर पहुँचने के लिए हमें 'बस' साहिबा की शरण लेनी पड़ी। कुछ ही घंटों बाद हमने जैसे अपने को प्रकृति के अन्तस्तल में पाया। एक ओर गगनचुम्बी पर्वत और दूसरी ओर पाताल तक पहुँचने वाले खड्ड प्रकृति के सच्चे व नग्न सौन्दर्य की लहर में बहते हुए न जाने कब झरनों के मनोहर साज़ के साथ हमारे मन गा उठे, "हिन्दोस्तां के हम हैं हिन्दोस्तां हमारा, हिन्दोस्तानी वीरों की आँखों का तारा।" हमें भी अपने गान का अनुभव हुआ जब 'बस' में बैठे हुए और लोगों ने ताल दे के इसमें भाग लेना शुरू किया। अपने देश की अपार सम्पत्ति का आनन्द लूटते हुए जब हम सुन्दरनगर पहुँचे तो मालूम हुआ मानो इस स्थान के गुणों से ही ऐसा नाम दिया गया है इसे। वहाँ के डाक बंगले में हमें ठहराया गया। अगले दिन शाम तक वहाँ पर कोई दो सौ के लगभग स्काउट-मास्टर तथा टोली नायक आ पहुँचे। इनके अतिरिक्त वहाँ पर लड़कियों का स्कूल था जहाँ पर पचास लड़कियाँ व अध्यापिकाएँ ट्रेनिंग के लिए नाम दे चुकी थीं, लेकिन यह तय हुआ कि लड़कियों को ट्रेनिंग उनके स्कूल में ही जा कर दी जाएगी। शाम के समय हमारी सवारी स्कूल में पहुँची तो देखा कि वहाँ का स्कूल एक नन्हीं सी देहाती दुल्हिन की तरह कोने में सिकुड़ा सा पड़ा है। किसी पुरुष की क्या मजाल जो द्वार पर पड़े हुए मोटे-ताज़े पर्दे पर भी निगाह डाल सके। स्कूल के अन्दर पहुँच कर जो देखा तो छोटे से आँगन में सब लड़कियाँ एकत्रित हो रही थीं मानो औरतों का थर्ड क्लास कम्पार्टमैन्ट खचाखच भर गया हो। पूछने पर मालूम हुआ कि इससे बड़ा मैदान स्कूल में नहीं है। खैर, वह दिन तो एक दूसरे का परिचय प्राप्त करने में ही बीत गया। रात में हम लोग वहाँ के डायरेक्टर से मिले तो मैंने बताया कि लड़कियों को ट्रेनिंग के लिए डाक बंगले की ग्राउन्ड में ही आना पड़ेगा पर वह बोले कि यह नहीं होगा क्योंकि वहाँ के लोग बड़े पुराने विचारों के हैं इसके अतिरिक्त लड़कियाँ स्वयं ही इतना शर्माती हैं कि बाहर आना पसंद नहीं करेंगी। मैं अगले दिन स्कूल ही में गई यह सोच कर कि मेरा यहां आना निष्फल नहीं होना चाहिए। वहां पर कुछ चुनी हुई लड़कियों को मैंने स्काउटिंग का पहला पाठ बताया और कोशिश यह थी कि इनको सब शिक्षा खेल द्वारा ही दी जाए जिससे यह खूब मन लगा कर उसमें भाग लें। चलते समय मैंने कहा कि भई यहाँ जगह थोड़ी है इसलिए बहुत थोड़ी लड़कियाँ इससे लाभ उठा सकेंगी। परन्तु दूसरे दिन मैंने देखा कि सब लड़कियाँ कतार में हमारे कैम्प की ओर चली आ रही हैं। तो मालूम हुआ कि सब वहीं पर ट्रेनिंग लेंगी और साथ में यह भी पता चला कि वह अपने माँ-बाप की भी किसी न किसी तरह से अनुमति ले आई हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हम चाहते हैं कि बच्चों को जो भी शिक्षा दी जाए, उसमें बच्चे बड़ी उत्सुकता से भाग लें और खूब मन लगा कर उसे सीखें तो इसका एकमात्र साधन यही है कि वह शिक्षा खेल द्वारा होनी चाहिए। स्काउटिंग में हम देखते हैं कि प्रायः सभी काम खेल खेल ही में सिखाए जाते हैं। यहाँ तक कि जो लड़का बिल्कुल जड़बुद्धि हो वह भी खेल द्वारा बताए गए पाठ को ऐसा याद कर लेता है मानो जन्म भर नहीं भूलेगा। खेलना कूदना बच्चों का स्वाभाविक व्यापार है। जहाँ ज़रा सी खेल कूद की झलक मिली, वहाँ बच्चे कठिन से कठिन कार्य को भी पल भर में समाप्त कर लेते हैं। यदि कोई बच्चा गिनती नहीं याद कर सकता तो नारंगी जैसी कोई भी वस्तु ला के उसके सामने रख कर उसे सिखाओ तो गिनती क्या, वह जमा व बाकी भी सीख

जाएगा। खेल द्वारा केवल पढ़ाई में ही सहायता नहीं मिलती वरन् हम ऐसी शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे जीवन में आगे चल कर बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो। जो चीजें बहुत लम्बे लम्बे भाषण देने से बच्चों की समझ में नहीं आ सकतीं वह खेल द्वारा इस प्रकार मन में घर कर लेती हैं कि उनका स्वभाव उसी साँचे में ढल जाता है और वह एक सफल व उच्च नागरिक कहे जा सकते हैं। जो बच्चा खेल में भाग न लेकर सदा अलग-अलग रहता है वह बड़ा होने पर भी लोगों के सामने आने में हिचकिचाएगा व कभी दूसरों से भ्रातृत्व करने का साहस नहीं करेगा, इसके विपरीत खेल में भाग लेने वाला बच्चा पल भर में दूसरों को अपना बना लेता है और किसी भी काम को आगे बढ़ कर पूरा करने की चेष्टा करेगा। उसमें यह शक्ति होगी कि वह दूसरों के दुख व सुख में भाग ले सके—इसी भ्रातृत्व पर तो संसार क़ायम है। आप देखेंगे कि खेल से बच्चे अनुशासन (descipline) को कितनी जल्दी समझने लगते हैं। उन्हें कहिए कि क़तार या दायरा बनाओ, खेल होगा तो वह चुपचाप और किस फुर्ती से सब काम करेंगे कि उनके हिसाब के मास्टर साहब देखते ही कह उठेंगे, "ओह! कैसा जल्दी काम करते हैं, मैं तो समझाते-समझाते थक जाता हूँ पर यह बच्चे क़तार बना ही नहीं पाते।" वाह मास्टर साहिब! आप भी कितने भोले हैं। ज़रा कार्य रूपी तरकारी में खेल का मसाला मिला दीजिए तो फिर देखिए। उसी काम को बच्चे फ़ौरन करना चाहेंगे।

वास्तव में यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे बनावटी शिक्षा का त्याग करके सच्ची शिक्षा को ग्रहण करें तो इसमें हमें चाहिए कि खेल द्वारा शिक्षा दे के बच्चों को स्वस्थ्य व अच्छे नागरिक बनाएँ। स्काउटिंग में इसी प्रकार शिक्षा दे के अपने लक्ष्य पर पहुँचाने की कोशिश की जाती है अर्थात प्रयत्न किया जाता है कि हमारे देश के बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा हो, उनमें मानसिक जाग्रति हो अथवा चरित्र ऊँचा हो।

[१५वें पेज का शेष भाग]

पशमीने की चिकनई छुड़ाना—पहले जौ की भूसी को पानी में औटा कर चिकनई के दाग़ की जगह उसमें भिगो देना चाहिये। उसके उपरान्त गंदक जलाकर उसका धुँआ देने से वह निशान मिट जायगा।

सूती कपड़ों परसे चिकनई का दाग़ छुड़ाने की विधि—सबसे पहले नमक चूना मिला कर इसको मले। उससे पश्चात उसी का पानी बना कर उसमें वह भाग भिगो दिया जाय। कुछ समय पश्चात उसे साबुन लगा कर धो डाला जाय। यह यदि बेसन लगा कर भी धो दिया जाय तब भी इसका दाग़ निकल जायगा।
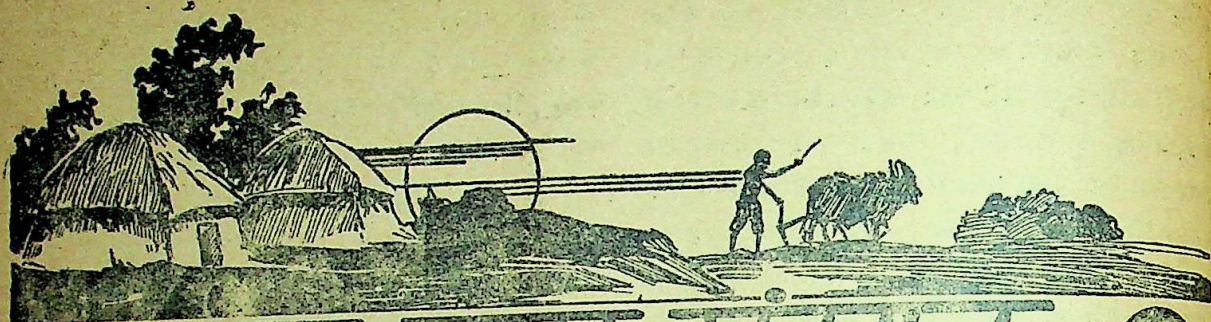
किसान की प्रतिष्ठा

श्री कर्मशील

इस देश में सैकड़े ७० व्यक्ति किसान हैं और देश में जोतने योग्य भूमि का परता फी व्यक्ति १। एकड़ पड़ता है। फिर भी क्या कारण है कि देश में खाद्यान्न का अभाव बताया जाता है! आज कल अन्न का भाव युद्ध-पूर्व के भाव से आठ गुना मंहगा है और लोगों को खाने के लिए भरपेट अन्न नहीं मिलता। क्या कारण है कि सरकार को राशनिंग और नियन्त्रण की प्रथा उठा कर फिर लागू करनी पड़ी है और उसे विदेशों से ५० लाख टन के लगभग भोज्य सामग्री लाकर लोगों को बाँटना पड़ता है तब भी वह पूरी खुराक किसी को नहीं दे पाती!

कारण यह है कि हमारा कृषि-कार्य उत्तम पद्धति पर नहीं होता है, फलतः उपज जो होनी चाहिये थी नहीं होती। भूमि की उर्वरा शक्ति घटती जाती है और किसान मुहताज बना रहता है। जिस जमीन में पहले कट्ठा में २-३ मन धान होता था, आज उसमें एक मन भी नहीं निकलता। लाचार किसान खेती छोड़-छोड़कर कल-कारखानों को भागते हैं और खेती ऐसे व्यक्तियों के हाथमें पड़ जाती है जो बिलकुल बेतरीके ढङ्ग से जमीन का उपयोग करते हैं। किसान अपनी जमीन को बना भी नहीं सकता। किसान खेती को पुराने ढङ्ग से करता चला जा रहा है उसमें परिवर्तन करने की आवश्यकता उसने नहीं समझी। किसान खेती छोड़कर रोजगार या नौकरी की ओर झुक पड़ता है। वह अपना धंधा छोड़ देने की ताक में है।

फसल की कमी के स्पष्ट कारण, सिंचाई का अभाव, खाद की कमी, देख-रेख की कमी तथा खेती के प्रति उपेक्षाभाव है। इधर सरकार ने "अन्न उपजाओ" का आन्दोलन चलाकर लोगों को खेती की ओर और भी झुकाने की कोशिश की है, नहीं तो इसके कुछ पहले किसानी का धन्धा ही सबसे निकृष्ट धन्धा समझा जाता था और उसकी ओर कोई भी झुकता न था। अगर अन्न की मंहगी न होती तो शायद अब तक आधे किसान हल छोड़कर अन्य साधन पकड़ लिये होते। जिस गृहस्थ के पास १०० बीघे तक भी जमीन है, जिसको उचित रीति पर आबाद करने के लिये उसे कम से कम ५ जिराती अलावे सैकड़ों मजदूरों और हलवाहों की जरूरत है, उसका इकलौता लड़का भी ३०) महीने की गुलामी के लिये अपना पैत्रिक गांव छोड़कर शहर में भागता था और किरानी का जीवन स्वीकार करता था। एक सौ बीघे जमीन रखने वाले की आमदनी कम से कम एक हजार मन अन्न तो मानी ही जायगी जिसकी कीमत इस समय १५ हजार रुपये है। इस आमदनी में से खेती का खर्चा और लगान मिलाकर रुपये में चार आना बाद दे दें तो

भी वह प्रायः एक हजार रुपये महीने की आमदनी दे सकती है जो केन्द्रीय सरकार के 'ए' श्रेणी के गजेटेड अफसरों के वेतन के बराबर है। मगर इसकी ओर किसान के लड़के का ध्यान नहीं जायगा। उसने मैट्रिक पास किया नहीं कि नित्य डाक से उसकी अर्जियाँ "नितान्त आज्ञाकारी सेवक" बनने के लिये दौड़नी शुरू हो जायेंगी। क्या ऐसा खिंचाव है नौकरी में और क्यों ऐसी वितृष्णा है कृषि-कार्य की ओर?

पहला कारण तो मनोवैज्ञानिक है किसानी का धन्धा ओछा माना जाता है। देश के कानून कुछ ऐसे थे और वे ऐसी भाषा में थे कि किसान समाज में अपने को सबसे नीची श्रेणी में पाता था। किसान के मन में आत्म-गौरव का भाव कभी उदित ही नहीं होने दिया गया। ऐसी हमारी सामाजिक विचारधारा प्रवाहित हुई। आत्म-गौरव आता है आत्म-निर्भरता और आत्म-परिपूर्णता के साथ। मगर भारतीय किसान तो न कभी आत्म परिपूर्ण रहा न आत्म-निर्भर, फिर उसमें आत्म-गौरव कहां से आ सकता? लगान के लिये उसे जमींदार का कृपाकांक्षी रहना पड़ता था, घर-द्वार बनाने, कुयें तालाब खुदवाने, बाग बगीचा लगाने और अपनी भूमि को हस्तान्तरित करने तक के मौकों पर सलाम या नजराना के रिवाज को मान्य करके उसे जमींदार को चिरौरी करने वाला बना दिया गया था। घरेलू जीवन के अन्य व्यापारों में कानून के लिये वह वकील का मुँह ताकता, चिकित्सा के लिये डाक्टरों का और अपनी संतान की शिक्षा-दीक्षा के लिये अंगरेजी पढ़े मास्टर का। उसके जीवन के किसी भी व्यापार में उसे अपनी हीनता का बोध हुए बिना नहीं रहता था। फलतः उसकी आत्मा मर गयी, वह आत्म-गौरवशून्य हो गया और झूठी प्रतिष्ठा और झूठी शान उसे आसानी से लुभा सके। अपने दैनिक जीवन के अधिकांश भाग में उसे अपने लिये वही भावना होती थी जो ऊँट को पहाड़ के नीचे होती है—जमींदार की कचहरी में पुलिस स्टेशन पर, कचहरी में, वकील के डेरे पर, डाकघर में, स्टेशन घर, अस्पताल आदि सब जगह उसे अपनी हीनता का बोध होता था। किसान दिन भर में और कहां जाता है? अपनी झोपड़ी में बैठे हुए भी जमींदार के पियादे और थाने के सिपाही की धौंस उसे बरदास्त ही करनी पड़ती थी। शासन—कार्य वह समझता न था—लोक व्यवहार से वह अनभिज्ञ था। अपनी एकमात्र संतान को भी शिक्षा की दृष्टि से अगर वह स्कूल में दाखिल कराने ले गया तो वहाँ भी उसने अपने को ऐसा ही पाया जैसे कहीं का बुद्धू आ फँसा हो। उसके बाद महाजन के घर पर भी उसको छुटकारा नहीं था। इस तरह सदा सर्वदा हीन-भावना की व्याप्ति ने उसे अपने पेशे के प्रति ही हतोत्साह बना दिया। "क्या करते हो" के उत्तर में एक किसान कितनी दीनता से कहता है।

"सरकार, खेती गृहस्थी छोड़कर और क्या करेंगे।"

इस मनोदशा का प्रभाव कृषि कार्य पर पड़े बिना नहीं रहा। किसान का लड़का अंग्रेजी पढ़ने के लिये स्कूल चला गया। उसका भाई जो मैट्रिक पास था उसने किरानीगिरी कर ली—अब वह बच गया अकेला और किराये के आदमियों से उसने खेती शुरू की। नतीजा यह हुआ कि यों भी खाद, तरीके, और अच्छे बीज के अभाव में जिस खेत की उपज कम हो गयी थी उसमें भी रुपये में आठ आना बट्टा खाते में चला गया। फसल कम हुई, खर्चा अधिक बैठा। खेती पर से ध्यान हटा और अब वह प्रधान जीविका न रह कर सहायक मात्र हो गयी।

खाद के सहयोग, अच्छे हल बैल की जोताई, अच्छे बीज का उपयोग एवं सिंचाई की उचित व्यवस्था और सबसे ऊपर, सतर्क देखरेख से ही खेती में अच्छी उपज आ सकती है पर हमारे देश में इनमें से एक भी प्राप्त नहीं है। सच पूछो तो आज की भारतीय कृषि "बिना खसम की खेत" हो गयी है।

इस हीनता से निकालने के लिये किसानों में मानसिक परिवर्तन लाना पहले आवश्यक है। उन्हें अपने काम से अनुराग हो, उसमें उन्हें आत्म संकोच के एवज में आत्म-गौरव बोध हो, उसमें उन्हें जीवन के सभी आवश्यक सुख भोग प्राप्त हो सकें तभी किसानों की मनोदशा में परिवर्तन आयेगा और वे देश को धान्य से पूर्ण कर सकेंगे।

सरकार ने अभी तक किसानों की हीनता की भावना को दूर करने के लिये पर्याप्त कार्य नहीं किया। जमींदारी उठ जायगी तो किसान में एक हद तक वह आत्म-गौरव लौटेगा, विदेशी भाषा उठ जाय, विदेशी कानून का दौर समाप्त हो जाय और पंचायत

द्वारा ग्राम शासन हो तो किसानों को आत्म-गौरव-बोध होगा, किसानों को प्रति ठीक ठीक 'अन्नदाता' का भाव रखा जाय तब उनका आत्म गौरव लौटेगा और आत्म-गौरव लौटेगा तब उन्हें अपने धन्धे से अनुराग भी होगा और उसमें उनका जी भी लगेगा।

"उत्तम खेती, मध्यम बान, निर्धिन सेवा, भीख निदान" की लोकोक्ति आज कैसी बदल गयी है। आज खेती करने वाला अपने धन्धे को सबसे गया बीता समझता है। एक किरानी को 'बाबू' कहने की आदत हमने अंग्रेजों से सीख ली है और एक किसान को हम बहुत हुआ तो 'महतो जी' कहेंगे और चन्द सतर अंग्रेजी में बोलने चालने की योग्यता रख लेने के कारण ही अपने को उनसे श्रेष्ठ मानेंगे। कुछ ठिकाना है इस अन्याय का।

इस अन्याय को दूर करके ही हम कृषि-कार्य में उत्साह ला सकेंगे। सरकार को "अधिक अन्न उपजाओ" का नारा न लगाकर किसान हमारा अन्नदाता है, उसकी प्रतिष्ठा करो, उसको पूजो और गुलामी छोड़कर खेती की ओर फिरो, का नारा लगवाना चाहिये। उसे चाहिये कि वह अपने ऊँचे से ऊँचे अफसर को हिदायत कर दे कि वह किसान को देखकर उसके सामने अपनी टोपी उतार ले, उसकी उचित ताज़ीम करे। ऐसा जिस दिन से होने लगेगा उसी दिन से देश में धन-धान्य की वृद्धि होने लगेगी। कृषि-कार्य से अनुराग होने पर उसे उन्नत ढंग से करने की ओर लोगों का ध्यान स्वतः जायगा और राष्ट्र का दर्द-सर दूर होगा।

[विश्वमित्र से]

गीत

श्री उमाशंकर त्रिपाठी

आज जीवन त्रस्त,
सम्मुख हार।
मौन चिन्ता से नमित पल
मौन पक्षी प्राण का असहाय निश्चल
घन अंधेरा उमड़ता सागर चतुर्दिक
जन अकेला मैं,
विजन यह,
कर नहीं पतवार
आज जीवन त्रस्त,
सम्मुख हार।

भूमि पर तम-
व्योम में तम-
एक तारा क्षीण प्रभ
खोई हुई है राह दुर्गम
चरण आतंकित प्रतिक्षण
अश्रु लहरों में बहा मन का मधुर संसार।

आज जीवन त्रस्त,
सम्मुख हार।
शिर हिमाचल,
ज्वाल उर में
कौन विद्युत प्राण को, आगे बढ़ाता,
ज्योतिपुर में,
सत्य है जीवन मरुस्थल
शुष्क, नीरस, दग्ध वंचित
स्तूप स्मृति का और मिलती
किन्तु दृग की ज्योति रंजित—
कर रही है वह किनारा
क्षीण ही हो
क्षुद्र ही हो
है मुझे उसका सहारा
विश्व का होगा इसी पथ से—
कभी निस्तार।
आज जीवन त्रस्त,
सम्मुख हार।

मानव जाति का प्राण—बालक

श्री बंशीधर

बालक एक महान् और स्वतंत्र व्यक्ति है। बालक की महानता और महत्व का अंदाजा लगाना कठिन ही नहीं असंभव है। बालक मानव जीवन की नींव है। जैसे बीज में से वृक्ष का निर्माण होता है, उसी प्रकार बीज रूपी बालक में से मनुष्य रूपी वृक्ष का निर्माण होता है। जन्म से ही बालक में मनुष्यत्व मौजूद रहता है। मनुष्य में जो भी शक्तियां और विशेषताएं पाई जाती हैं, उन सबका निर्माण बालक ही करता है। गर्भ से ही बालक निर्माण कार्य में लग जाता है। शुरू से पूर्ण मनुष्य का निर्माण करने की शक्ति प्रकृति ने सिवाए बालक के और किसी को नहीं दी है। यह सुनकर आपको आश्चर्य अवश्य होगा लेकिन यह एक तथ्य है, ठोस सचाई है।

जन्म से ही बालक के सामने एक महान् मिशन रहता है। उसी मिशन की पूर्ति में वह दिन-रात लगा रहता है। शीघ्र से शीघ्र स्वतंत्र होकर उसे पूर्ण मानव बनना है। यही कारण है कि जन्म से ही बालक ज्ञान प्राप्ति के लिए बड़ा उत्सुक रहता है। नित नई बातें जानने के लिये बालक छटपटाता रहता है। उसकी ज्ञान पिपासा कभी तृप्त नहीं होती। वह अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करने की खोज में रहता है जन्म से लेकर छः साल तक की आयु में बालक इतना ज्ञान ग्रहण कर सकता है जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते। ढाई साल का अरुण दो तीन भाषाओं के सैकड़ों शब्द जानता है। उनका स्पष्ट उच्चारण करता हैं। भूमिति की आकृति देखते ही फौरन उसका नाम बता देता है। गीतों का तो कहना ही क्या। जिस भी भाषा के गीत वह सुनता है, उसे झट याद हो जाते हैं। "बाल-निकेतन के बच्चों का केवल एक ही नारा है" गीत को वह बड़ी श्रद्धा और छटा से गाता है। तीन साल की रजनी नये-नये गाने बनाया करती है। पांच साल का हरीश कहानी बनाने में कमाल करता है। शुरू करके खतम करने का नाम ही नहीं जानता। सुनने वाले चाहे थक जाएं लेकिन हरीश जी कहानी कहते-कहते कभी थकते ही नहीं। यही हाल सुधा का है, कहने का मतलब यह है कि ज्ञान प्राप्ति के लिए बालक बिना थके, बिना उकताए, बिना किसी प्रकार के दबाव या अंकुश के खुशी-खुशी अगाध परिश्रम करता है। सोने के समय को छोड़कर वह हर समय किसी न किसी काम में जुटा ही रहता है। हाथ पर हाथ धर कर बैठना बालक जानता ही नहीं। डेढ़ साल का सुरेन्द्र सुबह से शाम तक किसी न किसी काम में लगा ही रहता है। माताजी जबरदस्ती सुलाने का प्रयत्न करती हैं तो आंख बचा कर फौरन उठ जाता है और अपने काम में मस्त हो जाता है। कितने ही माता-पिता बालक के काम न करने की शिकायत किया करते हैं। इसके लिये बालक नहीं माता-पिता ही जिम्मेवार हैं। बचपन में माता-पिता बालक को काम नहीं करने देते। काम करने से उसे रोकते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि बड़ा बन कर बालक काम से जी चुराने लगता है। माता-पिता को चाहिए कि वे बालक को खूब काम करने दें। काम करने के आवश्यक साधन जुटा दें। काम करने का ढंग उसे भली प्रकार समझा दें। फिर उसे डट कर काम करने दें।

विकास की दृष्टि से बालक के प्रथम दो वर्ष अत्यंत महत्व के हैं। इन दो वर्षों में बालक जितना विकास करता है उतना वह सारी उम्र में नहीं कर पाता। डाक्टर मोन्टीसोरी ने तो यहाँ तक कह दिया है कि इन दो वर्षों में बालक इतनी तेजी से विकास करता है कि विकास की दृष्टि से वह वृद्ध हो जाता है। इतना महत्व है इन दो वर्षों का

बालक जो कुछ सीखता है अपने आप सीखता है अन्तः प्रेरणा से। अतः बालक को सिखाने का अभिमान करन मूर्खता है। कोई किसी को सिखा नहीं सकता। बना नहीं सकता। अतः माता पिता और शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने विचार बालक पर न लादें। बालक को अपने साँचे में ढालने की चेष्टा न करें। बालक को अपने स्वार्थ सिद्ध का साधन बनाने का प्रयत्न न करें।

उसे अपनी प्रेरणा और स्फूर्ति के अनुसार बढ़ने दें, खिलने दें, विकसित होने दें। महायोगी अर्विन्द ने बिलकुल ठीक लिखा है कि "माता, और पिता शिक्षक की इच्छानुसार बालक को ठोंक पीट कर गढ़ने का विचार एक जंगली और अज्ञानता पूर्ण अंधविश्वस है"। असल में बालक को अपने स्वाभाव के अनुसार स्वयं ही अपना विकास और विस्तार करने का अवसर दिया जाना चाहिए। माता-पिता के लिए इससे बढ़कर भूल हो ही नहीं सकती कि वे पहले से ही अपने लड़के को किन्हीं खास गुणों, योग्यताओं, विचारों या सद्गुणों का धाम बनाने की सोचें या किसी पूर्व निश्चित जीवन के लिए उसे तैयार करें। प्रकृति को अपने धर्म का त्याग करने के लिये विवश करना उसे स्थायी हानि पहुँचाना है, उसकी बाढ़ को रोकना पूर्णता को मिटाना है। यह मानव आत्मा पर किया जाने वाला एक स्वार्थ पूर्ण अत्याचार है, और राष्ट्र के लिये एक ऐसा घाव है, जिसके कारण वह मनुष्य के उत्तमांश से वंचित रह जाता है, और उसे विवश भाव से वह स्वीकार करना पड़ता है कि वह अपूर्ण, कृत्रिम, गौण, तुच्छ और साधारण है। हर एक बालक खोजी, शोधक, विश्लेषक, और निर्भय वैज्ञानिक अन्वेषक या 'एनार्टमिस्ट' है।

बालक विश्व की विभूति है। बालक में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता। बालक अमीर-गरीब, छूत-अछूत, हिन्दु-मुसलान, सिख-ईसाई, पारसी-जैनी, फासिस्टवादी या समाजवादी नहीं होता। बालक हर प्रकार के प्राणघातक भेदभाव से कोसों दूर होता है। वह केवल बालक होता है, कोमल, निर्मल, शुद्ध और पवित्र। अज्ञानी माता पिता, अधकचरे शिक्षक और दूषित समाज बालक के इन सद्गुणों पर हड़ताल फेरकर उसे फरिश्ते से शैतान बना देते हैं। अगर हम बालक को उसके स्वाभाविक गुणों के विकास करने का मौका दें तो आप का दल-दल में फंसा हुआ रूढ़िगत समाज बहुत जल्दी सुधर सकता है। यह कभी न भूलना चाहिये कि बालक केवल बालक ही एक उच्च और वर्गहीन समाज का निर्माण कर सकता है। बड़ों से ऐसी आशा रखना आकाश कुसुम के समान है, बाल से तेल निकालने के बराबर है। टुकड़ों में बटी हुई दुनियाँ को एकता और प्रेम की लड़ी में पिरोना है तो हमें एक दिन बालक की शरण लेनी ही पड़ेगी।

वातावरण के अनुकूल बन जाने की बालक में विलक्षण शक्ति है। अगर नवजात शिशु को रूस या और कहीं भेज दिया जाय, तो वह बिना कष्ट और दिक्कत के वहाँ की, भाषा, भेषभूषा, रहन-सहन आदि को ग्रहण कर लेगा। इसलिए वातावरण का बालक के जीवन में बड़ा भारी महत्व है। वातावरण पर ही बालक का भावी जीवन अवलम्बित है। वातावरण बालक का प्राण है! सुन्दर और सुव्यवस्थित वातावरण में बालक खूब फलता फूलता है और विकास करता है। दम घोटू वातावरण में बालक का व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है। वह अपने स्वाभाविक गुणों को खो बैठता है। क्या घर में, क्या शाला में और क्या समाज में बालक के लिए सुन्दर तम् वातावरण की व्यवस्था होनी चाहिए। ऐसे वातावरण में ही बालक आनन्दपूर्वक जी सकता है, अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकता है और बड़ा बन कर देश का नेतृत्व कर सकता है।

यह बात हमें अपने दिल दिमाग से निकाल देनी चाहिए कि बालक माता पिता की सम्पत्ति है। यह बात भी हमें भूल जानी चाहिए कि बालक राष्ट्र की सम्पत्ति है। यह सोचना निरर्थक है कि बालक शाला और समाज के लिए है। बालक इनके लिए नहीं बल्कि ये सब बालक के लिए हैं। बालक के बिना इनका अस्तित्व एक क्षण के लिए भी नहीं टिक सकता। बालक एक स्वतन्त्र व्यक्ति है। वह दुनिया में प्रकाश फैलाने के लिए आता है। वह दुनिया को पूर्ण बनाने के लिए आता है। वह भटकी हुई दुनिया को रास्ता दिखाने आता है। बालक शांति का अवतार है। बालक प्रेम का सागर है। बालक को समझो। बालक का सम्मान करो। बालक को विकसित होने का मौका दो। जो विपुल धन राशि एटम बमों पर और सेना पर खर्च करते हो, वह बालक की शिक्षा दीक्षा पर लगाओ। समाज बदल जायगा। संसार बदल जायगा, युद्धों का अंत हो जायगा। सब प्रकार भेद भावों का खातमा हो जायगा। सब एक सूत्र में बंधकर रहने लगेंगे। सब 'वाद' खत्म हो जाएगे। केवल एक ही वाद रह जायगा—प्रेमवाद। बालक जिन्दावाद।

[जन-शिक्षण से]

एक दिन

श्री हरिशंकर चूड़ामणि

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर में सेवा कार्य करने की बड़ी रुचि थी। विद्यासागर होने के साथ-साथ वे सादगी के सागर भी थे। एक दिन वे नित्य की भांति भोजन के पश्चात भ्रमण करने स्टेशन की ओर निकल गये। उनका वेश सादा, मोटी खद्दर की ऊँची धोती तथा एक मोटे कपड़े का ही शाल रहता था। एक कोट पतलून भूषित बाबूजी जिनके पास केवल एक छोटा सा सूटकेस ही था किन्तु कुली की प्रतीक्षा में खड़े थे इन्हें कुली समझ कर इशारे से बुलाया और कहा "ये सामान ले चलना है"।

हाथ में बक्स उठाकर विद्यासागर बाबू साहब के साथ हो लिये। ये सज्जन उस महापुरुष से मिलने व दर्शन करने जा रहे थे जिनकी ख्याति 'ईश्वरचन्द्र विद्यासागर नाम से चारों ओर फैली हुई थी। घर स्टेशन से दूर नहीं था दरवाजे पर पहुँचकर बाबू साहब की आंखें अंदर से ईश्वरचन्द्र के बाहर आने का इंतजार करने लगीं और हाथ कोट की जेब में घुसकर कुछ टटोलने लगे। आँखें इंतजार कर ही रही थीं तब तक हाथों ने इकन्नी निकाल कर कुली की ओर बढ़ा दिया।

'इसकी कोई जरूरत नहीं' विद्यासागर ने कहा बाबू साहब ने छः पैसे दिये।

"अरे! मैं कहता हूँ इसकी क्या आवश्यकता है" ईश्वरचन्द्र ने हंस कर कहा। बाबू साहब कुछ गरम हुए—तुम बड़े झगड़ालू मालूम पड़ते हो। इतनी दूर का और क्या चाहते हो!"

"ईश्वरचन्द्र बस इतना ही चाहता है कि आप छोटे-मोटे अपने काम आप ही कर लिया करें।"

दूसरे क्षण आगन्तुक की फटी आंखें उस विद्यासागर के मुख-मंडल पर थीं और अगले ही क्षण नजर थी नीचे और सिर महापुरुष के चरणों पर।

बाल बुद्धि

बहुत से बालक कहावतों का प्रयोग वाक्यों में किस प्रकार करते हैं वह नीचे दिया हुआ है। यह वाक्य प्रयोग बच्चों की परीक्षा-नोट बुकों से लिया गया है।

मान न मान मैं तेरा मेहमानः—

मेरे घर में एक मनुष्य आया और कहने लगा मैं तेरा महमान हूँ तो इस पर लोगों ने कहा कि यह तो मान न मान मैं तेरा मेहमान हूँ।

मूँछों पर ताव देनाः—

मैंने मोहन से एक सवाल पूछा तो उसने कहा कि जी मुझसे यह सवाल आ जायेगा तो मैंने कहा कि तुम मूँछों पर ताव देते हो।

(उक्त कहावतों का प्रयोग इस प्रकार नहीं किया जाता यह बालकों को समझना चाहिये। ऐसे प्रयोग पर नम्बर भी नहीं के बराबर मिलते हैं)

व्यवहार की बातें

श्री रामदेव भार्गव

१. यदि कोई बड़ा बुलाये तो जी या जी हां कहना चाहिये।

२. किसी को बुलाने, पत्र लिखने या उनका नाम लेने के पहिले पण्डित, लाला, बाबू, महाशय श्री, श्रीयुत, श्रीमान इत्यादि जो उचित हो अवश्य लगाना चाहिये।

३. किसी की तरफ पीठ करके मत बैठो। यदि किसी को आगे निकलना हो तो उनको रास्ते देकर आगे जाने दो।

४. यदि कोई बड़ा किसी को बुलाने को कहे तो वहीं से मत चिल्लाओ। जरा आगे जाकर बुलाओ।

५. हमेशा मुंह पर हाथ रख कर खाओ।

६. कभी किसी के सामने मुंह फाड़ कर जभाई मत लो।

७. केवल थूकने के स्थान पर ही थूको या नाक साफ़ करो। हर स्थान पर न थूको न नाक ही साफ़ करो।

८. व्याख्यान या जलसे के बीच से मत उठो।

९. यदि किसी ऊँचे स्थान पर खड़े हो और किसी बड़े से बातचीत करनी है तो नीचे उतर कर बातचीत करो।

१०. किसी की मेज पर झुक कर बातचीत मत करो।

११. यदि किसी कमरे में जाना हो तो पहिले आज्ञा ले लो।

१२. बिना आज्ञा किसी की चीज़ मत छुओ न तितर-बितर करो।

१३. अपने से बड़े या मेहमान का स्वागत खड़े होकर करो जब जाने लगें तब दरवाजे तक उनके साथ जाओ।

१४. कोई बड़ा या मेहमान हमारे स्थान की रीति के अनुसार कार्य न करे तो उस पर मत हँसो।

१५. जब कोई बड़ा या मेहमान साथ में भोजन करे तब पहिले भोजन की थाली बड़े मेहमान के सामने रखो।

१६. खाने पीने की चीज़ों को हाथ से मत परोसो न हाथ से घोलो।

१७. खाने पीने की चीजों को ढकना मत भूलो।

१८. खाना खाते समय जूठन मत छोड़ो न ऐसे खाओ जो थाली या पत्तल के बाहर गिरे।

१९. अपने स्थान को साफ़ रखो।

२०. सोने से पहिले बिस्तर झाड़ लो।

२१. बिस्तरों में धूप अवश्य लगाओ।

२२. नाखून अवश्य काटते रहो।

२३. रूमाल अपने साथ रखो।

२४. फल खाते समय उनके छिलके, गुठली अपने पास रख लो बाद में कूड़े के स्थान पर डालो।

२५. लिफ़ाफ़ा थूक से मत चिपकाओ।

२६. रेशे की चीज एक दूसरे की जूंठी मत खाओ।

२७. किसी को कोई चीज बाएं हाथ से मत दो।

२८. पराई स्त्री से बातचीत करने की जरूरत पड़ जाये तो जमीन की तरफ देखो। कभी किसी स्त्री की आँखों की तरफ मत देखो।

२९. स्त्रियों के स्थान पर सूचना देकर जाओ।

३०. किसी से बातचीत करते समय थूकना नाक में ऊंगली देना, नाक साफ़ करना, डकार लेना, खकारना, जभाई लेना, पैर मिलाते या हिलाते रहना, ऊंगली चटखाना, दांत के नाखून काटना, काना-फूंसी करना, खुजाना, अगड़ाई लेना आदि नहीं करो॥

खेल

श्री प्रेमविहारी भान

संख्या—१० से ऊपर—समान—कुछ नहीं।

सब लड़के एक गोला बनाकर बैठ जाते हैं एक लड़का गोले के अन्दर बीचोबीच बैठता है तथा एक लड़का गोले के बाहर रहता है। बाहर वाला लड़का गोले में बैठे हुये लड़कों का सर छूता है तब गोले के बीच वाला लड़का पूछता है:—

कौन ? बताओ कहाँ से आया।
नोंच नोंच मेरा घर खाया॥

तब गोले के बाहर वाला लड़का उत्तर देता है:—

मुझको कर लेना तुम याद।
मैं हूँ चन्द्रशेखर आजाद॥

तब गोले के बीच वाला लड़का कहता है देखें तुम्हारी वीरता—कहते ही गोला टूट जाता है और गोले के बाहर वाला छूने के लिए दौड़ता है। जो छू जाता है वह गोले के बाहर और छूने वाला गोले के बीच आजाता है इसी प्रकार खेल चलता रहता है।

सिंहनाद

लीडर—शेरबच्चा कौन ?
सब—जो आज्ञाकारी
लीडर—शेरबच्चा कौन ?
सब—जो साफ-सुथरा

यह सिंहनाद शेरबच्चों के दो नियमों को बतलाता है।

× × × ×

लीडर—शेरबच्चा कौन ?
सब—जो वीर अभिमन्यु सा
लीडर—शेरबच्चा कौन ?
सब—जो अटल हो श्री ध्रुव सा।
लीडर—शेर बच्चा कौन ?
सब—जो निडर हो प्रह्लाद सा।

बालक की कुछ प्रवृत्तियां

१—बालक नकल करता है।
२ बालक नई चीजों के जानने की इच्छा रखता है।
३—बालक खिलाड़ी होता है
४—बालक अपने को दिखाना चाहता है।
५—बालक दूसरों के साथ सहानुभूति रखता है।
६—बालक समूह में रहना चाहता है।
७—बालक स्वावलम्बी होता है।
८—बालक वीर और साहसी होता है।
९—बालक क्रियाशील होता है।
१०—बालक में संग्रह करने की शक्ति होती है।

पहेलियां

अन्दर लाल और ऊपर हरा,
रहता हूं मैं रक्त भरा।

× × × ×

पहले थे हम मर्द, मर्द से नारि कहाये
करके फिर स्नान, वस्त्र सब दूर बहाये
किया शिला से युद्ध, अग्नि में अंग जलाये
परे उदधि में कूद, मर्द के मर्द कहाये

× × × ×

चार चबूतरे आठ बाजार
चौंसठ घोड़े एक सवार

× × × ×

इधर उधर रबी और बीच में खरीफ

× × × ×

एक कहानी मैं कहूं सुनले मेरे पूत
बिना परों के उड़गया बाँध गले में सूत

× × × ×

एक थाल मोती से भरा, दिन में खाली रात में भरा

ग्रीष्मकाल

श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि

गर्मी आ गई। लोगों ने खस की टट्टियों को छिड़कना प्रारंभ कर दिया। बिजली के पंखे घूमने लगे। सुराही में रखा हुआ पानी शीतल होने लगा। क्यों? कुत्तों ने किसी तरी के स्थान पर बैठकर लम्बी सी लसदार जीभ निकाल कर हें हें हें हें' करके हाँफना शुरू कर दिया। क्यों?

तुम जाड़े के दिनों में सुबह तड़के तालाबों में से धुँआ उठता देखते थे न! गर्मी आने पर उसे एकदम दूना उठना चाहिये था किन्तु वह अब दिखाई ही नहीं देता!

आखिर गर्मी आई ही क्यों? क्योंकि अब हमारी पृथ्वी सूरज के बहुत समीप पहुँच गई है। जाड़ों में दूर थी। इसके साथ ही वह भूभाग (उत्तरी गोलार्ध) जिसमें हम रहते हैं अधिक काल तक सूर्य के सन्मुख रहता है और कम काल तक उससे परे। इसीलिए दिन बड़े और रात छोटी होने लगी है।

भाप का कोई रंग नहीं होता। हवा की तरह वह भी आँखों को अदृश्य है। जो धुँआ सा हम देखते हैं वह भाप नहीं बल्कि पानी के अत्यन्त सूक्ष्म जल-कण हवा में उड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। तालाबों के धरातल से पानी, क्या गर्मी क्या जाड़े बारहों महीने भाप बनकर प्रति क्षण उड़ा करता है। जाड़े के दिनों में भाप धरातल से उठते ही जमकर पानी के कणों का रूप ले लेता है और हम धुँए का रूप दिखता है। गर्मी के दिनों में तालाब का पानी बहुत अधिक वेग से भाप बनकर उड़ता है किन्तु काफी ठंडक के अभाव में वह जमने नहीं पाता। अतः हम उसे देख नहीं सकते क्योंकि भाप का कोई रंग ही नहीं। यदि आजकल ग्रीष्मकाल में भी तालाबों के ऊपर का वायुमंडल किसी उपाय से उतना ठंडा कर दिया जाय जितना जाड़ों में होता है तो इतना घना कोहरा छा जाय कि वहाँ दो गज दूर का आदमी भी न दिखाई दे सके।

कोई भी द्रव जब भाप में परिवर्तित होता है तो इस परिवर्तन के लिए उसे ताप चाहिये। ऐसा हम देखते भी हैं उबलता हुआ पानी भाप बनने में काफी गर्मी लेता है। यह गर्मी उसे चूल्हे से मिलती है।

जब सुराही का पानी मिट्टी की पर्तों में से छन-छन कर बाहर आता है, तो वहाँ से यह धीरे धीरे भाप बनकर उड़ता रहता है। इस परिवर्तन के लिए ताप चाहिये। यह ताप अन्दर के पानी से मिलती रहती है। इसका फल यह होता है कि सुराही के पानी में ताप की कमी होती रहती है अर्थात् वह ठंडा होता रहता है। इसकी एक सीमा होती है जो बाहरी अवस्थाओं, जैसे लू, सुराही की मिट्टी व उसके छेद, हवा की नमी व तापक्रम आदि, पर निर्भर होती है।

खस की टट्टी में पानी इसीलिए छिड़का जाता है कि वह भाप बनकर उड़ सके। इसके लिए, अर्थात् पानी को भाप में बदलने के लिए, ताप चाहिये। यह मिल जाता है गर्म हवा अर्थात् आने वाली लू से। बस, लू में से जब गर्मी व धूल छिन गई तो वह एक शीतल मंद सुगंध समीरण बच रहता है।

गरीबों की त्वचा ही उनकी खस की टट्टी है। प्रकृति जो पार्सल भेजती है उसमें गरीब व अमीर, हिन्दू अथवा मुसलमान का विभेदीकरण नहीं रहता। यह ट्रेडमार्क तो यहाँ के प्राप्त करने वाले व्यापारी लगा लेते हैं। अतः प्रकृति तो सब की सुरक्षा का प्रबन्ध पहले से ही कर देती है। गर्मी के दिनों में हमारी त्वचा से पानी अर्थात् पसीना निकलता रहता है जो अंदर की गंदगी तो बाहर

जाता ही है. इसके साथ ही साथ वह प्रकृति द्वारा किया हुआ त्वचा रूपी खस की टट्टी पर छिड़काव है। और पसीने के समय बाहरी तप्त लू हमें वहीं ठंडक पहुंचाती है जैसा कि बिजली के पंखे के नीचे बैठे व्यक्तियों को।

किन्तु क्या बिजली के पंखे से हवा ठंडी हो जाता है ? नहीं। बल्कि उल्टी गर्म हो जानी चाहिये। जिस प्रकार लस्सी को अधिक वेग से मथने से उसका ताप कम बढ़ जाता है उसी प्रकार पंखे द्वारा हवा मथी जा रही है और उसका ताप कम बढ़ता ही है कम नहीं होता। यदि देह पर पसीने की पर्त न हो तो पंखे की हवा बड़ी गर्म लगती है। पंखा जो कार्य अदा करता है वह तो इतना ही है कि हवा के तीव्र झोंके भेजता है जिससे अधिक से अधिक पसीना शीघ्र ही भाप बनकर उड़ता रहता है और शरीर को बड़ी शीतलता प्राप्त होती रहती है।

स्काउट आन्दोलन !

भारत के शिक्षा सचिव, माननीय मौलाना अब्बुलकलाम आज़ाद के उद्गार।

स्काउट आंदोलन हमारे नवयुवकों के जीवन में अनुशासन तथा नियमबद्धता के गुण उत्पन्न करने का अमूल्य पाठ पढ़ाता है। मुझे विश्वास है कि हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन दिनों दिनों अधिकाधिक सफलता के मार्ग पर अग्रसर होती जायगी और उसके कार्य और भी अधिक संख्या में हमारे देश के बालक एवं बालिकाओं को अपनी ओर आकर्षित करते रहेंगे।

बेचारे कुत्ते के पास गर्मी से बचने की और रूसी भालू के पास सर्दी से बचने की अपनी तरकीब नं० १ है। कुत्ता ग्रीष्म-ताप से व्याकुल होकर किसी तरी के स्थान पर पेट के बल जा बैठता है और अपनी लाल जीभ को अधिक से अधिक बाहर लम्बी निकाल देता है और अपनी लार से उसे हर समय गीली किये रहता है। तदंतर अधिक ठंडक प्राप्त करने के लिये वह जल्दी-जल्दी हांफ कर फेफड़ों से पंखा धौंकता है। उसकी हाँफ का 'हैं हैं हैं हैं' शब्द और हमारे बिजली के पंखों की 'भरभर' बिल्कुल एक ही चीज है।

[२५वें पेज का शेष भाग]

भारतवर्ष में कितनी पत्र-पत्रिकाएँ किन-किन भाषाओं में छपती हैं:—

अँग्रेजी ८६८
हिन्दी ८५३
उर्दू ५७८
बँगला ३६६
तामिल ३०५
गुजराती १३७
पंजाबी ८१
कन्नड़ी ५१
उड़िया ४६
मराठी २४३
तेलगू १५१
मलियालम २३
सिन्धी ८
आसामी ७

संसार के अन्य किसी देश में न इतनी तरह की भाषाएँ हैं, न इतनी कम पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं और न मातृ-भाषा से अधिक विदेशी भाषा का चलन है।

हरिद्वार

गांधी मेमोरियल फंड के सिलसिले में डा० राजेन्द्र प्रसाद हरिद्वार पधारे तो उनका स्वागत एस० डी० हाई स्कूल तथा लोकल स्काउट दल के स्काउटों ने किया तथा उनकी सभा में ड्यूटी का प्रबन्ध किया।

× × ×

डा पट्टाभी सीतारमैया जो गुरुकुल कांगड़ी के जलसे में पधा थे उनके हरिद्वार भाषण का प्रबन्ध आदि स्काउटों द्वारा कराया गया।

गुरुकुल विश्वविद्यालय में उनके वार्षिक मेले के अवसर पर इस वर्ष गुरुकुल के स्काउटों का विशेष प्रबन्ध रहा। यह मेले में उस संस्था के ब्रह्मचारियों का पहिला अवसर था जो कि ऐसा कार्य किया। उसकी तैयारी के लिये ता ५-४-४६ से श्री शांती स्वरूप गर्ग ने गुरुकुल जाकर २ घन्टे रोज़ की ट्रेनिंग का प्रबन्ध किया था। मेले में स्काउटों के प्रबन्ध के इनचार्ज श्री गोविन्द ब्रह्मचारी थे।

× × ×

वैसाखी अवसर पर स्थानीय संस्थाओं के स्काउटों के अलावा देहली और मंगलोर के स्काउटों ने सेवा कार्य किया। ता० १३-४-४६ को २०० से ऊपर खोये बच्चे, औरत तथा मर्द उनके संरक्षकों को पहुँचाये गये। २२५ मरीज़ों को दवाई मुफ्त दी गई। आफिस २२ घन्टे खुला रहा। लोकल स्काउट दल, एस० डी० हाई स्कूल, आर्य हाई स्कूल तथा भल्ला कालिज के स्काउटों ने ड्यूटी दिन तथा रात में दी।

प्रधान अध्यापक महोदय एस० डी० हाई स्कूल कनखल स्वयं ३ घन्टे ड्यूटी पर रहे।

स्काउट मास्टर्स एस० डी० स्कूल तथा आर्य स्कूल भी सुबह और शाम ड्यूटी पर रहे।

स्काउटों ने मरीज़ों को अस्पताल पहुँचाया।

ग्रीष्म शिक्षण शिविर, मंसूरी एवं टेहरी (गढ़वाल)

१ जून से १५ जून १९४९ तक

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कई एक कारणों से शीतलाखेत (अलमोड़ा) में होने वाले बालक तथा बालिका-विभागों के ग्रीष्म शिक्षण शिविर को इस वर्ष के लिए स्थगित कर देना पड़ा है। जिन सज्जनों ने उक्त शिविर में प्रवेश करने के प्रार्थना-पत्र तथा प्रवेश-शुल्क भेजे थे उनकी रकम १ जून के पश्चात् वापिस लौटा दी जायगी जो भी असुविधा या कष्ट इस कारण उन्हें हुआ उसके लिए असोसिएशन को महान खेद है।

उन सज्जनों को यह भी सूचित किया जाता है कि १ जून से १५ जून तक एक शिक्षण शिविर मंसूरी (देहरादून) और दूसरा शिक्षण शिविर टेहरी (गढ़वाल) में हो रहे हैं। उनका संचालन प्रान्तीय असोसिएशन के सहायक

पिन्डरी हाइक दल के सदस्य छमाबिलोरी ग्राम के निकट चाय पी रहे हैं और विश्राम कर रहे हैं।

प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर तथा डिप्टी कैम्प डाइरेक्टर श्री प्राणनाथ शर्मा तथा श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि द्वारा किया जायगा। यदि वे लोग इनमें से किसी एक शिविर में सुविधा के अनुसार प्रवेश प्राप्त कर लाभ उठाना चाहें तो मंसूरी कैम्प के संयोजक श्री नरेन्द्र कुमार जैन जिला स्काउट कमिश्नर हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन हनमान चौक, देहरादून, से तुरन्त पत्र-व्यवहार करें और इस प्रकार टेहरी (गढ़वाल) शिविर के लिए श्री भास्करानन्द सकलानी, जिला स्काउट मास्टर विद्यापीठ टेहरी (गढ़वाल) से पत्र व्यवहार करें। इन दोनों कैम्पों में केवल बालक स्काउट ही प्रवेश पा सकेंगे। बालिका स्काउटों के लिए उचित व्यवस्था नहीं हो सकी है।

जालौन

छत्रसाल हायर सैकिन्डरी स्कूल जालौन के वार्षिक उत्सव पर श्री सान्याल, शिक्षा सुधार योजना, यू० पी० के विशेषाधिकारी के सभापतित्व में स्काउटों ने एक कैम्प फायर किया जिसका उद्घाटन जिला इन्सपेक्टर महोदय ने किया। उपस्थित जनता तथा जिले के लगभग सभी आये हुये उच्च पदाधिकारियों श्री बालमकुन्द शास्त्री, प्रेसीडेन्ट जिला बोर्ड जालौन, चतुर्भुज शर्मा, एम० एल० ए०, श्री मुनव्वर अली पंचायत अफसर तथा इंजीनियर पी० डब्लू० डी० आदि ने स्काउटों के कार्य की मुक्तकंठ से सराहना की।

बहराइच

जूनियर हाई स्कूल प्रयागपुर का वार्षिक उत्सव २५-४-४९ को बड़े धूमधाम से श्री बुद्धिसागर श्रीवास्तव स्काउट आर्गनाइज़र के सभापतित्व में मनाया गया। देखने वालों की संख्या काफी थी। आपने स्काउटिंग के ऊपर प्रकाश डालते हुए लोगों को खूब समझाया। उक्त अवसर पर १०२ विद्यार्थियों का दीक्षा-संस्कार भी कराया गया।

फैज़ाबाद

राम नवमी मेले के अवसर पर हमारे १५० स्काउट तथा स्काउट मास्टरों ने समाज सेवा कार्य किया। हमारे स्काउटों ने भीड़-भाड़ को रोकने, भूले भटकों को राह दिखाने तथा लवे स्टेशन पर होने वाली गड़बड़ी व

पिंडरी हाइक दल के सदस्य प्रकृति की अनुपम छटा का आनन्द ले रहे हैं।

धांदले बाज़ी को रोका। रेलवे स्टाफ़ अयोध्या ने उनके कार्य की सराहना की। समाज सेवा के इस कार्य में श्री शिवनाथ जी झा तथा चौ० हामिद अहमद सिद्दीकी

(शेष ३२ पर)

अन्तरप्रान्तीय समाचार

राजस्थान— बालचर संस्था का नया दृष्टिकोण

मारवाड़ में बालचर संस्था को नया रूप देने का श्रेय डा० के० एन० किनी को है जो स्टेट स्काउट कमिश्नर तथा शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष हैं। इसी नये रूप के आधार पर पाल ग्राम में प्यूपिल टीचर्स का एक कैम्प हुआ।

आरगेनाइजिंग सेक्रेट्री तथा प्यूपिल टीचर्स अपने चोखे गाँव के अनुभवों पर कार्य करने में प्रयत्नशील थे परन्तु उन्होंने यहाँ पर कई नई समस्याओं का सामना किया। उन्होंने आरम्भ में ग्रामीणों में हिचकिचाहट तथा असहयोग की भावना मालूम की परन्तु उनके उत्साह तथा प्रोत्साहन से लोगों पर एक नवीन विचारधारा दौड़ पड़ी। शिविर का उद्घाटन श्री० किनी द्वारा किया गया था जिसमें उन्होंने अपने भाषण में अध्यापकों को बताया कि आज के भारत की आशा इन्हीं ग्रामीण जनता पर निर्भर है और यह भी कहा कि अध्यापकगण किस प्रकार से महात्मा गांधी के जन-सेवा के स्वप्न को कार्य-रूप में परिणत कर देश का कल्याण कर सकते हैं।

अध्यापकों का प्रातःकाल का कार्यक्रम बड़ा आकर्षक था जो इस प्रकार था :—

(१) प्रभात फेरी (२) गलियों तथा रास्तों की सफ़ाई। (३) शिक्षा का प्रसार। (४) छोटी मोटी बीमारियों का इलाज। इन सबमें अधिक महत्वपूर्ण कार्य था कुएँ के पास से घुटने-घुटने कीचड़ का साफ करना तथा जानवरों की बीमारियों का इलाज करना जिससे ग्रामवासियों पर काफ़ी प्रभाव पड़ा। यह जान कर बड़ा खेद हुआ कि १०५२ ग्रामीण जन संख्या में से केवल १२ मनुष्य साक्षर थे। २०४ मकानों में से केवल ५ पक्के मकान थे और गाँव के अधिकांश लोग गरीब दशा में थे।

प्यूपिल टीचर्स ने स्काउटिंग का काम सीखा और फर्स्ट क्लास का कोर्स पूरा किया। पाइनेरिंग में उन्होंने पुल बनाए और आग बुझाई जो कि गाँव वालों के लिए लाभदायक वस्तुपाठ सिद्ध हुए। जगल के खेलों में ग्रामीणों ने काफी रुचि दिखलाई और बड़ी जिज्ञासा से उनको देखा। रात्रि के कैम्पफायर गाँव के बीचों बीच किये गये जो बहुत ही शिक्षाप्रद और मनोरंजक थे। गाने, नाच, प्रहसन इत्यादि गाँव की समस्याओं पर आधारित थे जैसे ग्राम पंचायत, मुकदमेबाजी, सामाजिक कुरीतियाँ, शिक्षा का महत्व, साधारण रोगों की चिकित्सा इत्यादि।

जोधपुर सरकार के कई महकमों ने जैसे डैयरी, एनीमलहसबैन्डरी, शिक्षा विभाग ने कृपा करके अपने विशेषज्ञों को कैम्प में भाषण देने के लिए भेजा जिससे शिविर के अध्यापकों को बहुत लाभ हुआ।

यह शिविर गाँव के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसके पहले इस गाँव में कोई बाहर से ऐसा कार्य करने नहीं पहुँचा था। आरम्भ में गाँववालों ने सन्देह की दृष्टि से हरेक बात को देखा और यह समझा कि स्काउट लोग कुछ अपना उल्लू सीधा करने आए हैं। लेकिन निस्वार्थ सेवा ने उनको प्रभावित किया तथा उनका सहयोग प्राप्त किया। ठाकुर साहब को भी जिनके हृदय में आजकल के वातावरण की वजह से भय था शिक्षकों के त्यागमय भावना और चतुरता के कारण तसल्ली हुई।

अन्तिम दिन एम० के० कालेज के रोवर स्काउटस् शिविर में आए और दिन भर ठहर कर स्काउटिंग का नया रूप देखा। शामको डा० के० एन० किनी द्वारा उनका दीक्षा संस्कार हुआ।

डा० के० एन० किनी ने रोवर स्काउटस् से देश की परिस्थिति को समझने, ग्रामीणों के सम्पर्क में आने और वास्तविक सेवा-भाव से कार्य करने की आशा प्रकट की।

उन्होंने गांव वालों से जो कि कृतज्ञता प्रगट करने के लिए बहुत बड़ी संख्या में एकत्रित हुए थे कहा कि उनके सन्देह की दीवार जो उनके और शिक्षित वर्ग के बीच में खड़ी हुई है तोड़ डालना चाहिए और अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए और जो कार्य अध्यापकों ने यहाँ पर किया है उसको करना चाहिए।

अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने उनके कार्य पर संतोष प्रगट किया, धर्म में न पड़ने की चेतावनी दी और उन्हें देश की आशा के अनुसार ऊँचे स्तर पर पहुँचने का आदेश दिया।

लक्ष्य दूर है अवश्य परन्तु जो कदम बढ़ाया गया है वह दृढ़ तथा सतोषजनक है।

"राजस्थान हिन्दुस्थान स्काउट असोसिएशन, आबू रोड

गणपतसिंह जी राठौर, सहायक स्काउट कमिश्नर की अध्यक्षता में ता० १ अप्रैल से ४ अप्रैल तक एक शिक्षण शिविर म्युनिसिपल पार्क (सनसेट पाइन्ट के मार्ग में) आबू पर्वत पर लगाया गया जिसमें आठ स्काउट मास्टरों और आठ टोली-नायकों को स्काउट दल और टोली चलाने का प्राथमिक शिक्षण दिया गया।

शिविर को सफल बनाने में श्रीमान् चौधरी, सहायक रीजनल कमिश्नर राजपूताना; श्रीमान् गेमावत, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, आबू; कैप्टिन साँधी, आबू मोटर सर्विस; और श्रीमान् ललितमोहन, प्रधान अध्यापक, वाल्टर हाई स्कूल, आबू ने जो सहायता प्रदान की उसके लिए संस्था बहुत आभारी है और आशा करती है भविष्य में भी ये सज्जन इसी प्रकार कृपा बनाये रखेंगे।"

पञ्जाब (करनाल)

श्रीमती सी० मोहिनी, सहायक राष्ट्रीय स्काउट प्रचार कमिश्नर १८ अप्रैल १६४६ से २५ अप्रैल १६४६ तक कर्नाल में थीं। वहाँ पर शरणार्थी लड़कियों का सिलाई का स्कूल है जहाँ से ३२ लड़कियाँ व दो अध्यापिकाएँ उनके पास स्काउटिंग की ट्रेनिंग लेने आईं। उन्होंने कोमल-पद की ट्रेनिंग दी और एक दिन ट्रैकिंग के अभ्यास के लिए सब को ढाई मील की दूरी पर नहर के किनारे ले गईं जहाँ लड़कियाँ सारा दिन बिता कर आनंद से लौटीं।

स्काउट शिक्षण शिविर, दार्जिलिंग

२५ मई से ३० जून ४६ तक

श्री जानकी शरण वर्मा नेशनल सेक्रेट्री हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन सूचित करते हैः—

बालचर एवं, चर शिक्षक, शिक्षण शिविर जो विहार प्रान्तीय हिन्दुस्तान स्काउट असोशिएशन के तत्वावधान में साधारणतया ग्रीष्म काल में दार्जिलिंग में होता है, इस वर्ष पण्डित श्रीराम वाजपेयी, अखिल भारतीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन जो नेशनल कैम्प डाइरेक्टर तथा ट्रेनिङ्ग के अध्यक्ष भी हैं, के संचालन में २५ मई से १० जून तक किया जायगा। इस शिविर को अखिल भारतीय रूप दिया गया है। अतएव विहार के अतिरिक्त अन्य प्रान्त के लोग भी सम्मिलित हो सकते हैं। इस प्रकार अन्य प्रान्तों के प्रतिनिधि भी पण्डित वाजपेयी जी के शिक्षण से लाभ उठा सकते हैं।

शिविर ३ भागों में विभक्त रहेगा।

भाग (१) बालिका एवं बालचर शिक्षकों के लिए जिनमें यदि उपयुक्त शिक्षार्थी प्राप्त हो सके तो हिमालय वैज तक की उच्च शिक्षा दी जायगी।

भाग (२) बालक एवं बालिका स्काउटों के लिये जिन्होंने कम से कम ध्रुवपद तक शिक्षा प्राप्त कर ली है उन्हें विशेष कर टोली नायक की ट्रेनिंग दी जायगी

इन दोनों भागों के शिक्षार्थियों के लिये, दस्तकारी ग्राम-- नृत्य, तथा गान, कलापूर्ण संगीत एवं व्यायाम और सैनिक शिक्षण का विशेष प्रबन्ध किया जायगा।

भाग (३) ऐसे बालक एवं बालिकाओं के लिये रहेगा जिन्हे स्काउटिंग की कोई शिक्षा नहीं प्राप्त हुई है किन्तु वे तथा उनके संरक्षक भी स्काउटिंग के द्वारा लाभान्वित होना चाहते हैं। ऐसे बालकों एवं बालिकाओं को शारीरिक व्यायाम, संगीत एवं स्काउट कला के अतिरिक्त हिन्दी और गणित की भी शिक्षा दी जायगी।

भाग तीन के शिक्षार्थियों का ३५ दिन के पूरे समय का व्यय १००) प्रति व्यक्ति पड़ेगा जिसमें प्रातः एवं सायंकाल का भोजन, दो बार जलपान तथा शिक्षण-शुल्क सम्मिलित है। मार्ग व्यय इसके अतिरिक्त अपना-अपना सहन करना होगा। शेष दोनों भागों के शिक्षार्थियों के लिए टोलीवार भोजन बनाना अनिवार्य है। दो बार भोजन एवं दो जलपान का व्यय प्रति व्यक्ति के लिए लगभग २) दैनिक पड़ेगा। वास्तविक व्यय पूरे शिक्षार्थियों में समान रूप से विभाजित कर दिया जायगा। इसके अतिरिक्त भाग १ के शिक्षार्थियों को ५) तथा भाग दो के शिक्षार्थियों को ३) प्रवेश-शुल्क देना होगा। सम्पूर्ण शुल्क अग्रिम लिया जायगा।

इच्छुक शिक्षार्थी अखिल भारतीय कार्यालय हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, ४ टैगोर टाउन, इलाहाबाद को अपना प्रार्थना-पत्र भेजें।

[२६वें पेज का शेष]

प्रधान अध्यापक नार्मल स्कूल तथा बेसिक नार्मल स्कूल ने बड़ा सहयोग दिया। हमारी सफलता का श्रेय श्रीयुत रामकृष्ण जी त्रिवेदी हेड मास्टर महाराजा हाई स्कूल अयोध्या को है।

श्री पंडित परमेश्वर नाथ जी सप्रू प्रेसीडैन्ट ज़िला हिन्दुस्तान स्काउट ऐसो० की आज्ञानुसार इस शिविर का संचालन श्री ओंप्रकाश शर्मा डि० स्काउट आर्गनाइज़र ने किया। हमारे स्काउट भाइयों ने निस्वार्थ सराहनीय सेवा की। शिविर के संचालन कोई व्यय नहीं हुआ।

हमारा बिक्री विभाग

स्काउट सम्बन्धी पुस्तकें तथा अन्य वस्तुएँ हमसे मंगाइए।

टेस्ट कार्ड

कब, स्काउट्स् रोवर्स तथा ग्राम अलग-अलग कार्ड =)

बैज (धातु)

१. रोवर =)॥
४. स्काउट मास्टर ।)
५. कब मास्टर ।)
६. रोवर लीडर ।)
७. कमिश्नर ।)
८. सेक्रेटरी ।)
९. प्रेसीडेन्ट ।)
१०. गर्ल स्काउट साड़ी पिन (नीला) ।=)॥
११. गर्ल स्काउट साड़ी पिन (पीला) ।=)॥
१२. गर्ल स्काउट पिन (पीला) ।=)॥
१३. गर्ल स्काउट साड़ी पिन (लाल) ।=)॥
१४. सर्विस स्टार एक साल ≈॥
१५. सर्विस स्टार पाँच साल ≈॥
१६. सर्विस स्टार दस साल ≈)॥
१७. मेडिल ऑव मेरिट २॥)
१८. मेडिल ऑव गेलेंटरी २॥)
१९. थैंक्स बैज २॥)
२०. टोपी का बैज ॥।)

बैज (कपड़ा)

२१. टेंडर फुट ≈)॥
२२. टेंडर पैड ≈)॥
२३. रोवर ≈)॥
२४. स्काउट फर्स्ट क्लास ≈)॥
२५. स्काउट सेकेंड क्लास ≈)॥
२६. कब फर्स्ट क्लास ≈)॥
२७. कब सेकेंड क्लास ≈)॥
२८. रोवर फर्स्ट क्लास ≈॥
२९. दक्षता बैज ≈॥
३०. हिमालय बैज ≈)॥
३१. हवाई स्काउट बैज ।=)
३२. हवाई स्काउट का दक्षता का बैज ।)॥
३३. डिप्टी कैम्प डाइरेक्टर बैज १॥।)
३४. टोपी बैज (चमड़ा) ।)॥

झंडे

३५. असोसिएशन का झंडा (६'×४') ७॥)
३६. ट्रूप का झंडा (४×३') ४॥)
३७. टेबिल का झंडा १॥)

नोट—(१) झंडों पर नाम लिखवाने का दाम अलग से १) चार्ज किया जायगा (२) ट्रूप के झंडे का आर्डर भेजते समय झंडे का रंग और उस पर लिखवाने का विषय अवश्य लिख भेजिये।

गले में बाँधने के हर प्रकार के रूमाल १॥) तक के दाम पर मिलते हैं। रूमाल का रंग आर्डर देते समय लिखना न भूलिये। ग्राम स्काउट दलों के विशेष रूमाल यहाँ से मिलते हैं। वर्दियों का भी प्रबन्ध किया जा सकता है।

हर ट्रूप को असोसियेशन की मासिक मुख पत्रिका 'सेवा' अवश्य मंगवानी चाहिये। इससे स्काउटिंग दुनिया की जानकारी होगी। वार्षिक चन्दा मय डाक खर्च केवल ३)

स्काउट ब्लाक

लेटर हेड तथा अन्य पुस्तकों आदि पर छापने के लिए उपयोगी १॥)

सीटियाँ

गोल } इन पर स्काउट बैज बना हुआ है। १।)
लम्ब } ॥।=)

३८. हाइक झोला सामान ले जाने के लिये ६)
३९. स्ट्रेचर ३०)
४०. वागिल (चमड़े का) =)
४१. ,, (लकड़ी का) ≈)॥
४२. फर्स्ट एड बौक्स दवा सहित २०)
४३. ग्राउन्डसीट (किरमिच) ५॥)
४४. पेटी (कपड़ा) १॥)
४५. पेटी (चमड़ा) २।) व १)
४६. स्प्लिन्ट (लकड़ी) ५)
४७. हैवर सैक २)

अध्यक्ष, बिक्री विभाग, हिन्दुस्तान स्काउट महासभियेशन, १ कटरा रोड, प्रयाग

प्रकाशक—श्रीयुत प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, यू० पी०, इलाहाबाद।

मुद्रक—श्रीयुत मगनकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद।

वर्ष २१ संख्या ७

हिमालय की उच्चतम चोटी, माउंट एवरेस्ट, का एक दृश्य

जुलाई १९४९

हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन की मुख्य पत्रिका

विषय-सूची

सेवा के नियम

(१) 'सेवा' महीने के प्रथम सप्ताह तक प्रकाशित होकर सब ग्राहकों के पास भेज दी जाती है, यदि किसी ग्राहक को १५ ता० तक प्राप्त न हो तो इसकी सूचना स्थानीय पोस्टमास्टर के प्रमाणपत्र सहित कार्यालय को भेजना चाहिए।

(२) 'सेवा' का वार्षिक मूल्य तीन रुपया और डाक-व्यय चार आना अतिरिक्त है। एक अंक का मूल्य पाँच आना है।

(३) 'सेवा' के ग्राहक किसी भी अंक से बन सकते हैं, किन्तु साल भर से कम के लिए ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

(४) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या लिखनी आवश्यक है, जिन पत्रों में ग्राहक संख्या न लिखी होगी, उनका उत्तर देने में देरी हो सकती है।

(५) 'सेवा' में प्रकाशनार्थ लेख सम्पादक के नाम भेजने चाहिये तथा मूल्य आदि मैनेजर के नाम। यदि आवश्यक हों तो चित्र भी लेख के साथ भेजना चाहिए।

(६) सम्पादक को अधिकार रहेगा कि वह किसी लेख को प्रकाशित करे, न करे या उसमें आवश्यक संशोधन करे। जो लेखक साथ में टिकट भेज देंगे, उनका लेख अस्वीकृत होने पर तुरंत लौटा दिया जायगा।

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्त नाशनम् ॥

यू० पी०, सी० पी० तथा बरार, बिहार, बम्बई, अलवर, बीकानेर, ग्वालियर, जयपुर और होलकर
राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

वर्ष २९] जुलाई १९४९ [संख्या ७

हमको ऐसे युवक चाहिये

श्री सोहनलाल द्विवेदी

ब्रह्मचर्य से मुखमंडल पर
चमक रहा हो तेज अपरिमित,
जिनका हो सुगठित शरीर
दृढ़ भुजदण्डों में बल हो शोभित।
जिनका हो उन्नत ललाट
हो निमल दृष्ट ज्ञान से विकसित,
उर में हो उत्साह उच्छ्वसित
साहस शक्ति शौर्य हो संचित!
देश प्रेम से उमड़ रहा हो
जिनकी वाणी में जय जय स्वर,
हमको ऐसे युवक चाहिये
सकें राष्ट्र का जो संकट हर।
रम विलास के रहें न लोलुप
जिनमें हो विराग वैभव का,
अतुल त्याग हो छिपा देश हित
जिन्हें गर्व हो निज गौरव का।
सेवा व्रत में जो दीक्षित हों
दीन दुखी के दुख से कातर,
पर संताप दूर करने को
ललक रहा हो जिनका अंतर।
बने देश के हित वैरागी
जो अपना घर-बार छोड़ कर,
हमको ऐसे युवक चाहिये
सकें राष्ट्र का जो संकट हर।
सदा सत्य पथ के अनुयायी
जिन्हें अनृत से मन में भय हो,
दुर्बल के बल बनने के हित
जिनमें शाश्वत भाव उदय हो।
जिन्हें देश के संकट लख कर
कुछ न सुहाता हो सुख साधन,
स्वतंत्रता की रटन अधर में
है स्वराष्ट्र जिनका आराधन।
सिर को सुमन समझ कर जो
अर्पित कर सकते हों मां पर,
हमको ऐसे युवक चाहिये
सकें राष्ट्र का जो संकट हर।

"भारतसे"

हमारा दृष्टिकोण

अब कार्य प्रारम्भ हो—

ग्रीष्म के ताप से, परितप्त मानव समाज व्यग्रता से वर्षा ऋतु के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। आज उसी वर्षा ऋतु के आगमन पर उसके हर्ष की सीमा नहीं। उसके मृतप्राय शरीर में पुनः नवजीवन और नव-स्फूर्ति का संचार हो रहा है और वह फिर एक बार सुखदायिनी अन्तःप्रेरणा के द्वारा पूर्ण उत्साह के साथ निज कार्य में संलग्न हो रहा है। विद्यार्थीगण ग्रीष्मावकाश की परिसमाप्ति पर सहर्ष पठनारम्भ में प्रवृत हो रहे हैं। नागरिक जीवन में एक नई चहल-पहल उत्पन्न हो गई है। मानो वर्षारम्भ के व्याज से प्रकृति हमें कर्तव्यपथ पर जुट जाने का आह्वान कर रही है। ऐसी दशा में यदि मैं अपने स्काउट भाइयों से यह निवेदन करूँ कि उन्हें भी प्रकृति की इस पुकार का स्वागत कर स्काउटिंग का काम आरम्भ कर देना चाहिए तो अनुचित न होगा।

हमारे बहुत से स्काउट मास्टर कार्य में इसलिए शिथिलता दिखलाते हैं कि वे विद्यालयों में अध्यापन जीवन के प्रथम मास को विद्यार्थियों के नव-प्रवेश का प्रारम्भिक मास समझते हैं और वे यही कहते हैं कि अगले महीने से सब काम सुचारू रूप से आरम्भ कर दिया जावेगा। परन्तु वे यह भूल जाते हैं कि "कल या अगला महीना" कभी भी नहीं आता; क्योंकि प्रत्येक दिन और प्रत्येक मास में एक न एक नई समस्या उत्पन्न होती रहती है और हमारे कार्य के आरम्भ करने में विघ्न पड़ता ही रहता है। अतएव, यह आवश्यक है कि एक दिन के लिए भी कार्य को स्थगित न करके हम अपने काम पर डट जायें।

स्काउट संस्थाओं का एकीकरण—

जब से विभिन्न स्काउट संस्थाओं के एकीकरण की बात चली है तब से स्काउटिंग का कार्य अस्त-व्यस्त सा हो गया है। जिला असोसिएशनों के कार्यकर्त्ता, स्काउट मास्टर और स्काउट सभी लोगों के मन में यह विचार बड़े वेग के साथ कार्य कर रहा है कि अब तो स्काउट संस्थाओं के एकीकरण होने के पश्चात् ही नये सिरे से हमारा कार्य आरम्भ होगा, और जब तक ऐसा नहीं होता तब तक हमें कुछ कार्य करना ही नहीं है। इस प्रकार चारों ओर उदासीनता के भाव उत्पन्न हो रहे हैं। यह मैंने माना कि इस एकीकरण की समस्या का निर्णय इतने लंबे समय तक रुकना नहीं चाहिए था, परन्तु इसका यह अर्थ भी नहीं कि उसके पीछे हमारा कार्य ही बन्द हो जाय। एकीकरण के वार्तालाप से सर्वसाधारण स्काउट दलों का तो कोई संबंध ही नहीं है। बल्कि, जिला असोसिएशनों और प्रांतीय असोसिएशनों तक का भी उससे कोई सीधा संबंध नहीं है; यह वार्त्तालाप तो अभी ऊंचे स्तर (High level) पर हो रहा है। इस समस्या का जो भी और जब भी अंतिम निर्णय होगा वह विभिन्न स्काउट असोसिएशनों की अखिल भारतीय कौंसिलों के सामने विचारार्थ रखा जायगा, जब वे उसे अपनी स्वीकृति दे देंगी तब एकीकरण की एक तारीख नियत होगी, तत्पश्चात् हमारे नेशनल काउंसिल का आदेश इस संबंध में प्रांतीय काउंसिलों के पास आवेगा, तब प्रांतीय प्रधान कार्यालय से सब जिला स्काउट असोसिएशनों को आवश्यक सूचना तथा आदेश भेजे जायेंगे। केवल उस समय जिला के कार्यकर्ताओं, स्काउटों और स्काउट मास्टरों के सम्मुख इस संबंध में विचार करने और उसके अनुकूल कार्य करने का अवसर उपस्थित होगा; इससे पूर्व कोई भी स्काउट, स्काउट मास्टर या जिला असोसिएशनों के अधिकारी एकीकरण की समस्या को अपने मस्तिष्क में रहने का स्थान न दें, उसे पूर्णरूप से भूल जायं, और जिस प्रकार साधारणतया ज़िलों में स्काउटिंग का काम होता रहा है वैसे ही पूरे जोश के साथ उन्हें कार्य को जारी रखना चाहिये। किसी भी जिला असोसिएशन को प्रांतीय कार्यालय से पूछे बगैर इस संबंध में स्थानीय रद्द बदल या कोई और कार्य करने का कोई अधिकार नहीं है।

स्वतंत्रता दिवस का वार्षिकोत्सव—

१५ अगस्त—का शुभ दिवस निकट है। संभवतः पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी इस अवसर

उत्सव मनाये जायँगे। गत वर्षों में हमारे स्काउटों की ओर से इस अवसर पर अपनी रैलियां हुई हैं, और आमंत्रित होने पर सरकारी तौर पर आयोजित उत्सवों में भी भाग लिया है। हमारे नेशनल आर्गेनाइज़िंग कमिश्नर, पं० श्रीराम बाजपेयी, की देखरेख में इलाहाबाद के 'ब्वाय' तथा 'गर्ल' स्काउटों ने गत वर्ष सरकार द्वारा आयोजित उत्सव में भाग लेकर कितना प्रशंसनीय कार्य किया था यह सब को ज्ञात है। फौजी अफसरों की यह धारणा थी कि स्काउट फौज और पुलिस के कुशल जवानों के साथ कदम मिलाकर कभी नहीं चल सकेंगे, और इनके शामिल होने से उनके अनुशासन पर बट्टा लग जायगा; परंतु सरकारी अधिकारियों तथा दर्शकों को आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि हमारे स्काउटों का मार्चिङ्ग फौजियों के मार्चिंग से किसी तरह भी कम न था। मुझे पूर्ण आशा है कि प्रत्येक स्थान में हमारे स्काउट इतनी तैयारी के साथ इस वर्ष इस उत्सव में भाग लेंगे कि जिससे हमारे स्काउटों का और इस संस्था का बढ़ा हुआ सम्मान सुरक्षित रहे। इस संबंध में मैं स्काउट मास्टरों और स्काउटों का ध्यान निम्नलिखित तीन बातों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ—

(१) उच्च कोटि का 'मार्चिङ्ग'

(२) उच्च कोटि का 'टर्नआउट'

(३) बढ़िया कलफ की हुई 'वर्दी' जिस पर उचित स्थानों पर 'स्काउट बैज' लगे हों।

मार्चिङ्ग के लिए अधिक से अधिक अभ्यास की आवश्यकता है, इसलिए, अभी से स्काउट टोलियों को इस कार्य पर जुट जाना चाहिए। बाजार, स्कूल, घर या कहीं भी जाते हुए यदि दो स्काउट एक साथ हो जाते हैं तो उन्हें बिना कदम मिलाये ढीले-ढाले और बेजान तरीके से कभी नहीं चलना चाहिए। स्वतंत्र भारत में ऐसे एक भी नवयुवक की आवश्यकता नहीं है जो इस बात की ओर से उदासीनता का भाव रखता हो।

'टर्नआउट' के सम्बन्ध में यह आवश्यक है कि प्रत्येक स्काउट ठीक से खड़ा हो सके, ठीक से बैठ सके और ठीक से चल सके। देखने मात्र से ही उसके व्यक्तित्व का एक प्रभाव पड़े और उसके अंदर से स्फूर्ति और चेतनता का स्फुरण लक्षित हो सके। इस सम्बन्ध में एक और बात का ध्यान रखना आवश्यक है। वह यह, कि प्रत्येक स्काउट 'स्काउट-प्रणाम' सही-सही ढंग से कर सके और किसी बात का उत्तर शीघ्रता, निर्भीकता और स्पष्टता, परन्तु नम्रता के साथ दे सके। किसी आदेश पर ठीक ढंग से अमल करने का तरीका जाने। समूह के साथ मिलकर इस प्रकार हरकत कर सके मानो सारा समूह एक व्यक्ति होकर कार्य कर रहा है। ये सभी गुण उचित तथा नियमित रूप से ड्रिल करने से उत्पन्न हो जाते हैं। व्यावहारिक रूप में हर समय हम लोगों का ध्यान इन बातों पर रहना चाहिए।

बहुत से स्काउटों के पास 'स्काउट वर्दी' की कमी है। पूरी वर्दी का होना अत्यंत आवश्यक है। नियमावली में जितनी चीज़ें वर्दी में होना बतलाया गया है उन सभी को तैयार कर लेना हमारा कर्त्तव्य है। जिनकी वर्दियाँ गंदी हालत में हों उन्हें चाहिए कि अपनी वर्दी को धुलवा कर और ठीक-ठीक तह लगवा कर रख लें। ताकि वह समय आने पर उपयोग में लाई जा सके।

फ्लैग-पार्टी—ऊपर लिखी बातों के सम्बन्ध में यहाँ एक और बात की ओर संकेत करना आवश्यक है। प्रत्येक स्काउट दल के पास "फ्लैग पार्टी" का पूरा साज व सामान होना चाहिए और पताका-वाहकों का उचित शिक्षण भी होना चाहिए। इस सम्बन्ध में पं० श्रीरामजी बाजपेयी की 'स्काउट ड्रिल' नाम की पुस्तक से पूरी सहायता प्राप्त हो सकती है। इस पुस्तक में इसका पूर्ण विवरण छपा है।

अखिल भारतीय स्काउट-मेला—

यह जानकर कि इस वर्ष अखिल भारतीय स्काउट मेले का आयोजन किया जा रहा है प्रत्येक स्काउट और स्काउटर हर्ष से उछल पड़ेगा। नेशनल हेडक्वार्टर्स से हमें यह सूचना मिली है कि बिहार प्रान्त के दरभंगा जिला स्काउट असोसियेशन ने अक्टूबर या नवंबर मास में दरभंगा में स्काउट मेला करने का निमंत्रण दिया है। नेशनल हेडक्वार्टर्स ने इस सम्बन्ध में अपनी स्वीकृति भी दे दी है। अब विभिन्न प्रान्तीय असोसियेशनों से यह पूछ-ताछ की जा रही है कि यह मेला अक्टूबर में किया जाय या नवम्बर मास में। इस सम्बन्ध में प्रान्तों की सुविधा का ध्यान रखते

हुए तिथियाँ निश्चित की जायँगी। निश्चित तिथियों की सूचना नेशनल हेडक्वार्टर्स से प्राप्त होने पर प्रान्तीय असोसिएशन के कार्यालय से जिला असोसिएशनों को पूर्ण विवरण सहित भेजी जायगी। स्काउट मेले में सम्मिलित होने के लिए प्रत्येक जिले में ऐसे दलों के चुनाव किये जायँगे जो विभिन्न विषयों की प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। प्रत्येक स्काउट के लिए यह आवश्यक होगा कि स्काउट मेले में भाग लेने से पूर्व वह 'ध्रुव पद' (सेकिंड क्लास) की परीक्षा अवश्य पास कर चुका हो। उसके पास साफ-सुथरी और पूरी वर्दी हो। देखने और कार्य करने में वह स्फूर्तिवान और कुशल हो और कदम मिलाकर चल सकता हो। अन्य नियम तथा चुनाव की विधि प्रान्तीय कार्यालय से एक पत्र के रूप में समय आने पर भेजी जायेगी; परन्तु अभी से इस लक्ष्य को सामने रखते हुए स्काउट दलों को पूरी तैयारी आरंभ कर देनी चाहिए।

खाद्य-मोर्चा—

आपने माननीय प्रधान मंत्री, पं० जवाहरलाल नेहरू तथा बड़े लाट श्री राजगोपालाचारी के भाषण रेडियो पर सुने होंगे अथवा समाचार पत्रों में पढ़े होंगे। खाद्य पदार्थों का कितना अभाव इस समय हमारे देश में है और इसके मुख्य कारण क्या हैं उन्होंने इन बातों को पूर्णरूप से स्पष्ट कर दिया है। हमारे देश के बटवारे के बाद पंजाब का सबसे बड़ा उपजाऊ इलाका जो अपनी उपज से कई एक प्रान्तों की कमी को पूरा करता था—वह हमारे अधिकार से निकल गया। पंजाब से लाखों की संख्या में शरणार्थी इधर आये और उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ी, जबकि अनाज के स्टाक में कमी हो गई। दूसरी ओर पूर्वी बंगाल और बर्मा से चावल की आमद बंद हो गई और इसके विपरीत हमारे देहातों के लोग जो मोटा अनाज खाने के आदी थे वे चावल खाने के शौकीन हो गये। इस प्रकार चावल के स्टाक के मुकाबले में चावल को खाने वालों की संख्या कई गुना बढ़ गई। चावल की खेती के लिए पानी की नहरों की अधिक आवश्यकता है, इस सम्बन्ध में केंद्रीय सरकार अपनी योजनाएँ बना चुकी है, परंतु इस कार्य के करने में जितना समय लगना आवश्यक है वह तो लगेगा ही। उधर गेहूँ इत्यादिक की उपज बढ़ाने के लिए हर बंजर स्थान को काश्त में लाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस भूमि को तोड़ने के लिए ट्रैक्टर तथा अन्य भारी मशीनें व नये-नये यंत्र विदेश से मंगाये जा रहे हैं, जिनके द्वारा नूतनतम कृषि-प्रणाली के आधार पर खेती करने के साधन मुहैया किये जा रहे हैं। इन सब के लिए समय की अपेक्षा है। इसके अतिरिक्त कृषि का आधार वर्षा और मौसम पर होता है; अतः इन योजनाओं को कितना भी प्रगति देने का प्रयत्न किया जाय एक फसल उतना समय लेती ही है जितना उसके तैयार होने में लगता है। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी जिस दृढ़ संकल्प के साथ हमारे प्रधान मंत्री इस समस्या को सुलझाने में जुटे हुए हैं वह अत्यन्त सराहनीय है; उनका यह अंतिम आश्वासन है कि १९५ तक हम अपने देश में इतनी खाद्य-सामग्री उत्पन्न कर लेंगे जिससे कि हमारी आवश्यकताएँ पूरी हो जाएं और हमें बाहर से कुछ न मंगाना पड़े। इस मद के बचे हुए डालर का लाभ उठाकर देश की दूसरी आवश्यकताओं को पूरा किया सकेगा।

यह एक महान कार्य है और राष्ट्रीय आन्दोलन है। इस संकट का मुकाबला करना केवल सरकार का ही कार्य नहीं है, बल्कि देश के एक-एक नागरिक का कर्त्तव्य है। जिस प्रकार एक घर के लोग किसी शत्रु का आक्रमण होने पर एक साथ मिलकर मुकाबला करते हैं उसी प्रकार यह खाद्य-संकट भी हमारे देश का खूंखार दुश्मन है। इसका मुकाबला हर एक बूढ़े, बच्चे और जवान को मिलकर करना चाहिए।

हमारे स्काउटों से विशेष अपील है कि वे एक योग्य नागरिक के नाते इस सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्य का पालन करें और सभी जिला असोसिएशन एक योजना बनाकर अपनी स्थानीय परिस्थिति के अनुसार इस कार्य में सक्रिय सहयोग दें।

हमारे नेशनल आर्गेनाइजिंग कमिश्नर ने प्रधान मंत्री पं० नेहरू की अपील के समर्थन में हिन्दुस्तान भर में हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन के सदस्यों को एक अपील भेजी है जिसमें उन्होंने कहा है कि हमें भूख, गरीबी, अज्ञान, अभाव और बच्चों के अति-मृत्यु के विरुद्ध कार्य

नवयुवकों से दो बातें

प्रिंस क्रोपॉटकिन

आज मैं युवकों से कुछ बातें कहना चाहता हूँ। बूढ़े लोगों को—दरअसल मेरा मतलब है दिल और दिमाग़ के बूढ़ों से—इस लेख के पढ़ने का कष्ट न उठाना चाहिये, क्योंकि इसके पढ़ने से सिर्फ़ उनकी आँखें थकेंगी और फ़ायदा कुछ भी न होगा!

मैं कल्पना करता हूँ कि तुम्हारी उम्र अठारह-बीस वर्ष की है। तुम अपने शिक्षाकाल या विद्यार्थी-जीवन को समाप्त कर चुके हो और अब सांसारिक जीवन में प्रवेश कर रहे हो। मैं यह भी माने लेता हूँ कि तुम्हारा दिमाग़ अन्धविश्वास से मुक्त है, जिसको तुम्हारे शिक्षकों ने तुम्हारे भीतर भरने की कोशिश की थी, तुम नर्क-स्वर्ग की बातों से नहीं डरते और तुम मुल्लाओं तथा पुजारियों की थोथी बातों को सुनने नहीं जाते। साथ ही तुम उन दिखावटी लोगों में से भी नहीं हो, जो पतनशील जातियों में प्रायः पैदा हुआ करते हैं, जो कि अपने चमकीले-भड़कीले कपड़ों और बन्दर की-सी शकल को मेले-तमाशों में दिखलाया करते हैं और जो छोटी उमर से ही किसी भी तरह सुख भोगने की बेहद लालसा रखते हैं। बल्कि मैं तो यह मानता हूँ कि तुम एक सहृदय व्यक्ति हो और इसी कारण मैं तुमसे बातें करता हूँ।

मैं जानता हूँ कि तुम्हारे सामने प्रायः एक प्रश्न आया करता है—"हमें आगे चल कर क्या बनना है?" वास्तव में कोई भी मनुष्य अपनी युवावस्था में यही समझता है कि उसने बहुत वर्षों तक समाज की सहायता के आधार पर जिस किसी विद्या या कला का अध्ययन किया है, उसका उद्देश्य यह नहीं है कि अपने ज्ञान को दूसरे लोगों को लूटने तथा अपना स्वार्थ साधन करने का जरिया बनाया जाय। ऐसा व्यक्ति तो अवश्य ही महाभ्रष्ट है और दुर्गुणों से भरा है, जो यह कल्पना नहीं करता कि समय आने पर वह अपनी बुद्धिमत्ता, अपनी योग्यता और अपने ज्ञान को उन लोगों के अधिकार दिलाने में लगायेगा, जो कि आज दुर्दशा और अज्ञान में फँसे पड़े हैं।

मैं माने लेता हूँ कि तुम उन्हीं में से एक हो, जिनको इस प्रकार के स्वप्न आया करते हैं! क्या वास्तव में ऐसा नहीं है? अच्छा तो अब हमको देखना चाहिये कि अपने स्वप्न को सत्य बनाने के लिये तुमको क्या करना आवश्यक है।

मैं यह नहीं जानता कि तुम कैसे घर में पैदा हुये हो। सम्भव है, तुम किसी सम्पत्तिशाली घर के हो और तुमने विज्ञान के अध्ययन का विचार किया हो, तुम डाक्टर बनना चाहते हो, अथवा बैरिस्टर, या लेखक, या वैज्ञानिक। तुम्हारे सामने एक विशाल कार्यक्षेत्र मौजूद है और तुम विस्तीर्ण ज्ञान और सुशिक्षित बुद्धि को लेकर कार्यक्षेत्र में प्रवेश कर रहे हो। अथवा इसके विपरीत तुम एक मेहनती कारीगर हो और तुम्हारी विज्ञान-सम्बन्धी शिक्षा स्कूल की साधारण पढ़ाई तक ही परिमित है। पर साथ ही तुमको इस बात का स्वयं अनुभव प्राप्त करने का मौक़ा मिला है कि वर्तमान समय में श्रमजीवियों—

करना चाहिए। स्काउटों का कर्त्तव्य है कि वे अन्न के अधिक उत्पादन में, आवश्यकतानुसार वस्तुओं की समुचित वितरण प्रणाली में और वस्तुओं के अव्यर्थ तथा समीचीन प्रयोग में योग देकर भोजन के अपव्यय की अपनी आदत में आमूल सुधार करें दें। हमारी संस्था के प्रत्येक बालक-बालिका को चाहिए कि वर्षा-ऋतु का लाभ उठा कर अपने मकान में जितना भी स्थान मिल सके उसमें और गमलों में खाद्य वस्तु उपजा कर देश पर भोजनाभाव के संकट को कुछ कम करने का प्रयत्न करें। जिला के स्काउट असोसिएशनों से हमारा अनुरोध है कि वे उस कार्य की सूचना जो इस सम्बन्ध में अपने जिले में करें—प्रधान कार्यालय को भेजते रहें।

—प्राणनाथ शर्मा

मज़दूरों—को कैसी कठिन मिहनत करके गुजारा करना पड़ता है।

डाक्टर

अभी मैं पहिली कल्पना पर विचार करता हूँ, इसके बाद दूसरी पर करूँगा। इसलिये मैं यह माने लेता हूँ कि तुमको अच्छी वैज्ञानिक शिक्षा मिली है। मान लो कि तुम डाक्टर बनना चाहते हो।

कल फटे-पुराने कपड़े पहिने एक आदमी किसी रोगी स्त्री को देखने के लिए बुला ले जाता है। वह तुम-को ऐसे तंग गली-कूचों में से ले जाता है, जिनमें दो आदमियों का साथ-साथ चल सकना भी कठिन है। तुम को एक दुर्गन्धयुक्त स्थान में टिमटिमाते दीपक की रोशनी में ऊपर चढ़ना पड़ता है। तुम दो, तीन, चार या पाँच गन्दे जीनों (सीढ़ियों) को चढ़ कर एक अन्धेरी ठण्डी कोठरी में पहुँचते हो और वहाँ पर रोगी स्त्री को एक टूटी-सी चारपाई पर मैले चीथड़ों से ढका हुआ पाते हो। पीले रंग के, मैले-कुचैले बच्चे पतले कपड़ों के भीतर ठण्ड से काँपते हुए आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहे हैं। स्त्री का पति उम्र भर किसी कारखाने में बारह-तेरह घण्टे रोज काम करता रहा, अब वह तीन महीने से बेकार बैठा है। नौकरी छूट जाना उसके लिए कोई बात नहीं है, प्रायः हर साल या समय-समय पर ऐसी घटना हुआ ही करती है। पर पहले जब वह बेकार रहता था तो उसकी स्त्री कुछ मेहनत-मजूरी कर लेती थी—शायद वह तुम्हारे ही घर पर चौका-बर्तन करती रही हो—और पाँच-सात रुपये महीने कमा लेती थी। पर अब वह भी दो महीने से बीमार है और समस्त परिवार दुर्दशा के भीषण पंजे में फँसा हुआ है।

डाक्टर साहब, आपने यह तो आने के साथ ही समझ लिया कि इस स्त्री की सारी बीमारी सिर्फ शारीरिक दुर्बलता, पौष्टिक भोजन का अभाव और स्वच्छ हवा की कमी है। आप इसके लिए क्या नुसखा तजवीज़ करेंगे? क्या, प्रतिदिन एक सेर दूध? शहर के बाहर स्वास्थ्यकर स्थान में घूमना-फिरना? अच्छे हवादार कमरे में सोना? कैसी विडम्बना है! अगर उसके पास इतनी सामर्थ ही होती तो ये उपाय बिना आपकी सलाह के बहुत पहिले कर लिए गये होते।

अगर तुम में कुछ सहृदयता का भाव है, अगर तुम खुल कर बातचीत करते हो और यदि तुम्हारे चेहरे से ईमानदारी टपकती है तो उन लोगों से तुम को बहुत-सी बातें मालूम हो सकती हैं। वे तुम को बतलावेंगे कि बगल की कोठरी में जो औरत इस बुरी तरह से खाँस रही है कि उसे सुनकर तुम्हारा दिल फटा जाता है, वह कपड़ साफ़ करने वाली एक ग़रीब स्त्री है। बीच की मंज़िल में रहने वाले सब बच्चे बुखार से पीड़ित हैं। सब से नीचे की मंजिल में रहने वाली धोबिन इस जाड़े के अन्त तक जिन्दा नहीं बचेगी और बगल के मकान में रहने वाले लोगों की दशा इससे भी बुरी है।

इन सब बीमार लोगों से तुम क्या कहोगे? क्या उनके लिए पौष्टिक भोजन, आब-हवा की तबदीली, हलका परिश्रम करना तज़वीज करोगे? तुम चाहोगे अवश्य कि तुम ऐसा कह सको, पर तुम कहने का साहस नहीं कर सकते और तुम दुःखी हृदय से दैव को कोसते हुये वापस चले आते हो।

दूसरे दिन, जब कि अभी तक तुम उस नरक-कुण्ड में रहने वालों के भाग्य पर विचार कर रहे हो, तुम्हारा साथी तुम को बतलाता है कि कल एक दरबान उसको बुलाने आया था और वह साथ में गाड़ी भी लाया था। वह उसे सुन्दर महल में रहने वाली एक श्रीमती के देखने को ले गया। उस रमणी को रात में नींद न आने की बीमारी है, उसने अपना तमाम जीवन बनाव, श्रृङ्गार, दावतों, तमाशों और अपने बेवकूफ पति के साथ दाँता-किलकिल करने में बिताया है। तुम्हारे मित्र ने उसके लिए तजवीज किया—यथा सम्भव कृत्रिम आदतों का त्याग करना, सादा भोजन करना, स्वच्छ हवा में टहलना, शान्त स्वभाव रखना और कोई शारीरिक काम न करने की कमी को किसी अंश में पूरा करने के लिये अपने कमरे के भीतर हलकी कसरत करना।

एक इसलिए मर रही है कि उसे तमाम उम्र न कभी काफी खाना मिला, न काफी आराम। दूसरी

इसलिए तकलीफ पा रही है कि उसे अपने जीवन में आज तक यही मालूम नहीं हुआ कि मेहनत करना किसे कहते हैं।

अगर तुम उन निर्बल चरित्र के व्यक्तियों में से हो, जो अपने को हर तरह की परिस्थिति के अनुकूल बना लेते हैं, जो अत्यन्त वीभत्स दृश्य को देख कर भी एक शोकसूचक निश्वास तथा शरबत के एक गिलास से चित्त को शान्त कर लेते हैं तो धीरे-धीरे तुम को इस परस्पर विरोधी दृश्यों को देखने की आदत हो जायगी, तुम्हारे भीतर पशु-भाव का उदय होने लगेगा, तुम्हारा एकमात्र उद्देश्य सुख-लोलुप लोगों के बीच में रहना बन जायगा, जिससे तुम को कभी दुर्दशाग्रस्त लोगों के बीच में जाने का काम ही न पड़े। पर अगर तुम "आदमी" हो, अगर तुम अपने मनोभावों को कार्य रूप में परिणत करने की इच्छाशक्ति रखते हो, अगर तुम्हारे भीतर पशु-भाव ने विवेक को नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर दिया है तो एक दिन तुम अपने मन में यह कहते हुए घर लौटोगे—"नहीं, यह अन्याय है, यह अधिक समय तक कायम नहीं रहना चाहिये। केवल रोगों का इलाज करने से काम नहीं चलेगा। उनके पैदा होने के कारणों को ही रोकना चाहिये। अगर मनुष्यों को भोजन-वस्त्र की कुछ सुविधा हो जाय और वे कुछ शिक्षित हो जाँय तो हमारे रोगियों की संख्या आधी ही रह जाय और बीमारियाँ भी लुप्त हो जाँय। चिकित्सा-शास्त्र चूल्हे में जाय ! स्वच्छ हवा, पौष्टिक भोजन और साधारण परिश्रम—ये ही सबसे पहला बातें हैं। इनके बिना डाक्टरी की सब बातें चालबाजी और धोखेबाजी के सिवा कुछ नहीं हैं।

शिक्षा में कैम्पिंग का महत्व

श्रीमती सी० मोहिनी, संयुक्त राष्ट्रीय प्रचार कमिश्नर, स्काउट बालिका विभाग

हम अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ने के लिए भेजते हैं। लेकिन हमने यह कभी नहीं सोचा कि यह शिक्षा इनके जीवन को सफल बनाने के लिए कहाँ तक उपयोगी है। बच्चा यदि ज़िद करे या किसी से झगड़ा करे तो माँ झट से कहती है, "क्यों रे! स्कूल में यही सिखाया जाता है क्या ?" हाँ, वास्तव में यदि देखा जाए तो स्कूल की चहारदीवारी के अन्दर यही सब सिखाया जाता है। मास्टर से एक दूसरे की शिकायत करना, पार्टी बना के एक दूसरे का सर फोड़ना, जो क्लास में प्रथम आ जाए उससे ईर्षा करना—यही सब तो सीखते हैं न आपके बच्चे ? परन्तु यह भी कभी किसी ने सोचा कि कहाँ पर शिक्षा दिलाई जाए जिसमे हमारी सन्तान जीना सीखे। वैसे तो हम लोग भी जीते हैं पर जीना वही है जो दूसरों के लिए जिए, अपने देश के लिए जिए।

यह सब सीखने का एक ही साधन है और वह है शिविर जीवन। यही एक ऐसी शिक्षा है जिससे हम अनजाने लोगों को अपना परिवार समझते हैं। कैम्प में रह कर हमारे स्काउट यह अनुभव करते हैं कि उनका जीवन अपने लिए नहीं वरन् प्राणीमात्र के लिए है। अपने सगे सम्बन्धियों से दूर रह कर उन्हें यह ज्ञात होता है कि संसार में उन्हें अपने माता पिता के बल पर नहीं बल्कि अपने ही पैरों पर खड़ा होना है। कैम्प में बच्चों को यह अवसर मिलता है कि वह अपनी शारीरिक एवं मानसिक दोनों शक्तियों को जाग्रत करें।

सुनागरिक बनने के लिए तीन बातें सामने रखनी पड़ती हैं—१. शारीरिक विकास, २. मानसिक जाग्रति, ३. आत्मिक शुद्धता। कैम्प ही एक ऐसा स्थान है जहाँ पर यह तीनों बातें ग्रहण की जा सकती हैं। आज समय यह नहीं चाहता कि देश के युवक डिग्रियाँ प्राप्त करके बेकार मारे मारे फिरा करें। आज हमारे स्वतंत्र देश की माँग यह है कि उसके बच्चे शरीर और मन दोनों में पुष्ट हो कर संसार को दिखा दें कि हमारा देश भी दूसरे देशों से किसी तरह कम नहीं है। पहले लोग कैम्पिंग को केवल समय खोना कहते थे पर अब शिक्षा प्रणाली के प्रधान व्यक्तियों ने इसका अनुभव किया है कि स्कूल की चहारदीवारी में बच्चों को सुशिक्षा नहीं दी जा सकती। हो सकता है कि भारत में पहले जिस ढंग से शिक्षा दी जाती थी, उसी पर दृष्टि डालने के पश्चात् लोगों का यह विचार हुआ हो। बम्बई की सरकार ने तो यह कह दिया है कि यदि कोई विद्यार्थी अपने को हाईस्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण करना चाहता है तो उसे कम से कम एक महीना शिविर जीवन व्यतीत करना होगा।

ऋषि लोग बच्चों को शिक्षा देने के लिए आश्रम बनाते थे जहाँ पर विद्यार्थी अपने माता पिता से दूर रह कर अपने हाथ से सब काम करके अपने शरीर व आत्मा को बलवान बनाता हुआ शिक्षा ग्रहण करता था। हम देखते हैं कि कैम्प में रह कर हम इन्हीं बातों का अनुकरण करते हैं। जो बात स्कूल में लाख माथापच्ची करने पर भी नहीं सिखाई जा सकती उसी को कैम्प में बच्चे खेल समझ के न जाने कब सीख जाते हैं।

अध्यापकों को चाहिए कि वह कैम्पिंग के द्वारा बच्चों को शिक्षा दें जिससे बच्चों का कल्याण हो और देश का भला हो। और वह स्वयं भी बच्चों के लिए 'हव्वा' न बन कर अपने जीवन को आनन्दमय बनाएँ। परन्तु कुछ कैम्प ऐसे होते हैं जिससे सीखने वाले व सिखाने वाले दोनों ही कैम्प में आने के लिए अपने भाग्य को कोसने लगते हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कैम्प करने से पहले कुछ बातों का विशेष ध्यान रखा जाए। पहली बात तो यह कि कैम्प का उद्देश्य क्या होगा। फिर कैम्प के लिए उपयुक्त स्थान खोजना, इसके उपरान्त तीसरी और सबसे बड़ी बात यह है कि कैम्प का कार्यक्रम क्या होगा। कैम्प की सफलता उसके प्रतिदिन के कार्यक्रम पर ही आश्रित रहती है। कार्यक्रम बनाते समय हमें उनके शरीर की स्वस्थता, उनकी शिक्षा, मनोरंजन आदि सभी बातों को सामने रखना पड़ता है। इस तरह कैम्प में रह कर एक बच्चा सभी प्रकार से अपने को शिक्षित बना सकता है।

कालेज में पढ़नेवाले पुत्र के नाम स्काउट शिक्षक का पत्र

श्री एम० ओ० वार्की, एम० एस-सी०, डिवीज़नल सैक्रेट्री

पत्र नं० १.

प्रिय सुरेश—

मुझे यह जानकर अति हर्ष हुआ कि तुम अपने सम्पर्क से अपने कुछ सहपाठियों को स्काउटिंग की ओर आकर्षित कर सके हो और तुम रोवर दल संगठन की ओर भी अग्रसर हो। श्री बांकेलाल शर्मा ने भी तुम्हारा रोवर लीडर बनने की स्वीकृति देकर, तुम लोगों के लिए प्रेम और अपनी सहृदयता का परिचय दिया है। अधिकांश कार्य तुम सब साथियों को ही करना होगा क्योंकि अभी आपके प्रोफ़ेसर साहब ने स्काउट संसार में पहिले-पहल ही प्रवेश किया है। रोवर स्काउटिंग एक शिक्षाप्रद और सुन्दर खेल है। इस खेल में भगवान आप सब लोगों को सफलता प्रदान करे।

मेरे अनुमान में आपको स्वास्थ्य और संयम पर शिक्षा देने के लिये अनुभवी योग्य व्यक्ति मिलने में असुविधा हो रही है। दीक्षित होने के पूर्व इन दो निर्धारित विषयों में उत्तीर्ण होना आवश्यक है। मैं इस सम्बन्ध में तुम लोगों को कुछ मदद पहुँचा सकता हूँ। संयम के बारे में कुछ आवश्यकीय बातें तुम्हारी आयु के बालकों को जानना चाहिए। मैं तो दिल से इस बात का इच्छुक था कि लिंग विषयक आवश्यक ज्ञान तुम्हें हो। दूसरों द्वारा और स्वयं का मेरा अनुभव है कि बालक को लिंग सम्बन्धी ज्ञान कराना बहुत ही आवश्यक है। इसी सम्बन्ध में मैं, तुम्हें क्रमशः लिखने का विचार कर रहा हूँ।

अधिकांश अध्यापकों और माता-पिताओं को इस विषय पर नौजवानों से बात करने में संकोच होता है। क्या ही विचित्र विचारधारा है? जब बालक बड़ों से अपने जन्म, और विकास के बारे में प्रश्न पूछते हैं तो उन्हें फटकारते हुए माता-पिता चुप और निरुत्साह करते हैं। इस प्रकार उनमें विषमजाल बन जाते हैं। साथ ही साथ उनकी जिज्ञासा और प्रबल हो जाती है और अज्ञानी मित्र और भृष्ट नौकर उनकी दलित जानकारियों को बुरे ढंग से उभारते रहते हैं। बाद के जीवन में इन विषम जालों से जो लिंग के सम्बन्ध में बालक में बन जाते हैं, भयंकर दुष्परिणामों का वह शिकार बनता है। मेरे मस्तिष्क में एक युवक की घटना प्रसंगवश सामने आती है जिसके बारे में हमारे पारिवारिक डाक्टर ने चर्चा की थी। एक सायंकाल वह युवक डाक्टर के यहाँ आया और चुपचाप एकान्त कोने में बैठा रहा। पूछताछ की जाने पर भी अपना कार्य स्पष्ट रूप से सब के सामने नहीं बताया। सब रोगियों के चले जाने पर अपने मन की बात बतलाई। नवयुवक ने चिन्ता और कष्ट प्रकट करते हुए सहायता की प्रार्थना की। नवयुवक हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ प्रतीत होता था। डाक्टर के आग्रह करने पर उसने सारी घटना अपने स्वप्नदोष के बारे में सुनाई और यह भी बतलाया कि विवाहित जीवन व्यतीत करने की क्षमता न रखते हुए माता-पिता ने विवाह कर दिया।

डाक्टर ने इन बातों को सुनकर हतोत्साहित नवयुवक को ढाढ़स बँधाया और कहा कि स्वप्नदोष का होना स्वाभाविक है। अधिक संख्या में होना हानिकारक समझा जाता है अन्यथा इसके कारण चिन्तित होने की नौजवानों को आवश्यकता नहीं है। साधारण जानकारी ने निराश हृदय में जीवन का अंकुर उगा दिया।

इसी प्रकार दूसरा नवयुवक जो कि प्रखरबुद्धि और होनहार था, माता-पिता की असावधानी से बुराई का शिकार बन गया। कालेज में प्रवेश कराने से पूर्व लिंग विषयक उपयोगी ज्ञान नहीं प्राप्त कराया। वह बालक कालेज के अवांछनीय छात्रों के साथ फँस गया और वह एक बार रात्रिकाल में घृणित मनोविनोद के लिये उनके साथ चला गया। बाज़ारू स्त्री-गमन से सुज़ाक

रोग से ग्रसित हो गया। स्वाभाविक था कि वह इस रोग को माता-पिता से छिपाता। भयंकर अवस्था प्राप्त होने पर माता-पिता को बतलाया गया और बड़ी कठिनाई के बाद नवयुवक को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ। इसे अज्ञानता का दुष्परिणाम न कहेंगे तो क्या कहें?

मुझे आशा है तुम्हारे मित्रों और तुमको इस तरह की जानकारी है। मैंने आप लोगों के लाभ के लिए स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयत्न किया है। तुम्हें लिंग सम्बन्धी कुछ ज्ञान तो पालतू खरगोश, कुत्तों और सूअरों द्वारा ही बाल्यावस्था में प्राप्त हो गया है। इस अवस्था में मेरे विचार से तुम्हें और अधिक विस्तार के साथ जानना चाहिये। दूर होने के कारण मस्तिष्क में आये हुये प्रश्नों का उत्तर मुझसे नहीं जान सकते हो। अतः इस सम्बन्ध में पूर्व ज्ञान प्राप्त कर लो ताकि भविष्य में अन्य बालकों की तरह तुम भूलों के शिकार न बन सको।

प्राचीन काल में शिक्षक बालक को साथ रखते हुए सर्वाङ्गीन शिक्षा देते थे परन्तु आजकल न तो शिक्षक ही और न माता-पिता ही आगे आने वाले दुष्परिणामों से बचाने के लिये बालकों को आवश्यक ज्ञान से सबल बनाते हैं। स्काउटिंग में रोवर स्काउट का दीक्षा संस्कार कराने से पूर्व उसके लिये लिंग सम्बन्धी ज्ञान भी परीक्षाओं में सम्मिलित किया गया है।

मैं अपने पत्रों में इस तरह की चर्चा समय-समय पर तुम्हारे लिये करता रहूँगा—तुम इनको अपने मित्रों को सुनाते रहना और आपस में सामूहिक रूप से आवश्यकता पड़ने पर, विचार-विनिमय करते रहना। इन बातों पर अधिक विचार करने और अधिक समय देने की ज़रूरत नहीं है। स्पष्टीकरण के लिए मुझे लिखते रहना।

लिंग का शरीर और मस्तिष्क दोनों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। उसके समझने के लिये व्यक्तियों को जीव-विद्या और मनोविज्ञान के विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त अनुभवों का लाभ उठाना चाहिये।

जीव विद्या-विशेषज्ञों के मतानुसार मनुष्य का विकास क्रमशः जानवर श्रेणी से हुआ है। अतः मनुष्य में भी जानवर के समान कुछ विशेष प्रबल प्राकृतिक शक्तियाँ हैं। लिंग-शक्ति भी उनमें से एक है। परन्तु मनुष्य मस्तिष्क और आत्मा की विशेष देन के कारण जानवर से भिन्न है। अतः मनोविज्ञान विशेषज्ञों के ज्ञान-संग्रह से भी लाभ उठाना चाहिये। मैं इनकी चर्चा अब आगे के पत्रों में करूँगा।

सहकारी खेती

श्री चरण सिंह, सभासचिव संयुक्त प्रान्तीय सरकार

[आजकल सहकारी खेती के सम्बन्ध में बहुत चर्चा चल रही है। परन्तु जिस प्रकार की सहकारी खेती के प्रचलन की बात कही जाती है वह हमारे देश की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। माननीय प्रधान मंत्री के सभासचिव श्री चरण सिंह ने लखनऊ रेडियो स्टेशन से यह वार्ता प्रसारित की थी जिसमें यह बताया गया है कि हमें किस प्रकार की सहयोगी खेती की आवश्यकता है।]

हमारे देश में किसानों की बहु-संख्यक जोत बहुत छोटी है अर्थात् इतनी छोटी कि वह एक जोड़ी बैलों को, जो कि खेती के लिये अनिवार्य हैं और एक किसान-कुटुम्ब को बारह महीने काम नहीं दे सकती। फलतः किसान और उसके बैल हफ्तों और महीनों बेकार बैठे रहते हैं और किसान को इतनी आय नहीं होती कि वह अपने बच्चों को भर पेट रोटी, पर्याप्त कपड़ा, अच्छा मकान और शिक्षा दे सके या आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सा का प्रबन्ध कर सके। किसानों की इस दुर्व्यवस्था के दो ही उपाय हो सकते हैं, एक तो यह कि उनकी वर्तमान जोतों को अधिक लाभप्रद बनाया जाय अर्थात् उनकी पैदावार बढ़ाई जाय और दूसरा यह कि उनको काम दिया जाये, ताकि वह साल भर अपने समय का उपयोग कर सकें और खाली न बैठे रहें। पहले उपाय का अर्थ है, किसानों के बिखरे हुए खेतों की चकबन्दी करके सहकारी या सहयोगी खेती करना और दूसरे का यह कि जहां सम्भव हो बन्जर (बनचर) जमीन तोड़ कर वर्तमान छोटी-छोटी जोत या खातों के रक़बे को बढ़ाना और गांव में बिजली या अन्य शक्ति द्वारा चलाये जाने वाले अनेक प्रकार के छोटे-छोटे उद्योग धन्धे स्थापित करना। किन्तु यहां केवल सहयोगी खेती की चर्चा की जायेगी।

सहकारी खेती क्या है ?

आजकल जो व्यक्ति भी, चाहे वह कृषि-विभाग का कर्मचारी हो या सरकार का विशेषज्ञ, सार्वजनिक कार्यकर्त्ता हो या कालिज का प्रोफेसर, खेती की उन्नति पर लिखने बैठता या कहने खड़ा होता है, तो किसानों और सरकार को सहयोगी खेती करने या उसको प्रोत्साहित करने का परामर्श देता है। परन्तु सहयोगी खेती का सही सही क्या अर्थ है ? उसकी क्या रूप-रेखा होनी चाहिये ? इस सम्बन्ध में बहुत कम लोगों के विचार स्पष्ट हैं और उससे भी कम लोगों ने इस विषय का अध्ययन किया है।

सहकारी या सहयोगी खेती के समर्थकों के दो पक्ष हैं। एक पक्ष का कहना है कि छोटे-छोटे किसानों को या जो भी उसमें सम्मिलित होना चाहें, उन सब की जोतों को एक जगह इकट्ठा करके एक बड़ी जोत या एक फार्म बना दिया जाय और उस पर सब किसान मिल कर खेती करें। दूसरे पक्ष का कहना है कि किसानों की जोत तो अलग-अलग ही रखी जायें, जैसी कि आज है, परन्तु किसान अपनी आवश्यकता की वस्तुएं ख़रीदने, पैदावार को बेचने, खेती के बड़े या बहुमूल्य औज़ारों को ख़रीदने व उपयोग करने, सिंचाई का प्रबन्ध करने, ऋण लेने व देने व छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धे स्थापित करने में अपने आप को एक सूत्र में बांध लें, अर्थात् इन उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिये एक सहयोगी सोसायटी बनायें और उनके सदस्य बन जायें।

हमारी अपनी राय में दूसरा पक्ष ठीक है और उनका बताया हुआ मार्ग ही हमारे देश में सफल हो सकता है, न कि पहला। पहले प्रकार की सहयोगी खेती के विरुद्ध वह सब युक्तियां और आपत्तियां उठाई जा सकती हैं, जो रूस में स्थापित सामूहिक खेती के विरुद्ध उठाई जाती हैं। इस प्रकार की सामूहिक खेती व हमारे देश के हित-चिन्तकों में से पहले पक्ष की बताई हुई सहयोगी खेती में केवल तीन अन्तर हैं।

सामूहिक खेती और पहले प्रकार की सहयोगी खेती में अन्तर

पहला यह है कि सहयोगी फार्म में केवल वही किसान

सम्मिलित होंगे, जो ऐसी इच्छा रखते हों या जिनको फार्म के पहले मेम्बर लेने को तैयार हों। सरकार सहयोगी खेती को प्रोत्साहन तो देगी, परन्तु किसी को उसमें शरीक होने के लिए विवश नहीं करेगी। इसके विपरीत रूस में सामूहिक फार्म सरकार द्वारा किसान की इच्छा या अनिच्छा का तनिक भी विचार किये बिना, प्रत्युत उसकी इच्छा के विरुद्ध, स्थापित किए गये और आज सामूहिक फार्म में हर आदमी को शरीक होने का अधिकार है चाहे उसके पास भूमि हो या न हो।

दूसरा अन्तर यह है कि सहयोगी खेती में किसान अपनी जोत के मालिक बने रहते हैं। परन्तु सामूहिक खेती में कोई मेम्बर किसी भूमि या खेत विशेष का मालिक नहीं होता। प्रत्युत कुल भूमि या फार्म की मालिक सोसायटी या राज्य होता है। वह भूमि राज्य या सोसायटी किस प्रकार प्राप्त करे, ज़बरदस्ती छीने या ज़ब्त कर के या क़ानून द्वारा अथवा रज़ामन्दी से कुछ या पूरा मूल्य देकर, यह कहना यहां अनावश्यक है।

सहयोगी खेती में से यदि कोई किसान निकलना चाहे, तो कुछ लोगों के मत के अनुसार उसको उसकी जोत वापिस मिल जानी चाहिये, परन्तु यदि उसको उसकी जोत वापिस नहीं की जा सकती है, तो इतना तो न्यायसंगत ही है कि जाने या निकलने वाले किसान को कुछ प्रतिफल या मुआविज़ा अवश्य दिया जाये। रही सामूहिक खेती छोड़ने या उसमें से निकाले जाने वाले मेम्बर की बात, सो उसमें तो भूमि या उसका प्रतिफल मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता। क्योंकि वहां किसान किसी भूमि का मालिक नहीं होता।

तीसरा अन्तर यह है कि सहयोगी खेती में काम करने वालों को, चाहे वह मेम्बर हो या नहीं, प्रचलित भाव के अनुसार मज़दूरी दी जाती है और सरकारी माल-गुज़ारी, सिंचाई व प्रबन्ध आदि का अन्य ख़र्चा और सुरक्षित या अन्य कोषों, यदि कोई ऐसे हों, में जो देना या रखना हो वह काट कर बची हुई आय को किसान अपनी-अपनी भूमि के क्षेत्रफल व हैसियत के अनुसार बांट देते हैं। इसका दूसरा प्रकार यह भी हो सकता है कि किसान की जितनी ज़मीन है उसका लगान पहले देकर और उसको ख़र्चे में शामिल कर व काट कर, जो बचा उसको जिसने जितने दिन फार्म पर काम किया है उसके हिसाब से बांट लिया जाये। सहयोगी खेती में किसान को दो प्रकार की आमदनी होती है अर्थात् एक मज़दूर की हैसियत से और दूसरी ज़मीन का मालिक होने की हैसियत से। इससे भिन्न सामूहिक खेती में केवल एक प्रकार की ही आय होती है और वह काम या मज़दूरी के आधार पर।

सामूहिक खेती की अनुपयुक्तता

शेष और सब बातों में रूसी ढंग का सामूहिक फार्म और उपर्युक्त प्रकार का सहयोगी फार्म बिलकुल एक समान है। परन्तु जैसा पहले कहा जा चुका है हमारे विचार में न यह चल पायेगा और न देश के लिये हित-कर ही होगा। पहला कारण यह है कि बहुत से किसानों को मिलाकर एक इकाई की तरह काम करना होगा। और यह एक टेढ़ी खीर है। जितने अधिक व्यक्ति एक जगह अर्थात् एक संगठन में, चाहे वह खेती का फार्म हो, चाहे कोई कारखाना, काम करेंगे, उसके सदस्यों में उतनी ही कम दिलचस्पी व लगन होगी। किसी सहयोगी फार्म में यदि सौ किसान हैं, तो हर किसान यह जानता है कि उसको मेहनत का पूरा फल, केवल उसको न मिल कर, सौ आदमियों में बंटेगा। ऐसी सूरत में वह क्यों अधिक परिश्रम करे? फल-स्वरूप हर किसान इस फिक्र में रहेगा कि वह अपने सहयोगियों से अधिक अच्छा और अधिक चतुराई व मेहनत के साथ काम न करे। इस शिथिलता के कारण सहयोगी फार्म की पैदावार घट जायेगी अर्थात् व्यक्तिगत जोतों की अपेक्षा, जिनके अलहदा-अलहदा मालिक हैं, सहयोगी फार्म की पैदावार कम होगी।

बहुत से आदमियों का एक संगठन के अधीन काम करने का फल यह होता है कि काम करने वालों की स्वतंत्रता उस आर्थिक इकाई के अनुपात से कम हो जाती है। संगठन का अर्थ हो है कि अनेक इरादे व इच्छाओं के स्थान में एक इरादे या इच्छा के अनुसार काम करना। क्योंकि सहयोगी फार्म का हर मेम्बर या किसान अपने मन से काम करेगा, तो फार्म फार्म न रहेगा और संगठन टूट जायेगा। इसलिये किसान को आदेश देने वाला कि वह

कब, कौन से खेत में किस प्रकार का काम करे, कोई दूसरा व्यक्ति होगा, चाहे वह किसानों का अपना चुना हुआ ही क्यों न हो, जिसकी इच्छा सब की इच्छाओं पर हावी होगी और जिसके निर्णयों को मानना होगा। एक व्यक्ति के स्थान में एक समिति भी हो सकती है, परन्तु जहाँ तक किसान की परतंत्रता का सवाल है उसमें समिति के होने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। किसान किसान न रहकर एक मजदूर हो जाता है, अपने समय का और अपने खेत की कमाई का, एक-मात्र मालिक न रहकर दूसरे या दूसरों के हुक्म का बन्दा और अधिकांश रूप में, जितने दिन व घंटे काम किया, उसके हिसाब से, मज़दूरी पाने वाला एक सेवक रह जाता है।

किसान, जो किसी भी देश का प्रायः सब से बड़ा वर्ग होता है, की स्वतंत्रता के अपहरण के साथ-साथ इस बड़े पैमाने पर सहयोगी खेती का एक यह अनिवार्य नतीजा निकलेगा कि देश में जनतंत्र के स्थान पर एकतंत्र की भावना प्रबल होगी। जनतंत्र या पंचायती राज्य की सफलता के लिये आवश्यक है कि समाज के हर व्यक्ति को अपने हित के लिये निर्णय करने का अवसर मिले, ताकि उसे उत्तरदायित्व संभालने की आदत पड़ जाय। परन्तु जिस देश की जनता बड़ी-बड़ी आर्थिक इकाइयों में काम करने अर्थात् दूसरों की आज्ञा पालने की अभ्यासी बन जायेगी, वहाँ अबेर या सबेर कुछ दिनों में राजनीतिक क्षेत्र में भी कोई अधिनायक या तानाशाह अवश्य पैदा हो जायेगा।

हमारे विरोध का चौथा कारण यह है कि छोटी-छोटी जोतों की अपेक्षा बड़े-बड़े फार्मों पर, चाहे वह एक की सम्पत्ति हों या सहयोगी, प्रति एकड़ कम पैदावार होती है। छोटे-छोटे किसान यदि निर्धन हैं, तो इसलिये नहीं कि उनकी पैदावार प्रति एकड़ बड़े किसानों से कम है, परन्तु इसलिये कि उनके पास थोड़ी ज़मीन होने के कारण उनकी कुल पैदावार बड़े किसानों से कम होती है। बड़े-बड़े नगरों के रहने वालों के या उन लोगों के, जिनका खेती का ज्ञान केवल कुछ किताबों या रूस के साम्यवादी प्रोपेगेन्डे तक सीमित है, विचार में जिस तरह एक बड़ा कारखाना, जिसमें बढ़िया मशीनरी लगी हुई हो, केवल उसमें लगी हुई पूंजी के अनुपात से ही सामान पैदा नहीं करता, परन्तु उससे कहीं अधिक करता है, उसी तरह एक बड़े फार्म पर, जितना वह बड़ा होगा, प्रति एकड़ पैदावार बढ़ती चली जायेगी। परन्तु बुद्धि, आंकड़े व अनुभव इस अनुमान की पुष्टि नहीं करते। यह ठीक है कि हमारा एक देशी चरखा जितनी देर में सौ तार निकालता है उतनी ही देर में एक हज़ार-गुणा मूल्यवान मशीन केवल सौ के एक हज़ार गुणा अर्थात् एक लाख तार ही नहीं निकालेगी, बल्कि उससे कहीं अधिक। परन्तु जो बात उद्योग-धन्धे या मशीन के लिये सही है वह खेती या भूमि के लिये सही नहीं है। एक-एक एकड़ वाले २० खेतों में जितना पैदा होता है, उतना ही २० एकड़ के एक खेत में पैदा होगा, न कि २० गुणा से अधिक। क्योंकि खेती जीव-शास्त्र के सिद्धान्तों का अनुसरण करती है। प्रकृति के नियम के अनुसार ईख के एक पौदे के बढ़ने व फैलने के लिये जितना स्थान और इसके पकने के लिये जितना समय आवश्यक है उतना ही लगेगा, चाहे वह एकड़ वाले खेत में बोया गया हो, चाहे २० एकड़ वाले खेत में, और जिस भूमि में बोया गया है चाहे वह साधारण देसी हल से जोती गई हो और चाहे बड़े ट्रैक्टर से।

अधिक देखरेख की आवश्यकता

स्पष्ट सी बात है कि खेती की पैदावार बढ़ाने के लिये तीन वस्तुएँ आवश्यक हैं—पानी, खाद व अच्छा बीज। अगर यह तीन चीज़ समान रूप में छोटे व बड़े किसान को मिल जायें, तो पैदावार प्रति एकड़ बराबर होगी और उस पर किसान की जोत के रक़बे का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यही नहीं बल्कि अब तो संसार भर के विशेषज्ञ यह मानने पर विवश हुए हैं कि जितनी बड़ी जोत होगी, कम से कम कुछ क्षेत्रफल (किन्हीं के अनुसार २० एकड़ और किन्हीं के अनुसार इससे कुछ अधिक) के अन्तर उतनी ही प्रति एकड़ पैदावार कम होती जायगी। यह निर्विवाद है कि चीन, जापान, जर्मनी, डेन्मार्क व बेल्जियम में जहाँ के किसानों की जोत छोटी-छोटी हैं, रूस, अमरीका व आस्ट्रेलिया की अपेक्षा, जहाँ कि बहुत बड़े-बड़े फार्म हैं खेती की पैदावार प्रति एकड़ कहीं अधिक है। इसका कारण भी साफ ही है और वह यह है कि खेती

बहुत बड़ी निगरानी चाहती है, जो कि किसान एक सीमा से अधिक बड़ी जोत या फार्म पर नहीं कर सकता। कहावत है कि जो किसान अपने खेत को देखेगा, तो खेत उसको देखेगा, अर्थात् किसान जितनी अधिक देख-रेख रखेगा, खेत उतनी ही अधिक पैदावार उसको देगा। सहयोगी खेती में अधिक किसान एक जगह इकट्ठे हो जाने से वह निगरानी बढ़ेगी नहीं, बल्कि जैसा पहले संकेत किया जा चुका है घटेगी ही।

सहयोगी खेती हमारे देश के लिये क्यों हितकर नहीं है, इसका पाँचवाँ कारण यह है कि बड़े फार्म पर मशीन द्वारा काम होगा, जिसका अर्थ यह हुआ कि उतनी ही जमीन को जोतने व बोने के लिये वर्त्तमान दशा व काल की अपेक्षा, जबकि बैलों द्वारा खेती होती है, भविष्य में काम आदमियों की आवश्यकता पड़ेगी। हमारे देश की परिस्थिति में जहाँ कि आज भी करोड़ों आदमी खाली बैठे हैं, ऐसा आर्थिक व सामाजिक संगठन हानिकर होगा; जिससे जन संख्या का एक बड़ा भाग बेरोजगार हो जाय या उसका समय और खाली हो जाय। कुछ लोग कहते हैं कि मशीन द्वारा काम करने से लोगों को और अधिक अवकाश व फुरसत मिल जायेगी, जिसका सांस्कृतिक उन्नति के लिये उपयोग किया जा सकेगा। परन्तु अवकाश तो वही कहला सकता है, जो दिन भर शरीर व मस्तिष्क को थकाने वाला ऐसा काम करने के बाद मिले, जिससे मनुष्य की आवश्यकताएं पूरी हो सकें, वरन् वह बेकारी है, नाम उसका चाहे कुछ रक्खा जावे। और ऐसा या आवश्यकता से अधिक खाली समय या बेकारी पतन की ओर ले जाती है, न कि उत्थान की ओर।

यहां यह बतलाना असंगत न होगा कि मशीन से गोबर नहीं पैदा होता, और गोबर से बढ़कर कोई दूसरी खाद संसार के विशेषज्ञ या विज्ञानवेत्ता अभी तक ढूंढ या निकाल नहीं पाये हैं।

एक बात और, है वह यह कि मशीन द्वारा खेती बैलों की अपेक्षा अधिक खर्चीली पड़ती है।

सहयोगी खेती और मशीनें

मशीन द्वारा खेती होने से बेकारी बढ़ने की आशंका को दूर करने के लिये सहयोगी खेती के कुछ समर्थक कभी कभी यह भी कहते हैं कि सहयोगी खेती के लिये यह कहाँ आवश्यक है कि मशीन चलाई जायें। क्यों न हम सहयोगी खेती के बड़े फार्मों पर भी बैलों द्वारा खेती करें? परन्तु वे यह भूल जाते हैं या नहीं जानते कि पशु व्यक्तिगत मिल्कियत में ही पल व बढ़ और स्वस्थ रह सकता है, न कि सहयोगी या सैकड़ों आदमियों की सम्मिलित मिल्कियत व देख-रेख में। पशु भी एक जीव है, और वह उतनी ही सेवा व प्रेम चाहता है जितनी की मनुष्य और उसकी रक्षा और यह सेवा व प्रेम वही मनुष्य कर सकता है, जो कि उस पशु का एकमात्र स्वामी हो।

दूसरा तरीका

अतएव हमारी राय में दूसरे प्रकार की सहयोगी खेती ही संभव व हितकर है, जिसमें किसान का अपना-अपना खेत व जोत अलग-अलग रहे। यह दूसरी बात है कि अपने खेतों पर काम करने में वह एक-दूसरे की सहायता करने के लिये आपस में साझा डंगवारा कर लें, जैसा करने की परम्परा हमारे किसानों में सदैव से चली आई है। जैसा पहिले कहा जा चुका है खेती की पैदावार बढ़ाने के लिये पानी, खाद व अच्छे बीज की आवश्यकता है, सहयोग का उद्देश्य होना चाहिए, इन आवश्यकताओं की पूर्ति करना। साथ ही बाजार में सामूहिक तौर पर अपनी पैदावार को बेचना या खेतों व घर के लिए ज़रूरी वस्तुओं को ख़रीदना, क्योंकि अलग-अलग बेंचने व ख़रीदने में किसान की लुटाई होती है और समय भी नष्ट होता है। डेन्मार्क, आदि देशों में जहां का किसान रूस के किसान से कहीं अधिक सुखी व मालदार है इसी प्रकार की खेती होती है, न कि पहिले प्रकार की। इस प्रकार के सहयोग से किसान अपने खेत पर पूर्ववत् परिश्रम करता रहेगा, उसकी स्वतंत्रता क़ायम रहेगी, जनतंत्र सफल होने के लिये उपयुक्त वातावरण पैदा होगा, पैदावार बढ़ेगी, परन्तु बेकारी न बढ़ेगी। किसानों की ग़रीबी का, पानी, खाद व अच्छे बीज के बाद दूसरा बड़ा इलाज या एकमात्र वास्तविक इलाज है छोटे-छोटे धन्धों द्वारा उनके खाली समय का उपयोग करना, परन्तु आज यह हमारा विषय नहीं है।

अन्त में इतना कहना पर्याप्त है कि संसार में अकाट्य सत्य बहुत कम है, संभव है कि हमारी युक्तियों से प्रथम

नारद का वरदान

श्री अमरनाथ गुप्त, एम० ए०, एल० टी०, हैडक्वारटर्स कमिश्नर

[एक कमरा, आलमारी पर एक छोटा घंटा, कुछ मट्टी की मूर्तियाँ, दो गुलदस्ते रक्खे हैं। एक ओर मेज़ पर रेडियो है। कमरे में एक सोफ़ा और चार कुर्सियाँ पड़ी हैं, एक ओर एक तख़्त बिछा है जिस पर क़ालीन और तकिया है। एक कुरसी पर श्री रामस्वरूप जोशी बैठे हैं, दूसरी कुरसी पर उनका लड़का सुरेन्द्र बैठा है, वह रेडियो को साध रहा है।]

जोशीजी : "क्या करते हो सुरेन्द्र, हर समय रेडियो से लिपटे रहते हो। कभी किताब भी ले लिया करो।

सुरेन्द्र : पिताजी क्या छुट्टियों में भी किताब ही पढ़नी पड़ेगी ?

जोशीजी : बेटा, पढ़ना तो हर समय ही अच्छा होता है, दो अक्षर पेट में पड़ेंगे तो गुण ही करेंगे।

सुरेन्द्र : गुरू जी तो कहते थे कि छोटे बालकों को किताब का कीड़ा न बनना चाहिये।

जोशी : (खाँस कर, समय लेते हुए) हां हां, ठीक तो है, उनका मतलब है कि हर समय किताब से नहीं लिपटना चाहिये।

सुरेन्द्र : तो पिताजी कभी कभी तो मैं पढ़ता ही हूँ। हाँ पिताजी जब अंग्रेज़ चले गये तो अब हमें अंग्रेज़ी क्यों रटवाई जाती है ? कल माताजी ने पाठ पढ़ाया था, मैं तो (Sun) माने सूरज और मून माने (Moon) माने चाँद रटते-रटते थक गया।

जोशी : बेटा यह संसार की मुख्य भाषा है, जब बड़े होकर तुम विदेशों को भ्रमण के लिए जाओगे तो तुम्हें अंग्रेज़ी का ज्ञान बहुत काम आयेगा, बड़ी सुविधा रहेगी बेटा।

सुरेन्द्र : (एक ओर को) अब तो मर लेंगे ! (पिता से) फिर भी पिताजी अधिक समय अंग्रेज़ी को क्यों दिया जाये !

जोशी : अरे मूर्ख अपना काम कर, जब देखो तब तर्क ! चल हट यहाँ से, छोड़ रेडियो का पीछा। संभाल अपनी पुस्तक।

[सुरेन्द्र हट जाता है, और अनमना सा एक पुस्तक लेकर बैठ जाता है।]

सुरेन्द्र : पिताजी स्लीप (Sleep) माने ?

जोशी : सोना।

सुरेन्द्र : और चाँदी की क्या अंग्रेज़ी है पिताजी ?

जोशी : अरे यह वह सोना नहीं है, यह है रात का सोना, दिन को जगना।

सुरेन्द्र : अच्छा ! यदि पिताजी कोई दिन को सोवे तो ?

[जोशीजी सटपटाए, वह भोजन के बाद दिन में १ घंटा अवश्य सोते थे, चिढ़ गये]

जोशी : तू तो दिमाग़ ही चाट गया, बस अपना पाठ याद कर। हाँ देख मैं तेरी माता जी और ऊषा को लेने तेरे मामा के यहाँ जाता हूँ। कमरे का द्वार बंद करले, और खबरदार किसी के लिये खोलना मत।

सुरेन्द्र : अच्छा पिताजी।

[जोशी जी जाते हैं, और सुरेन्द्र द्वार बन्द करता है]

(२)

सुरेन्द्र : [दरवाजे के पास जाकर कान लगाता है।] गये, पिताजी अब दूर पहुँच गये। (किताब फेंकता है) नाक में ही दम हो गया। (फिर उठा कर) फद तो नहीं

प्रकार की सहयोगी खेती सफल हो न हो, परन्तु दूसरे प्रकार की खेती कहीं अधिक सफल होगी। यद्यपि अब तक हमारे देश में अथवा दूसरे देशों में कुछ लोगों ने जो निजी तौर पर परीक्षण किये हैं वह उत्साहवर्धक नहीं हैं। पैलेस्टाइन में जो पहले प्रकार की सहयोगी खेती सफल होने की चर्चा सुनी जा रही है, उसके संबंध में अभी विश्वासपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। तो भी एक इरादे के साथ और एक बड़े आन्दोलन के तौर पर ऐच्छिक आधार पर इस प्रकार की सहयोगी या सामूहिक खेती, जिसमें सरकार की ओर से पूरा प्रोत्साहन हो, का परीक्षण करके देखने में कोई हानि नहीं है।

गई, कहीं पिटाई करवाए। (रेडियो के पास जाकर) अब तो मैदान खाली है, चैन से सुनेंगे रेडियो।

[गाना आता है]

मोरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

मो...रे...तो...ग्रो....

धत् तेरे की पक्का गाना आ गया [बन्द कर देता है] यदि मैं रेडियो पर बोलूं तो...सब सुनेंगे। कैसा सुन्दर रहेगा। क्या बोलूं ? अच्छा मैच हो रहा है फुटबाल का, अब मैं सुनाता हूँ उसे, जैसे उस दिन क्रिकेट के मैच की खबर आई थी।

[रेडियो के पास खड़ा होकर गंभीरता से बोलता है]

हम लखनऊ से बोल रहे हैं। इस समय सन्ध्या के ६ बजे हैं। लखनऊ यूनीवर्सिटी और इलाहाबाद यूनीवर्सिटी का फुटबाल का मैच हो रहा है। सीटी बजते ही पांडे ने लखनऊ की टीम को दबाया, उधर से चौबे ने उसे रोका, उसने चट बाल बैनर्जी को फेंक दी, उसने जरा बढ़ाकर बीच में बाल फेंकी और पांडे ने चट से ऐसा किक मारा कि गेंद गोल में, अब हथेली बज रही है.....]

[किसी ने दरवाज़ा खटखटाया]

सुरेन्द्र : (खिड़की से झांक कर) कौन है ?

[बाहर एक सन्यासी खड़ा था, बड़ा पतला-दुबला, परन्तु उसका पेट बहुत बड़ा था, ऐसा प्रतीत होता था, जैसे तरबूज बंधा हो]

सन्यासी : दरवाज़ा खोलो बेटा।

सुरेन्द्र : तुम कौन हो ?

सन्यासी : हम नारद मुनि हैं बेटा, सीधे स्वर्ग से आ रहे हैं।

सुरेन्द्र : (अचंभे से) नारद मुनि ?

सन्यासी : हां नारद मुनि बेटा, नारद मुनि ! अम्मां हैं घर पर ?

सुरेन्द्र : (आंखें फाड़ फाड़ कर देखते हुए) नहीं !

नारद : तुम्हारी बहन हैं घर पर चन्दा ?

सुरेन्द्र : नहीं ! मैं अकेला ही तो हूँ यहाँ !

नारद : अरे वाह रे बांके वीर ! अच्छा देख।

[नारद मुनि जेब से एक खरगोश का बच्चा निकाल कर सुरेन्द्र को दिखाते हैं]

सुरेन्द्र : खरगोश !

नारद : हां मेरे मुन्ना, खरगोश ! यदि तुम हमें भर पेट भोजन कराओ तो तुम्हारा खरगोश।

सुरेन्द्र : (यह बिचारते हुए कि इतने बड़े पेट में न जाने कितना भोजन आएगा), भर पेट ?

नारद : हाँ मेरे नन्हें सिपाही, भर पेट।

सुरेन्द्र : (खरगोश को ललचाई दृष्टि से देखते हुए) अधिक तो न खाओगे महाराज ?

नारद : अरे मेरे प्यारे बालक, मेरा पेट ही कितना बड़ा है, बहुत ही सूक्ष्म खाता हूँ मैं तो।

सुरेन्द्र : फिर खरगोश मुझे दे दोगे ?

नारद : हाँ, मेरे चमकते तारे, भूखों के सहारे।

सुरेन्द्र : (किवाड़ खोल कर) अच्छा अन्दर आ जाओ महाराज।

नारद : (अन्दर आकर) चल दानियों के सरताज, रसोई में चल।

[दोनों रसोई की ओर जाते हैं]

(३)

[नारद मुनि और सुरेन्द्र पहले वाले कमरे में बैठे हैं, नारद भर पेट भोजन के उपरान्त संतोष से पेट पर हाथ फेर रहे हैं]

सुरेन्द्र : महाराज खरगोश अब मुझे दो !

नारद : (देते हुए) लो मेरे लाल, यह खरगोश लो, देखो इसे रोज़ दूध पिलाना। अच्छा इसी बात पर एक पान तो खिलाओ।

सुरेन्द्र : (खरगोश लेकर, प्रसन्न हो जाता है) अभी लाया।

[अन्दर जाकर तुरन्त लौट आता है और पानों की तश्तरी नारद मुनि के सामने करता है।]

नारद : (पान की गिलौरी मुँह में रख कर) बेटा तुम्हारा क्या नाम है ?

सुरेन्द्र : सुरेन्द्र।

नारद : कैसा सुन्दर नाम है मेरे बहादुर का ! देख, इस खरगोश का नाम है नैनतारा !

सुरेन्द्र : नैनतारा !

नारद : हाँ मेरे मनुवा, नैन तारा ! लो यह तश्तरी लो।

[सुरेन्द्र ने तश्तरी ली तो नैनतारा ग़ायब हो गया]

सुरेन्द्र : अरे नैनतारा कहाँ गया ?

नारद : (सुरेन्द्र के सर पर हाथ रख कर) बजरंग-बली !

[ऐसा प्रतीत हुआ मानो सुरेन्द्र के बालों में से नारद मुनि ने खरगोश को खींचा हो]

सुरेन्द्र : यह तो बड़ी सुन्दर बाज़ीगरी है !

नारद : मेरे भोले सिपाही, यह बाज़ीगरी नहीं, दैवी चमत्कार है !

सुरेन्द्र : दैवी चमत्कार ?

नारद : हाँ दैवी चमत्कार ! हम ब्रह्मा के पुत्र क्या नहीं कर सकते ? हम स्वर्ग से यही देखने तो आए हैं कि संसार में कौन भले हैं और कौन बुरे ! एक और चमत्कार देख !

[एक रूमाल निकाल कर, नारद ने उसमें एक दिया-सलाई रखी, और रूमाल को लपेट दिया और सुरेन्द्र के सामने कर दिया ।]

नारद : दियासलाई को तोड़ दे ।

सुरेन्द्र : (दियासलाई के खूब टुकड़े टुकड़े करके) तोड़ दिया महाराज ।

नारद : बजरंग बली ! (रूमाल खोलता है, तो वह खाली था, दियासलाई ग़ायब थी ।)

सुरेन्द्र : (अचंभे से) कहां गई दियासलाई ?

नारद : अभी बुलाता हूँ मेरे लाल । (रूमाल को हवा में उड़ाता है और पुकारता है) बजरंग बली ।

[अब नारद, सुरेन्द्र के सामने रूमाल फैलाता है, जिसके बीच में दियासलाई साबुत मौजूद है]

सुरेन्द्र : (आँखें फाड़कर) यह साबुत कैसे हो गई ?

नारद : यही तो चमत्कार है बेटा ! कुछ पैसे हैं जेब में ?

सुरेन्द्र : (जेब में हाथ डालकर, एक चवन्नी निकालता है) लो महाराज !

नारद : (चवन्नी लेकर) यह हमारी दक्षिणा है । समझे लल्लू ! हाँ देखो हमारे आने का किसी से ज़िक्र मत करना ।

सुरेन्द्र : क्यों ?

नारद : अरे भगवान के दूत अपने आने का ढिंढोरा पीटें तो भीड़ इकट्ठी हो जाये । यह तो तुझ पर हमारी अपार दया थी की हम तेरे घर पधारे, और तेरे यहां भोजन पाकर तुझे कृतार्थ किया । तू सचमुच बड़ा भाग्य-शाली है बेटा ।

सुरेन्द्र जब अम्मां पूछेगी कि इतना भोजन कहाँ गया, तो क्या कहूँगा ?

नारद : (सर खुजाते हुए) कह देना कुछ मित्रों को खिला दिया ।

सुरेन्द्र : मित्रों को ?

नारद : हाँ हाँ बेटा मित्रों को । क्या मैं तेरा मित्र नहीं हूँ !

सुरेन्द्र : हाँ हो तो !

नारद : बस मैं एक मित्र दस मित्रों के बराबर हूँ ।

सुरेन्द्र : भोजन करने में ?

नारद : (कुछ बिगड़ कर) अरे जा मूर्ख, मित्र का साथ देने में ।

सुरेन्द्र : साथ देने में ?

नारद : हाँ साथ देने में ! ले इसी बात पर माँग वरदान, मन की इच्छा बता झट से ।

सुरेन्द्र : (गदगद होकर) मुझे एक नई बाइसिकल चाहिये ।

नारद : तथास्तु ! जा तेरे मन की कामना पूरी होगी । पर देख हमारे आने का ज़िक्र किसी से न करना ।

सुरेन्द्र : बिलकुल नहीं महाराज ।

[नारद पेट पर हाथ फेरते हुए जाते हैं और सुरेन्द्र खरगोश से खेलता हुआ कमरे से बाहर जाता है ।]

दारजिलिंग की यात्रा

श्रीमती सरला शंकर, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, बालिका विभाग

बहुत दिनों से दारजिलिंग के अनुपम सौंदर्य के विषय में सुन रक्खा था। इसको देखने के लिये कई बार प्रयत्न किया, परन्तु कुछ न कुछ रुकावट पड़ ही जाती थी।

अबकी बार अखिल भारतीय स्काउट कैंप दारजिलिंग में हुआ। मुझे भी इसमें जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। २५ मई को प्रातः काल मैं एक स्काउट बहिन के साथ रामबाग स्टेशन पहुँची। नियत समय पर ओ० टी० आर० गाड़ी अपनी गजगामिनी चाल और खच-खच नाद के साथ आगे बढ़ी।

गाड़ी के सारे यात्री ऊंघने लगे। मैंने खिड़की से बाहर की ओर देखा। शनैः-शनैः सूर्यदेव ने अपना प्रचंड प्रभाव दिखाया। उनकी तीक्ष्ण किरणों ने धरातल के वायु-मन्डल में अद्भुत परिवर्तन कर दिया। चारों ओर ऐसा प्रतीत होता था मानो अग्निदेव का प्रकोप हो। हरे खेत और जंगल सूखे हुये थे जिनमें कहीं कहीं बड़े और पुराने वृक्ष लू से झुलसे सिकुड़े हुये ऐसे प्रतीत होते थे मानों अपने जीवन की अन्तिम सांस ले रहे हों।

दूसरे दिन १२ बजे हमारी गाड़ी कटिहार पहुँची। यहाँ हमको गाड़ी बदलनी थी। इसके विषय में पूछने पर निश्चय रूप से यह मालूम हो गया कि रात के नौ बजे तक हमको यहाँ के विश्रामालय में रहना है। ओ० टी० आर० गाड़ी से २८ घन्टे की कठिन यात्रा के पश्चात् कटिहार के विश्रामालय में ९ घन्टे काटने असह्य प्रतीत होने लगे। इस पर प्लेटफार्म-पर मछलियों की पारसल से आने वाली दुर्गन्ध, और विश्रामालय की रक्षिका का काक के समान कठोर स्वर सिर की पीड़ा को बढ़ा देता था। जो व्यक्ति उसे बकसीस दे देता था उसकी खैर थी।

रात्रि के नौ बजे थे एकाएक घन्टी की ध्वनि गूंज उठी। देखते-देखते भयानक अन्धकार और निस्तब्धता को चीरती हुई भीषण ध्वनि के साथ गाड़ी प्लेटफार्म पर आ गई। क्षण भर में सारा प्लेटफार्म यात्रियों से भर गया। जिन्हें देखकर प्रतीत होता था कि वे अधिकतर बिहारी हैं। दूसरे दर्जे में पैर रखने तक की जगह न थी विवशतः हम लोगों ने पहले दर्जे का टिकट लिया।

पहले दर्जे का कम्पार्टमेन्ट छोटा सा था जिसमें केवल एक या दो व्यक्ति आराम से बैठ सकते थे। नियत समय पर गाड़ी अपनी पूरी रफ्तार से चल पड़ी। दो दिन की अत्यधिक थकान के कारण निद्रा देवी ने तुरन्त अपना अधिकार आ जमाया। जैसा कि होता है निर्बल पर बलवान सर्वदा विजयी होता है।

आँख खुलने पर देखा तो प्रकाश हो रहा था किन्तु आकाश मंडल काले मेघों से पूर्ण था। नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ रही थी ऐसा प्रतीत होता था मानो इन्द्रदेव प्रसन्न होकर पृथ्वी को सींच रहे हों। चारों ओर हरे-भरे लहलहाते खेत और उनके बीच नारियल और बांसों के कुंज बड़े ही सुहावने प्रतीत हो रहे थे। कहीं-कहीं छोटे छोटे स्टेशनों और सिगनल देने की चौकी के पास आम और कटहल के वृक्षों से घिरे पोखर थे जहां बालकगण क्रीड़ा कर रहे थे। और कहीं-कहीं मछली मारने वाले उन छोटे-छोटे पोखरों में अपना जाल डाले राग अलाप रहे थे। यहाँ के निवासी देखने में काले, दुर्बल और गरीब प्रतीत होते थे। परन्तु उस गरीबी में भी उनमें एक अद्भुत प्रफुल्लता और संतोष पाया जाता था। हमारी गाड़ी निर्भयतापूर्वक अपनी सीटी की भीषण ध्वनि के साथ इन हरे-भरे खेतों और मनोहर वन प्रदेशों को दो भागों में चीरते हुये आगे बढ़ रही थी।

दिन के नौ बजे के लगभग हमारी गाड़ी की चाल हलकी हुई और एक स्टेशन पर रुकी। पूँछने पर मालूम हुआ कि यही नकसल बाड़ी है जहां हमको दारजिलिंग जाने वाली गाड़ी में बैठना है। हम लोग कुली के साथ सामान लेकर आगे बढ़े। कुली आगे जा कर ट्राम के समान छोटे आकार के डिब्बों के सामने रुक गया। गाड़ी के लघु आकार को देखकर बड़ा कौतूहल हुआ।

यह स्टेशन साधारण सा है। यह चारों ओर से सघन वन और कुछ हटकर पर्वतमालाओं से घिरा

हुआ है । यहाँ से सिलीगोड़ी नामक स्थान को बसें जाती हैं ।

गाड़ी के छूटने का समय हुआ एक छोटे आकार का एंजिन आया और ज़ोर के धक्के के साथ गाड़ी में लग गया । इसके धक्के से सारा सामान फैल सा गया और यात्रीगण अपनी सीट से उछल पड़े । ठीक समय पर यह चक्कर काटती हुई एक के पश्चात् दूसरी मंजिलें तै करती हुई दारजिलिंग की ओर बढ़ी ।

यह पहाड़ी प्रदेश इतना सुन्दर और मनोहर है कि उसकी समानता करना असम्भव है । एक ओर हरे-भरे वृक्षों से ढकी गगनभेदी पर्वतमालायें जो भारतीय गौरव की प्रतीक दिखाई देती हैं और दूसरी ओर हरे रंग के आवरण से ढकी तराई जिसमें हिम गिरि से पिघल पिघल कर झर-झर करने वाले झरने अनन्त विश्राम पाते हैं । इसके वक्षस्थल पर पड़ी नागिन के समान काली सीमेन्ट की सड़क है, जो दारजिलिंग की ओर जाती है । इतने ऊँचे पहाड़ी प्रदेश में इतना सुन्दर राजमार्ग अपने बनाने वाले की अद्भुत कार्य-कुशलता का परिचय दे रहा है । इस सड़क के एक ओर हमारी गाड़ी जा रही थी और सड़क पर चलने वाली मोटर और टैक्सी अपनी छटा अलग ही दिखा रही थी ।

गाड़ी की खचखचाहट और धचकों से ऐसा प्रतीत होता था कि निश्चित स्थान तक पहुँचने के लिये इस छोटे से एंजिन को कितना परिश्रम करना पड़ रहा है । इसे देख कर हमको प्रेरणा मिलती है कि हम भी अपने जीवन संग्राम में इसी प्रकार सफलता प्राप्त कर सकें । एकाएक सामने बड़ी पहाड़ी दिखाई दी जिसका चक्कर काट कर हमारी गाड़ी को जाना था । बीच के डिब्बे से सिर निकाल कर देखा तो मुझे हँसी आने लगी । गाड़ी का आकार अर्ध-चन्द्राकार हो गया था । एंजिन के दांये बांये तथा केरियर पर बैठे कुली ऐसे प्रतीत होते थे मानो यह सदैव ही उनके बैठने का स्थान हो ।

गाड़ी "करशियांग" नामक स्टेशन पहुँची । यह स्टेशन यहाँ के अन्य स्टेशनों से बड़ा है । स्टेशन खुला है और दोनों तरफ बाजार और मकानों की लाइन है । यहाँ की रेलवे लाइन पर बालकगण निर्भयता पूर्वक खेलते हुये दिखाई देते थे ।

इसके पश्चात हमारी गाड़ी "घूमके" नामक प्रसिद्ध स्टेशन पर पहुंची । यह स्टेशन दारजिलिंग से लग भग छैः-सात मील पर है । यहाँ की घूम मोनेस्टरी प्रसिद्ध है । बाहर से आने वाले यात्री इसे बड़े चाव से देखते हैं । यह "घूम" का स्टेशन भी बाजार के मध्य में है । गाड़ी की सीटी सुनते ही बालकगण वहाँ इकट्ठे हो गये जो देखने में स्वस्थ, प्रसन्नचित्त और निर्भय प्रतीत होते थे । सीटी के साथ गाड़ी अपनी अन्तिम मंजिल तै करने चलदी । मैंने इस विचार के आते ही भय से आंखें बन्द कर लीं कि कहीं बालक पिस न जांय । उनके शोर और हंसी की आवाज से मैंने आंख खोल कर देखा वे ताली बजा कर नाच रहे थे । वास्तव में भय बाहर नहीं वरन् हृदय से होता है ।

सायंकाल के छैः बजे का समय था । सूर्य भगवान दिन भर के कठिन परिश्रम के पश्चात् अपने विश्रामालय की ओर बढ़े । सारा वातावरण शान्त और सुखद था । हमारी गाड़ी दारजिलिंग से दो एक मील दूर पर रह गई होगी । रेल की पटरी से मिली हुई सड़क पर अनेक टैक्सी और मोटरों का तांता बना था । सड़क पर प्रतिष्ठित घराने की स्त्रियाँ और बच्चे टहलने जा रहे थे जो कि रंग बिरंगे वस्त्रों से सुसज्जित थे । कुछ-कुछ फ़ासले पर पथ-निर्देशक शानदार वर्दी में थे जिनके चेहरे और शरीर की निर्भीकता चकित कर देती थी ।

गाड़ी दारजिलिंग के स्टेशन पर रुकी। नैपाली पोशाक और टेढ़े टोप में कुलियों का झुन्ड गाड़ी के सामने आया। दो कुलियों के साथ सामान लेकर हम लोग टैक्सी की ओर बढ़े। एक प्रतिष्ठित व्यक्ति स्काउट पोशाक में सामने आये। नमस्कार के पश्चात् बातचीत आरम्भ हुई और तुरन्त ज्ञात हो गया कि यही व्यक्ति बिहार प्रान्त के प्रचार कमिश्नर हैं। उनके कथनानुसार ऐसा प्रतीत हुआ कि स्काउट शिविर पास ही में है। हम लोग कुलियों की पीठ पर सामान लिये आगे बढ़े। रास्ते में पहाड़ों के ढाल पर बने सुन्दर बंगले छोटे बड़े मकान और झोपड़ियाँ नाना प्रकार के फूलों और लताओं से सुशोभित थीं। बीच-बीच का पहाड़ी ढाल एवं असंख्य रंग बिरंगे छोटे-छोटे पुष्प अपनी अनोखी छटा दिखा रहे थे। जिसे देख कर ऐसा प्रतीत होता था मानों किसी कुशल कलाकार ने अपना सारा कौशल लगा कर प्रकृति सुन्दरी के लिये एक अनुपम साड़ी तैयार की हो।

जानने योग्य बातें

फिल्म निर्माण

सन् १९४८ में चलचित्र फिल्म उत्पादन में अमेरिका ने ४०० तथा भारत ने २५० फिल्में तैयार कीं और ये दोनों देश विश्व में अग्रणी रहे।

टेलीफोन

अमेरिका में प्रति ४ व्यक्ति पीछे एक टेलीफोन है।

दुःख की बात

हमारे देश में लगभग २५ लाख व्यक्ति क्षयरोग से पीड़ित रहते हैं। प्रति दिन १४०० मरते हैं अर्थात् प्रति मिनट प्रति व्यक्ति।

व्यक्ति रेडियो

व्यक्ति रेडियो—पहिली जून से अमेरिका में लोग खेतों और सड़कों पर भी अपने आप बातें कर लेते हैं। वास्तव में वे एक विचित्र नवीन आविष्कृत रेडियो द्वारा दूसरों से बातें करते हैं।

नवीन प्रकार के रेडियो सैट में समाचार प्राप्त करने और भेजने का प्रबन्ध है। यह एक छोटे कैमरा के आकार का है जो जेब में रक्खा जा सकता है। नागरिक रेडियो सर्विस के द्वारा टैलिफोन एक्सचेंज की तरह एक मनुष्य दूसरे से बात कर लेता है।

चिड़ियाँ भी सिगरेट पीने लगीं

इसी मास में गिल्फोर्ड फायर ब्रिगेड को दो बार पेड़ों में लगी आग बुझानी पड़ी। अब पता चला है कि कुछ चिड़ियाँ अधजले सिगरेटों को अपनी चोंच में दबा कर उठा ले जाती थीं और उन्हें अपने घोंसले में छोड़ देती थीं। वही आग सुलगते-सुलगते पूरे पेड़ में लग जाती थी। भगवान हमारे देश को इस विपत्ति से बचावें नहीं तो हम गरीबों को बेघरबार होना पड़ेगा।

काम करने वाले हाथी ?

हाथी हमारे देश का चिरपरिचित जानवर है। प्राचीन काल के युद्धों में इसका महत्वपूर्ण उपयोग होता था। आजकल भी राजे और रईस इसके द्वारा अपने को सम्मानित करते हैं। इसके अतिरिक्त जंगली हाथियों को पालतू बना कर के उनसे काम भी कराया जाता है। ब्रह्मा के जंगलों में हाथियों द्वारा लकड़ी ढोने का काम लिया जाता है। उन हाथियों की दशा कैदियों की भांति नहीं होती प्रत्युत उन्हें भी स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करने का पूरा अवसर दिया जाता है। अधिकांश बातों में वे जंगली हाथियों से उत्तम जीवन व्यतीत करते हैं जिससे वे स्वस्थ तथा प्रसन्न दिखाई देते हैं।

जंगली अवस्था में एक हाथी चौबीस में से १८-२० घन्टे खाता रहता है, इसकी विशाल काया को हरे भोजन से भरने के लिए यह समय लग जाता है। खाते समय हाथी पत्तियाँ तोड़ता और पेड़ गिराता बराबर चलता रहता है। सोता बहुत ही कम है—एक बार में एक-दो घन्टे से अधिक नहीं।

लकड़ी वाले हाथी प्रतिदिन ३-४ घन्टे से अधिक काम नहीं करते हैं। सवेरे तड़के—और वह भी हफ्ते में सिर्फ चार दिन। गर्मियों में उनसे कोई काम नहीं लिया जाता है। लेकिन इतना काम भी उसके शरीर पर काफी बोझ डालता है, जिसको बराबर करने के लिए उसे प्रतिदिन नमक और इमलियां दी जाती हैं जो उसे बहुत ही रुचती हैं। रोज उसे नहलाने के लिए ले जाया जाता है और उसके शरीर को खुरदरी छाल और नारियल के बकलों द्वारा रगड़-रगड़ कर साफ किया जाता है। बेकारी के घन्टों में उसके एक जंजीर बांध दी जाती है, जिससे जंजीर के निशानों के जरिये उसका पता लगाया जा सके, और घूमने फिरने को मुक्त रहता हैं। अक्सर उसके गले में लकड़ी की घंटियां डाल दी जाती हैं। खतरनाक हाथी पीतल की घंटियां पहनते हैं जिससे लोग उनसे सचेत रह सकें।

हाथी का जीवन-चक्र मनुष्यों जैसा ही है। बच्चों को १६ वर्ष की अवस्था में हल्के काम पर लगा दिया जाता है और वह २५ वर्ष की अवस्था होने पर पूर्णतः विकसित हो जाता है। मादा १८ वर्ष की अवस्था में गर्भ धारण करने योग्य हो जाती है। यद्यपि यह उम्र काफी कच्ची है। ६५ वर्ष के होते-होते वे काम लायक नहीं रह जाते और शायद ही कभी ७५ वर्ष से अधिक जीवित रहते हों।

भारतीय हाथी कंधे तक ८-९ फीट ऊंचा रहता है और वजन में करीब १४० मन। नरों के अक्सर लंबे दांत होते हैं। लेकिन यह कोई व्यापक नियम नहीं है। बिना दांत के हाथियों को बर्मा में 'हाइन' कहते हैं। बर्मा और भारत के महावतों का कहना है कि 'हाइन' दांत वाले हाथी को अपने विरोधी के दांतों में सूंड डाल कर और झटका देकर उसे हरा देता है। जो कुछ भी हो, पर दांत वाले हाथी ही समूह के नेता होते हैं।

हाथी साधारणतः सीधे होते हैं, यद्यपि बदमाश हाथी भी मिलते हैं। इनकी बदमाशी का मुख्य कारण अक्सर पुराने पीड़ामय जख्म होते हैं या दांत की तकलीफ।

कभी कभी नर हाथी मस्ती में आते हैं। मस्ती का यौवनक्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि इसका मुख्य कारण है—एक विशेष प्रकार की मस्तक-ग्रन्थियों का अत्यधिक स्राव। जब हाथी मस्ती में आता है तो दौरा खत्म न होने तक उसको बांध कर हाथ से खिलाया जाना आवश्यक हो जाता है। छूट जाने पर वह खतरनाक हो सकता है।

जंगल के प्रमाण से हाथी देखने, सूंघने और सुनने की विशेष तीव्र शक्ति नहीं रखते हैं। वास्तव में उसके भय के लिए है भी क्या, सिवाय इसके कि कभी बाघ उसके बच्चों को मार डालते हैं।

हाथियों में यूथ-भावना इतनी प्रबल होती है कि एक बार यह भावना बर्मा रेलवे के एक स्टेशन के नाश का कारण बन बैठी। एक जर्मन फर्मन ने एक बार एक शिशु हाथी खरीदा। जानवर को डब्बे में रख दिया गया और डिब्बे को रात के लिए एक साइडिंग में पहुँचा दिया गया। ऐसे व्यवहार से अनभ्यस्त बच्चा चिल्ला-चिल्लाकर अपना कोमल दिल फाड़ने लगा। यह चिल्लाहट आस-पास से तमाम हाथियों को खींच लाई और इन सबने

डिब्बे को तोड़ना शुरू कर दिया। बच्चे को छुड़ाने के बाद वे स्टेशन पर टूट पड़े।

अधिकांश लकड़ी ढोने वाले हाथी काम करने वाले कैंपों में ही पैदा होते हैं। इनके माता-पिता उसी कैम्प में काम करने वाले नर-मादा हो सकते हैं, और कभी-कभी मादा के पास जंगली यूथ का कोई नर चक्कर लगता रहता है। यह कहना कठिन होता है कि कब दो हाथी जोड़ा खायेंगे क्योंकि उनमें पहले से कोई उत्तेजना दृष्टिगोचर नहीं होती और न कोई विशेष रति काल ही। दो जानवरों में मित्रता का उदय होता है, धीरे-धीरे अटूट साथीपन में परिणत हो जाता है। फिर बिना साथ हुए वे कोई काम ही नहीं करते। इसके कुछ हफ़्तों या महीनों बाद दोनों में संयोग होता है।

गर्भ काल १८ से १२ महीने तक होता है। पर किसी के लिए यह जानना मुश्किल होता है कि कब एक मादा गर्भ से है। हाथी की पसलियां रीढ़ से खूब फैली रहती है। अतः गर्भ का पता लगना मुश्किल हो जाता है। ऐसा कई बार हुआ है कि मादा अपने पीछे-पीछे अपने नवजात शिशु को लिए हँसी-खुशी कैम्प में दाखिल होती है--जिसके पूर्व किसी को उसके गर्भवती होने का अंदेशा तक न था।

बच्चा पैदा होते ही चलने लग जाता है। शुरू में सूंड़ अविकसित होती है। बच्चा सूंड़ को ऊपर लपेट के पानी सुड़कता है। लोक विश्वास के विपरीत हाथी अपनी सूंड़ से पानी नहीं पीता। वह सूंड़ में पानी भर कर उसे अपने मुंह में वापिस उड़ेल लेता है।

हाथियों का दूसरा स्रोत होता है 'खेड़ा'--एक बाड़ा जिसका चौड़ा मुंह धीरे-धीरे सकरा होकर बोतल के गले की तरह होता है जिसमें झुंड हाँक दिये जाते या खुद भटक जाया करते हैं।

हाथियों का काम होता है सागौन के लट्ठों को जंगल से नदियों या गाड़ियों तक पहुँचाना।

जब नदी तक लट्ठे पहुँचाने का काम भैंसा गाड़ियों से लिया जाता है, तब हाथी गाड़ी में लट्ठे भरने का काम करते हैं। अच्छे दांत वाला हाथी पूरे के पूरे लट्ठे अपने दांतों से ऊपर उठा लेते हैं—अकेला गाड़ी पर लाद देता है और उसे ठीक से गाड़ी में जमा देता है।

जब नदी की धारा में लट्ठे अटक जाते हैं तो उन्हें आगे बढ़ाने के लिए हाथी भेजे जाते हैं। अपने सिर और दांतों से ठेल-ठेल कर वे लट्ठे को सीधा टेढ़ा कर प्रवाह जारी कर देते हैं।

हाथियों के साथ काम करने वाले लोग हाथियों को वैसा ही समझते हैं, जैसा कि किसान अपने बैलों को और वे उन्हें दयालु तथा चतुर जानवरों के रूप में जानते हैं।

आदर्श बालचर

श्री गिरिधारीलाल शास्त्री, एम० ए०, धर्मसमाज ट्रेनिंग कालिज, अलीगढ़

[यह कविता स्काउट-ट्रेनिंग कैम्प, अलीगढ़ में पढ़ी गई थी]

है गूंज रहा विश्व के कण-कण में यही स्वर—
"आदर्श हैं संसार में भारत के बालचर।"
किसको न याद नाम बालचर महान का?
बजरंग बली शूरवीर हनूमान का?
है पा सका न पार कोई उसकी शक्ति का।
वह रख गया आदर्श शुद्ध देश-भक्ति का॥
सागर को लाँघ गया और बदल लिया वेश।
झट छान डाला शत्रु का सारा विशाल देश॥
घूमा गली-गली में और डाल-डाल पर।
वह मुसकराया राक्षसों की चाल-चाल पर॥
पर अन्त में सीता सती का भेद जान कर।
वह खेल गया बालवीर अपनी जान पर॥
अपना शरीर जलाकर, दुष्टों को जलाया।
मारा उन्हें, परन्तु अपना प्राण बचाया॥
निज बुद्धि के चातुर्य से अति सूक्ष्म वेश में।
वह धँस गया था शत्रुओं के दूर देश में॥
फिर लाँघकर समुद्र वह लौटा स्वदेश में।
आदर्श भक्ति! देश, ईश औ' नरेश में!!
तब पर्वतों ने कहा, सागर-धार ने कहा।
कण-कण ने कहा, औ' सकल संसार ने कहा॥
"जन्मा नहीं कोई कहीं हनुमान सा चतुर।
जन्मा नहीं कोई कहीं उस जैसा वीरवर॥"
है गूंज रहा विश्व के कण-कण में यही स्वर--
"संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर।"
संसार में आदर्श मोरध्वज की सचाई।
उस वीर ने सुत-शीश पर थी आरी चलाई॥
कुछ भी न दुःख हुआ था कर्तव्य-ज्ञान में।
वह मुसकराया बचन पालने की शान में॥
मुसकान थी, न आँसुओं का था कहीं निशान।
संसार ने कहा कि वह था बालचर महान!!
बचनों को निबाहा था उसने पुत्र चीर कर।
संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर!!"
है गूंज रहा विश्व के कण-कण में यही स्वर।
"संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर!!"
सेवा महान धर्म है यह हमने सिखाया।
इस धर्म पर बलिदान होकर हमने दिखाया॥
हमने ही सिखाया कि एक भूमिपाल भी।
बन जायगा सेवा के लिए चाण्डाल भी॥
सम्राट की रानी ने यहाँ भरा था पानी।
युवराज रोहताश की है अमर कहानी॥
हरिश्चन्द्र ने पाला था धर्म वंश बेचकर।
संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर!!
है गूंज रहा विश्व के कण-कण में यही स्वर।
"संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर॥"
संसार को प्रह्लाद और ध्रुव का ध्यान है।
गोबिंद गुरु के सुतों का पूर्ण ज्ञान है॥
होली में जले, बनों बीच कष्ट भी सहे।
दीवाल में चुने, परन्तु अटल ही रहे॥
ये वीर हुए विश्व के इतिहास में अमर।
संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर॥
है गूंज रहा विश्व के कण-कण में यही स्वर।
"संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर॥"
इस युग में भी गांधी ने हमें मार्ग दिखाया।
संसार को सेवा का महापाठ पढ़ाया॥
दयानन्द, मालवीय ने दिखा दिया प्रकाश।
इस देश में ही हुआ विश्व वीर श्रीसुभाष॥
इस भूमि में असंख्य भरे मोती जवाहर!
संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर॥
है गूंज रहा विश्व के कण-कण में यही स्वर।
"संसार में आदर्श हैं भारत के बालचर॥"

वन संरक्षण एवं वृक्षारोपण

श्री रामजियावन सिंह यादव, साहित्यरत्न

हमारी संस्कृति के निर्माण में वनों का एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन साहित्य में वनों को केवल अनुपयुक्त भूखंड अथवा मनुष्य की शान्ति के विघातक हिंसक पशुओं का निवास स्थान मात्र न मान कर लोगों की भौतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन समझा जाता था। ऋषि, तपस्वी, सन्यासी, विद्यार्थी, गृहस्थ एवं नरेश सभी इन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन समझते थे। आचार्य कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में वनों को राजकीय संपत्ति का एक अत्यन्त उपयोगी अंग बतलाया है। उन्होंने वन से प्राप्त होने वाली विविध प्रकार की वस्तुओं का वर्णन करते हुये राजा को उसकी रक्षा करने की सम्मति है।

बहुत दिनों की उपेक्षा एवं सर्वनाश के पश्चात् सबसे पहले सन् १८६४ ई० में भारत सरकार ने निम्न सिद्धान्तों के आधार पर वन नीति की घोषणा की।

१—देश की जलवायु सम्बन्धी तथा भौतिक स्थिति को सुरक्षित रखने के लिए वन बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

२—लोगों के हित के लिए पर्याप्त वनक्षेत्र सुरक्षित रखना आवश्यक है।

३—खेती-बाड़ी में अधिक भूमि घेर कर वनक्षेत्र को निर्धारित सीमा से कम नहीं करना चाहिए।

४—वनक्षेत्र से अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त करना चाहिए।

यद्यपि इस नीति के फल-स्वरूप एक सुन्दर वन-क्षेत्र का निर्माण हो गया किन्तु कुछ प्रारम्भिक समय को छोड़ कर वनों के विकास में कोई प्रगति नहीं दिखलाई पड़ी। देश की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आवश्यकताओं को देखकर अब इस ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा है जिसके फलस्वरूप केन्द्र की ओर से कई स्थानों पर वन्य अनुसन्धानशालाएँ स्थापित की गई हैं और प्रान्तीय सरकारों ने भी अपने अपने क्षेत्रों में पुराने वनों की रक्षा, वृद्धि, सदुपयोग एवं व्यापक रूप से वृक्षारोपण का आन्दोलन आरम्भ कर दिया है। इस वर्ष भी संयुक्त प्रान्त की सरकार ने वृक्षारोपण के आन्दोलन के लिए कृषि विभाग को एक लाख रुपये व्यय करने का आदेश दिया है।

२८ मार्च को होने वाले मैसूर के अन्तर्राष्ट्रीय वन-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुये राष्ट्रीय सरकार के खाद्य एवं कृषि मंत्री माननीय श्री जयरामदास दौलतराम ने कहा है कि "सन् १९५१ तक देश को खाद्यान्नों के आयात से मुक्त करने के निश्चय को कार्यान्वित करने के लिए उत्तम खाद, बीज एवं पानी की सुविधा के अतिरिक्त भूमि संरक्षण पर भी हमारा ध्यान है।" अतः आवश्यक है कि कृषि योग्य भूमि को रेगिस्तान बनने से बचाने एवं उसकी उर्वरा शक्ति को स्थिर रखने के लिए मैदानी भाग स्थित वनों की रक्षा और वृक्षारोपण के आन्दोलन का अधिकाधिक प्रचार किया जाय। हमारे देश में वर्षा एवं बाढ़ से प्रति वर्ष नदियों के तट की बहुत सी उपजाऊ भूमि बेकार हो जाया करती है। इसकी रक्षा का भी सबसे सरल उपाय यह है कि नदियों के तट पर वृक्ष लगा कर उनके कटाव से भूमि की रक्षा की जाय। परीक्षण द्वारा सिद्ध हुआ है कि ऊसर भूमि में बबूल के वृक्ष लगाने से वह उपजाऊ बन जाती है। इससे भूमि सुधार एवं लकड़ी की प्राप्ति इन दो लाभों की पूर्ति होगी इनके अतिरिक्त बड़े-बड़े उजाड़ भूखंडों और पक्की तथा कच्ची सड़कों और रेलवे लाइनों के तट कुयें व तालाव के पास, स्कूल, अस्पताल, घरके हाते तथा अन्य खाली जगहों पर वृक्ष लगा कर उनसे होने वाले लाभों को प्राप्त किया जा सकता है।

सभी लोग इस बात को जानते हैं और कृषक बन्धु स्वयं भी अनुभव करते हैं कि गोबर की खाद कृषि के लिए अत्यन्त उपयोगी वस्तु है। किन्तु जानते हुए भी वे विवश हैं क्योंकि लकड़ी का ईंधन उन्हें पर्याप्त नहीं होता। ईंधन की इस समस्या का हल वृक्षों की वृद्धि है। इस प्रकार वृक्षों की वृद्धि से हमारी कृषि सम्बन्धी उत्पादन की समस्या भी बहुत अंशों में सुलझ जायगी।

आज भी हमारे देश के एक चौथाई भाग में वन हैं किन्तु प्रान्तीय और रियासती वन विभागों के अन्तर्गत वनों के अतिरिक्त शेष वनों को उन्नत एवं उनका सदुपयोग करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है। इससे ये वन भूमि की कटाई से रक्षा, बाढ़ की रोक-थाम, ईंधन और इमारती तथा अन्य उपयोगी लकड़ी आदि सभी दृष्टियों से अनुपयुक्त है। आवश्यकता इस बात की है कि इन घने वनों तक रेलें और सड़कें निकाली जाँय और अनुपयुक्त वृक्षों को कटवा कर उनकी जगह उपयुक्त और औद्योगिक दृष्टि से महत्वपूर्ण वृक्षों को लगवाया जाय।

भारत सरकार सम्यक् राष्ट्रीय हित की दृष्टि से ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहन देना आवश्यक समझती है जिनका बहुत कुछ आधार वनों से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ ही हो सकती हैं। यथा, तेल, राल, गोंद, चर्बी, औषधि बेंत, बाँस, शहद, लाख आदि वस्तुओं द्वारा लाखों व्यक्तियों के जीवन निर्वाह का प्रश्न हल किया जा सकता है। सरकारी प्रोत्साहन से ताड़ द्वारा गुड़ा बनाने के व्यवसाय में ५० लाख परिवारों को लगाने का प्रयत्न किया जा रहा है। वनों से प्राप्त सामग्री से यदि हाथ द्वारा कागज बनाने के व्यवसाय को प्रोत्साहन दिया जाय तो मैं समझता हूँ कि इस व्यवसाय में कई लाख परिवार लगाये जा सकते हैं। इन ग्रामीण उद्योग धंधों के अतिरिक्त, दियासलाई, परतदार लकड़ी की संदूक, रेल, जहाज, टेलीफोन, तार, बिजली आदि में प्रयोग होने वाली लकड़ी आदि उद्योगों को विस्तृत पैमाने पर विशेष रूप से बढ़ाया जा सकता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वृक्षों का सम्बन्ध प्राकृतिक वर्षा और स्वास्थ्य से भी है। वृक्षों के अभाव से भूमि की आर्द्रता और उर्वरता नष्ट हो जाती है और पानी भी कम बरसता है। दूषित वायु को अपने लिए उपयोगी बना लेने की वृक्षों में प्रकृतिक शक्ति है। जन-वृद्धि और वृक्षों का ह्रास इस विषम परिस्थिति के कारण आज रोगों की वृद्धि पर नियंत्रण करना एक दुष्कर कार्य सिद्ध हो रहा है।

वृक्षों की इन उपयोगिताओं को ही दृष्टि में रख कर हमारे पूर्वजों ने वृक्षों में देव रूप की कल्पना की थी और बहुत बड़े दानी और परोपकारी को इनकी उपमा

'सेवा' का सन्देश

खाद्य मोर्चा

प्रत्येक भारतवासी का प्रथम कर्तव्य है कि खाद्य के उत्पादन में और खाद्य सामग्री के अभाव की रोकथाम करने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करे। प्रत्येक स्काउट को इस कार्य में कुछ न कुछ ठोस कार्य करना आवश्यक है। अन्न में ही प्राण है। प्राण की रक्षा के लिए अन्न की रक्षा और वृद्धि हमारा धार्मिक कर्तव्य हो जाता है।

वर्षा ऋतु के तीन महीनों में चावल का प्रयोग स्वास्थकर नहीं होता। अतः इन महीनों में इस अन्न के सेवन न करने से चावल की काफी बचत हो सकती है। इसी प्रकार जाड़े के तीन महीनों में ज्वार, बाजरा और मकई की रोटी खाने में बड़ा आनन्द मिलता है। अतः इस अवधि में गेहूँ की बचत हो सकती है। ऐसे अनेकों प्रकार के मौसमी अनाज फल और शाक हैं जिनके सेवन से भूक पूर्णरूप से शांत हो जाती है और स्वास्थ्य भी कायम रहता है। इस प्रकार उन अनाजों की हम बचत कर सकते हैं जिनका अभी हमारे देश में अभाव है।

आइये हम इस बात का दृढ़ संकल्प करें कि हम खाद्य के अभाव के दुश्मन को शीघ्र मार भगावेंगे।

अन्तरप्रान्तीय समाचार

गया

जिला हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन ने महात्मा बुद्ध जयन्ती में अच्छी तरह भाग लिया। स्काउट तथा बालिका स्काउटों ने महात्मा बुद्ध की अस्थियों को उचित सम्मान प्रगट किया। स्काउट तथा बालिका स्काउट बौद्ध-गया अपने नेता श्री केदारनाथ सहाय, जिला स्काउट प्रचारक तथा श्रीमती गार्गी सिंह, प्रधान मन्त्रिणी, जिला असोसिएशन के नेतृत्व में हाइक में गये और (१२ मई) 'वैशाखी पूर्णिमा' महोत्सव में भाग लिया। स्काउट तथा बालिका स्काउट ने महोत्सव के सभापति माननीय श्री कृष्णसिंह, प्रधान मंत्री विहार को रायफल तथा बैण्ड से गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

महात्मा बुद्ध के मन्दिर के समीप जाकर भी स्काउटों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

तेजस्वी स्काउट शिक्षा-शिविर अजमेर

तेजस्वी चरपुंज प्रथम हिन्दुस्तान स्काउट दल अजमेर द्वारा आयोजित १३वाँ तेजस्वी स्काउट शिक्षा-शिविर इस वर्ष २६ से ३१ मई तक पुष्कर से लगभग १ मील आगे गनाहेड़ा ग्राम के हरे-भरे रमणीक और छायादार चमेली के बाग में हुआ।

शिविर संचालक श्री यज्ञदत्त अक्षय की देख रेख में शिविरवासियों को स्काउट शिक्षा के अन्तर्गत ध्रुवपद और गुरुपद के विषयों की शिक्षा के साथ-साथ जंगल के विविध खेलों द्वारा आत्मविश्वास, खोज विद्या और शिविर जीवन तथा तैरने का अभ्यास भी कराया गया।

शिविर की सफलता की शुभकामनाएँ भेजते हुए हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के नेशनल हेडक्वार्टर्स सेक्रेटरी श्री जानकीशरण जी वर्मा ने लिखा कि "आशा है स्काउट खूब खेलेंगे, खायेंगे और हँसेंगे तथा हिन्द के नागरिक होने का गौरव अनुभव कर के मोटे हो जायँगे।"

शिविर सफलतापूर्वक समाप्त हुआ और स्काउट स्वस्थ और सानंद लौटे।

अखिल भारतीय ग्रीष्म-शिक्षण-शिविर, दारजिलिंग

इस वर्ष विहार प्रान्तीय असोसिएशन के निमंत्रण पर उनके ग्रीष्म शिक्षण-शिविर को अखिल भारतीय रूप देकर पंडित श्रीराम वाजपेयी, नेशनल कैम्प डाइरेक्टर, तथा नेशनल आर्गनाइजिंग कमिश्नर ने स्वयं उसका संचालन करना स्वीकार किया, और इस प्रकार विहार प्रान्त के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों के शिक्षार्थियों को भी इस शिविर में सम्मिलित होने का अवसर मिला। यह शिक्षण शिविर दारजिलिंग में हुआ। इस कैम्प की विशेषता यह थी कि इसमें चर शिक्षकों और चर शिक्षिकाओं के अतिरिक्त बालक तथा बालिकाएं भी सम्मलित थीं और उन सब का कैम्प-जीवन एक साथ ही व्यतीत होता था। श्रीमती सी० मोहनी, संयुक्त नेशनल आर्गनाइजिंग कमिश्नर फ़ार गर्ल्स, भी इस कैम्प में उपस्थित थीं। पं श्रीराम वाजपेयी के आवश्यक कार्यवश मद्रास तथा पूना चले जाने के पश्चात् इस शिविर का संचालन श्री जानकी शरण वर्मा, नेशनल हेडक्वार्टर्स सैक्रेट्री ने किया। श्री कैलाश प्रसाद सिंह की सहायता से यह शिक्षण-शिविर बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसका पूर्ण विवरण 'सेवा' के आगामी अंक में आयेगा।

द्वारा सम्मानित किया जाता था। धर्मशास्त्रों में वृक्षारोपण को इहलोक-परलोक दोनों में सुख-शान्ति का प्रदायक एवं स्वर्ग प्राप्ति का साधन बतलाया गया है। इस धर्मभावना के साथ ही साथ आज जब कि कृषि, उद्योग, यातायात एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ भी मानव समाज को चुनौती दे रही हैं तो आवश्यक हो जाता है कि जनता एवं सरकार दोनों के सहयोग द्वारा वृक्षारोपण के आन्दोलन को एक महान पुण्य कार्य के रूप में संचालित किया जाय। इसके लिए सबसे उपयुक्त समय इस वर्षा काल में इस पुण्य यज्ञ में हम सबको अवश्य ही जुट जाना चाहिए।
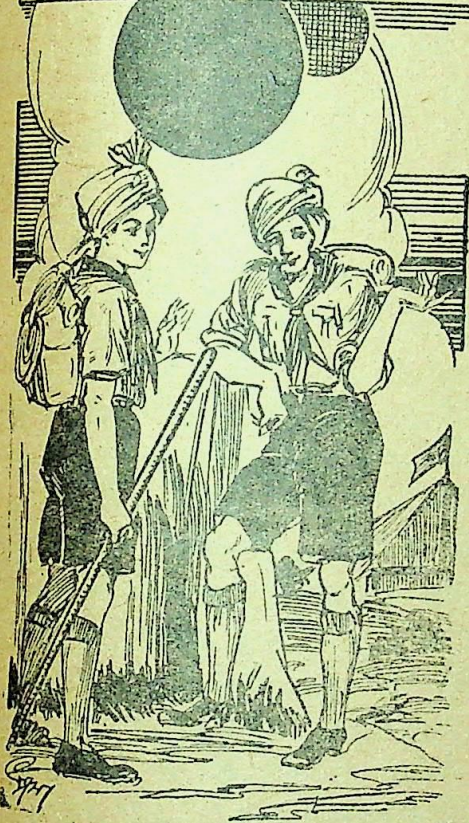
ग्रीष्म शिक्षण शिविर, मसूरी

इस वर्ष असोसिएशन का वार्षिक ग्रीष्म शिक्षण शिविर शीतलाखेत में नहीं हुआ। वर्किंग कमेटी ने ७ मई को देहली में हुई अपनी मिटिंग में यह निश्चय कर दिया था कि ज़िला स्काउट असोसिएशन, देहरादून तथा गढ़वाल, द्वारा आयोजित मसूरी तथा टेहरी में होने वाले शिविरों को प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स की संरक्षता में प्रान्तीय स्काउट अधिकारियों द्वारा ही संचालित किया जाय। फलतः, जो शिक्षण शिविर १ जून से १५ जून तक श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, की अध्यक्षता में मसूरी में हुआ उसका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जाता है।

मसूरी पहाड़ का सौन्दर्य सुविख्यात है। लोग उसे 'पहाड़ों की महारानी' के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं है। फिर, शिक्षण शिविर के लिये जो स्थान निश्चित किया वह सोने पर सुहागा था। उसकी छटा अनुपम थी। स्काउट शिविर के लिये वह स्थान अत्यन्त उपयुक्त तथा आदर्श रूप था। इसके चारों ओर विशाल पर्वत और नीचे की ओर पहाड़ की घाटियाँ और घने जंगल और सबसे बढ़कर स्काउट खेल तथा कवायद करने का लम्बा-चौड़ा मैदान शिविर की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। उस स्थान का नाम रुक्मिणी निवास था। यह कैमेल्स बैक रोड पर हवा-घर के नीचे की ओर लगभग ३ फर्लांग के फ़ासले पर है। इसकी ऊँचाई ६८०० फ़ीट है। इसमें रहने के लिये दो बंगले थे। पानी के बम्बे और बिजली की रोशनी का पूरा प्रबन्ध था। मसूरी की रौनक के होते हुए भी वह एक जंगली स्थान था। कुली लोग रात को ८ बजे के बाद वहाँ जाते हुए घबड़ाते थे। और कहते थे बाबू इतनी रात गई हम वहाँ नहीं जायेंगे क्योंकि उधर ऐसे समय वहाँ चलने वालों का तेल निकाल लेते हैं। ऐसा स्थान प्राप्त करने का श्रेय श्री नरेन्द्र कुमार जैन, जिला स्काउट कमिश्नर देहरादून को है।

सब शिक्षार्थी ३१ मई को देहरादून में एकत्रित हो गए और पहिली जून को प्रातःकाल वे मोटर बस से राजपुर तक पहुँचे। वहाँ से सब लोग पैदल हाइक करते हुए दोपहर में १२½ बजे मसूरी पहुँचे। श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर जो इस शिविर के संचालक थे पहिले से शिविर-स्थल पर उपस्थित थे। उन्होंने शिक्षार्थियों का स्वागत किया और उन्हें चाय पिलाई जिससे वे सब लोग फिर ताजा हो गए। इस बीच में खाना तैयार था वह परसा गया। कुछ ठंडा होने के बावजूद भी लोगों ने खूब मन भर कर खाया। उसके बाद ही शिविर संचालक ने सब शिक्षार्थियों को कैम्प के नियम, दिन-चर्या, कार्यक्रम और अनुशासन के महत्व को समझाया, और यह भी बताया कि कैम्प में हमें सबसे पहिला पाठ स्पर्धाभाव (Sporsman Spirit) से कार्य करने का सीखना है। जब विभिन्न दलों में प्रतियोगिता होगी तो कोई दल जीतेगा कोई हारेगा। हारने से हताश नहीं होना

है और जीतने से गर्व से फूल नहीं जाना है। हारे हुए दल को गिरी हुई नजर से नहीं देखना है। सब की जीत में बराबर खुशी मनाना है। जीतने वाला दल अपनी जीत को कायम रखने का प्रयत्न करे और हारने वाला पूरा जोर लगाकर जीतने का प्रयत्न करे। उस दिन से सब शिक्षार्थी एक बड़े परिवार के सदस्यों की भांति आपस में प्रेम बढ़ाते हुए एक नियमित जीवन व्यतीत करते रहे और हर प्रकार की शिक्षा जो उन्हें दी गई पूर्ण रुचि के साथ मन लगाकर प्राप्त करते गये।

शिविर का दैनिक कार्यक्रम प्रातःकाल ५ बजे से प्रारम्भ होता था और रात्रि के १०½ बजे तक चलता था। प्रातः ५ बजे जग कर दिशा-जंगल से निवृत्त होने के पश्चात् ६½ बजे शारीरिक व्यायाम, सवा सात बजे झंडा प्रार्थना, साढ़े सात बजे चाय, आठ बजे से ९ बजे तक राइफल की शिक्षा, फिर ९ से ११ बजे तक स्काउटिंग के विषयों का शिक्षण होता था। ११ से १२ तक स्नान इत्यादिक से निवृत्त होकर १२ बजे सब लोग भोजन करते थे। फिर १½ बजे तक आराम करके २ बजे तक अपने नोट लिखते थे। फिर दस्तकारी और स्काउट गानों का अभ्यास किया जाता था। सवा तीन बजे से साढ़े चार बजे तक स्काउट विषयों का शिक्षण होता था। साढ़े चार बजे चाय पी कर लाठी इत्यादिक सिखलाई होती थी। फिर स्काउटिंग के साहसपूर्ण खेल होते थे। पौने सात बजे झंडा उतारा जाता था। आठ बजे खाना आरम्भ होता था और ९ बजे रात्रि में कैम्प फायर। ठीक १०½ बजे सब शिक्षार्थी सो जाते थे।

स्काउटिंग में गांठ-विद्या, बन-विद्या, कुल्हाड़ी चलाना, बनों से लकड़ी काट कर लाकर गैजेट बनाना, झोंपड़ी तैयार करना, विभिन्न प्रकार के पुल बनाना, संकेत विद्या और उनकी सहायता से खज़ाने की खोज करना, झंडियों से सीमाफोर व जर्मन मोर्स और सीटी की आवाज द्वारा, व गूंगे इशारों से बातचीत करना, इनके अतिरिक्त स्काउटिंग के और सभी विषयों की शिक्षा भी इस शिविर में दी गई। नेतृत्व का गुण उत्पन्न करने और टोली विधि के अनुसार सामूहिक रूप से कार्य करने और संघ शक्ति के महत्व को समझाने का पूरा प्रयत्न किया गया। स्काउट नियम तथा प्रतिज्ञाओं के महत्व पर अधिक जोर देते हुए चरित्र-गठन पर विशेष ध्यान दिया गया।

क्लास रूम की पढ़ाई और व्याख्यानों को जहाँ तक सम्भव हुआ नहीं होने दिया गया। प्रायोगिक कार्यों में ही सब लोगों को अधिक व्यस्त रखा गया इसलिए इस कैम्प में भाग लेने वालों को बड़े ही आनन्द का अनुभव हुआ।

कैम्प के दौरान में हमारे प्रान्तीय कमिश्नर, प्रोफेसर मदन मोहन, बहुधा इस कैम्प में पहुँच कर शिक्षार्थियों का पथ-प्रदर्शन करते रहते थे और इस प्रकार शिक्षार्थियों को बड़ा ही प्रोत्साहन मिलता रहता था। प्रोफेसर साहेब ने नजदीक से शिविर के कार्य को देखा। कैम्प में एक दिन सब के साथ खाना खाया और कैम्प-फायर में भाग लिया। शिक्षार्थियों को भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि "मैंने आपके कार्य को नजदीक से भी और दूर से भी देखा, मैंने यह पूरी कोशिश की कि मैं आपके कार्य में कोई त्रुटि निकाल सकूँ परन्तु मुझे अत्यन्त सन्तोष के साथ कहना पड़ता है कि मुझे एक भी त्रुटि आपके कार्य में नहीं मिली। मुझे प्रसन्नता है कि आप लोग इतने उत्साह और लग्न के साथ इतने साहसपूर्ण कार्य करते हुए अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आपका कैम्प फ़ायर भी बहुत ही अच्छा हुआ है।" तत्पश्चात् प्रान्तीय कमिश्नर साहब ने उस रोज "खज़ाने की खोज" करने वाली टोली को विशेष रूप से और बाकी दलों के सदस्यों को भी लड्डू बाँटे।

समय-समय पर इस शिविर में कई एक व्यक्ति दर्शक के रूप में आते रहे हैं। एक दिन श्री मातासरन वहाँ आए और उन्होंने शिविर के खर्च के लिए २०) का दान दिया। पंडित गोपीनाथ कुँजरू बार-एट-ला; सरदार किशन-सिंह, प्रिंसिपल गुरु नानक हायर सैकंडरी स्कूल, देहरादून; ज़िला इन्सपैक्टर आव स्कूल्स; एस० डी०, आई०; प्रिन्सिपल, रमादेवी व्वायज़ हायर सैकंडरी स्कूल मंसूरी; वाइस प्रिंसिपल, घनानन्द हायर सैकंडरी स्कूल, मंसूरी; श्री एम० डी० मौदगिल, श्री भागवत प्रसाद, -रिटायर्ड चीफ़ जस्टिस; और इनके अतिरिक्त कई एक व्यक्ति आते रहे। उन सभी ने शिविर के कार्य और प्रबन्ध की सराहना की। इनमें से कुछ व्यक्तियों ने खाने में भाग लिया कुछ

ने चाय में। उनका यह कहना था यह खाना घर के खाने से भी अधिक मज़ा देता है।

श्री एम० डी० मौदगिल, एक समय पंजाब के बड़े नामी स्काउट कार्यकर्ता रहे हैं। उन्होंने मिस्टर हॉग के साथ कार्य किया था। वे गिलवैल ट्रेन्ड भी हैं और कई एक बार इन्टर नेशनल जम्बूरी में गए। स्काउट-कला के वे विशेषज्ञ हैं। कैम्पटी फाल में हाइक पर जाते हुए अचानक उनसे मुलाकात हो गई। उन्होंने उत्सुकतापूर्ण इस कैम्प का ब्यौरा मांगा। उन्हें कैम्प में आने का निमंत्रण दे दिया गया। वे आये भी। दीक्षा संस्कार के बाद उन्होंने शिक्षार्थियों का एक "यार्न" भी दिया जो सदा एक स्काउट के जीवन को सफल बनाने वाला उपदेश था। उन्होंने भी इस शिविर से सब कार्यों को देखकर कहा कि "मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि जो शिक्षण इस शिविर में इतनी थोड़ी अवधि में हुआ है वह अत्युत्तम और सराहनीय है।"

श्री दौलतराम जी अस्थाना, डिवीजनल स्काउट कमिश्नर, गोरखपुर डिवीजन, ५ दिन तक लगातार इस शिक्षण-शिविर में ठहरे और शिक्षण-कार्य को देखते रहे।

इस कैम्प का विसर्जन समारोह १४ जून की सायंकाल को ५ बजे हुआ। माननीय श्री जस्टिस विन्ध्यवाशिनी प्रसाद, जज हाईकोर्ट, इलाहाबाद ने सभापति का आसन ग्रहण किया। उन्होंने कैम्प और दलों का निरीक्षण किया और शिक्षार्थियों के हाथ के बनाए हुए गैजेट, झोंपड़ी और पुलों को देखा। फिर कुछ प्रदर्शन उनके सामने हुए। इस अवसर पर मसूरी के चुने हुए बड़े-बड़े लोग भी उपस्थित थे जिनमें स्त्रियाँ भी थीं।

प्रोफेसर मदन मोहन, प्रान्तीय कमिश्नर ने माननीय जज साहेब का स्वागत किया और स्काउटिंग में उनकी पुरानी दिलचस्पी का जिकर किया। साथ ही इस अवसर पर सभापति का आसन ग्रहण करने के लिए उनको धन्यवाद दिया। फिर संक्षेप में उन्होंने स्काउटिंग के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए आजकल के नवयुवकों की चरित्र सम्बन्धी अवनति पर अत्यन्त खेद प्रगट किया। उन्होंने कहा कि इस समय देश को ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जिनके चरित्र आदर्श रूप हों और जिनमें आध्यात्मिक बल हो। परन्तु आजकल देश का सारा वातावरण इसके बिल्कुल विपरीत है। इस समय केवल स्काउटिंग की संस्था ही एकमात्र ऐसी संस्था है जो चरित्र सुधार या चरित्र निर्माण पर अधिक से अधिक जोर देती है और जिसकी शिक्षा का आधार मनोवैज्ञानिक ढंगों पर किया गया है। उस शिक्षा द्वारा बच्चे से बूढ़ों तक के लिए चरित्र निर्माण, शरीर और बुद्धि विकास के साधन जुटाए जाते हैं और इस प्रकार उन्हें देश का अच्छा नागरिक बनाया जाता है। हमारे देश के चरित्र के साधारण स्तर को ऊँचा करने के लिए यह आवश्यक है कि सब बालक-बालिकाएँ स्काउटिंग की शिक्षा का लाभ उठाएं।"

इसके पश्चात् श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर तथा शिविर संचालक ने अपनी निम्नलिखित रिपोर्ट सुनाई।

"यह ट्रेनिंग कैम्प १ ली जून को आरम्भ हुआ। इसमें २० बालचर टोली नायक की शिक्षा प्राप्त करने और ४ शिक्षार्थी स्काउट मास्टर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए सम्मिलित हुए हैं।

"सब शिक्षार्थी १ ली जून को प्रातःकाल देहरादून में एकत्रित हुए और मोटर बस में बैठकर राजपुर तक आए। राजपुर से उन्होंने मसूरी तक ८ मील पैदल यात्रा की। इस प्रकार १२॥ बजे दोपहर में सब शिक्षार्थी मसूरी शिक्षण शिविर में पहुँच गए। इतनी चढ़ाई और सफर से थकने के बावजूद भी सब लोग बड़े ही प्रसन्न चित्त दिखाई पड़ते थे। यहां चाय और खाना खाने के उपरान्त उनको तीन टोलियों में विभाजित कर दिया गया और उनके रहने का स्थान नियत कर दिया गया। उसी दिन से ये लोग प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक के सब कार्यों में एक दूसरी टोली के साथ प्रतियोगिता करते हुए दिनोदिन उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होते चले आये हैं।

"ट्रेनिंग कैम्प में हमारे शिक्षण का उद्देश्य यह रहता है कि हम बालकों और नवयुवकों को देश का एक आदर्श नागरिक बनाने की चेष्टा करें। इस उद्देश्य की पूर्ती के लिए हम बालक में से समान रूप उसके चरित्र, शारीरिक तथा बौद्धिक विकास को करने का प्रयत्न करते हैं।"

'चरित्र बल' को बढ़ाने के लिए स्काउटिंग की शिक्षा पद्धति में हम दश नियमों और ३ प्रतिज्ञाओं द्वारा उसके जीवन को प्रभावित करने का यत्न करते हैं। नियमों द्वारा,

सत्य बोलना, बड़ों का मान करना, छोटों की सेवा तथा सहायता करना, हर जाति पांति के प्राणी से समता और भाईपन का व्यवहार करना, पशुओं पर भी दया करना, नम्र और विनीत रहना, आज्ञाकारी होना, बड़े बड़े कष्ट पड़ने पर भी हँसते हुए उनका मुकाबिला करना, सदा बहादुरी के साथ कार्य करना, अनुशासनबद्ध होना, मन, वचन, और कर्म से पवित्र होना आदि सद्गुण उत्पन्न किये जाते हैं। स्काउट की प्रतिज्ञाएँ हमें इस बात के लिए चैतन्य करती रहती हैं कि हम अपने ईश्वर और देश के प्रति अपने कर्तव्य को समझते रहें और उसका पालन करते रहें।"

"'शारीरिक बल'—उत्पन्न करने और स्वास्थ्य कायम रखने के लिए हम स्काउटों को खुले मैदान, जंगलों और पहाड़ों पर खुली हवा में प्रकृति के सम्पर्क में रहकर कार्य करने के मौके देते हैं। इसके लिए हम शारीरिक व्यायाम, लाठी, गदा, छुरा, भाला इत्यादि स्वरक्षा की कसरतों के अलावा, तैरना, कूदना, फांदना और वृक्षों पर चढ़ जाना, मीलों पैदल सफर करना, और इसी प्रकार के अनेक मेहनत के कार्य करवाते हैं।"

"'मानसिक विकास'—या बुद्धि के विकास के लिए हम खेल-खेल में बहुत कुछ ट्रेनिंग दे देते हैं। Sense training games, में आँख, नाक, इत्यादिक शक्तियों को अधिक तेज करने के कार्य करवाते हैं।"

"इन सब चीज़ों के अलावा हम स्काउट में स्वावलम्बन का माद्दा उत्पन्न करने का प्रयत्न करते हैं। अपने हाथ से सब कार्य करना, खाना पका लेना, वर्तन मल लेना और पुल बना लेना, तम्बू लगाना, खाई खोदना, दस्तकारी के अनेक काम कर लेना इत्यादिक कार्य भी सिखलाते हैं। कठिनाइयों में घिर जाने पर भी अपना मार्ग निकाल लेना, मिल-जुल कर सहयोग से कार्य करना, साहस तथा खतरे का मुकाबला हिम्मत से करना, कर्तव्यपरायणता तथा उत्तरदायित्व को निभाने के गुण उत्पन्न करना, बन-विद्या, जड़ी-बूटियों का ज्ञान, प्राथमिक चिकित्सा, झंडियों द्वारा इशारे से बातचीत कर लेना इत्यादिक नाना प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने के अवसर दिलाए जाते हैं। प्रत्येक बालक जो हमारी ट्रेनिंग में आ जाता है हम उससे जीवन के अन्त तक सम्पर्क रखने का प्रयत्न करते हैं और उसकी जिन्दगी को बनाने की चिन्ता में रहते हैं। और जो कुछ भी हमसे बन पड़ता है उसे ऊंचा उठाने में सहायता देते रहते हैं। स्कूल मास्टर और स्काउट मास्टर के दृष्टिकोण में यह एक बहुत बड़ा अन्तर होता है। हम उसको एक नियमित जीवन व्यतीत करने की आदत डाल देते हैं। इस ट्रेनिंग कैम्प में हम लोगों ने इन सब गुणों को उत्पन्न करने की कोशिश की है।"

"इस शिविर में शारीरिक व्यायाम, राइफ़ल ड्रिल, स्काउटिंग की विविध शिक्षाएँ इन बालकों को दी हैं। इन्हें नेतृत्व का माद्दा उत्पन्न करने के पूरे अवसर दिये गये हैं। इन सारी शिक्षाओं को इन बालकों ने बड़ी प्रसन्नता के साथ ग्रहण किया है। और आप देखेंगे कि इस थोड़ी सी अवधि में ये बालक क्या कुछ सीख पाये हैं।

जब ये लोग कुल्हाड़ी लेकर जंगल से लकड़ियां काट काट कर लाते और गैजेट और झोंपड़ी बनाते थे तो इन्हें ऐसे आनन्द का अनुभव होता था जो वर्णन नहीं किया जा सकता। जब ये लोग छुपे हुये खजाने की खोज करते हुए, पहाड़, घाटी और जंगल पार कर के उसे प्राप्त कर लेते थे तो इनका उत्साह देखने योग्य होता था। जब ये अपने हाथ से आग जलाकर खाना पकाते और अपने बर्तन मलते थे तो इन्हें एक अजीब मज़ा आता था। जब ये पैदल "कैम्पटी फालस्" गए तो छोटे-बड़े सब ऐसे यात्रा करते थे मानों उन्हें अपनी जीवन में यह एक अनुपम मौक़ा हाथ लगा है। इस प्रकार इन बालकों ने इस थोड़े से समय में जो कुछ भी शिक्षा पाई है वह उनके जीवन का स्थाई अंग बन चुकी है और वह इन्हें कभी न भूलेगी। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि ये बालक अपने आपको देश के सच्चे नागरिक सिद्ध कर सकें। और आगे चल कर अपने सम्पर्क में आने वाले बालकों को भी उचित मार्ग पर चला सकें।"

"इस कार्य में मुझे सफलता न मिलती यदि श्री हरिश्चन्द्र जैन, एम० ए० और श्री एच० विलियम्स इतने परिश्रम से मेरी सहायता न करते। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। कैम्प के बाकी सब इन्तज़ाम का भार श्री नरेन्द्र कुमार जैन, जिला स्काउट कमिश्नर देहरादून पर था। उन्ही के कारण यह कैम्प हो भी सका है। उनका

श्री मैं धन्यवाद करता हूँ। श्री करतार सिंह जी और श्री जे० बी० खयाली साहेब ने क्वार्टर मास्टर के कार्य को सरअंजाम देकर मेरी बड़ी सहायता की है इनके बिना खाने का प्रबन्ध इतना सुन्दर कभी न होता, इन बालकों ने भी अनुशासनबद्ध होकर कार्य करके मेरे कार्य को बड़ा सुगम बनाया है। इन सब को भी मैं आशीर्वाद देता हूँ।"

"अब आप इन शिक्षार्थियों के कुछ प्रदर्शन देखेंगे। इस थोड़ी सी अवधि में सभी चीजों को पूर्णरूप से सीख लेना तो कदाचित् असम्भव बात है। इस काल में केवल इनको इनके कार्य की रूपरेखा समझाई जा सकी है जिस पर वे इस कैम्प से वापिस जाने के पश्चात् अभ्यास करके उसे अपने जीवन का हिस्सा बनायेंगे और लाभ उठायेंगे। परन्तु फिर भी जो कुछ इस अवधि में ये सीख कर अपना सके हैं वह आपके समक्ष दिखलायेंगे। आपकी सहानुभूति के कारण और विशेषकर आपके यहां पधारने से जो प्रोत्साहन इन नवयुवकों को मिला है उसके लिए ये सब और मैं आप सब उपस्थित सज्जनों का आभारी हूँ।"

अन्त में सभापति जी ने अपने भाषण में स्काउटों के कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि "मुझे आश्चर्य होता है कि स्काउट-शिक्षक इतने थोड़े अर्से में बालकों में इतनी कार्य कुशलता और नाना प्रकार का ज्ञान कैसे उत्पन्न कर देता है जब कि स्कूलों-कालेजों में पढ़ाने वाला शिक्षक इससे कई गुना अधिक समय लगा कर भी बालक को अच्छा बालक नहीं बना पाता और उनके कार्य में इतनी कुशलता उत्पन्न नहीं कर पाता। स्काउटिंग द्वारा एक युवक में स्फूर्ति, चातुर्य, विविध-गुण-सम्पन्नता उत्पन्न होते देखकर इस शिक्षण-पद्धति की सफलता ही नहीं बल्कि दूसरे शिक्षा के ढंगों पर इसकी Superiorety सिद्ध होती है। हमारे देश के सभी बालक तथा बालिकाओं को इस ट्रेनिंग से पूरा लाभ उठाना चाहिए। मैं इस कैम्प के संचालक और शिक्षकों और शिक्षार्थियों को उनके इस सफल और सराहनीय कार्य पर बधाई देता हूँ।"

तत्पश्चात् श्री नरेन्द्र कुमार जैन, जिला स्काउट कमिश्नर, ने माननीय सभापति जी, प्रान्तीय कमिश्नर साहेब और अन्य उपस्थित सज्जनों को धन्यवाद दिया। उन्होंने उन सब सज्जनों को भी धन्यवाद दिया जिनकी सहायता से इस कैम्प को यहां करने और इसकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग मिला था।

रमादेवी हायर सेकंडरी स्कूल के प्रिंसिपल को मसूरी में लोकल असोसिएशन का निर्माण करने के लिए संयोजक नियुक्त किया गया।

अन्त में झंडा उतारा गया और भारत माता की जय के सिंहनाद के साथ सभा विसर्जित हुई।

१० जून को प्रातःकाल शिक्षार्थियों और शिक्षक की विदाई की सभा हुई और दोनों ओर से भाषण होने के पश्चात् शिविर समाप्त घोषित किया गया। कैम्प छोड़ने से पहिले रहने के स्थान को साफ़-सुथरी हालत में कर दिया गया था।

यह कैम्प का जीवन हमें कभी नहीं भूलेगा।

ग्राम स्काउट शिक्षण-शिविर

ऐरवा कटरा, इटावा

श्री नन्दकिशोर जी 'शान्त'—मंत्री डि० हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के अधिनाकत्व में २० दिन तक सञ्चालित शिक्षण-शिविर ता० १० जून को समारोह के साथ समाप्त हुआ। स्काउट्स को समाज-सेवा की व्यावहारिक शिक्षाएँ भी दी गई। इसमें ३० पैट्रोल लीडर्स तथा २० प्रौढ़ (रोवर्स) ग्राम-अखाड़ों के संचालकों को स्काउटिंग के अतिरिक्त तलवार, जम्बिया, जुजुत्सु, भाला, लाठी, फायर फाइटिंग, प्राण-रक्षा आदि ग्रामोन्नति तथा ग्राम-रक्षा की शिक्षाएँ भी दी गई। समाइन, बढ़िन, गुलालपुर व बहोरपुर आदि कई ग्रामों में रात्रि के समय प्रदर्शन तथा कैम्प-फायरों के द्वारा जनता को स्काउटिंग, व्यायाम-प्रेम, ग्राम-संगठन व शिक्षा के प्रति उत्साहित किया गया। ता० ९० जून को लगभग ५ हजार जनता की उपस्थिति में दीक्षा-संस्कार हुआ, जनता ने मुक्तकंठ से प्रदर्शन तथा शिक्षा की प्रशंसा की व इस ओर अपना उत्साह प्रकट किया।

झांसी

इस वर्ष १२ स्काउटों को तैरने की शिक्षा दी गई। २० मई को मुहल्ला दल के स्काउटों की हाइक बड़ा-गाँव में हुई जिसमें मद्य-निषेध पर, एक अभिनय तथा ग्राम-सेवा के अन्य कार्य किए गये। मुहल्ला दल के बालचरों को झंडी द्वारा बातचीत करने की शिक्षा दी गई।

१२ जून से २२ जून तक श्री शंकर दयाल जी रायजादा, डिविजनल स्काउट कमिश्नर की अध्यक्षता में जयपुर कैम्प किया जिसमें ६ स्काउटों ने भाग लिया।

मुरादाबाद

मुरादाबाद नगर में बालचर सेवादल की ओर से पैट्रोल लीडर्स ट्रेनिंग कैम्प श्री शिम्भुनाथ जी खन्ना डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर की अध्यक्षता में दिनांक मंगलवार ३१ मई से आरम्भ होकर दिनांक बुधवार ८ जून को समाप्त हुआ। कैम्प संचालक श्री ओमप्रकाश जी सक्सेना आरगेनाईजिंग स्काउट मास्टर ने लगभग २५ बालचरों को ध्रुवपद शिक्षा दी। कैम्प का निरीक्षण श्री शम्भुनाथ जी खन्ना, नगर विख्यात स्वामी गोपालतीर्थ जी तथा श्री बेनीदास जी चेयरमेन म्यूनिसपल बोर्ड मुरादाबाद ने किया और पूर्णरूपेण सन्तोष प्रकट किया। आदरणीय स्वामी जी एवं प्रो० रामसरन दास जी, एम० ए० ए० के शब्दों में पेट्रोल लीडर्स ट्रेनिंग कैम्प पूर्णरूपेण सफल रहा। श्री ओम प्रकाश जी सक्सेना का कार्य विशेष सराहनीय है।

देहरादून

श्री नरेन्द्र कुमार जैन, जिला स्काउट कमिश्नर, देहरादून ने स्काउट बालकों का एक सप्ताह का ट्रेनिंग कैम्प किया, जिसमें उन लड़कों ने जिन्होंने मसूरी कैम्प में पैट्रोल लीडर्स की ट्रेनिंग प्राप्त की थी, तैरने की योग्यता के बैज प्राप्त किए।

हरिद्वार

प्रांतीय प्रचार-कमिश्नर श्री डी० एल० आनन्दराव देहरादून से ता० २२-५-४६ को हरिद्वार पधारे। श्री शान्ति स्वरूप गर्ग मास्टर चारणदास तथा अन्य स्काउटों ने स्टेशन पर स्वागत किया तथा आफिस पर स्काउट और शेर बच्चों ने एक साथ स्वागत किया।

श्री राव जी ने हरिद्वार आफिस में स्थानीय सज्जनों तथा कार्यकर्ताओं से आगामी कुम्भ के विषय में बातें कीं तथा कार्यालय में स्थान की कमी महसूस करते हुये अतिरिक्त स्थान शीघ्र प्राप्त करने का विचार प्रगट किया।

हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के अंतरगत एक बालचर ज्ञान विकास गोष्ठी खोली गई है जिसमें सभी शेर बच्चे तथा बालचर हिस्सा ले सकेंगे। बालचरों के खेलने के स्थान की पूर्ति के लिये प्रबन्ध किया जा रहा है। इस गोष्ठी का मुख्य कर्त्तव्य तर्क-वितर्क के लिए बालचरों की साप्ताहिक सभायें कराने का है पहिला वाद-विवाद दिनाङ्क २०-५-४६ को श्री शान्ति स्वरूप के सभापतित्व में हुआ जिसमें १० बालचरों ने भाग लिया। प्रथम आने वाले को पुरस्कार दिया गया तथा अन्य दो स्काउटों को जो द्वितीय थे, पुरस्कार दिया जायगा।

अखिल गढ़वाल-शिक्षा-प्रदर्शिनी और हिंदुस्तान-स्काउट एसोसिएशन

अखिल गढ़वाल-शिक्षा-प्रदर्शिनी मनाये जाने की घोषणा होने पर जिला स्काउट कमिश्नर हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन ने स्थानिक बालचर-मंडलों का दौरा किया, फलतः ता० ३० मई को पौड़ी में १५१ स्काउटों की रैली हुई तथा प्रदर्शिनी में स्काउट एसोसिएशन के कार्यक्रम का निश्चय किया गया।

स्वागत-समिति के निर्देशानुसार स्काउटों को विभिन्न टोलियों में सेवा-स्थलों पर स्काउट मास्टरों के संरक्षण में नियुक्त किया गया था तथा श्री बी० एम० जोशी को डिस्ट्रिक्ट स्काउट मास्टर का कार्य-भार सौंपा गया था। गवर्नमेंट इंटर कालेज, मैसमोर हाई स्कूल, गवर्नमेंट नार्मल स्कूल तथा मौडल स्कूल की बालचर टोलियों ने प्रतिदिन विभिन्न क्षेत्रों में सेवा-कार्य किया और गवर्नमेंट नार्मल स्कूल की टोली ने अपने दैनिक सेवा-कार्यों द्वारा जनता को विशेष रूप से प्रभावित किया।

दिनांक ८-६-४६ को स्काउटों का स्काउट-कला-प्रदर्शन-प्रतियोगिता-दिवस था, जिसमें विजयी टोलियाँ शिक्षा-प्रदर्शिनी-संयोजक-समिति द्वारा पुरस्कृत की गईं तथा टोलियों के स्काउट मास्टरों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। स्काउटों की कर्त्तव्यनिष्ठा और सेवा-कार्यों से प्रसन्न होकर प्रबंध-समिति से उन्हें पच्चीस रुपए के अतिरिक्त पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत किया। जिला स्काउट कमिश्नर ने प्रबंध-समिति की इस गुणग्राहिकता के लिए कृतज्ञता प्रकट की।

प्रान्तीय प्रधान केन्द्र की सूचनाएं

श्री डी० एल० आनन्दराव, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर १६ मई से अवकाश पर मद्रास तथा हैदराबाद गए हुए हैं। आशा है आप १२ जुलाई तक इलाहाबाद लौट आयेंगे।

श्रीमती सरला शंकर स्थानापन्ना प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, बालिका विभाग दार्जिलिंग ट्रेनिंग कैम्प में भाग लेने के लिए गई हुई थीं। वहां से वे २४ जून को लौट आई हैं और आजकल इलाहाबाद हैडक्वार्टर्स में अपने कार्य का प्रोग्राम बना रही हैं।

श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, मसूरी के ग्रीष्म शिक्षण शिविर को समाप्त करके देहरादून और हरिद्वार होते हुए २० मई को इलाहाबाद लौटे। श्री एच० विलियम्स, रीजनल स्काउट आर्गनाइजर भी उनके साथ थे। उस दिन से लेकर श्री शर्मा जी प्रान्तीय कार्यालय, पुस्तक प्रकाशन तथा 'सेवा' विभाग के कार्य की देख-रेख कर रहे हैं, क्योंकि श्री अमरनाथ जी गुप्त अपनी श्रीमती जी के बीमार होने के कारण १२ मई से सहारनपुर गये हुए हैं।

श्री पुरुषोत्तमलाल चूड़ामणि, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर ने हिन्दुस्तान स्काउट स्कूल, शीतलाखेत को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के सम्बन्ध में बड़ा अथक परिश्रम किया। उसके लिए धन एकत्रित करने के लिए शीतलाखेत के निकटवर्ती ग्रामों में पैदल यात्रा की। मुरादाबाद, शाहजहांपुर, बरेली, हरदोई इत्यादिक स्थानों में भी दौरा करके इस सम्बन्ध में कार्य किया। आप २८ जून से २७ जुलाई तक अवकाश पर ग्राम सोंख जिला मथुरा में रहेंगे।

हिन्दस्काउट सहकारी प्रकाशन के मैनेजर, श्री रमाप्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी' के स्थान पर कार्य चलाने के लिए फिलहाल श्री ईश्वर स्वरूप की नियुक्ति सहायक मैनेजर के तौर पर की गई है। जब तक वे इस पद पर कार्य करेंगे तब तक के लिए हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन से उनकी सेवाएं हिन्दस्काउट सहकारी प्रकाशन को प्रदान की गई समझी जायँगी।

श्रीमती कमला बाई सप्रे की नियुक्ति असोसिएशन के बालिका विभाग में 'गर्लस्काउट आर्गनाइजर' के पद पर हुई है। आप म्यूनिसिपल मिडिल स्कूल दारागंज, इलाहाबाद में अध्यापिका थीं। उनकी सेवाएं फिलहाल एक वर्ष के लिए म्यूनिसिपल बोर्ड इलाहाबाद के शिक्षा विभाग से 'डेपूटेशन' पर ले ली गई हैं। श्रीमती सप्रे ने अपने पद का चार्ज ८ जुलाई से ग्रहण कर लिया है।

कुमारी एल० सिंह की नियुक्ति प्रान्तीय गर्लस्काउट व्यायामशाला में व्यायाम शिक्षिका के पद पर १५ जुलाई से हुई है। आपने कालेज आव फ़िजिकल ऐजूकेशन, इलाहाबाद से ट्रेनिंग प्राप्त करके व्यायाम शिक्षक का आवश्यक डिप्लोमा प्राप्त किया है।

प्रकाशक—श्रीयुत प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, यू० पी०, इलाहाबाद।

मुद्रक—श्रीयुत मगनकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद।

वर्ष २९ सं० ८] स्वतंत्रता अंक [अगस्त १९५९

सम्पादक-मण्डल

श्री अमरनाथ गुप्त, एम० ए०, एल० टी०

श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि श्री मुरारीलाल शर्मा श्री प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०

विषय सूची

सेवा के नियम

(१) 'सेवा' महीने के प्रथम सप्ताह तक प्रकाशित होकर सब ग्राहकों के पास भेज दी जाती है, यदि किसी ग्राहक को १५ ता० तक प्राप्त न हो तो इसकी सूचना स्थानीय पोस्टमास्टर के प्रमाणपत्र सहित कार्यालय को भेजना चाहिए।

(२) 'सेवा' का वार्षिक मूल्य तीन रुपया और एक अंक का मूल्य पाँच आना है।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या लिखनी आवश्यक है।

(४) 'सेवा' में प्रकाशनार्थ लेख सम्पादक के नाम भेजने चाहियें तथा मूल्य आदि मैनेजर के नाम; यदि आवश्यक हों तो चित्र भी लेख के साथ भेजना चाहिए।

(५) सम्पादक को अधिकार रहेगा कि वह किसी लेख को प्रकाशित करे, न करे या उसमें आवश्यक संशोधन करे। जो लेखक साथ में टिकट भेज देंगे, उनका लेख अस्वीकृत होने पर तुरंत लौटा दिया जायगा।

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग नापुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्त नाशनम् ॥

यू० पी०, सी० पी० तथा बरार, बिहार, बम्बई, अलवर, बीकानेर, ग्वालियर, जयपुर और होलकर राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

वर्ष २९] अगस्त १९४९ [संख्या ८

स्वाधीन दिवस

कविवर सुमित्रानंदन पंत

विजय मनाओ, गाओ जय
स्वाधीन दिवस जय, कंठ मिलाओ हे !
रंग ज्वाल फूलों की लेकर,
नव आशा उल्लास भर अमर
इंद्रधनुष फहराओ, जय,
भारत माँ की जय, गगन गुँजाओ हे !
आज रक्त में नाच रही ज्वाला
आज जनों में जीवन का उजियाला
हुआ सुनहला अब मन का अंधियाला
जय बापू की जय, भेद भुलाओ हे !
उठो, पाँति में खड़े युवक गण,
करो तिरंगे का अभिवादन
यह जीवन रण का प्रांगण, जय,
जन भारत जय, चरण बढ़ाओ हे !

स्काउटिंग

पंडित श्रीराम वाजपेयी, राष्ट्रीय प्रचार कमिश्नर, हि० स्का० प्र०

देखने में स्काउटिंग खिलवाड़ या मनबहलाव की चीज मालूम होती है। या यों कहा जा सकता है कि बच्चे मैदान में इकट्ठे हो कर वह उछल-कूद करते हैं जो उनके लिए स्वाभाविक है और इस तरह उनका स्वास्थ्य सँभलता है और शरीर बलवान होता है। यह सब बातें सही हैं। मगर इन सब के पीछे एक बड़ा राज़ छिपा है। वह राज़ यह है कि बच्चों में अच्छी आदतें बन जाती हैं और उनमें वे गुण और योग्यतायें पैदा हो जाती हैं जो किसी जाति के लिए चाहे शान्ति काल हो चाहे युद्धकाल बड़े काम की होती हैं। इन योग्यताओं से सुसज्जित हो कर बड़े होने पर बच्चे जिस क्षेत्र में जाते हैं चाहे यह क्षेत्र राजनैतिक हो या सामाजिक अपने रास्ते में अपने को कांटे खुबड़ों से बचाते हुए ऊँच-नीच को छलाँगते और कठिनाइयों को मुँह चिढ़ाते हुये सफलता के द्वार पर पहुँच जाते हैं।

नौसिखिया या ऊंची सूझ के स्काउट मास्टर स्काउटिंग को सिखलाने के लिए दीवालों से घिरी हुई जगह को अच्छा समझते हैं। परन्तु अनुभवी और सुलझे हुए स्काउट मास्टर स्काउटिंग के सिखलाने के लिए खुले मैदान को ही सबसे बढ़िया क्लास रूम समझते हैं। वे बालकों की शिक्षा के लिए उनके हाथों में पुस्तकें नहीं देते और न लेक्चरबाजी करके उनके दिमागों को ठूँसा-ठूँस भर के उसे इधर-उधर चलने-फिरने के लिए नाकाबिल कर देते हैं। वे अपने स्काउटों के हाथ में केवल एक पुस्तक देते हैं वह पुस्तक है "प्रकृति" जिसे अंग्रेजी भाषा में "नेचर" कहते हैं। प्रकृति इतनी विशाल पुस्तक है कि उसी पर बालक कूदता-फाँदता, लेटता-पोटता और चारों ओर के चीजों का अपनी आँखों से निरीक्षण कर कानों से तरह-तरह के शब्द सुन और नाक से तरह-तरह की गन्ध का अनुभव कर और नाना प्रकार की वस्तुओं को छूकर, छेड़कर पकड़-धकड़ कर वह अपने ज्ञान-भंडार की दिनों दिन वृद्धि अपने आप करता जाता है। जो खाता है हजम कर डालता है, जो ज्ञान प्राप्त करता है वह हजम हो कर उसके शरीर और व्यक्तित्व का भाग बन जाता है। उसके दिमाग को कब्ज़ नहीं होता। वह रोज-रोज नये-नये की ज्ञान की माँग करता और उसे प्राप्त करता है। उसकी विद्या असली विद्या कही जा सकती है। अवसर पड़ने पर वह चमत्कार दिखा देती है। लेकिन ठूँसा-ठूँस वाली विद्या दिमाग पर वही काम करती है जैसे कि किसी गधे की पीठ पर वेद-पुराण लाद दिये जायें मगर उस बेचारे पशु की समझ में वे ईंट-पत्थर ही के समान होते हैं।

स्काउटिंग के सभी विषयों को सिखाने के लिए खेल को ही सबसे बढ़िया साधन समझा गया है। खेलना-कूदना बालकों में स्वाभाविक है। बताने की जरूरत नहीं कि बालक का शरीर दिनों दिन बाढ़ पर रहता है, किसी चीज के बढ़ने के लिए आवश्यक है कि उसमें काफी हलचल हो। जितनी अधिक हलचल होती है बाढ़ भी उतनी ही अधिक और मजबूत होती चली जाती है। इस बात को बताने के लिए एक मिसाल काफी होगी। अपने एक हाथ को हलचल से रोक कर एक ही स्थिति में तीन चार महीने रहने दीजिए और दूसरे हाथ को रोज की तरह काम करने दीजिए। अन्त में देखने को मिल जायगा कि हलचल करने वाला हाथ स्वस्थ और बलवान है। किन्तु वह हाथ जिसकी की हलचल रुक गई थी कमजोर और सूखा सा दिखाई देगा। ईश्वर चाहता है कि हमारा बनाया हुआ पुतला स्वस्थ और बलवान हो। इसीलिए वह बच्चों में यह स्वभाव पैदा कर देता है कि उन्हें

खेलना-कूदना अच्छा लगे। इसलिए जो बच्चे खूब खेलते-कूदते हैं और वे माता-पिता और शिक्षक जो उनके खेल-कूद के रास्ते में रोड़ा नहीं अटकाते हैं परमात्मा की मर्जी पूरी होने में मदद देते हैं। किन्तु वे जो इसमें बाधक होते हैं वे प्रकृति के प्रतिकूल कार्य करते हैं और अपने और अपने बच्चों के रास्ते में काँटे बोते हैं। अच्छे स्काउट मास्टर हर विषय को सिखाने में नये-नये खेलों का सहारा लेते हैं और अन्त में वे अपने स्काउटों को सच्चे मानी में मनुष्य बना देते हैं।

चाहे कोई भी खेल खेलाया जाय, कोई भी विषय सिखाया जाय किसी भी आभ्यासिक कार्य में स्काउटों को लगाया जाय, स्काउट मास्टर सदा अपने ध्यान में ३ बातों को रखता है। उन तीन बातों को अंगरेजी भाषा में अनुशासन (Discipline) आत्म-बल (Morale) और चरित्र (Charecter) कहते हैं। स्काउटिंग में जितनी बातें सिखाई जाती हैं उनमें से करीब-करीब हर एक में यह तीनों गुण पाये जाते हैं। इन बातों से बालकों में साहस, दृढ़ता, फुर्ती, उपज, मनोबल, तात्कालिक निर्णय और शीघ्रातिशीघ्र उसे कार्यान्वित करने की तत्परता, आकस्मिक स्थिति में उपयुक्त कार्य करने की सूझ और सूझ को कुशलतापूर्वक कर डालने की योग्यता आ जाती है। स्काउटिंग के कौतुकों द्वारा बच्चों में वह गुण भी पैदा होता है जिसे स्पोर्टसमैन शिप (Sportsman ship) कहते हैं। इस गुण में हँसमुखपन, सहनशीलता दूसरों का ख्याल, आत्मनिग्रह, कायदे कानून पर अटूट अमल करने की बान, हार-जीत में एकरस रहने की आदत, अपने से बड़ों की आज्ञा को और उनके फैसले को बिना बहस किए हुये मान लेना और दूसरे प्रतिद्वन्दियों के प्रति मैत्री भाव रखना शामिल हैं। ये चीजें केवल स्काउटिंग के क्षेत्र में ही लाभकारी नहीं होतीं बल्कि जब बच्चे सयाने हो कर संसार के कार्यक्षेत्र में उतरते हैं तो उनको करीब-करीब रोज ही ऐसे अवसर मिलते हैं जब वे इन सब गुणों को काय रूप में परिणत करके दिखाते हैं। हर स्वतंत्र देश में, ऐसा कहा जाता है कि हर नागरिक नेता का कार्य करता है। नेतृत्व के लिए हर नागरिक में इन गुणों का होना आवश्यक है। स्काउटिंग में जैसा कि हर मौके पर कहा जाता है हम अच्छे नागरिक बनाते हैं और नागरिकों को इन सद्गुणों से आभूषित करने का प्रयत्न करते हैं। अन्य स्वतंत्र देशों में स्काउटिंग को सरकार की तरफ से बहुत कुछ प्रोत्साहन मिलता है। उनके सफर खर्च में कमी होने के लिए उनके लिए बहुत सी सुविधाएँ जुटायी जाती हैं। अन्तरदेशीय सम्मेलनों में उन्हें सरकार की ओर से जलपोतों का मुफ्त में इन्तजाम होता है और कोई छोटा-बड़ा राज-काज ऐसा नहीं होता जिसमें स्काउटों का ध्यान न रक्खा जाता हो। उन्हें उत्साहित करने के लिए उनकी रैलियों में बड़े से बड़े आदमी आते और भाग लेते हैं। दो साल पहले हमारा देश परतंत्र देश था। जान-बूझ कर हमें उन्नति के रास्ते से पीछे को खींचा जाता था और अगर पिछली सरकार किसी उन्नति के कार्य को करने के लिए अपने आपको मजबूर समझती थी तो वह ऐसी रोक थाम लगा देता थी जिससे कि हम तो समझें कि हम उन्नति कर रहे हैं, पर वास्तव में देखा जाय तो हम जहाँ के तहाँ खूँटी से बकरी की तरह बँधे पड़े हैं। यह सच है कि हमें हमारी मौजूदा सरकार से अभी वह उत्साह नहीं मिला जिसकी हम आशा करते थे पर हम हताश नहीं रहे। हम जानते हैं कि हमारी सरकार को बागडोर सँभालते ही ऐसी-ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा कि यदि कोई दूसरी सरकार होती तो उसकी फूँक निकल जाती। हमारी सरकार अब भी कठिनाइयों से मुक्त नहीं हुई है। हमारा सब का फर्ज है कि हम अपनी सरकार को मौजूदा कठिनाइयों से मुक्त होने में मदद दें जिससे कि उसे समय मिले कि वे राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में निर्द्वन्द्वतापूर्वक लग जाय। जब ऐसा समय आवे तब हमें आशा है कि हमारी सरकार हमारी ओर भी ध्यान देगी और

जिस जाति-उत्थान का कार्य हम कर रहे हैं हमें उसे करने में उचित साधनों को देकर उत्साहित करेगी।

जवानी और बुढ़ापा

कुछ लोग मुझे हमारे साथी श्री जानकी शरण जी वर्मा के सामने बूढ़ा कह देते हैं। पर मैंने देखा है कि श्री वर्मा जी इसे सुन कर प्रसन्न नहीं होते और सचमुच मुझे भी यह सुनकर खुशी नहीं होती। कोई मनुष्य वर्षों की संख्या में न्यूनता या अधिकता के कारण जवान या बूढ़ा नहीं होता। जवानी उस अवस्था को कहते हैं जिसमें मनुष्य बढ़ता और उन्नति करता है। बढ़ने से मेरा मतलब हाथ-पैर के बढ़ने से नहीं है। मेरा मतलब उन योग्यताओं की बाढ़ से है जिनसे कार्य करने की पटुता आती है और दृढ़ता का समावेश होता है। उन्नति से मेरा मतलब आगे बढ़ने का है। अगर कोई आदमी अधिक वर्षों का होता हुआ भी रुकता नहीं और कार्य करने में अग्रसर रहता है तो उसे जवान ही कहना चाहिए। बुढ़ापा वर्षों से नहीं आता। एक बीस-इक्कीस साल का नवयुवक अगर उसमें उन्नति करने का चाव और बढ़-बढ़ कर काम करने की लालसा रुक गई है तो ७०-८० साल का बुड्ढा कहा जा सकता है। जभी कोई व्यक्ति सोचता है चाहे वह कम हो या ज्यादा कि जो मुझे करना था मैं कर चुका, मेरी गाड़ी अब आगे नहीं चलती और जो कछुए की तरह हाथ-पैर समेट कर चुपचाप मुर्दा सा हो जाता है उसी को बूढ़ा समझना चाहिए। श्री वर्मा जी कहना है कि जो आगे बढ़ने का हौसला मुझ में २० साल पहले था वही अब भी है। काम को खत्म करके कल लेने की लगन जो पहले थी वही अब भी है इत्यादि-इत्यादि। इसलिए वे मुझे बूढ़ा नहीं समझते। मैं भी समझता हूँ कि मेरी इसी में खैरियत है कि मैं उनके इस ख्याल को कायम रख सकूँ।

[शेष भाग ८ पृष्ठ का]

रहते हैं और उसके बाद किसी दल का संचालन नहीं करते हैं।

दलों का दैनिक शिक्षण

स्काउट दलों का दैनिक शिक्षा का कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाने के सम्बन्ध में कुछ सुझाव दिये जाते हैं। इस ट्रेनिंग का उद्देश्य बालकों को उचित शिक्षा देना है और साथ ही साथ हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के उद्देश्यों का प्रसार करना है।

१—स्काउटिंग का शिक्षण प्रतिदिन अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

२—शारीरिक व्यायाम का शिक्षण भी प्रतिदिन होना चाहिए।

भारतीय व्यायाम, लाठी, लेजिम, गतका इत्यादि की सिखलाई भी होनी चाहिए।

३—ड्रिल और चुस्ती पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

४—संख्या बढ़ाने की चिन्ता न करके बालकों में कार्यकुशलता उत्पन्न करने का प्रयत्न करना चाहिए।

५—सीढ़ीवार विविध स्काउट परीक्षाओं को पास करवाने का कार्यक्रम चलता रहना चाहिए।

६—दक्षता के बैजों की ट्रेनिंग की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

७—स्काउट नियम और प्रतिज्ञा पर एक ५ मिनट का उपदेश प्रतिदिन अवश्य ही होना चाहिए। व्यावहारिक उदाहरण देकर बालकों के चरित्र गठन पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

८—स्काउट खेल, अभिनय, गाने, सिंहनाद तथा कैम्प फायर के द्वारा कार्यक्रम को मनोरंजक बनाए रखना चाहिए।

९—वनोपसेवन और व्यावहारिक कार्य की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए।

हमारा लक्ष्य (१९४९-५० के लिये)

श्री० डी० एल० आनन्दराव, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, यू० पी०

भारतवर्ष को स्वतंत्र हुए दो वर्ष बीत गये। इस अवधि में कैसी गम्भीर व चिन्ताजनक परिस्थिति में से हो कर हमारा देश निकला है वह आश्चर्यजनक है। आज जो संघर्षमय वातावरण देश में दिखलाई देता है, यदि इसे बदला नहीं जा सका तो कदाचित् हमें अपनी कठिन तपस्या द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता से हाथ न धोना पड़े। एक ओर तो देश के सामने कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जैसा कि खाने के लिए पर्याप्त अनाज और पहिनने के लिए कपड़ा, विदेशों के साथ मैत्री भाव स्थापित करना, देश की भीतरी समस्याओं को सुलझाना इत्यादि; दूसरी ओर हमारा नैतिक पतन, अनेक प्रकार की दलबन्दी, स्वार्थपरता, शोषण वृत्ति और राष्ट्रीय भावना का अभाव इत्यादि। इस परिस्थिति से ऊब कर जनसाधारण में गहरा असन्तोष फैलता जा रहा है। इस घोर अन्धकार से ठीक-ठीक मार्ग पर ले जाने का कार्य देश के नवयुवक और बालक ही कर सकते हैं—ऐसे नवयुवक और बालक जिनका शरीर स्वस्थ और बलवान हो, जिनका मस्तिष्क विकसित हो और जिनका चरित्र उच्चकोटि का हो, जो सेवा भाव से प्रेरित हों, और राष्ट्रीय प्रेम की भावना से ओत-प्रोत हो। ऐसी शिक्षा-दीक्षा पाये हुये नवयुवक ही देश के भावी निर्माता होंगे। हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन ने पिछले ३० वर्षों से उपर्युक्त गुणों को उत्पन्न करने का शिक्षण बालक एवं बालिकाओं को देने का प्रयत्न किया है। आज असोसिएशन के सामने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए और भी अधिक प्रयत्न करने का प्रश्न है। अतः, मैं अपने प्रान्त के सभी जिला असोसिएशनों के कार्यकर्ताओं से यह प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने संगठन को और भी अधिक शक्तिशाली बनाएँ और इस अमूल्य स्काउट शिक्षण के कार्य को अधिक ध्यान के साथ करें। हमारे कार्य में हमें पूर्ण सफलता तभी मिल सकती है जब कि हम स्काउटिंग के कार्य-क्रम के सम्बन्ध में **बुनियादी उसूलों** को समझ कर उसका निर्माण करें और स्काउटिंग की योजना को प्रगति देने के आधार को सदा अपने सामने रखें।

स्काउटिंग के मूल सिद्धान्त

१—अपने दैनिक जीवन में स्काउट नियमों पर अमल करना और प्रति दिन एक सेवा का कार्य करना।

२—स्काउट दलों का संचालन टोली विधि के आधार पर करना।

३—स्काउट विद्या का सीढ़ीवार शिक्षण अर्थात् क्रमशः कोमल पद, ध्रुव पद (सैकेंड क्लास), चार दक्षता के पदक प्राप्त करना, गुरुपद, (फर्स्ट-क्लास), दक्षता की हरी, लाल और सुनहरी रस्सियों को प्राप्त करना और अन्त में हिन्दस्काउट बैज प्राप्त करना।

४—वनोपसेवन।

यह स्काउटिंग की गाड़ी के चार पहिए हैं। इनमें से यदि कोई भी पहिया टूट जाता है या कमजोर हो जाता है तो गाड़ी का चलना रुक जाता है। अतः प्रत्येक स्काउट कार्यकर्ता को चाहिए कि वह स्काउट शिक्षण की योजना को सफल बनाने के लिए ऐसा कार्यक्रम बनाए जिनमें इन सभी बातों पर ध्यान रखा जाय। यदि इनमें से कोई एक बात भी छूट जाती है तो इनका कार्य रुक जायगा और उन्हें असफलता का मुख देखना होगा।

स्काउट कार्य क्रम

स्काउटिंग का कार्यक्रम तैयार करने में निम्न लिखित ४ बातों का होना आवश्यक है जिससे वह कार्यक्रम जोशीला और दिलचस्प हो सके। इस

उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्काउट शिक्षण में पर्याप्त सामग्री है। वे ४ आवश्यक बातें नीचे दी जाती हैं।

१—अंग संचालन या शारीरिक हरकतें (Action)—जैसे, ड्रिल, खेल, भाववाचक संकेतों के साथ गाना (एक्शन सांग) इत्यादि।

२—मनोरंजन (Recreation)—मनोरंजन के खेल, सिंहनाद, गाने इत्यादि।

३-शिक्षा (Instruction)- स्काउट विषयों का शिक्षण (ट्रेनिंग स्कीम और नियमावली के आधार पर)।

४—उत्साह बढ़ाना (Inspiration) स्काउट नियमों की व्याख्या करने वाली कथाएँ और 'यार्म' या संक्षिप्त उपदेश।

१९४९-५० का कार्यक्रम

इससे पूर्व कि मैं स्काउट संगठन और स्काउट शिक्षण आदि विषयों पर अपने विचार प्रकट करूँ युक्त प्रान्त में इस वर्ष (१९४९-५०) में हम कम से कम क्या कार्य करना चाहते हैं उसकी मोटी सी रूपरेखा रखता हूँ।

क—स्काउट संगठन तथा भ्रातृभाव को सुदृढ़ करने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जायेंगे।

१—अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में नेशनल स्काउट सप्ताह समारोह को सफल बनाना।

२—यदि नवम्बर में अखिल भारतीय स्काउट मेला दरभंगा में हुआ तो उसमें सम्मिलित होना।

३—यदि अखिल भारतीय मेला न हो सका तो दिसम्बर में प्रान्तीय स्काउट रैली का आयोजन।

४—पहिली दिसम्बर, स्काउट दिवस महोत्सव।

५—फरवरी और मार्च, १९५० में प्रान्त के सब जिलों में जिला स्काउट रैलियां और अन्तरदल प्रतियोगिताएँ होंगी।

ख—स्काउट तथा स्काउटरों के दृष्टिकोण को विशाल करने के उद्देश्य से और देश-प्रेम पैदा करने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जायेंगे।

१—अन्तरप्रान्तीय यात्राएँ।

२—एशियाई प्रदेशों में स्काउट 'गुडविल मिशन' ले जाना।

ग—हाइक तथा भ्रमण इत्यादि

१—हाइक और भ्रमण इत्यादिक की ओर हम सबसे अधिक ध्यान देने का विचार रखते हैं। वास्तव में यही स्काउटिंग के प्राण हैं। यह बड़े दुख की बात है कि हम लोग जिस देश की महिमा गाते हैं और जिसके विषय में पुस्तकों और भाषणों द्वारा अनेक प्रकार की अद्भुत बातें सुनते हैं, हमने उनमें से किसी एक सौन्दर्य को भी अपने आंखों से देखने का प्रयत्न नहीं किया। लगभग प्रत्येक जिले में कोई न कोई ऐतिहासिक, भौगोलिक या प्राचीन कला सम्बन्धी स्थान पाया जाता है। **यह प्रत्येक स्काउट का कर्त्तव्य है कि वह घर से बाहर निकल कर कम से कम अपने प्रान्त के प्रत्येक प्रसिद्ध स्थान को देखे। हमारे स्काउट दलों को चाहिए कि वे सारनाथ, वृन्दावन, मथुरा, काशी, अयोध्या, प्रयाग, बद्रीनाथ, गंगोत्री, जमुनोत्री, पिंडरी, और म्लान ग्लेशियर, कुशीनगर, लुम्बिनी, ताजमहल, सिकन्दरा, तुलसीदास की जन्म-भूमि इत्यादि अनेक स्थानों पर भ्रमण के लिए जायें तब वे अनुभव करेंगे कि हमारे देश की पुरानी संस्कृति और महानता क्या है।** अपने प्रान्त के भ्रमण के पश्चात अन्तरप्रान्तीय भ्रमण का भी आयोजन करना चाहिए। इस कार्य में सरकार को हर प्रकार से सहयोग देना अपना परम कर्त्तव्य समझना चाहिए। वास्तव में यह बड़े से बड़े शिक्षण से भी बड़ा शिक्षण है। हमें आशा है कि हम सरकार से भी इस सम्बन्ध में आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त कर सकेंगे।

२—मई-जून १९५० में काश्मीर का एक हाइक होगा।

३—स्काउटों के कैम्प किए जायँगे जिनमें उनको बाहर रह कर कुछ शिक्षा प्राप्त करने के अवसर भी प्राप्त हो सकें।

घ—स्काउट शिक्षण के सम्बन्ध में निम्नलिखित कार्य होंगे।

१—३१ मार्च १९५० तक प्रान्त भर में कम से कम ५०० फर्स्ट क्लास स्काउट और १०० हिन्द स्काउट तैयार हो जाने चाहिएं।

२—स्काउट कमिश्नरों तथा जिला स्काउट आर्गनाइजरों के लिए शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जायगा।

३—टोली नायकों के लिए ट्रेनिंग कैम्पों पर विशेष ध्यान दिया जायगा और स्काउट मास्टरों के लिए केवल रिफ्रेशर्स ट्रेनिंग कैम्प ही किए जावेंगे। नार्मल स्कूलों के लिए तब तक ट्रेनिंग कैम्प नहीं किये जायेंगे जब तक कि उन संस्थाओं में शिक्षार्थी नियमितरूप से स्काउटिंग का कार्य नहीं करेंगे और जब तक वे सेकैंड क्लास स्काउट की परीक्षा पास नहीं कर लेंगे। इन कैम्पों के लिए और नये स्काउट मास्टरों की ट्रेनिंग देने के लिए प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स से विशेष आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक होगा।

४—निम्नलिखित जिलों में कम से कम एक रोवर दल अवश्य खोला जाय और वह नियमित रूप से कार्य करे।

इलाहाबाद, कानपुर, फैजाबाद, बनारस, झांसी गोरखपुर, मेरठ, बरेली, अलीगढ़, मुरादाबाद, लखनऊ, आगरा, दयालबाग।

ङ—संगठित रूप से जन सेवाकार्य

१—विभिन्न बड़े-बड़े अवसरों के अतिरिक्त स्काउट दल स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग मुहल्लों में मासिक, अर्ध मासिक तथा साप्ताहिक सेवाकार्य या रचनात्मक कार्य करें।

२—अन्नाभाव के अतिरिक्त मुनाफाखोरी तथा चोर बाजारी के विरुद्ध आन्दोलन किए जायें।

३—बच्चों के लिए मनोरंजन के साधन जुटाने के कार्य किए जायं और नवयुवकों के लिए जोश तथा उत्साहवर्धक कार्यों का आयोजन किया जाय।

संगठन सम्बन्धी सुझाव

जिला स्काउट कमिश्नर तथा उनके सहायक स्थानीय जिला असोसिएशन के संगठन को सजीव तथा शक्तिशाली बनाने के लिए निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देने की कृपा करें।

१—जो दल अभी तक प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स से सम्बद्ध नहीं हैं उन्हें शीघ्र से शीघ्र सम्बद्ध करवा लेना आवश्यक है। जिन स्काउटों या कमिश्नरों के वारंट की अवधि समाप्ति हो चुकी हो या जिन्होंने अभी वारंट प्राप्त ही नहीं किए हैं उन्हें नये सिरे से वारंट प्राप्त कर लेने चाहिए। जिले के सब दलों की सूची उनकी जनगणना और उनके नाम व पते जिला हेडक्वार्टर्स में अवश्य होने चाहिएं। यदि ऐसा नहीं है तो यह कार्य ३० सितम्बर ४९ तक अवश्य ही पूरा हो जाना चाहिए। यह सबसे मुख्य बात है।

२—जहां कहीं जिला अथवा स्थानीय असोसिएशन सुसंगठित और पूर्णरूप से क्रियाशील नहीं हैं उन्हें पुनर्जीवित करने का पूर्ण प्रयत्न अविलम्ब किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में यह भी आवश्यक है कि ऊपर संकेत की गई सूची के अतिरिक्त जितने अन्य रेकार्ड जिला असोसिएशन के हेडक्वार्टर्स में होने चाहिएं, यदि वे अभी तक नहीं हैं तो उन्हें तुरंत तैयार करके मुकम्मल कर लेना चाहिए। (इन आवश्यक रिकार्डों की सूची इसी अंक में श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर के लेख में प्रकाशित है, उसे देखिए।)

३—नये दल न खोलकर पुराने दलों के कार्य को सुनियंत्रित करने पर पूरा ध्यान दिया जाय।

४—स्काउटर्स काउंसिल और टोली नायक संघों की बैठकें प्रत्येक जिले में प्रतिमास होनी चाहिएं और इन अवसरों पर आगामी कार्यक्रम का निर्माण किया जाय और पिछले कार्यक्रम के संचालन में जो

कठिनाई या सफलता मिली है उस पर आपस में विचार-विमर्श किया जाय। ऐसा करने से स्काउटिंग के वास्तविक संचालकों में दिलचस्पी बनी रहेगी और कार्य में निश्चय रूप से उन्नति होगी। जहां यह समितियां नहीं हैं वहां उनका निर्माण तुरन्त हो जाना चाहिए। इन बैठकों की कार्यवाही का विवरण सदा लिखित रूप में रखना आवश्यक है।

५—स्काउट दलों में भी दल पंचायत कमेटी (कोर्ट आफ आनर) परीक्षा समिति, शिक्षण समिति इत्यादि की बैठकों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

६—स्काउट कमिश्नरों को दल निरीक्षण करने का एक कार्यक्रम निश्चित करना चाहिए और उसकी सूचना दलों के पास कम से कम एक सप्ताह पहले भेज देनी चाहिए। इस सम्बन्ध में स्मरण रहे कि निरीक्षण की सूचना भेजने के पश्चात उन्हें किसी भी हालत में अपने कार्यक्रम को स्थगित नहीं करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों में दलों के निरीक्षण के विवरण पर विचार-विमर्श करने के लिए स्काउट कमिश्नरों को मास में एक बार अवश्य मिलना चाहिए और अपने-अपने निरीक्षण के विवरण पर विचार करके उसके आधार पर अपने सुझाव दलों के स्काउट मास्टरों के पास भेजने चाहिए ताकि वे भविष्य में अपनी कमियों को पूरा कर सकें। इस प्रकार दलों के कार्य में सजगता-कुशलता और प्रवीणता अधिक बढ़ जायगी। स्काउट कमिश्नरों को चाहिए कि वे असोसिएशन के बिक्री विभाग से 'कमिश्नर कम्पेनियन, नाम की पुस्तक को मँगवा कर उसका अध्ययन करें उससे उन्हें अपने कार्य के करने में बहुत सहायता मिलेगी।

७—जिला तथा स्थानीय असोसिएशन के पदाधिकारियों को और स्काउट कमिश्नरों को विशेष रूप से अपने दायित्व के भार को महसूस करना चाहिए और उन्हें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि वे यथाशक्ति स्काउटिंग के कार्य को आगे बढ़ाने में सक्रिय प्रयत्न करेंगे। **यदि अधिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण या समय के अभाव से स्काउटिंग के कार्य में अपना समय देने के लिए अपने आपको असमर्थ पाते हैं तो उनकी शोभा इस में है कि वे किसी अन्य उत्साही व्यक्ति को इस कार्य का भार सौंप दें जो कि इस कार्य को लगन और अन्तःप्रेरणा से करने को तैयार हों और स्वयं हर प्रकार से उसे सहयोग देकर उसका पथ प्रदर्शन करते रहें।** इस प्रकार सेवा भाव से प्रेरित व्यक्ति स्काउटिंग के संगठन में जीवन का संचार कर सकते हैं।

स्काउट शिक्षण सम्बन्धी सुझाव

स्काउटिंग के शिक्षण की ओर हमारा विशेष ध्यान जाना चाहिए और जो भी कार्य इस सम्बन्ध में किया जाय उसे ऊपर के बताये गये मूल सिद्धान्तों की कसौटी पर परख लेना चाहिए। कोई भी ट्रेनिंग कैम्प अपने मनमानी ढंग से नहीं किए जाने चाहिएं। सभी ट्रेनिंग कैम्प ट्रेनिंग स्कीम के आधार पर किए जाने चाहिएं। इस वर्ष केवल टोली नायकों और पुराने स्काउट. मास्टरों के लिए रिफ्रेशर्स ट्रेनिंग कैम्प किए जाने चाहिएं क्योंकि हमारा लक्ष्य उस काम को समेटना और काबू में करना है जो कि पहले से फैल चुका है। इसलिए नये स्काउट मास्टरों के लिए अभी ट्रेनिंग कैम्प करना अनावश्यक है। जिला असोसिएशनों को चाहिए कि शिक्षण-शिविर में प्रवेश करने के पूर्व शिक्षार्थियों का चुनाव करें और इस चुनाव में केवल ऐसे ही व्यक्तियों को चुना जाय जिनमें सफल स्काउट मास्टर और टोली नायक बनने की आवश्यक योग्यताएँ हों। जो व्यक्ति अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए नहीं बल्कि अन्तःप्रेरणा से इस कार्य को करना चाहते हों और जो दल खोलकर उनका नियमित संचालन करने का संकल्प करते हों। ऐसे स्काउट मास्टरों या टोली नायकों को ट्रेनिंग में भरती करने से कोई लाभ नहीं जो बार-बार ट्रेनिंग कैम्प में भाग लेते

[शेष ४ पृष्ठ पर

आजादी के पद-चिन्ह

१८४७-१९४७

प्रो० लक्ष्मण स्वरूप त्रिपाठी, एम० ए०, साहित्यरत्न

१५ अगस्त १९४७ भारत और एशिया के जीवन-काल की एक चिरस्मरणीय तिथि रहेगी। यह अंगरेज के हाथों भारतीय हाथों में राष्ट्र की राजनैतिक सत्ता के हस्तांतरित किये जाने की तारीख है। भारत की राजलक्ष्मी के आज से सौ वर्ष पहले लंदन चले जाने और अब एक सदी के प्रवास के पश्चात् फिर दिल्ली लौटने की कहानी यहां शृंखला-बद्ध रूप में दी जा रही है।

१८४७ :—

अब ऐसा दीख पड़ता है कि बहादुरशाह के मरने के बाद कलम के एक डोबे में बादशाही को ख़त्म कर देना कुछ मुश्किल न होगा।

(दिल्ली-स्थित राजदूत, मेटकाफ़ के नाम तत्कालीन अंगरेज़ गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंज द्वारा लिखे गये एक गोपनीय पत्र से उद्धृत)

१८५७ :—

मेरी यह दिली ख्वाहिश है कि जिस जरिये से भी और जिस भी कीमत पर यह मुमकिन हो, फिरंगियों को हिंदुस्तान से बाहर निकाल दिया जाय। आप सब सरदार दुश्मन को निकाल बाहर करने की गरज से अपनी तलवार खींचने के लिए तैयार हों तो मैं इस बात के लिए तत्पर हूं कि हिंदुस्तान की हुकूमत करने के अपने खानदान के तमाम पुश्तैनी हुकूक व अख्त्यारात आप नरेशों के किसी ऐसे गिरोह के हाथों सौंप दूँ जिसे इस काम के लिए चुन लिया जावे।

(दिल्ली के अंतिम सम्राट शाहंशाह बहादुरशाह के राजा-नवाबों व जनता के नाम प्रकाशित किये गये युद्ध-आदेश-पत्र से)

१८५८ :—

जंगे-मैदान में बगावत को कुचल देने से हमारी ताकत का इज़हार हो चुका है; अब हम हिंदुस्तान के उन इलाकों का शासन-सूत्र अपने हाथों में संभाल रहे हैं जिन पर अब तक आनरेबुल ईस्ट इंडिया कंपनी हमारी ओर से बतौर ट्रस्ट के राज करती थी।

(साम्राज्ञी विक्टोरिया द्वारा हिंदुस्तान के राजाओं एवं प्रजा के नाम प्रकाशित किये गये घोषणा पत्र से)

१९०६ :—

इस कांग्रेस की राय है कि स्वराज्य-प्राप्त ब्रिटिश उपनिवेशों में जो शासन-प्रणाली है वह भारत में भी प्रचलित की जाय।

(कलकत्ता कांग्रेस—सभापति श्री दादाभाई नौरोजी)

१९१९ :—

यह कांग्रेस अपने पिछले वर्ष की घोषणा को दोहराती है कि भारत पूर्ण उत्तरदायी शासन के योग्य है। यह कांग्रेस ब्रिटिश पार्लामेंट से आग्रह करती है कि आत्म-निर्णय के सिद्धान्त पर भारत में पूर्ण उत्तरदायी शासन कायम करने के लिए शीघ्र कारवाई करे।

(अमृतसर कांग्रेस—सभापति पं० मोतीलाल नेहरू)

१९२० :—

यह कांग्रेस घोषणा करती है कि उसका ध्येय सभी शांतिमय एवं उचित उपायों द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना है।

यह कांग्रेस कौंसिलों में चुने गये सदस्यों से अनुरोध करती है कि वे अपनी जगहों से स्तीफे दे दें।

(नागपुर कांग्रेस—सभापति श्री चक्रवर्ती विजय राघवाचार्य)

१९२१ :—

अप्रैल १९१९ की घटनाओं के मामले में भारत व ब्रिटेन की सरकारों ने पंजाब की बेकसूर जनता की रक्षा करने में तथा असभ्य एवं सैनिक-धर्म-विरुद्ध आचरण करने वाले अफसरों को दंड देने में लापरवाही की है। वायसराय की सबसे ताजी घोषणा इस बात का प्रमाण है कि पंजाब के मामलों पर व खिलाफत के सवाल पर ब्रिटिश सरकार को तनिक भी पछतावा नहीं है।

इसलिए भारतवासियों के लिए अब इसके सिवा और कोई मार्ग नहीं है कि वे गांधी जी द्वारा संचालित असहयोग की नीति को स्वीकार करें और उस पर अमल करें।

(कलकत्ता-विशेष--अधिवेशन--सभापति लाला लाजपतराय)

१९२८ :—

सर्वदल समिति की 'नेहरू रिपोर्ट' में शासन-विधान की जो तजवीज पेश की गई है उसका कांग्रेस स्वागत करती है।

अगर ब्रिटिश पार्लामेंट इस विधान को ज्यों का त्यों ३१ दिसंबर १९२९ तक स्वीकार कर ले तो यह कांग्रेस उसे अपना लेगी अन्यथा कांग्रेस देश को सलाह देगी कि वह करों का देना बन्द कर दे व अन्य तरीकों द्वारा, जिनका बाद में निश्चय हो, अहिंसात्मक असहयोग का आन्दोलन संगठित करे।

(कलकत्ता कांग्रेस—सभापति पं० मोतीलाल नेहरू)

१९२९-३० : —

इस कांग्रेस की राय है कि गोलमेज़-परिषद् में कांग्रेस के शामिल होने से मौजूदा हालत में कोई फायदा नहीं। इसलिए यह कांग्रेस घोषणा करती है कि कांग्रेस-विधान की पहली कलम में 'स्वराज्य' शब्द की व्याख्या भविष्य में 'पूर्ण स्वाधीनता' मानी जावे।

यह कांग्रेस अपनी महासमिति को यह अधिकार देती है कि वह जब और जहां चाहे, आवश्यक पाबंदियों के अंदर सविनय अवज्ञा और करबंदी तक का कार्य-क्रम आरंभ कर दे।

(लाहौर कांग्रेस--सभापति पं० जवाहरलाल नेहरू)

१९३० :--जनवरी २६

हम भारतीय नागरिक भी अन्य राष्ट्रों की भाँति अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं कि धरती पर स्वतंत्र होकर रहें, अपने श्रम का फल स्वयं भोगें और जीवन-निर्वाह के लिए हमें सभी आवश्यक सुविधाएं प्राप्त हों जिससे कि अपने सर्वतोमुखी विकास का हमें भी पूरा अवसर मिले।

हम यह भी मानते हैं कि यदि कोई सरकार प्रजा से उसके मौलिक अधिकार छीन लेती है, प्रजा को त्रास देती है, तो प्रजा को यह अधिकार है कि वह उस सरकार को बदल दे या मिटा दे।

इसीलिए हम शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करते हैं कि पूर्ण स्वाधीनता की स्थापना के लिए, जो भी आदेश हमें कांग्रेस से प्राप्त होंगे, उनका हम पालन करेंगे।

(स्वाधीनता के घोषणा-पत्रक से)

१९४० :—

इस कांग्रेस की राय में ब्रिटिश सरकार ने, बिना भारत की सलाह के, उसे युद्ध में घसीट कर और भारतीय साधनों का युद्ध के लिए शोषण करके भारतीय राष्ट्र का अपमान किया है। इन सूरतों में कांग्रेस प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस लड़ाई में शामिल नहीं हो सकती। इसीलिए जिन सूबों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल थे, उन्हें हटा लिया गया है और आजादी की लड़ाई की घोषणा की जाती है। कांग्रेस को यकीन है कि सभी भारतवासी बिना जात-पात या धर्म-कर्म के भेदभाव के इस में शरीक होंगे।

'रामगढ़ कांग्रेस—सभापति मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

१९४२: —फ्राइज इन्डीन लिज़ों

देश भाइयो और दोस्तो !

आपको मालूम है कि हमने योरोप-प्रवासी हिंदुस्तानी देशभक्तों की एक आजाद हिंद फौज "फ्राइज इन्डीन लिजों" की स्थापना की है जिसको फ्रांकनबर्ग एवं कोनिग्सबर्ग दुर्गों में ट्रेनिंग दी जा रही है। हिंदुस्तान के अंदर जारी आजादी की लड़ाई में मदद करने के लिए यह फौज ब्रिटिश साम्राज्य की फौजों से जंगे-मैदान में लोहा लेगी।

भाइयो ! मुझे मौत को शिकस्त देने की हिम्मत रखनेवाले स्वयं सैनिक चाहिएं। 'आजादी या मौत' के इस भीषण संग्राम में उन्हें देने के लिए मेरे पास फकत मौत, भूख-प्यास, तंगी-तकलीफें और मुसीबतें हैं; पर फिर भी हमारे साथ उन करोड़ों देशभाई और देशबहनों का स्नेह और आशीर्वाद है जो आज मुल्क के अंदर विदेशी सत्ता से टक्कर ले रहे हैं।

(नेताजी श्री सुभाष चंद्र बोस; फ्रांकनबर्ग (जर्मनी) २६ जनवरी १९४२ के दिन स्वतंत्रता-दिवस समारोह के

अवसर पर 'फ्राइज इन्डीन लिजों' (आजाद हिंद फौज) की स्थापना करते समय दिये गये भाषण से .. ...)

१९४२ (८ अगस्त):—

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की राय में ब्रिटिश शासन का अब घड़ी भर भी भारत में नाम रहना भारत के लिए अपमानजनक है। अतः यह कांग्रेस ब्रिटिश सरकार से अत्यंत जोरदार शब्दों में मांग करती है कि वह तुरंत भारत से हट जावे।

यदि उपर्युक्त मांग तुरंत अमल में न लायी जावे तो यह कांग्रेस देशवासियों को सामूहिक एवं अहिंसात्मक संग्राम छेड़ने की अनुमति देती है। स्वतंत्रता का यह अंतिम संग्राम भी गांधी जी के नेतृत्व में लड़ा जायगा।

भविष्य में कांग्रेस द्वारा नियमित आदेश न पहुँच सकने की संभावना में हिदायत दी जाती है कि प्रत्येक स्त्री-पुरुष जो अपने देश के स्वातंत्र्य अधिकार में विश्वास रखता हो वह भारत की मुकम्मिल आजादी के ध्येय को प्राप्त करने में अपनी रहनुमाई खुद ही करे!

'इनकलाब जिंदाबाद!'

('भारतीय विद्रोह की शंखध्वनि ८ अगस्त सन् १९४२ वाला प्रस्ताव' अखिल भारतीय कांग्रेस के बंबई अधिवेशन में स्वीकृत। सभापति—मौलाना अबुल कलाम 'आजाद')

१९४३:—

भारत माता और उसकी चालीस करोड़ संतान को आजाद करने के लिए मैं सुभाषचंद्र बोस, अपने जीवन की अंतिम सांस तक इस पवित्र युद्ध को जारी रखने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

आजाद हिंद की अस्थायी सरकार भारत से अंग्रेज़ों तथा उनके मित्रों को निकाल बाहर करने के लिए उनके विरुद्ध संग्राम छेड़ेगी, उसके बाद वह स्वतंत्र भारत में आम जनता की राय से स्थायी राष्ट्रीय सरकार स्थापित करेगी। यह सरकार सभी के लिए धार्मिक स्वतंत्रता, समान अधिकार और समान अवसर का भी ऐलान करती है।

हम उन शहीदों के नाम पर जिन्होंने वीरता और बलिदान की परंपरा को कायम किया है, देशवासियों का आह्वान करते हैं कि वे अंग्रेजी सत्ता और उनके साथियों के विरुद्ध इस झंडे के नीचे शामिल होकर इस अंतिम संग्राम में जूझ पड़ें। 'जय हिन्द'

(हस्ताक्षर—सुभाषचंद्र बोस, राष्ट्र के प्रधान; युद्ध और पराराष्ट्र मंत्री तथा आजाद हिंद अस्थायी सरकार के अन्य संचालकगण)

३ जून, १९४७:—

धारा (१) 'निश्चित दिन' १५ अगस्त १९४७ से भारतीय साम्राज्य दो स्वतंत्र उपनिवेशों का रूप ग्रहण करेगा—भारत और पाकिस्तान।

धारा (६) 'निश्चित दिन' (१५ अगस्त, १९४७) के बाद ब्रिटेन का कोई कानून अथवा किसी भी ब्रिटिश मंत्री की आज्ञा उपनिवेश के कानून के रूप में लागू नहीं होगी।

धारा (२०) इस कानून का नाम—"भारत स्वतंत्रता कानून १९४७" होगा।

(ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा स्वीकृत एवं ब्रिटिश सम्राट द्वारा मुद्रांकित भारत स्वतंत्रता बिल की बीस धाराओं से उद्धृत)

१५ जून १९४७:—

अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा की इस महासमिति ने ब्रिटिश सरकार की २० फरवरी और ३ जून की घोषणा पर पूर्ण विचार किया है। महासमिति कार्य समिति के प्रस्तावों को स्वीकार करते हुए ब्रिटिश सरकार द्वारा १५ अगस्त १९४७ को सत्ता हस्तांतरित करने के निश्चय का स्वागत करती है।

३ जून १९४७ के ब्रिटिश प्रस्तावों से भारत के कुछ भागों के अलग हो जाने की संभावना है। इस पर बहुत अधिक दुखी होते हुए भी वर्त्तमान परिस्थितियों में कांग्रेस इस संभावना को स्वीकार करती है।

(अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के दिल्ली अधिवेशन में स्वीकृत। सभापति—आचार्य कृपलानी; जून १५, १९४७)

जुलाई, १९४७:—

हमारे देश की पार्लमेंट के इतिहास में यह 'भारत-स्वतंत्रता बिल' एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात है। इससे पहले दुनिया की इतनी बड़ी जन संख्या ने कभी भी केवल एक कानून द्वारा स्वतंत्रता नहीं प्राप्त की

कालेज में पढ़नेवाले पुत्र के नाम स्काउट शिक्षक का पत्र

श्री एम० श्रो० बार्की, एम० एस-सी०, डिविजनल सेक्रेटरी, गोरखपुर

पत्र सं० २

प्रिय सुरेश,

मुझे विश्वास है कि मेरे गत पत्र ने तुम्हारे मन में प्राणियों के लिंग-भेद के संबंध में अधिक जानने की रुचि उत्पन्न कर दी होगी, अतः यथाशीघ्र मैं आज तद्विषयक अपना यह दूसरा पत्र लिख रहा हूँ।

अपने गत पत्र में मैंने व्यक्त किया था कि उक्त विषय की अभिज्ञता के लिए 'प्राणी-विद्या-शास्त्र' तथा 'मानस-शास्त्र' के दृष्टिकोण से विचार करना अत्यावश्यक है। प्राणी-विद्या के आधार पर लिंग-भेद का रूप निर्धारित करने के लिए अनिवार्यतः थोड़ा-बहुत यह जानना होगा कि पशु-जगत में यह लिंग-भेद किस प्रकार उत्पन्न और आरम्भ हुआ है। इसका अति संक्षिप्त विवरण मैं अपने इस पत्र में देने का प्रयास कर रहा हूँ।

उच्च कोटि के पशुओं तथा मनुष्यों के शरीर निश्चित रूप से अनेक जीवाणुओं के संयोग से बने हैं जिन्हें 'सेल' कहते हैं। प्रत्येक सेल इतना सूक्ष्म जीवाणु होता है कि वह केवल सूक्ष्म-दर्शक यंत्र द्वारा ही दृष्टिगोचर हो सकता है। प्रत्येक सेल में जीवन के लिए एक नितांत उपयोगी द्रव्य का सूक्ष्म बिंदु विद्यमान रहता है जिसे 'प्रोटोप्लाज़्म' कहते हैं। यह प्रोटोप्लाज़्म ही 'जीवन का आधार तत्व' है, अर्थात् इसी के द्वारा किसी सजीव वस्तु की सजीवता के लक्षण प्रकट होते हैं। यह खाता-पीता है, बढ़ता है, श्वासोच्छ्वास की क्रिया करता है तथा यही नव-सर्जन (संतानोत्पत्ति) का काम करता है। वास्तव में इसे एक विख्यात प्राणी-विद्या विशारद ने "जीवन का स्थूल शारीरिक तत्व" कह कर पुकारा है। यह प्रोटोप्लाज़्म एक अर्ध तरल गाढ़ा पदार्थ है। प्रत्येक सेल के केन्द्र में एक अत्यधिक स्निग्ध अंश है जिसे न्यूक्लेअस कहते हैं। इस प्रकार के सेल मानव शरीर में तथा उच्च स्तर के पशु-शरीर में लाखों की संख्या में पाये जाते हैं।

यह मनोरंजक बात सुनकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि ऐसे भी प्राणी हैं जिनमें केवल एक ही जीवाणु (सेल) पाया जाता है। प्राणी-विद्या-विशारदों ने 'अमीबा' नामक एक पशु का पता लगाया है जिसमें केवल एक ही 'सेल' विद्यमान रहता है और यह अकेला सेल ही भोजन क्रिया करता है, बढ़ता है, घूमता-फिरता है और एक नये जीवाणु को जन्म भी देता है। इस जीवाणु की वृद्धि जब एक निश्चित आकार तक हो जाती है तो उसके दो भाग हो जाते हैं—इस प्रकार वह दो 'अमीबा-शिशुओं' में परिवर्तित हो जाता है। 'न्यूक्लेअस' नाम का गर्भ-बीज जो कि जीव का एक अत्यावश्यक अंश है और जो सब जीवाणुओं में विद्यमान रहता है जीवाणु के आधार तत्व अर्थात् 'प्रोटोप्लाज़्म' के विभाजन से पूर्व स्वयं विभाजित हो जाता है। इन बेचारे जीवाणुओं में लिंग-भेद नाम की कोई वस्तु नहीं पाई जाती; वास्तव में ये सब एक समान होते हैं। इन दीन प्राणियों में स्त्री-पुरुष सूचक किसी आकार-प्रकार का नाम भी नहीं है।

---

१५ अगस्त को भारत के लोग अपना नया दर्जा प्राप्त करेंगे और वे राष्ट्रमंडल के अन्य सदस्यों के समान ही होंगे।

(अंग्रेज भारत-मंत्री लार्ड लिस्टोवल द्वारा ब्रिटिश पार्लमेंट में दिया गया वक्तव्य)

१५ अगस्त, १९४७ :—

इस प्रकार १५ अगस्त, १९४७ को समय-चक्र का एक दौर पूरा हो गया। अंतिम मुगल सम्राट् बहादुरशाह के हाथों से जिस प्रकार अत्यन्त कौशल एवं छद्म द्वारा अंगरेजों ने भारत की शासन-सत्ता हस्तगत की थी ठीक उसी प्रकार उन्होंने वह सत्ता भारतीयों को हस्तान्तरित भी कर दी……।

एक अन्य सूक्ष्म जंतु भी पाया जाता है जिसका अमीबा से लगभग सादृश्य है, इस प्राणी में लिंग-भेद के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं। यह प्राणी 'Paramaecium' कहलाता है और इसमें भी केवल एक ही जीवाणु (सेल) विद्यमान रहता है। इसकी संतति वृद्धि भी सेल के खंडों द्वारा होती है; परन्तु जब पीढ़ियों तक यह क्रिया चलती रहती है तो इस सूक्ष्म जंतु की गति में एक प्रकार की मंदता या शिथिलता आ जाती है; तब यह देखा गया है कि ये दो-दो ऐनिमलक्यूलस (सूक्ष्म जीव) आपस में एक दूसरे से चिपट जाते हैं और सेल के गर्भ-बीज का एक भाग दूसरे के अंदर प्रविष्ट हो जाता है। प्रविष्ट होनेवाला अंश अन्दर के अंश से जुड़ जाता है और पुनः ये दोनों सेल नवयौवन प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार वे अपनी क्रियाशीलता अनेक पीढ़ियों तक अक्षुण्ण बनाये रहते हैं। इसके पश्चात् फिर इन जीवाणुओं में स्त्री-पुरुष सूचक कोई चिन्ह लक्षित नहीं होता; सब एक-समान ही दिखाई देते हैं।

विकास के मार्ग में प्राणियों की जैसे-जैसे प्रगति होती जाती है उनका शरीर अनेक जीवाणुओं के संगठन से बनता जाता है। तब जीवाणुओं के कुछ झुंड भोजन-पाचन क्रिया करते हैं, कुछ प्राणी को एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में गति शील करते हैं, कुछ पास-पड़ोस में होनेवाले परिवर्त्तनों की देख-भाल और उनका प्रतिकार करते हैं और कुछ अपने ही समान नव संतति की सृष्टि करते हैं। कुल जीवाणु जो कि नई संतति को जन्म देने का काम करते हैं अपने मूल शरीर से अलग होकर बढ़ते हैं और इस प्रकार विभाजित होकर नई रचना करते हैं।

उच्च स्तर के पशुओं में संतानोत्पत्ति दो असदृश प्रकार के जीवाणुओं के संयोग से होती है। इन जीवाणुओं को 'शुक्र-कीट' कहते हैं। ये निश्चित प्रकार के शुक्र-कीट 'नर' और 'मादा' नाम के कीट कहलाते हैं। केंचुआ जैसा जीव नर और मादा दोनों प्रकार के शुक्र कीटाणु उत्पन्न कर सकता है, किंतु विशेष ऋतुओं में यह जनन-क्रिया नर और मादा दोनों प्रकार के प्राणियों द्वारा ही होती है। किंतु जैसे ही हम विकास की उन्नतर सीढ़ी की ओर आरोहण करते हैं निश्चित रूप से हम नर और मादा दो भिन्न लिंग के प्राणी देखते हैं और यहाँ नर-प्राणी नर शुक्र कीट' तथा मादा प्राणी 'मादा-शुक्र-कीट' ही पैदा कर सकता है।

मछलियों में मादा मछलियाँ केवल मादा शुक्र-कीट या अंडे उत्पन्न करती हैं और नर मछलियाँ केवल नर शुक्र-कीट या स्पर्म पैदा करती हैं। बच्चे देने के दिनों में मादा मछलियाँ पानी में सुरक्षित स्थानों पर अंडे दे देती हैं और नर मछलियाँ उन अंडों के आसपास परिभ्रमण करते हुए उनके ऊपर अपना तरल वीर्य या पित्ता छोड़ देते हैं जिसमें लाखों की संख्या में शुक्र कीटाणु होते हैं। तब ये नर और मादा शुक्र कीटाणु आपस में मिलते हैं, उनके गर्भरस का पारस्पारिक क्षरण होता है और दोनों मिलकर आपस में एक हो जाते हैं। इस क्रिया को "Fertilization" अर्थात् उर्वरा या गर्भ धारण की क्रिया कहते हैं और इस प्रकार सेल से मछलियों के बच्चे बाहर निकल आते हैं।

इसी प्रकार की प्रजनन क्रिया द्वारा मेंढकों की भी उत्पत्ति होती है। वर्षा ऋतु में (विशेषतः प्रारंभ काल में) मेंढक जलाशयों में एकत्रित दृष्टिगोचर होने लगते हैं और प्रायः देखने में आता है कि मेंढक अपनी छाती से मेंढकी के ऊपर चिपटे होते हैं। कुछ समय तक दोनों के इसी प्रकार चिपटे रहने के पश्चात मेंढकी पानी में अंडे दे देता है और मेंढक जो कि मेंढकी के ऊपर चिपटा रहता है स्वयम् भी अपना तरल वीर्य छोड़ देता है जिसमें अत्यधिक संख्या में शुक्र-कीटाणु रहते हैं। फल-स्वरूप उक्त दो प्रकार के शुक्र-कीटाणुओं का संयोग (उर्वरा करने की क्रिया) अंडों से मेंढकों के नव-शिशु पैदा कर देता है। इस प्रकार इस क्रिया में भी 'नर और मादा' दोनों प्रकार के शुक्र-कीटाणु प्राणी-शरीर से निकल कर नव-सृष्टि करते हैं।

अब पक्षियों के बारे में सुनिए—नर पक्षी अपने शरीर का तरल शुक्र पदार्थ मादा पक्षी के शरीर में पहुँचाता है जिससे मादा के गर्भ में अंडे बन जाते हैं; इन अंडों से ही पक्षियों के बच्चे पैदा होने में समर्थ होते हैं। गर्भगत इन बच्चों के पोषण और विकास के लिए इन अंडों में भोज्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहता है। अंडों से बाहर

निकलने के पश्चात् पक्षियों के बच्चे किस प्रकार विकसित होते हैं—इसे सभी बालक जानते हैं।

पशुओं में सर्वोच्च कोटि के 'मामल्स' कहलाते हैं और इसी कोटि में मानव प्राणी की भी गणना होती है। ये 'मामल्स' भी संतानोत्पत्ति में पक्षियों की ही रीति का पूर्णतः अनुसरण करते हैं। इस कोटि के प्राणियों में स्त्री-पुरुष दोनों प्रकार के लिंग-भेद पाये जाते हैं जो क्रमशः केवल स्त्री अथवा पुरुष जाति के अर्थात् अपनी-अपनी जाति के शुक्र-कीटाणु उत्पन्न करते हैं जो 'स्पर्म' कहलाते हैं। मैथुन के समय पुरुष अपना वीर्य स्त्री के शरीर में पहुँचा देता है जिससे स्त्री के शरीर में ही प्रसव की निश्चित अवधि तक भ्रूण का विकास होता है और प्रसव होने पर एक अरसे तक शिशु को स्त्री की दुग्ध-ग्रंथियों (स्तन) का दूध पीकर पोषण मिलता है और सर्व प्रकार की बाधाओं से सुरक्षित रहने का उन्हें अवसर प्राप्त हो जाता है। यही कारण है कि जहाँ निम्न स्तर के प्राणी बहुत बड़ी संख्या में बच्चे पैदा करने पर भी बहुत अल्प संख्या में उन्हें जीवित रख सकते हैं, वहाँ उच्च स्तर के प्राणी अत्यल्प संतति उत्पन्न करते हैं और उन्हें सुरक्षा के प्रयत्नों द्वारा जीवित रखने में सफल होते हैं।

संतति के भरण-पोषण के संबंध में यह ध्यान देने योग्य बात है कि मानव प्राणी के समान इस कर्त्तव्य का पालन निम्न स्तर के प्राणियों में भी माता पिता दोनों को करना पड़ता है। एक विशेष जाति की मछलियों में देखा गया है कि नर मछली तब तक अंडों के पुंज को अपने मुख में लिये फिरती रहती है जब तक कि उससे बच्चे उत्पन्न होते हैं; और यह आश्चर्य की बात है कि इस स्थिति में यह नर मछली भोजन से पूर्णतः हड़ताल किये रहती है। यह बात भी तुम सब भली भाँति जानते हो कि नर पक्षी घोंसला बनाने में, अंडों को 'छोप' (warning) देने में तथा अंडों से बाहर बच्चों के निकल आने के बाद उनके भरण-पोषण में किस प्रकार अपना कर्त्तव्य निभाते हैं। जंगली पशु (नर) भी किस लगन के साथ अपने बच्चों की रक्षा करते हैं, यह सब भी तुमसे छिपा नहीं है।

अतः जिस प्रेम एवं कर्त्तव्य-निष्ठा के साथ मानव-माता-पिता अपनी संतान की रक्षा और पालन-पोषण करते हैं तथा मनुष्य के सामाजिक जीवन का आधार अर्थात् 'अनंत पारिवारिक संगठन' जिस पर अवलंबित है उसका प्रारूप निम्नतर स्तर के पशुओं में विद्यमान है।

लक्ष्य और पथिक

श्री ब्रजमोहन गुप्त, एम० ए०, एल० टी० डी० फ़िल०

लेकर एक लक्ष्य जीवन का
पथिकों का समूह आता है,
उनमें से प्रत्येक पथिक
मंजिल तक पहुँच नहीं पाता है,
व्यर्थ नहीं बलिदान किंतु यों
पथ पर मर मिटने वालों का,
जो राही पथ पर बलि होता
मंजिल को समीप लाता है।

२

मैं पहुँच न पाया मंजिल तक
कुछ सोच नहीं इसका मुझको
मैं सोच सकूँ पथ के संकट
अब होश नहीं इतना मुझको
जब तक मंजिल में आकर्षण
तब तक चलने वाले बाकी,
मैं टूट गया संघर्षों में
अफ़सोस नहीं इसका मुझको।

३

मैं टूट गया संघर्षों में
पर मैंने हार नहीं मानी है
जब तक एक साँस जीवन की
तब तक चलने की ठानी है
औरों की हिम्मत पस्त करें
मेरे ऐसे पद-चिह्न नहीं
रक्त हृदय का देकर मैंने
जीवन की कीमत जानी है।

राष्ट्रीय संकट

श्री अमरनाथ जी गुप्त, एम० ए०, एल० टी०, हेडक्वार्टर्स कमिश्नर, प्रान्तीय हि० स्का० अ०

[वाजपेयी जी अपने कमरे में बैठे हैं, मेज पर एक ओर कुछ काग़ज़ रखे हैं, दूसरी ओर टेलीफोन रखा है। सामने गुलदस्ता है। वाजपेयी जी के हाथ में पत्र है जिसे वे पढ़ रहे हैं।]

वाजपेयी जी—(स्वयं ; क्या अचरज की बात है, जो लोग सेवा के कार्य से कोसों दूर भागते हैं वही आज स्काउटों की सबसे कड़ी आलोचना करते हैं, इसमें लगता ही क्या है। कह दिया स्काउट करते ही क्या हैं; निठल्ले घूमते हैं। ठीक ही है जो अपना काम छोड़ कर दूसरों की सहायता के लिये भागा फिरेगा, वह तो इन सांसारिक स्वार्थियों को निठल्ला ही जँचेगा।

[टेलीफोन की घंटी बजती है। वाजपेयी जी टेलीफोन उठाते हैं]

वाजपेयी जी—"हलो...जी मैं वाजपेयी ही बोल रहा हूँ...जी इस समय मैं कमरे में अकेला ही...जी हां अकेला...क्या आप हैं, मुझसे मिलना है श्रीमान को ! .. कहिये कब आऊं !...क्या आप स्वयं आ रहे हैं !.. आप क्यों कष्ट करते हैं...अच्छा फिर जैसी श्रीमान की इच्छा...।

[टेलीफोन रख देते हैं, और अपनी घंटी बजाते हैं, एक स्काउट आकर सैल्यूट देता है]

वाजपेयी जी—देखो अरुण, वर्मा जी को बुला लो।

[स्काउट सैल्यूट देकर बाहर जाता है।]

वाजपेयी जी—(स्वयं) यह मंत्री महोदय यहां कैसे आ रहे हैं ? जरूर कुछ दाल में काला है......

[वर्मा जी आते हैं और सैल्यूट करते हैं]

वाजपेयी जी—देखिये आज (कान में)—आ रहे हैं।

वर्मा जी—हैं स्वयं।

वाजपेयी जी—जी स्वयं। मैंने कहा था, मैं आ जाऊं, बोले नहीं मैं ही आ रहा हूँ। हाँ देखिये जब तक हम और वह बातें करें कोई यहाँ न आने पाये। ज़रा वैसे भी चौकन्ने रहना।

वर्मा जी—आप निश्चिन्त रहें।

वाजपेयी जी—हां अरुण से कह दीजियेगा कि वह भी निगाह रखे।

[मोटर की पूं-पूं का शब्द सुनाई देता है]

वर्माजी—लो वह आ गये।

वाजपेयी जी—(उठ कर) चलो।

[स्काउट अरुण मंत्री जी के साथ अन्दर आता है]

वाजपेयी जी—(अगाड़ी बढ़कर स्वागत करते हुए) आइये पंडित जी आइये।

पंडित जी—कहिये वाजपेयी जी अच्छे तो हैं आप !

वाजपेयी जी—कृपा है पंडित जी।

[वाजपेयी जी वर्मा जी और अरुण को इशारा करते हैं, और दोनों सैल्यूट करके बाहर जाते हैं]

पंडित जी—आप तो अब भी वैसे ही चुस्त मालूम होते हैं जैसे अब से २० वर्ष पहले थे।

वाजपेयी जी—काम जो चुस्ती का ठहरा पंडित जी। देखिये आप हम लोगों को बड़ा कांटों में घसीटते हैं, आप इस झोंपड़ी पर आयें यह तो कुछ अच्छा नहीं लगता।

पंडित जी—आपके लिये तो वाजपेयी जी मैं वही हूँ जो पहले था, फिर काम ऐसा था कि मैं आपसे मिलने की बात किसी पर ज़ाहिर नहीं होने देना चाहता था।

वाजपेयी जी—अच्छा यह बात है, यह तो हमारा सौभाग्य है कि आप यहां पधारे।

पंडित जी—(मुसकरा कर चलो इन बातों को समाप्त करो। अब बात सुन लो, हां यहां कोई सुनेगा तो नहीं।

वाजपेयी जी—बिलकुल नहीं। आप निश्चिन्त बात कह डालिये।

पंडित जी—वाजपेयी जी हम बड़े चक्कर में हैं, हमारी भेद की बातें सब विदेशों में चली जाती हैं जिससे उलझनें बढ़ रही हैं, और कभी-कभी तो युद्ध का भय भी होने लगता है।

वाजपेयी जी—यह कैसे !

पंडित जी—यही तो मालूम करना है।

वाजपेयी जी--आपका क्या अनुमान है ?

पंडित जी--अपने देश में, शायद दिल्ली में कोई गिरोह काम कर रहा है, जो विदेशों को यह भेद भेजता है।

वाजपेयी जी--आपके गुप्तचर कुछ पता लगा सके क्या ?

पंडित जी--वह लगा लेते तो, आपको कष्ट देने की आवश्यकता ही क्या थी।

वाजपेयी जी--फिर क्या आज्ञा है ?

पंडित जी--आज्ञा क्या होती वाजपेयी जी, बस देश के हित में जो उचित समझें वह करिये, यही सहयोग लेने मैं आज आया हूं, यह भी पता लग जायेगा कि स्काउट क्या कर सकते हैं और समय पड़ने पर वह देश के क्या काम आ सकते हैं।

वाजपेयी जी--मुझे बड़ा गौरव है कि श्रीमान ने हमें इस योग्य तो समझा कि हमसे ऐसी सेवा ली जाये, मैं इस समय तो यही कह सकता हूं कि हम कार्य में कोई बात उठा न रखेंगे।

पंडित जी--आपसे ऐसी ही आशा है। हां देखिये, सरकार से या उसके किसी विभाग से जिस प्रकार की सहायता चाहिये वह आपको मिलेगी यह आप याद रखियेगा।

वाजपेयी जी--हम उसका पूर्ण लाभ उठायेंगे।

पंडित जी--तो लो फिर मैं चला।

वाजपेयी जी--जैसी श्रीमान की इच्छा, चलिये।

[वाजपेयी जी उठकर पंडितजी के साथ बाहर जाते हैं]

(२)

[वाजपेयी जी मैदान में खड़े हैं, स्काउट बालक और बालिकायें घेरे में खड़े हैं]

वाजपेयी जी--अब देखिये आपने यह वायदा किया है कि जो बात हम करेंगे वह गुप्त रहेगी, यह याद रखना।

ट्रूप लीडर--हम भली भांति यह बात याद रखेंगे।

वाजपेयी जी--चीजें देखने आदि में स्काउट क्या करता है ?

एक बालक--वह खूब ग़ौर से देखता है और याद रखता है।

एक बालिका--कई बार तो परीक्षा लेने के लिये आपने हमें किम्स (Kimis game) खेलाया है।

वाजपेयी जी--आज मैं तुम्हारे इस अनुभव की परीक्षा लेता हूँ। देखो कुछ समय से यहाँ एक गिरोह भेद लेने का काम कर रहा है। यह लोग कहीं न कहीं इकट्ठे होते हैं। तुममें से किसी ने इस प्रकार समय-कुसमय लोगों को चुपके से इकट्ठा होते देखा है ?

एक बालक--मेरे पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं, उनके यहां रात को बहुत आदमी आते-जाते हैं, एक बार मैं उधर चला गया तो उन्होंने बात करनी बन्द कर दी।

वाजपेयी जी--वे सज्जन कौन हैं ?

बालक--सेठ अमोलक राम।

वाजपेयी जी--यह तो बड़े व्यापारी हैं। ठीक, और किसी ने कुछ अनुभव किया ?

एक बालिका--जी ! हमारे यहाँ पिछले हफ्ते एक बम्बई के सज्जन आये थे, दो दिन ठहरे वह यहां, एक दिन उनसे यहां के कोई सज्जन मिलने आये, वह अपने कमरे में बात कर रहे थे, मैं बराबर के कमरे में बैठी पढ़ रही थी, मैंने बम्बई वाले सज्जन को यह कहते सुना, "हमें अपनी सेवा सबसे पहले करनी है", यहां वालों ने कहा, "पैसे तो अच्छे मिल जाते हैं, परन्तु कहीं...।" बम्बई वाले बोले, "सेठजी चौकन्ने रहो, हां मिनिस्टरों के कहने से कुछ चन्दा दे दिया करो, और कभी-कभी पार्टी, जिससे देशभक्ति की छाप लगी रहे।" इसी समय पिताजी उनके कमरे में आगये, और बात समाप्त हो गई, मैंने बहुत सोचा, परन्तु यह पहेली मेरी समझ में न आई।

वाजपेयी जी--शाबाश ! मगर तुम्हें छुप कर तो कुछ सुनना नहीं चाहिये।

बालिका--मैं सुनने की इच्छा से तो वहां गई नहीं थी, अकस्मात यह शब्द मेरे कान में पड़ गये।

वाजपेयी जी--ठीक है, अपनी ओर से कभी किसी की बात सुनने की चेष्टा नहीं करनी चाहिये। मगर अनजान मनुष्य की बात सुनने में कोई हर्ज नहीं है, फिर वह भी अकस्मात।

एक और बालक--वाजपेयी यह दिल्लीवाले सज्जन सेठ अमोलक राम भी हो सकते हैं।

वाजपेयी जी--बड़ा अच्छा सुझाव है। देखो भाई तुम सरला को सुरेन्द्र के मकान पर ले जाओ, वहां से

वह सेठजी को देख लेगी, फिर बता सकेगी कि वह वही व्यक्ति हैं कि नहीं।

[सीटी बजाकर वाजपेयी जी सबको विसर्जन करते हैं]

[कमरे में वाजपेयी जी बैठे हैं, टेलीफोन की घन्टी बजती है]

वाजपेयी जी--हलो !...आप हैं वर्माजी !...क्या बाग में आम पक गये हैं...बहुत सुन्दर . तो फिर नौरोज की तिथि ठीक करलो...हां...हां यहां आ जाओ ... ठीक है, जी फौरन...

[टेलीफोन रख कर स्वयं]

चलो मामला तो पका, मकानवाले का भी सहयोग मिल गया, यह तो बहुत ही सुन्दर रहा, फ़ोटोग्राफ़र भी तैयार हैं। ट्रक भी तैयार हैं, ताली भी तैयार है। हाँ बेतार के टेलीफ़ोन की आवश्यकता होगी...हूँ . फिर टेलीफोन करनेवाले को ट्रक में छिपकर भी बैठना पड़ेगा ...हां कुछ इञ्जीनियरिंग का सामान भी चाहियेगा, दूसरों की आंख में धूल ही जो झोकनी है ......

[वर्माजी आकर सैल्यूट करते हैं]

वर्मा जी—आपके सुझाव के अनुसार बम्बई जेल से एक सेफ़ खोलनेवाले को ले आया हूँ।

वाजपेयीजी—ठीक किया, किस शर्त पर वह काम करेगा ?

वर्मा जी—उसी शर्त पर जिस पर ताला खोलनेवाले निपुण ने काम किया है, जेल से रिहाई और १०००) इनाम।

वाजपेयी जी--कुछ हर्ज नहीं, हां तुमने छांटा कैसे ?

वर्मा जी—मैंने वही किया जो आपने यहां दिल्ली की जेल में किया था। जेलर ने सब असामियों को मेरे सामने खड़ा कर दिया, मैंने उनके सामने अपनी मांग रखी, बस यह गनेश अगाड़ी बढ़ आया, बोला, "बाबूजी, आपका काम हम करेंगे, यह सब तो हमारे चेले हैं, यदि १० मिनट में सेफ़ न खोल दें तो मूंछ मुड़ालें।" मैंने कहा, "अगर सेफ़ पेचीदा हो तो ?" वह बोला, "अरे ससुर कैसा भी हो, १० मिनट न लगेगी, १२ मिनट लग जायेंगी।"

वाजपेयी जी—बहुत अच्छे को छांटा आपने।

वर्माजी—अरे यह सब आपसे ही तो सीखा है।

वाजपेयी जी—(मुसकराकर) अच्छा सीख लिया आपने बहुत आशा तो न थी आपसे। हां कुछ चीज़ों की अभी कसर है।

वर्माजी—वह क्या-क्या है ?

वाजपेयी जी—देखिये, हमें हर प्रकार तैयार रहना चाहिये, हमारा मोटो ही है, सावधान (Be Perfered) एक तो बेतार के टेलीफ़ोन का प्रबंध होना चाहिये, बाहर ट्रक में रहे और अन्दर मकान में, ताकि कोई विघ्न हों तो तुरन्त पता चल जाये।

वर्मा जी—बहुत अच्छा।

वाजपेयी जी—कुछ यन्त्र इन्जीनियरिंग के चाहिये, यह लीजिये उनकी सूची।

वर्मा जी—(परचा लेते हुये) इनका भी प्रबन्ध हो जायेगा।

वाजपेयी जी—हां एक गर्द फेंकनेवाली मशीन चाहिये।

वर्माजी—वह किस लिए ?

वाजपेयी जी—की न वही मोटी अक़ल वाली बात ! अरे भाई यदि कोई उस समय आ गया तो धूल फेंकने वाले यंत्र से, ऐसा कर देंगे, मानो वहां कोई कमरे में घुसा ही नहीं।

वर्मा जी—अच्छा अब मैं समझ गया।

वाजपेयी जी—देखो अब तिथि ऐसी तै करो जो सेठ अमोलकराम का दफ्तर छुट्टी के कारण बन्द रहे।

वर्माजी—ईद का दिन रखिये,

वाजपेयी जी—वही सही !

वर्माजी—आपको विश्वास है कि सेठ अमोलकराम ही यह काम कर रहे हैं ?

वाजपेयी जी—भई सरला ने उन्हें पहचान ही लिया, फिर हमारे स्काउटों ने यह भी पता लगा लिया कि उनका दफ्तर विदेशों से माल मगांने का काम करता है और तार—गुप्त संकेतों से भेजता है। फिर वहां विदेशी आते-जाते भी हैं, दो बार सेठ अमोलकराम स्वयं विदेश के दूत से मिले हैं।

वर्मा जी—फिर भी, हम भ्रम में हो सकते हैं।

वाजपेयी जी—अरे भाई परमात्मा को देखा नहीं तो अक़ल से तो पहचाना है।

वर्माजी—चलिये जाँच करने में बिगड़ता भी क्या है।

वाजपेयी जी—अच्छा चलो इस प्रबंध में कुछ मैं भी हाथ बटा दूँ।

[दोनों उठकर जाते हैं]

(४)

[सेठ अमोलकराम के दफ्तर के बाहर एक ट्रक खड़ी है, और दो मोटरें। उनका निजी कमरा दूसरी मंजिल पर है, उसके सामने कुछ इनजिनियर और मिस्त्री खड़े हैं। वाजपेयी जी इनजिनियर की ड्रेस में हैं।]

वाजपेयी जी—ताला खोलो।

एक साथी—(ताला खोलते हुये) देखिये सरकार कितनी आसानी से ताला खोला है।

वाजपेयी जी—शाबाश।

[कुछ आदमी अन्दर जाते हैं, वाजपेयी जी भी अन्दर जाते हैं]

वाजपेयी जी—लो भाई अब तुम्हारी बारी है, देखें कितनी जल्दी सेफ़ खोलते हो।

दूसरा साथी—मैं काम आरंभ करता हूँ। [सेफ़ खोलने के लिए औज़ार तालियाँ इत्यादि निकालता है। और जल्दी जल्दी काम करता है।]

वाजपेयी जी—(फोटोग्राफ़रों से) आप तैयार रहिये।

एक फोटोग्राफ़र—हम तैयार हैं।

[बेतार का टेलीफ़ोन आता है, वाजपेयी जी सुनते हैं।]

वाजपेयी जी—क्या कम्पनी का.. आदमी... अच्छा...। (टेलीफ़ोन रखकर) होशियार, सब अपना-अपना काम बन्द कर दो। धूल फेंकने वाले यन्त्र से काम लो वर्माजी। अरुण तुम ज़ीने के दरवाज़े पर यह यन्त्र अड़ा दो—वह आदमी अभी नीचे एक मित्र से बात कर रहा है, फिर सुशील उसे अटकाये रखेगा। यहां तुम उसे रोकना।

अरुण—बहुत अच्छा, [एक बड़ा सा यन्त्र ज़ीने के दरवाज़े पर लगाता है। सब दीवारों की देखभाल में लग जाते हैं]

वाजपेयी जी—देखें अरुण तुम कितनी देर उसे अटकाये रहते हो। हां वर्मा जी जल्दी कीजिये।

[ज़ीने के पास कम्पनी के आदमी का प्रवेश]

आदमी--यह क्या झंझट मचा रखा है!

अरुण--हम दीवारों की जांच कर रहे हैं।

आदमी—क्यों!

अरुण--मालिक को भय है कि कहीं बिलडिंग बैठ न जाये। पिछली बार भौंचाल ने बड़ी-बड़ी बिलडिंगों को पोला कर दिया है।

आदमी--अच्छा! भई इसे तो हटाओ, मुझे अपने दफ्तर में जाना है,

अरुण--क्या तुम दफ्तर के आदमी हो!

आदमी--हां!

अरुण--(संदेह के शब्दों में) इसका सबूत!

आदमी—मेरे पास दफ्तर की ताली है।

अरुण--इससे क्या होता है!

आदमी--(ज़रा तेज़ होकर) और क्या सबूत चाहते हैं आप!

अरुण--मकान के जमादार को बुला लो, यदि वह तुम्हें पहचान ले तो हमें कोई आपत्ति न होगी। आज के लिये बिलडिंग के हमारे चार्ज में है इसलिये हमें अपने उत्तरदायित्व को निभाना ही पड़ेगा, क्षमा करिये महाशय।

आदमी--(कुछ नर्म होकर) मैं जमादार को अभी बुलाता हूँ।

[प्रस्थान]

वाजपेयी जी--शाबाश अरुण। वर्मा जी भी अब काम समाप्त कर चुके हैं। सेफ़, सेफ़ है, मैं ताला बन्द कराता हूँ, तुम अब आने दो उसे।

अरुण—बहुत अच्छा।

[आदमी का जमादार के साथ प्रवेश]

आदमी—यह लीजिये, जमादार आ गया।

अरुण--कहिये जमादार साहब, आप इन को जानते हैं?

जमादार—जी हां, यह सेठ अमोलकराम जी के दफ्तर के आदमी हैं!

अरुण—क्षमा कीजिये महाशय, जमादार साहब ज़रा इस यंत्र को हटाने में तो सहायता दीजिये।

[जमादार और अरुण यंत्र को हटाते हैं, परन्तु हटाने में हर समय ऐसा होता है कि यंत्र ज़ीने का रास्ता बराबर रोके रहता है]

आदमी--अजी उधर को हटायें, यों तो मुझे यहीं

शाम हो जायेगी, मेरे चाय के निमंत्रण पर आप पानी क्यों फेर रहे हैं ?

अरुण--खेद, अत्यन्त खेद। जरा आप भी हाथ लगा दीजिये।

[तीनों की चेष्टा से यन्त्र हटता है, और वह आदमी अन्दर आता है। दफ्तर के दरवाजे पर जाकर वह दफ्तर का ताला खोलता है। सब इनजीनियर और मिस्त्री दीवारों की जांच में जुटे हुए हैं]

आदमी--कब तक काम समाप्त होगा आपका ?

वाजपेयी जी--अभी तो २ घन्टे और लगेंगे शायद।

आदमी--क्या दशा है बिलडिंग की ?

वाजपेयी जी--(संकेत करके) उस कोने में गड़बड़ है। उसकी मरम्मत होगी तुरन्त, नहीं तो वह बिलडिंग को ले बैठेगा।

आदमी--अच्छा ?

वाजपेयी--जी !

[आदमी दफ्तर में जाता है सब चीज ठीक पाता है एक मेज के पास जाकर द्राज खोलता है और उसमें से कुछ निकालता है। फिर वापस आकर दरवाज़ा बन्द करता है]

वाजपेयी जी--यदि अनुचित न समझा जाये तो क्या आप बता सकेंगे कि आज छुट्टी के दिन भी अपने दफ्तर आने का कष्ट क्यों सहन किया ?

आदमी--(मुस्कराकर) सच पूंछना चाहते हैं क्या आप ?

वाजपेयी जी--झूठ से क्या लाभ।

आदमी--कल मैं अपना बस्ता यहां भूल गया था, उसमें लगभग १००) के नोट थे। आज जब बाज़ार जाने लगा तो जेब में हाथ डाला, धक् से रह गया। भ्रम सा हुआ कि शायद दफ्तर न भूल आया हूँ। सो तुरन्त यहां भागा आया।

वाजपेयी जी--मिल गया बटुवा।

आदमी--जी।

वाजपेयी जी--बधाई।

आदमी--धन्यवाद ! (घड़ी देखकर) अरे ४ बज रहे हैं, क्षमा कीजिये महाशय मुझे एक चायपार्टी में सम्मिलित होना है, समय हो गया है। [प्रस्थान]

वाजपेयी जी--(टेलीफोन लेकर) वह आदमी वापस जा रहा है,...सुशील को उसका पीछा करने को भेज दो...हां...बस साये के तरह उसके साथ लगा रहे.... बिलकुल...एक मिनट को भी निगाह से ओझल न होने दे।....

वर्मा जी--काम आरंभ किया जाये ?

वाजपेयी जी--तुरन्त।

[ताला खोला जाता है। सेफ़ पर काम आरंभ होता है।]

अरुण--क्या उस यन्त्र को ज़ीने से फिर अड़ा लूं।

वाजपेयी जी--हां मैं तो भूल गया था, जाओ जल्दी करो।

[वाजपेयी जी इधर-उधर घूमते हैं, सब लोग दीवारों को ठोक-पीट कर रहे हैं।]

गनेश--(सेफ़ खोलते हुये) विकट ढंग का बना है, पर ससुर हमसे छूट कर कहाँ जाता।

वाजपेयी जी--शाबाश। (फ़ोटोग्राफ़रों से) अब आप तुरन्त सब चीज़ों का फ़ोटो ले डालिये।

एक फोटोग्राफ़र--(सेफ़ से एक लम्बी सूची निकाल कर) क्या इसका भी ?

वाजपेयीजी--हां इसका भी।

[खटाखट फोटो लिये जाते हैं, उधर सब दीवारों पर जुटे हुये हैं]

एक फोटोग्राफ़र--लीजिये हमने काम समाप्त कर लिया है।

वाजपेयी जी--गनेश सेफ़ बन्द करो।

[सेफ़ बन्द किया जाता है]

गनेश--सरकार कर दिया।

वाजपेयी जी--सब बाहर जाओ, वर्मा जी धूल-यन्त्र से ऐसा कर दीजिये मानो कमरे में कोई घुसा ही नहीं, कहीं पद-चिन्ह भी न रहें।

[धूल-यन्त्र का प्रयोग करते हुये वर्मा जी भी बाहर आ जाते हैं]

वाजपेयी जी—दफ्तर बन्द करो अरुण।

अरुण—(दफ्तर बन्द करके) अब।

वाजपेयी जी—सब चीज़ें इकट्ठी करके ट्रक में रखो।

[जल्दी जल्दी सब चीज़ें ट्रकों में रखी जाती है और ट्रक और मोटर में बैठकर सब प्रस्थान करते हैं]

(५)

[वाजपेयी जी का कमरा, वाजपेयी जी और वर्मा जी बैठे हैं]

वर्मा जी—पंडित जी ने पत्र तो बहुत सुन्दर लिखा है।

वाजपेयी जी—अरे भाई काम बन जाने पर तो बधाई मिलती ही है।

वर्मा जी—क्या सब गिरफ्तार हो गये ?

वाजपेयी जी—सब ! एक साथ ही तो सब जगह छापा मारा। कैसा जाल फैला रखा था सेठ अमोलकराम ने।

वर्मा जी एक अफसर भी तो इस गिरोह में ?

वाजपेयी जी—अफसर ही क्या, सब ही थे। मुझे तो कैदियों की लिस्ट में मद्रास के उन देशभक्त का नाम पढ़कर सबसे अधिक अचंभा हुआ ?

वर्मा जी—उनसे तो ऐसी आशा न थी !

वाजपेयी जी—रुपये का चमत्कार आपने देखा कहां है वर्मा जी, यह खुदा का भाई अच्छे अच्छे को डिगा देता है। सच तो यह है कि रुपया संसार में सब कुछ खरीद सकता है, मानव की मानवता तक।

वर्मा जी—क्या ऊँचे-ऊँचे पदाधिकारी भी पिघल जाते हैं ?

वाजपेयी जी—सब, केवल अन्तर मूल्य का है, कोई पांच में रोज़ा खोलता है, कोई पचास में, कोई पचास हजार में, परन्तु यह वह कुंजी है जो सब तालों को खोल देती है।

वर्मा जी—तो क्या आप पंडित जी से मिलने जायेंगे ?

वाजपेयी जी—हां ! उन्होंने बुलाया जो है। और देखो चलना तुम्हें भी है।

वर्मा जी—मुझे ?

वाजपेयी जी—(मुसकराकर) जी हां आपको ! यह तो साझे के चने हैं, चबाने ही पड़ेंगे।

वर्मा जी—(मुसकराकर) मैंने कभी आपकी बात टाली है जो आज टालूंगा।

वाजपेयी जी—(घड़ी देखकर) तो लो चलो, जरा घर होते हुऐ चलेंगे।

वर्मा जी—चलिये ! मैं तो साये की तरह आपके साथ हूँ।

[दोनों का प्रस्थान]

परमाणु की शक्ति रचना की ओर

श्री हरिशंकर चूड़ामणि, एम० एस-सी फाइनल

प्रयोगशाला के सात्विक, निरीह अनुसन्धान क्षेत्र से भौतिक शास्त्र आज परमाणु के सहारे यकायक उस विशाल क्षेत्र में कूद पड़ा है जहाँ ऐसे-ऐसे और इतने अधिक शक्तिशाली भीषण विस्फोट होते हैं कि विश्वास नहीं आता। आज वैज्ञानिक स्वयं आश्चर्यान्वित हो रहा है कि वह कैसे इतनी जल्दी अपने मीठे, गौरवप्रद स्वप्नों की दुनिया में आ उतरा। किन्तु सत्य है कि वह आ गया।

"परमाणु से हमें शक्ति प्राप्त होगी...इतनी अधिक, इतनी अधिक कि वह आज हमारी एक वैज्ञानिक गल्प ही होगी" यह बात प्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटन ने इस विश्व समर से बहुत काल पूर्व अपनी भविष्य वाणी में कही थी।

अणु क्या है और परमाणु क्या है? एक गल्प सुनने को मिलती थी कि पारस लोहे को सोना बना देता है। शताब्दियों से कीमिया वर्ग भी इस प्रयत्न में लगा रहा कि क्षार धातुओं जैसे सीसा (शीशा नहीं) को स्वर्ण में बदला जाय। प्रत्यक्ष रूप से वे इसमें असमर्थ रहे किन्तु इस प्रयत्न में उन्हें अन्य अनेक धातुओं—चाँदी, लोहा, तांबा आदि तथा अन्य पदार्थ बोरन, सिलीकन कोबल्ट आदि—कुल ९२—का ज्ञान प्राप्त हुआ। इन ९२ तत्वों के पारस्परिक संयोग से सहस्रों पदार्थ—विष भी अमृत भी; ठोस भी, द्रव तथा गैस भी—प्राप्त किए गये। इनसे हम और हमारी दुनिया बनी है।

किसी भी एक तत्व के एक या अधिक परमाणुओं ने अन्य किसी एक या अधिक तत्वों के एक एक या अधिक परमाणुओं से मिलकर एक नये पदार्थ के अणु का निर्माण कर दिया। उदाहरणार्थ-सोडा कैसे बना? २ परमाणु सोडियम धातु के, १ कारबन, ३ प्राणवायु ऑक्सिजन के परमाणुओं के संयोग से एक अणु सोडा बन गया। यदि संयोग इस प्रकार हो कि १ सोडियम, १ हाइड्रोजन, १ कारबन, ३ ऑक्सिजन तो १ अणु खाने का सोडा बन गया।

पदार्थों के निर्माण व विध्वंस की अरचनात्मक क्रियाओं में रसायन शास्त्रियों को एक-एक करके नये तत्व प्राप्त होते गये। और इस प्रकार उनके खातों में कुल ९२ तत्व हो गए। अवश्य ही यह सूची न तो पूर्ण है न संतोषदायक। प्रत्युत असंतोष उत्पादक है।

परमाणु की रचना इतनी सरल तो नहीं है कि वह विषय को अनावश्यक तौर से विस्तत किये बिना ही वर्णन की जा सके। इतना कहना आवश्यक है कि अणु विध्वस्त करने पर एक या अनेक प्रकार के परमाणुओं में बिखर जाता है। कीमिया वर्ग इन परमाणुओं का और आगे विध्वंस न कर सका और उसका विचार रहा कि एक तत्व के परमाणु दूसरे तत्व के परमाणु से विभिन्न होते हैं। और एक को दूसरे में परिवर्तित करना उसे कुछ संभाव्य प्रतीत न हुआ।

जब कि सत्य तो यह है कि परमाणु केवल विद्युत कणों का पुंज है। यह विभाज्य है। विद्युत के धनात्मक कण केन्द्र में स्थित रहते हैं और ऋणात्मक कणों में से कुछ तो केन्द्र में स्थित धनात्मक प्रोटोन से संयोग करके स्थायी न्यूट्रोन बनाते हैं और शेष (एलेक्ट्रोन) केन्द्र के इर्द गिर्द उसी प्रकार बड़े वेग से चक्कर काटते हैं जिस प्रकार सूर्य के चारों ओर नक्षत्र (हमारी पृथ्वी भी)।

एलेक्ट्रोन व प्रोटोन का परमाणु में भिन्न भिन्न संख्या में उपस्थित रहना ही तत्वों में भिन्नता प्रदर्शित करता है। यदि हम इस क्रम और इन विद्युत कणों की संख्या में परिवर्तन कर दें तो लो नाइट्रोजन का परमाणु हाइड्रोजन और आक्सीजन

बन गया और सीसे का परिवर्तन हो गया स्वर्ण में। यह अब एक अप्राप्त साधन नहीं है।

किसी परमाणु में से उसका एक एलेक्ट्रोन ले लेना उसी प्रकार है जैसे सूर्य के चारों ओर नाचती पृथ्वी को उसकी कक्ष से बाहर घसीट लेना। विद्युतकण एलेक्ट्रोन को परमाणु स्थित अपने निर्धारित मार्ग से खदेड़ने के लिए बीसों लाख वोल्ट का विद्युत दबाव वांछित है। [हम नगरों में साधारणतः २३० वोल्ट के विद्युत दबाव की धारा प्रयोग में लाते हैं] विद्युत कणों की इस धारा की चमक और प्रचंड जीवन शक्ति एक अभौतिक सी चीज ही कही जा सकती है।

बस कुञ्जी हाथ लग गई। वैज्ञानिकों ने बीसियों नितान्त नवीन नवीन परमाणु बना लिये हैं जिनमें कुछ सोडियम, फास्फोरस, जरकोनियम के सगे सम्बन्धी हैं जिनका सफल प्रयोग केन्सर जैसे प्राण-घातक रोग के उपचार में किया जाता है। आज परमाणु शास्त्री नये नये तत्वों का निर्माण करके एक नया ही अध्याय रसायनशास्त्र में जोड़ रहा है। ऐसे परमाणु जिनकी रचना करने में स्वयं प्रकृति असमर्थ रही है और इतना लम्बा चौड़ा अध्याय कि उसके सन्मुख आज तक का सम्पूर्ण रसायन शास्त्र का पोथा तुच्छ ठहरेगा। बल्कि वह एक दूसरी ही सृष्टि रचना होगी! बहरहाल तो उसकी कल्पना मानव कर नहीं सकेगा।

आज का वैज्ञानिक परमाणुशक्ति के ऊपर उच्चस्तर के मानव कल्याणकारी प्रयोग करने के लिए लालायित और अधीर हो रहा है। उसे केवल चाहिये अंतर्राष्ट्रीय स्थायी शान्ति के अभंग रहने का विश्वस्त आश्वासन। कारण! इस शक्ति के इतिहास की प्रस्तावना जो खूनी वर्णनों से हुई है!

यहाँ अणु शक्ति और परमाणु शक्ति का भेद भी समझ लेना ठीक होगा। कोयला जलाया गया और उससे भाप शक्ति मिली। कोयले का अणु, ऑक्सिजन के अणु से मिला और कार्बन डाइऑक्साइड का अणु बना। इस परिवर्तन में शक्ति ताप के रूप में हुई। विशालकाय धधकती भट्टी से लेकर बनावटी रबर की शान्त रासायनिक केटेलेसिस की क्रिया तक जो भी प्रतिक्रिया होती है वे अणुओं और उनकी शक्तियों का प्रत्यावर्तन है न कि परमाणुओं की। यदि कोयले के परमाणुओं को जलावें यानी उनके अस्तित्व को विनष्ट कर सकें तो हमें बीसियों लाख गुनी शक्ति मिल सकती है।

इसके हम दो उदाहरण लिखेंगे। आधे गैलन तेल के परमाणुओं से युद्ध पोतों को उतनी शक्ति प्राप्त हो सकेगी—यदि इसमें परमाणवात्मक इंजन लगा हो—जितनी कि आज उसे तीस लाख ३०,०००,०० गैलन तेल से प्राप्त हो रही है। और आपकी मोटर १ चम्मच गैसोलीन में आपको इतनी लम्बी सैर करा सकेगी कि मोटर ही चलते-चलते घिस जाय।

पदार्थ का रूपान्तर शक्ति में हो सकता है यह नया ही अनुसंधान है—बड़ा क्रान्तिकारी है। परमाणुओं का स्वयं अस्तित्व ही शक्ति में बदला जा सकता है।

अवश्य ही अणु अनुसंधान की देन डी० डी० टी०, पेनिसिलीन, एथाइल गेसोलीन, 'निलॉन आदि बड़े ही महत्व, उपयोग और मार्के की हैं किन्तु परमाणु की देन कितनी गुणी अधिक शक्तिदायिनी और क्रान्ति पूर्ण होगी यह बात उस महान दार्शनिक और वैज्ञानिक एलबर्ट आइन्स्टाइन के मुख से उच्चरित होते समय तो शायद ही किसी ने मानी हो किन्तु सन् १९४५ में हिरोशिमा में एक परमाणु बम द्वारा ६०,००० मानवों की हुई हत्या के पश्चात सब मानने लगे हैं।

इसी शक्ति के बूते हमारा सूर्य हमें अब तक अतीत काल से, करोड़ों वर्षों से, शक्ति देता चला आया है। कोयला, लकड़ी, तेल, भाप, रसायनिक सभी को शक्तियाँ सूर्य से प्राप्त हैं—उसका रूपान्तर मात्र है। सूर्य में यह शक्ति हाइड्रोजन के परमाणुओं से प्राप्त होती है। परमाणु का विध्वंस भारी शक्ति देता है। अब हम यहाँ पृथ्वी पर अपने छोटे छोटे अनुशासित सूर्य बना सकते हैं जिन्हें म्यूनिसिपेलिटी की बत्तियों की तरह लटका सकते हैं। इनसे हमें

प्रकाश मिलेगा, गर्मी मिलेगी। और बर्फिस्तानों में, ठंडे देशों में जैसे ग्रीनलेंड, कनाडा, रूस, स्काटलैंड, दक्षिणी ध्रुव महाद्वीप--बर्फीले तूफानों पर उसी प्रकार नियंत्रण किया जा सकेगा जैसे हम यहाँ भारत में रेगिस्तानी प्रचंड लू को खस की टट्टियों से वश में करके आनन्ददायक बना लेते हैं।

इतना ही नहीं। यदि बादल घुमड़ घुमड़ कर छाये ही रहेंगे धूप निकलने ही न देंगे तो--मानव उनकी कोई परवाह नहीं करेगा। "--लो हम अपनी मायावी धूप पैदा किये लेते हैं।"

आप यहाँ अवश्य ही पूछना चाहेंगे 'तब तो हम कृत्रिम प्रभात भी बना सकेंगे ?' हाँ, पाँच बजे के स्थान पर तीन ही बजे चिड़ियों को चहचहाने की आज्ञा देने की सामर्थ्य आप में हो जायगी। इसमें शक की गुञ्जाइश नहीं। अर्धरात्रि के समय में आप मध्याह्न रच सकेंगे।

और क्या क्या कर सकेंगे--आप पूछेंगे। संजय का टेलीविजन तो अब सब भूत की बात समझते हैं--सब से मेरा तात्पर्य वैज्ञानिक वर्ग से है--अब आगे यह होने जा रहा है कि यहाँ की यशोदा माताओं के कहने से यदि चन्द्रमा पृथ्वी पर नहीं आयगा तो वे ही अपने कृष्ण को बहलाने के हेतु 'चन्द्रलोक' की टिकट लेने के लिए पंक्ति में खड़ी होती दृष्टि गोचर होंगी। और ध्वनि से भी बहुत अधिक वेग वाले विमानों में उड़कर वहाँ पहुँचेंगी।

दुनिया का एक तिहाई जल थल जो आज शीत से आच्छादित है वह परमाणु की ताप साधन द्वारा बसने योग्य, उपजाऊ, व्यापारिक व आवागमन के लिए बारहों माह खुला रहने वाला प्रदेश बन सकेगा। नौ नौ माह तक जहाजों के लिए बन्द समुद्री ताले खुल जायेंगे। झील और सागरों का बर्फ पानी बन जायगा। बर्फाच्छादित प्रदेशों से कितना अन्न, वस्त्र और खनिज मिलेगा इसकी कल्पना की जा सकती है। 'सहारा' आज की दुखी दुनिया का सहारा बन जायगा।

क्या परमाणु से हमें बिजली मिलेगी ? वह भी मिलेगी यूरेनियम-२३५ से हमें अगाध तापशक्ति मिलती है। यह भाप वा गैस इंजन चला सकती है जो डाइनमो घुमावेंगे और आपको बड़ी सस्ती बिजली मिलेगी।

प्रत्युत, विद्युत-धारा आप को दूसरी प्रकार भी मिल सकेगी। परमाणु विद्युत कणों का पुंज है यह हमने पहले ही लिखा है। लाखों करोड़ों वोल्ट का का विद्युत दबाव डालने से परमाणु के एलेक्ट्रोन्स निश्चित दिशा में भेजे जा सकते हैं। इन विद्युत कणों का अनवरत प्रवाह ही विद्युत धारा है। इस ओर अभी और अनुसन्धान होने को है।

सारांश यह है कि परमाणु हमें शक्ति देवेगा। शक्ति का सदुपयोग क्या क्या नहीं है ? इन गत चार वर्षों में इस ओर बड़ी भारी तन्मयता के साथ प्रगति हुई है। सहस्रों अच्छे अच्छे वैज्ञानिक तब से केवल इसी अनुसंधान विशेष में दिन रात जुटे हैं--अमरीका में भी, रूस में भी और अन्यत्र भी। राइट ब्रदर्स के सर्व प्रथम विमान और आज के B 29 (बी २९) और B 36 (बी ३६) में कितना महान् अंतर है। यही सिद्धान्त १९४५ और आज के परमाण्वात्मक ज्ञान व उसकी शक्ति के लिए समझना चाहिये। आज वैज्ञानिक के हाथ कितनी बड़ी शक्ति है उसे संसार नहीं जानता। उसे जानना ही चाहिए कि हिरोशिमा वाला परमाणु बम आज बच्चा समझा जा रहा है। संसार की आशा से कहीं पहले अब मानव दिन और रात, जल और वायु, भूमि और सागर पर आधिपत्य जमाने वाला है। बल्कि कदाचित् कुछ अप्रम। किन्तु उसकी सत्य कल्पना समय ही देगा।

स्वतंत्रता और नवयुवक

श्री पुरुषोत्तमलाल चूड़ामणि, सहायक प्रान्तीय कमिश्नर

अपने देश की सर्वांगीन उन्नति नवयुवकों पर ही निर्भर है। जागृत नवयुवक ही देश की स्वतंत्रता कायम रख सकते हैं, स्वतंत्रता में ही देश धन सम्पन्न रह सकता है। धन के ही द्वारा जनता धर्म की ओर प्रेरित हो सकती है और धर्म से (धारण करने योग्य आचरण से) मानव को शान्ति मिल सकती है। क्या १५ अगस्त सन् १९४७ से हम भारतवासी सुख की ओर अग्रसर हैं? क्या स्वतंत्रता को हम अपनी उन्नति के लिये साधन समझ कर कार्य कर रहे हैं? क्या हममें स्वतंत्रता के साथ उत्तरदायित्व उत्पन्न हुआ है और उस भावना से हम जागृत भी हैं? उत्तर सभी ओर से निषेध वाचक मिलता है। बापू जी की अभिलाषा थी कि आज़ादी से प्रत्येक भारतीय नागरिक में उत्तरदायित्व, स्वाभिमान, आत्मपरिचय, अनुशासन, स्वावलम्बन, सेवा करने के प्रचुर साधनों की प्राप्ति, कर्तव्य परायणता और पारस्परिक प्रेम आदि गुणों का प्रादुर्भाव होगा। रामराज्य की कल्पना वर्तमान परिस्थितियों में अदृश्य सी प्रतीत हो रही है। राम के स्थान पर रावण, सुर के स्थान पर असुर, सात्विक मनोवृतियों के स्थान पर तामसिक का साम्राज्य छाया हुआ है। कर्तव्य में ही अपनी मातृभूमि की सेवा, उदरपूर्ति, भगवत भक्ति निहित थी। अधिकार कर्तव्य के पीछे परछाईं की तरह दौड़ते थे। आजकल की तरह इनकी प्राप्ति के लिये संघ बनाने, हड़ताल करने और मारकाट की आवश्यकता न थी। कर्तव्य के सामने सारी शक्तियाँ लोहा स्वीकार करती थीं और कर्मवीर को भोग्य पदार्थ अनायास ही उपलब्ध होते थे। इस समय हम केवल अधिकारों की इच्छा रखते हैं और कर्तव्य करना दूसरे के मत्थे डालते हैं, हम दूसरों की आलोचना करते हैं और अपने कुकृत्यों को दूसरे चश्में और पैमाने से आँकते हैं। हम में सर्वत्र निन्दा करने की और काम न करने की बुरी आदत है। अगर हम स्वामी रामतीर्थ के शब्दों में दूसरों के सुधारक न बनकर अपने बन जाँय तो अत्युत्तम हो।

काम क्रोध, लोभ, मोह, मद, अज्ञानता, आलस्य और कठोर वाणी के कारण हमारा देश बुरी तरह पीड़ित है। अगर इनका संतुलन हो जावे तो ईर्ष्या, द्वेष सभी गायब हो जावें। इन्हीं उपर लिखित कारणों से नेताओं और सरकार के समक्ष प्रान्तीयता, बेकारी, भोजन की कमी, राजनीतिक दलबन्दी, हरिजन समस्या, भ्रष्टाचार और चोर बाजार जैसी राष्ट्रनाशक चीजें मौजूद हैं। इनकी रोक सरकारी कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने से नहीं हो सकती। प्रौढ़ नागरिक और बालक अगर प्रतिज्ञा लें तो अविलम्ब राष्ट्र के दिल और दिमाग को बदल सकते हैं। स्वतंत्र नागरिक पर तो शासन स्वयं का हृदय से होता है। नागरिक राष्ट्र के नियमों को अपने बनाये हुये समझता है और अपने हित में समझ कर पालन करता है। इस प्रकार वह अपने यहाँ सुराज्य ही न समझ कर उच्चस्तर की उत्तम वस्तु स्वराज्य समझता है। क्या हमारे नौजवान इस ढंग से विचार करते हैं। उत्तर मिलता है नहीं। वास्तविक स्वतंत्रता उस समय समझी जायगी जब नवयुवक नियमों के तोड़ने में गौरव न समझें, टिकट घर पर क्यू बनवाने के लिये पुलिस के सिपाही की आवश्यकता प्रतीत न हो, चक्की पर आटा पिसाने वालों में देर से पहुँचने वाले बाद में ही पिसावें, चोर और डाकू के पकड़वाने में सरकार की मदद दें, सरकारी चीजों को अपनी चीज समझने का भाव आवे, मेहतर के सड़क साफ करने के बाद कूड़ा सड़क पर न डाला जाय,

[शेष पृष्ठ २७ पर]

अराजकवादी लुई माइकेल

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी

"ऐसा मालूम होता है कि स्वाधीनता के लिए तड़पने वाले हृदयों को केवल एक ही अधिकार मिलता है, यानी गोली की शक्ल में शीशे का टुकड़ा। यदि यह बात सच है तो मैं अपने अधिकार चाहती हूँ। अगर तुम मुझे जिंदा छोड़ दोगे तो मैं जनता के सामने चिल्ला-चिल्लाकर इस बात की घोषणा करती रहूँगी कि तुम लोगों से जरूर बदला लिया जाय। हां, तुमसे - जिन्होंने हमारे भाइयों का खून किया अगर तुम कायर नहीं हो तो मुझे मृत्यु दंड दो।"

जज लोग सचमुच कायर निकले और जनता के आन्दोलन के डर के मारे उन्होंने इस वीर महिला को मृत्युदंड न देकर केवल देश निकाले तथा आठ बरस के लम्बे कारावास की सजा दे दी। लुई माइकेल को न्यू केलेडोनिया में आठ वर्ष तक किन-किन घोर यातनाओं को सहन करना पड़ा उनका वर्णन यहां नहीं किया जा सकता। संसार के इतिहास में अनेक क्रान्तिकारिणी महिलाएं हुई हैं, पर लेखनी, वाणी और बन्दूक तीनों शस्त्रों का बखूबी प्रयोग करने वाली लुई माइकेल जैसी वीर क्षत्राणी कम ही हुई होंगी।

जन्म और बाल्यावस्था

लुई माइकेल का जन्म २६ मई सन् १८३० ईस्वी को व्रानकोर्ट नामक ग्राम में हुआ था। उसकी मां किसान घराने की थी और एक उच्च फरांसीसी वकील की कोठी पर नौकरानी का काम करती थी। वकील साहब के सपूत का सबंध उस दासी से हो गया और इस प्रकार लुई माइकेल का अवतार हुआ। पिताजी तो इस जारज संतान को छोड़कर खेती बारी करने के लिए अन्यत्र चले गये और इस प्रतिभाशाली पौत्री का लालन-पालन बुद्धिवादी, मनुष्य समाज के सहृदय प्रेमी और मानवाधिकारों में दृढ़ विश्वास रखने वाले बूढ़े वकील ऐटिनी चार्ली डेहमिस साहब ने किया। पूज्य पितामह ने सन् १७८६ की फ्रांस की राज्य-क्रान्ति में भाग लिया था और उसकी कहानियां वे अपनी पोती को सुनाया करते थे।

६-७ वर्ष की ही अवस्था में माइकेल को कविता करने का शौक हो गया था और दस वर्ष की अवस्था में उसकी आकांक्षा 'विश्व का इतिहास' लिखने की हुई थी जिसका नाम उस महत्वाकांक्षी बालिका ने रक्खा था 'UnHistoric universaile'. बचपन में माइकेल लड़कियों के साथ फांसी का खेल खेला करती थी जिसमें अपने दादा की आज्ञानुसार वह फांसी के तख्ते से अपने उन उद्देश्यों की घोषणा करती थी जिस के लिए वह फांसी पर चढ़ रही थी। बाल्यावस्था से ही लुई को राजनैतिक विषयों से प्रेम हो गया था। वह सुप्रसिद्ध फरांसीसी लेखक विक्टर ह्यूगो की भक्त बन गई और अपनी कविताएं संशोधनार्थ उन्हीं के पास भेज दिया करती थी। बालिका लुई का समुद्र यात्रा की प्रबल लालसा थी, उसकी यह इच्छा पहली बार ४१ वर्ष की अवस्था में पूरी हुई जब देश निकाले का दंड पाकर वह न्यूकैलेडोनिया भेज दी गई थी।

अध्यापिका लुई

चौमंट नामक स्थान पर अध्यापिका का काम सीखने में लुई ने सब परीक्षाएं योग्यता-पूर्वक पास करली और अपने गांव के निकट ही मास्टरनी का काम कर अपनी मां की सेवा का साधन ढूंढा। छत्तीस वर्ष की अवस्था में लुई को पेरिस की एक कन्या पाठशाला में नौकरी मिल गई थी; वहां उसे जो वेतन मिलता था वह बहुत ही कम था और उसी से वह अपनी तथा अपनी मां का गुजर करती थी—

लेखनी की नोक पर

लुई ने अपने असाधारण परिश्रम से अनेक उपन्यास लिखडाले और कितनी ही कविताएं लिख ली। वह 'कला कलाके लिए' इस सिद्धांत की घोर विरोधी थी। उसका कहना था-- प्रत्येक कलाकार के जीवन का उद्देश्य कोई सामाजिक उद्धार होना चाहिए और प्रत्येक कलापूर्ण रचना के विचार-संबंधी धरातल पर राजनैतिक कार्य का प्रतिबिंब पड़ना चाहिए।"

क्रान्ति की ओर

लुई शकल में मर्दानी थी। छरहरे वदन की थी और जिस समय वह तनकर खड़ी होती थी ऐसा प्रतीत होता था कि कोई योद्धा खड़ा हुआ है। वह सदा काले रंग के कपड़े पहना करती थी। चलते समय ऐसा प्रतीत होता था कि मानों गंभीरता तथा विद्रोह की कोई मूर्ति जा रही हो।

एक बार जब पेरिस के प्रजातंत्रियों ने Hotel de Vide पर चढ़ाई करने की ठानी थी तो लुई भी कहीं से पैदल सवारों की पोशाक मांग लाई थी और भीड़ के साथ बराबर निश्चित स्थान तक गई थी वह अपना एक पुराना रिवाल्वर सदा अपने पास रखती थी और उसने इस तमंचे की धमकी से अनेक बार पुलिस वालों को अपने कमरे में आने से रोका था। जब पेरिस दो महीने के लिए क्रांतिकारी संघ (Commune) के शासन के अधीन रहा था तब लुई उसके प्रधान कार्यकर्ताओं में थी और निरंतर सिपाही की हैसियत से मुस्तैदी के साथ काम करती रही।

अपने ४१ वें वर्ष में १८ मार्च सन् १८७१ के दिन उसने जो कुछ किया, उसका वृतान्त उसीके शब्दों में सुन लीजिए : -

बर्छी भाले लेकर हम सब तैयार हो गए। अब समर में जूझने का वक्त आ पहुँचा था। स्वाधीनता की वेदी पर अपने को बलिदान करने के लिए हम सब उद्यत थे। उत्साह और उमंग का ठिकाना न था हमारे पैर जमीन पर लगते ही न थे। सरकारी फौज के जनरल ने हुक्म दिया--'गद्दारों पर गोली चलाओ,' त्योंही सरकारी सेना के ही एक अफसर ने सिपाहियों को भड़काते हुए कहा--"सिपाहियो विद्रोह का झंडा ऊँचा कर दो, क्रान्ति का आरंभ हो गया।" सरकार तथा जनता के इस युद्ध में लुई ने पूरा भाग लिया। यद्यपि विद्रोहियों की पराजय हुई और सरकारी फौज ने निष्ठुरता पूर्वक पच्चीस हजार पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को मौत के घाट उतार दिया तथापि लुई निर्भयता पूर्वक मांटमार्टी और चौसी के मोर्चों पर, जो सबसे अंतिम थे, बराबर विद्रोही भाइयों के साथ डटी रही।

एक बार लुई से किसी ने पूछा था, आप किस पार्टी की हैं, तो उसने उत्तर दिया- किस पार्टी की? हम सब एक ही शत्रु से लड़ रहे हैं, हमारे दुश्मन एक ही हैं, मैं तो इतना ही जानती हूँ। पार्टी भेदों की मुझे कोई परवाह नहीं, क्योंकि मैं तो उन सभी दलों के साथ हूँ जो भिन्न-भिन्न अस्त्रों से समाज के वर्तमान भवन को ढाने के प्रयत्न में लगे हुए हैं, चाहे उनके हथियार फावड़े हों, बम हों या आग।" वस्तुतः सामाजिक विषमता ने लुई के मस्तिष्क के तराजू को उलट दिया था। उसे चंडी का रूप दे दिया था।

जेल पर जेल

न्यूक्लेडोनिया की जेल में देश निकाले के आठ बरस बिताने के बाद जब लुई को स्वाधीनता मिली तो उसने फिर फ्रांस भर में घूम घूम कर मजदूरों का संगठन कर कर क्रांतिकारी कार्य शुरू कर दिया, सन् १८८२ में उसे एक क्रांतिकारी की वर्ष गांठ मनाने के उपलक्ष में दो महीने जेल में रहना पड़ा। सन् १८८३ में पेरिस में भूखों की भीड़ ने बाजार में मार्च करते हुए रोटी की कितनी ही दूकाने लूट ली थीं। पुलिस ने लुई को पकड़ा, अभियोग चला और लुई को छः वर्ष का कठोर कारावास का दंड मिला। इन छः वर्षों में उसने जेल में निरक्षरों को पढ़ाया। इस बीच १८८५ में जब लुई की माता की मृत्यु हुई तो जेल के गवर्नर ने सोचा कि अब लुई ५५ वर्ष

की बुढ़िया हो चुकी है और मां की मृत्यु से वह इतनी निराश और निरंतर जेल निवास से वह इतनी निर्बल हो गई है कि सरकार को भविष्य में इससे कुछ खतरा नहीं हो सकता, इसलिए १४ जुलाई सन् १८८५ को जब कैदियों को सरकार की ओर से मुक्ति मिली तो लुई माइकेल को भी छोड़ना चाहा तो लुई माइकेल ने छूटने से इन्कार कर दिया। उसने कहा— "उन आदमियों से, जो इस समय मेरे देश का शासन कर रहे हैं, मैं कोई रियायत नहीं चाहती।"

उसके चार वर्ष बाद सन् १८८६ में जब लुई अपनी अवधि समाप्त कर छूटी तो फिर उसने तुरंत कार्य करना आरंभ कर दिया। १८६७ में, जब लुई साठ वर्ष की थी, उसने वाइन जिले के हड़तालियों का साथ दिया जिन्होंने कि फैक्टरियों पर आक्रमण किया। लुई लाइन्स में फिर पकड़ ली गई। और वह अपमानित कर छोड़ दी गई। लुई फ्रांस छोड़कर इंगलैंड चली गई। इंगलैंड में वह फेवियन सुसाइटी तथा अराजकवादियों की मीटिंग में बराबर सम्मिलित होती रही।

अंतिम दिवस और मृत्यु

सन् १८६६ में लुई फिर स्वदेश लौटी थी। उसके बाद नौ वर्ष तक वह क्रान्तिकारी कार्यों में लगी रही। जिस दिन वह बीमार पड़ी, उसके पहले दिन वह 'रूसी क्रान्ति' पर भाषण दे चुकी थी और उसने अपने एक सहयोगी बंधु से कहा था—

"रूस पर नजर रखना। गोर्की और प्रिंसक्रोपाटकिन की उस मातृ-भूमि में अत्यंत महत्व पूर्ण घटनाएं घटेंगी। मुझे ऐसा दीख रहा है कि रूस में क्रान्ति होगी, जो जार को निकाल बाहर करेगी, और मास्को, पीटर्स वर्ग इत्यादि नगरों में फौज क्रान्तिकारियों का साथ देगी।"

सन् १६०५ की दसवीं जनवरी थी, जब लुई की मृत्यु हुई। उसे निमोनिया होगया था और उस समय उसके पास कुल जमा तीन-चार रुपए (पांच फ्रांक) थे जो डाक्टर को आक्सीजन के लिए दे दिये गये। अपरिग्रह के ऐसे दृष्टांत संसार में कम ही मिलेंगे। लुई जैसे खाली हाथ इस दुनिया में आई थी वैसे ही खाली हाथ इस दुनिया से विदा हो गई। वह क्रान्ति के लिए मरना जानती थी और क्रान्ति के लिए जीना भी; और पहले की अपेक्षा दूसरी बात कठिन है। उसके लिए विश्राम नाम की कोई चीज नहीं थी, वह सुख को दूरस्थ नक्षत्र मंडल पर रहने वाली कल्पना समझती थी; पर निरंतर संघर्ष में जो संतोष है, किसी पर शासन न करने और किसी के द्वारा शासित न होने में जो सजीवता है उसे लुई ने जाना था और खूब जाना था।

[शेष भाग २४ पृष्ठ का]

लिखित स्थान पर ही शहर में टट्टी और पेशाब किया जाय, बिना टिकट रेल में यात्रा न की जावे आदि छोटी-छोटी समझी जाने वाली बातों का पालन होना, अत्यावश्यक है। राष्ट्र का अनुमान इन साधारण बातों से ही किया जा सकता है। छोटी-छोटी बातें ही हमें उच्च बनावेंगी। नवयुवकों का जोश और होश जो कि सतसंग से और स्वाध्याय से ही आवेगा, देश को अल्पकाल में ही संसार की दृष्टि में उच्च शिखर पर पहुँचा सकता है। अगर हाई स्कूल और कौलेज के विद्यार्थी ८ घंटे सोने और खाने के लिये और ८ घंटे विद्याध्ययन के अतिरिक्त ८ घंटे रुचि विकास, समाज सेवा, निरक्षरता निवारण, अन्न उपजाओ योजना, सफाई-प्रचार, वृक्षारोपण योजनाओं में लगादें तो हमारा देश सर्व प्रकार से खुशहाल हो जावे। इस वर्ष प्रत्येक बालक और बालिका को देश की समस्याओं को निवारण का व्रत लेना चाहिये और स्वतंत्रता को अमर बनाना चाहिये।

सहयोग-पथ पर

श्री रत्न लाल त्रिपाठी, बी० ए०, विशारद

आज सेवा-व्रत लिए, हम चल पड़े सहयोग पथ पर।

(१)

है हमें जाना, हमारा
लक्ष्य देशोद्धार होगा,
साधना में सिद्धि की
सहयोग का आधार होगा,

जानते हैं हम हमारी
राह कांटो से सजी है,

और पग-पग पर बढ़े
जाना हमें कटु-क्षार होगा,

पर न हटना है हमें पीछे
कहीं भी कष्ट-भय से—
साहसी बन धैर्य्य से
उन पर विजय पाना निरन्तर।

आज सेवा-व्रत लिए
हम चल पड़े सहयोग-पथ पर।

(२)

सृष्टि का सहयोग अविचल
सर्वव्यापी स्थिर नियम है।
नियति की यति का प्रगति का
व्यष्टि की गति का सुक्रम है,

अङ्ग में प्रत्यङ्ग में सह-
कारिता प्रति जीव में है-

एक सबके हित, सभी
उस एक के हित प्रथम हैं,

भावना मानव-हृदय में भी
सदा से यह रही है,
और अपने आप ही वह
प्रेरणा देती समय पर

आज सेवा-व्रत लिए
हम चल पड़े सहयोग-पथ पर।

(३)

बादलों की सृष्टि में
सहयोग का आभास देखा,
पांच तत्त्वों से बने तन में
यही इतिहास देखा

आदि में ही मनु इड़ा के
योग से उत्पन्न मानव—

जीव-तन का योग जीवन,
श्वास का विश्वास देखा,

देखते हैं जन जगत में
शून्य और वसुन्धरा में
कार्य और विकास में,
सहयोग स्वाभाविक परस्पर।

आज सेवा-व्रत लिए
हम चल पड़े सहयोग-पथ पर।

(४)

भोग में उत्पत्ति में
सहकारिता उत्थान करती,
और विनिमय का स्वभावज
सरल एक विधान करती;
हम सभी इस प्रेरणा
की हृदय में अनुभूति करते,
जाति में, परिवार में, घर
में स्वतः पहिचान मिलती
इसी बल पर तो प्रजायें
राज्य के पांसे पलटतीं
और इससे देश उनके
पहुँचते उन्नति शिखर पर।
आज सेवा-व्रत लिए
हम चल पड़े सहयोग-पथ पर।

(५)

आज सोती-सी इसी
सद्भावना को हम जगा दें,
एक हो इस राह पर चल दें
सभी यह लौ लगा दें;
आर्थिक नैतिक अनूठे
ध्येय जो सहयोग के हैं –
प्राप्त कर लें हम उन्हें
निज देश को ऊँचा उठा दें –
तब हमें अधिकार होगा
गर्व अपने पर करें हम
पर अभी जाने न कितना
है हमें चलना संभलकर
आज सेवा-व्रत लिए
हम चल पड़े सहयोग-पथ पर।

[२६ पृष्ठ का शेष भाग]

वीरता में लोहा लिया! आज के युग में जब कि सदियों से दासता की बेड़ियों में जकड़ी रहने के कारण, उन का नैतिक पतन हो चुका था और पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का बोलवाला था, राष्ट्रीय पिता के देश के स्वतन्त्र करने के अर्थ वापू के आह्वाहन पर लाखों स्त्रियां पर्दे की बेड़ियों को काट कर स्वतन्त्रता के युद्ध में कूद पड़ीं। और अपने त्याग बल पर देश को स्वन्तत्र करने में सफल हुईं। इनमें श्रीमती कस्तूरबा, श्रीमती सरोजिनी नाइडू, श्रीमती अरुणा आसफअली, श्रीमती विजया लक्ष्मी पंडित और राजकुमारी अमृत कौर हैं जिन्होंने विदेशों में भी भारत का सम्मान बढ़ाया है।

स्वतंत्र भारत में नारी का कर्तव्य

हम प्राचीन काल से देखते आ रहे हैं कि भारतीय नारी ने प्रत्येक युग में आश्चर्य जनक भाग लिया है अब स्वतंत्र देश के भविष्य का उत्तरदायित्व इन्हीं नारियों पर है। नारी जाति देश की निर्माता कही भी गई है इस कारण उनका प्रधान कर्तव्य है कि वह अपनी सन्तान को एक सच्ची देश भक्ति की शिक्षा दें। यही नन्हें नन्हें बालक भविष्य में पथ प्रदर्शक का कार्य करेंगे। प्रत्येक माता का कर्तव्य है कि अपनी सन्तान की शारीरिक तथा नैतिक उन्नति की ओर ध्यान दे और अपने मातृत्व के कर्तव्य का पालन करे जैसा कि एक स्वतंत्र देश की नारी का कर्तव्य होता है।

युग निर्मात्री भारतीय नारी

श्रीमती सरला शंकर, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, बालिका-विभाग

नारी देश की निर्माता कही जाती है और यह सत्य भी है। जैसी माता होती है उसका उसकी सन्तान पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। देश के निर्माण में सब से बड़ा उत्तरदायित्व इन्हीं पर है। प्राचीन काल की नारियां, विद्या, वीरता तथा सैन्य-संञ्चालन में निपुण होती थीं, वे आरम्भ से बालक के ऐसे संस्कार बनाती थीं जो भविष्य में देश के भार को संभाल सके। यह बालक प्रारम्भ से शस्त्र कलाओं से प्रेम रखते थे तथा अपनी माताओं से वीरता की कहानियां सुनते थे। श्राप के कारण राजा दुष्यन्त से वियुक्त होने पर भी, दुःखी शकुन्तला के आदर्श और शस्त्र कला प्रवीणता का परिणाम वीर प्रतापी भरत की शिक्षा है जिस के नाम पर आज भी हमारा भारतवर्ष अन्य देशों के सम्मुख गौरव का प्रतीक है। इसी प्रकार पती द्वारा परित्यक्ता वनवासिनी सीता ने महान विपत्तियों से संघर्ष कर के अपनी सन्तान लव और कुश को वन में क्षत्रिय शिक्षा प्रदान की और उन्हें अयोध्या की महाप्रतापी सेना को पराजित करने की क्षमता दी। अभिमन्यु ने भी चक्रव्यूह भेदना सुभद्रा की कोख से ही सीख लिया था। महाराणा शिवाजी की शिक्षा का श्रेय एक मात्र उनकी माता जीजाबाई को ही है। इन ज्वलन्त उदाहरणों से हमें ज्ञात होता है कि प्रत्येक युगमें ऐसी नारियां हुई जिन्होंने अपनी सन्तान को सच्ची देश भक्ति का पाठ पढ़ाया।

भारतीय नारी के समयानुकूल रूप

एक ओर यदि वे दया और कृपा की पात्र हैं तो दूसरी ओर शक्ति की मूर्ति। यही अबलायें अपने सतीत्व के हेतु रण चंडी के समान रूप धारण कर शत्रु पर टूट पड़ती थीं और उन से छुटकारा न होने पर हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुति दे देती थीं। इन देवियों की वीर कृतियों से इतिहास के पन्ने रंगे हैं। इनके त्याग और सहशीलता की मात्रा संसार की नारियों से बढ़ी चढ़ी है। आज के युग में भी ऐसी देवियां पाई गई हैं जिनमें से श्रीमती कस्तूरबा उल्लेखनीय हैं। इन्होंने सरल साधारण सभ्यता में पाली पोसी जाने पर भी स्वन्तत्रता के युद्ध में सब से आश्चर्य जनक भाग लिया। दक्षिणी अफ्रिका में आप ने जो नारी-संगठन किया वह सम्पूर्ण नारी वर्ग के लिये ज्वलन्त उदाहरण है। इन के इस कठोर तप और कार्य की प्रशन्सा करते हुए महात्मा गान्धी जी ने अपने 'सत्य के प्रयोग' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि मैंने अपने अत्याचारों तथा कठोर नियमों द्वारा अपनी पत्नी को महान कष्ट पहुँचाया। उसके लिए मैं अपने आप को क्षमा नहीं कर सकता। मेरा विश्वास है कि यह एक हिन्दू स्त्री ही सह सकती है।

नारी देश की गौरव और मर्यादा है

प्राचीन काल से भारतीय नारियों ने स्वतन्त्रता के युद्ध में प्रशंसनीय कार्य किया। उन्होंने देश और सतीत्व की रक्षा हेतु अपनी प्यारी से प्यारी वस्तु को बलिदान किया। ये वीरांगनायें अपने देश की मान मर्यादा के हेतु रणचंडी का रूप धारण कर भैरवी लय के साथ हंसते-हंसते प्राणों की आहुति दे देती थीं। महारानी सीता ने आत्म सम्मान की रक्षा हेतु माता वसुन्धरा के अंक में अपने को अर्पित कर यह लौकिक जीवन लीला समाप्त की। रानी पद्मिनी, रानी लक्ष्मीबाई तथा रानी दुर्गाबाई इत्यादि देवियों ने अपने देश की रक्षा हेतु पुरुषों से भी

[शेष २६ पृष्ठ पर

स्काउट संगठन की सफलता

श्री प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर

गत मई मास की सेवा में प्रकाशित एक लेख में जिसका शीर्षक था "स्काउट संगठन की सफलता" मैंने अवैतनिक कार्यकर्त्ताओं के सम्बन्ध में अपने विचार प्रगट किये थे। प्रस्तुत लेख में मैं वैतनिक कार्यकर्त्ताओं के सम्बन्ध में कुछ बातें लिखूँगा।

मैं इस पक्ष का नहीं हूँ कि स्काउटिंग के कार्य के लिए हमें वैतनिक कार्यकर्त्ताओं का अधिक सहारा लेना पड़े, परन्तु फिर भी मुझे यह आवश्यक प्रतीत होता है किसी भी कार्य को नियमित रूप से चलाने के लिए कुछ वैतनिक कार्यकर्ताओं का भी होना आवश्यक ही है। जब मैं संगठन-कार्य के सम्बंध में प्रान्त के विभिन्न जिलों में जाता हूँ और वहां के स्थानीय असोसिएशनों के पदाधिकारियों से बातचीत करता हूँ तो प्रायः उनसे मुझे यह ही सुनने को मिलता है कि हमें स्काउटिंग में बहुत ही दिलचस्पी है और हम बहुत कुछ कार्य करना भी चाहते हैं परन्तु क्या करें उसके लिए हम कोई समय ही नहीं निकाल पाते, कोई आर्गनाइजर दीजिये जो चौबीस घंटे इसी कार्य के बारे में सोचे और हम लोगों से आवश्यक कार्य करवा ले। दूसरी जगह मुझे यह सुनने को मिलता है कि जब से हमारे जिला स्काउट आर्गनाइजर यहां से छोड़कर किसी अधिक अच्छे वेतन वाले स्थान पर चले गये हैं तब से हमारा कार्य शिथिल पड़ा है; क्योंकि कोई काम करने वाला ही नहीं, इसलिए कोई लोगों के पास पहुँचता ही नहीं। इस प्रकार से अनेकों पदाधिकारियों से अनेकों प्रकार की बातें सुन कर मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि स्थायी रूप से कार्य को जीवित दशा में रखने के लिए हमारे जिए वैतनिक कार्यकर्ताओं का रखना भी आवश्यक हो जाता है।

संगठन-सम्बंधी वैतनिक कार्यकर्ताओं में यदि प्रत्येक जिले में जिला आर्गनाइजिंग स्काउट मास्टर हो, प्रत्येक डिवीजन के लिये एक डिविजनल आर्गनाइजिंग स्काउट मास्टर हो और इनके कार्यों का निरीक्षण करने के लिए और इनका पथ-प्रदर्शन करने के लिए सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर हों और पूर्ण प्रान्त के संगठन कार्य का संचालन करने के लिए और इन सब कार्यकर्ताओं के कार्य को समान-रूप से संगठित रखने के लिए एक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर हों तो एक प्रान्त का कार्य बहुत ही सुचारु रूप से चल सकता है। हमारे प्रान्त में यद्यपि कुछ लोगों के विचार से बहुत वैतनिक कार्यकर्ता हैं तथापि यदि इस प्रान्त का विस्तार देखा जाय और कार्य का अनुमान लगाया जाय तो जितने व्यक्ति हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन में वैतनिक कार्यकर्ता हैं उनकी संख्या अवैतनिक कार्यकर्ताओं के मुकाबिले में नहीं के बराबर है।

वैतनिक कार्यकर्ताओं को जिलों में जाकर अपना कार्य कैसे करना चाहिए अब मैं इस सम्बंध में अपने कुछ विचार प्रस्तुत करने की चेष्टा करूंगा।

सबसे पहली बात तो यह है कि जहां तक संभव हो सके स्काउट आर्गनाइजर पहिले से लिखा पढ़ी करके अपने प्रोग्राम को तै कर ले और किसी स्थान पर पहुंचने के एक सप्ताह पूर्व ही अपने वहां पहुंचने की तारीख और समय का पता जिला स्काउट कमिश्नर को भेज दे।

किसी जिले में पहुंचने पर स्काउट आर्गनाइजर को चाहिए कि वह वहां के जिला स्काउट कमिश्नर और उसकी अनुपस्थिति में उनके सहायक स्काउट कमिश्नर या मंत्री से मिलकर वहां पर अपने कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा जान ले और उसे पूरा करने में जितनी सहायता की उसे आवश्यकता है उसे वह स्थानीय कार्यकर्ताओं से प्राप्त कर ले। स्थानीय असोसिएशन के प्रत्येक पदाधिकारी का यह कर्तव्य है कि वह अपना पूर्ण सहयोग उन

आर्गनाइजर महोदय को प्रदान करे और उनकी उपस्थिति का पूरा पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करे।

कभी-कभी ऐसा देखने में आता है कि आर्गनाइजर वहां पहुँचने पर अपने आपको एक अव्यवस्थित स्थिति में पाता है और वहाँ उसको सहयोग देने और उसका पथप्रदर्शन करने वाला कोई व्यक्ति नहीं मिलता। सब लोग अपने अपने कार्य में व्यस्त रहते पाये जाते हैं। ऐसी हालत में समय और रुपया दोनों ही नष्ट होते हैं और कोई कार्य नहीं हो पाता।

स्काउट आर्गनाइजर का यह कर्तव्य है कि वह उस क्षेत्र के प्रत्येक स्थान पर पहुँच कर जो कि उसके चार्ज में दिया गया है दो कार्यों पर अपनी शक्ति केन्द्रित करे। एक तो वहाँ के स्काउट और स्काउटरों से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करे और उनको ट्रेनिंग देकर तथा उनके कार्य का निरीक्षण करके उन के ज्ञान और कुशलता को अधिकाधिक बढ़ाने का प्रयत्न करे। दूसरे, नये क्षेत्रों में जहाँ स्काउटिंग का कार्य नहीं हो रहा है वहाँ भी स्काउटिंग प्रारम्भ करने की चेष्टा करे। इन कार्यों के सम्बंध में निम्न साधन अमल में लाये जा सकते हैं—स्काउट आर्गनाइजर को चाहिए कि वह (अ) १—ट्रूप के रेकार्ड का निरीक्षण करे, २—यह मालूम करके अपने आपको सन्तुष्ट करे कि उस दल का प्रति दिन शिक्षण-कार्य होता है। ३—यह पता लगाये कि नियमावली में दी हुई शिक्षा-प्रणाली के अनुसार उस दल का शिक्षण सीढ़ी-दर-सीढ़ी ऐसे ढंगों से होता है जिनसे कि बालक की दिलचस्पी क़ायम रहे। ४—इस बात से अपने आपको सन्तुष्ट करे कि जो बैज उस दल के सदस्य पहिनते हैं वे वास्तव में उन के अधिकारी हैं। ५—वे बाक़ायदा बनोपसेवन और जंगलों पहाड़ों और आकर्षक प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेते रहते हैं और जन-सेवा के किसी अवसर को हाथ से नहीं खोते हैं ६—यह भी देखे कि उस दल के सदस्य अपनी आयु के अनुसार प्रतिदिन शारीरिक-शिक्षा ग्रहण करते हैं। ७—और वे मुस्तैदी के साथ विभिन्न परीक्षाओं को पास करते हुए दक्षता के पदकों को भी प्राप्त करते हैं और इस प्रकार हिन्द स्काउट बैज, प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इस सम्बंध में प्रत्येक मास में क्या-क्या लक्ष्य रखा गया है और उसमें से कितना कार्य सम्पन्न हुआ इसका रिकार्ड प्रत्येक ट्रूप में होना चाहिये। उसका निरीक्षण किया जाय।

(ब) स्काउट आर्गनाइजर को यह भी चाहिये कि यह स्थानीय कार्यकर्ताओं की कठिनाइयों को जान कर स्थानीय असोसिएशन को ठीक ढंग से चलाने के सुझाव भी दे जिन पर अमल करने से वहाँ का संगठन मजबूत हो जाय। इस सम्बंध में इन बातों की ओर ध्यान देना हितकर होगा:—१—भिन्न-भिन्न रजिस्टरों का रखना, २—खर्च के लिए धन एकत्रित करने के उपाय और साधन निकालना, ३—ट्रूप कमिटी, बैज कमिटी, परीक्षक कमिटी, आदि का निर्माण करना, ४—वर्ष भर का कार्यक्रम बनाना जिस में बनोपसेवन, रैली, पब्लिक प्रदर्शन, विशेष आन्दोलन चलाना, सेवा कार्य, इत्यादि भी सम्मिलित हों, ५—दलों के चार्टरों और स्काउटरों के वारंटों को देखना कि वे प्रति वर्ष 'रिन्यू' करवाये जाते हैं या नहीं। जिला असोसिएशन का छोटा ही सही एक स्थान अवश्य होना चाहिए—सम्भवतः किसी प्रमुख स्थान में, और वहाँ असोसिएशन का साइनबोर्ड और झंडा लगा हुआ होना चाहिये। स्काउट आर्गनाइज़र यह देखे कि प्रत्येक जिला असोसिएशन के निम्नलिखित रिकार्ड जिला हैडक्वार्टर्स में मुकम्मिल करके रक्खे हैं या नहीं, यदि ये रिकार्ड वहाँ नहीं हैं तो इन्हें रखवाने का सुझाव दे।

१—रजिस्टर जिसमें जिले के रजिस्टर्ड और गैर-रजिस्टर्ड स्काउट दलों के नाम व पते हों।

२—वारेन्ट पाये हुए व्यक्तियों के नाम, पद और पते की सूची।

३—जिले की जनरल काउंसिल और ऐक-

जिक्यूटिव कमिटी की बैठकों की कार्यवाही के विवरण और उन पर क्या अमल किया गया।

४—स्काउट गणना (census) और कोटा का विवरण। इसमें शेर बच्चे, स्काउट, रोवर के अतिरिक्त कबमास्टर, रोवर लीडर, ग्रुप लीडर, कमिश्नर तथा अन्य गैर-वारेन्ट प्राप्त अफसरों के विवरण अलग-अलग होने चाहियें।

५—आय-व्यय का ब्यौरा (कैशबुक, लैजर और रसीद बुक)

६—स्टाक रजिस्टर (इसमें चल और अचल सम्पत्ति का पूर्ण विवरण होना चाहिये और ट्रेनिंग इत्यादि के कुल सामान की सूची भी होनी चाहिये।

७—पुस्तकों की सूची।

८—लॉग बुक। जिले के स्काउट दलों ने क्या-क्या प्रशंसनीय कार्य किये उनका विवरण।

९—जिले के कार्य को देखने पर प्रमुख तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा अपनी राय लिखने का एक रजिस्टर।

१०—हिन्द स्काउट, फर्स्ट क्लास, सैकेंड क्लास और विशेष दक्षता के बैज प्राप्त स्काउटों की सूची।

११—ऐसे स्काउटों के नामों की सूची जिन्होंने ऐम्बुलेन्स, होम नर्सिंग, ह० ह० हि० रैस्क्यूअर, फोटोग्राफर, बिगुलर इत्यादि अन्य विषयों में दक्षता प्राप्त की हो जो किसी विशेष परिस्थिति में या आपत्ति पड़ने पर सेवा कार्य में सहायक हो सकें।

(क) स्काउट आर्गेनाइजर को चाहिये कि जहाँ जिला असोसिएशन नहीं है या बिल्कुल निर्जीव दशा में है वहाँ उसका निर्माण करवावें और जिले के अन्तरगत जहाँ संभव हो स्थानीय असोसिएशनों का निर्माण भी करवावें।

(ख) जहाँ आवश्यकता हो वहाँ प्रान्तीय कमिश्नर का आदेश प्राप्त करके ट्रेनिंग कैम्प करे।

ट्रेनिंग कैम्प के सम्बंध में यह आवश्यक है कि ट्रेनिंग नेशनल हैडक्वार्टर्स द्वारा प्रकाशित "ट्रेनिंग स्कीम" के आधार पर ही दी जाय। जिला असोसिएशनों और उन संस्थाओं के अधिकारियों का कर्तव्य है कि शिक्षार्थियों को ट्रेनिंग के सम्बंध में पूर्ण-सुविधाएं देवें। इन नियमों के अनुकूल कैम्प न करने की सूरत में शिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र नहीं दिये जा सकते।

इस समय नये स्काउट मास्टरों की ट्रेनिंग की बजाय रिफ्रेशर्स ट्रेनिंग, अडवांस्ड ट्रेनिंग (यदि इसके लिए शिक्षार्थी मिल सकें तो) और पैट्रोल लीडरों की ट्रेनिंग पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

(ग) अधिक से अधिक मुहल्ला दल खोलने पर ध्यान दें। जिला असोसिएशनों को इस ओर प्रयत्नशील होना चाहिये।

(घ) स्काउट आर्गेनाइजर निरीक्षण के समय देखें कि जिला असोसिएशनों ने १०) वार्षिक शुल्क प्रान्तीय हैडक्वार्टर्स को भेज दिया या नहीं। यह १५ दिसम्बर तक अवश्य ही अदा हो जाना चाहिये।

(ङ) वार्षिक स्काउट गणना, और कोटा का रुपया १८ दिसम्बर तक अवश्य प्रान्तीय हैडक्वार्टर्स में पहुँच जाना चाहिये।

१०—स्काउट आर्गेनाइजर देखे कि अप्रैल के पहिले सप्ताह तक प्रत्येक जिला असोसिएशन के कार्य का वार्षिक विवरण प्रान्तीय हैडक्वार्टर्स पहुँच जाय।

वार्षिक विवरण में अन्य बातों के अतिरिक्त जिला असोसिएशन के पदाधिकारियों की सूची और उनके पूरे पते और ऐसे दलों का विवरण भी होना चाहिये जो इस वर्ष में बन्द हो गए हों और कितने स्काउट दल छोड़ कर चले गये यह भी लिखा होना चाहिये।

११—'सेवा' पत्रिका के ग्राहक बनाने और बिक्री विभाग की चीजों को बिकवाने की ओर भी स्काउट आर्गेनाइजरों का ध्यान जाना चाहिये।

१२—इन्हें इस बात को देखना चाहिये कि सब जिलों में असोसिएशन की नियमावली की धाराओं के अनुसार कार्य हो।

वैतनिक कार्यकर्त्ताओं को चाहिये कि असोसिएशन की "स्पिरिट" और इसके उद्देश्यों और सन्देशों का प्रचार करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दें जिससे देश के नवयुवकों की सेवा हो सके और वे देश के भावी तथा योग्य नागरिक बन सकें। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्हें जितना भी अधिक दौरा करना पड़े वे उसे त्याग भाव और सेवा-भाव से प्रेरित होकर करें और इस प्रकार देश की सच्ची सेवा करें। इस कार्य में बजट की स्थिति का ध्यान रखते हुए अपना कार्य-क्रम चलायें।

ज़िला तथा लोकल असोसिएशन वैतनिक कार्यकर्त्ताओं को क्या सहयोग दें ?

१—यह आशा की जाती है कि ज़िला व स्थानीय असोसिएशन स्काउट आर्गनाइज़र के ठहरने और खाने-पीने का उचित प्रबंध पहले से कर देगी।

२—ट्रेनिंग कैम्प के सम्बन्ध में उन्हें निम्न-लिखित प्रबंध पहिले से ठीक कर देने चाहिये।

(क) शिक्षार्थियों के रहने का उचित प्रबन्ध जहां तक सम्भव हो सके तम्बुओं में ही रहने का प्रबन्ध हो। नीचे बिछाने की पुआल को न भूलना चाहिये।

(ख) स्काउट आर्गनाइज़र के रहने और खाने की व्यवस्था।

(ग) शिविर में शिक्षण-सम्बंधी आवश्यक सामान का प्रबन्ध, जैसे, रस्से, सिगनेलिंग की झंडियां, तिकोनी पट्टियां, खपचियां-गद्दियां इत्यादि फर्स्टएड सिखाने का सामान, फरनीचर, लिखने-पढ़ने का सामान—कागज, पैन्सिल, कलम-दावात, इत्यादि। घंटा, ब्लैकबोर्ड, डस्टर, चाक, कैम्प फायर के लिये लकड़ी, मिट्टी का तेल, शारीरिक व्यायाम के लिए आवश्यक सामान, लाठी, फरी गदका, छुरी, भाला, बनैठी इत्यादि और स्काउट आर्गनाइज़र के आने-जाने के इक्का-किराया (यदि आवश्यकता हो तो) का प्रबन्ध। पानी और पाखाने की व्यवस्था, चूना, फिनाइल आदि का प्रबंध भी पहिले से कर लेना चाहिये।

३—ट्रेनिंग क्लास में भर्ती करने के लिए योग्य व्यक्तियों का चुनाव पहिले से कर रखना चाहिये और उन्हें शिविर स्थल का पूरा पता, वहां पहुँचने की तिथि और समय और अपने साथ शिक्षण-शिविर में लाने के सामान की सूची का पूर्ण विवरण लिखित रूप में पहिले से भेज देना चाहिये। ऐसा न होने से कैम्प की सफलता नहीं होती। कुछ स्थानों के अधिकारी यह सोच लेते हैं कि उनका उत्तरदायित्व इतने में ही समाप्त हो जाता है कि वे प्रान्तीय हैडक्वार्टर्स को स्काउट आर्गनाइज़र भेजने के लिये पत्र लिख दें और उसकी नियुक्ति करवा लें। उसके बाद वह आर्गनाइज़र वहाँ पहुँच कर स्वयं भाग-दौड़ करे और लोगों से मिल कर कैम्प के लिए शिक्षार्थी एकत्रित करे। ऐसा करना उनकी भूल होगी और इस प्रकार व्यर्थ समय नष्ट होने के अतिरिक्त और कुछ लाभ न होगा। आर्गनाइज़र को पूरा सहयोग देकर उस कार्य में सफलता प्राप्त करवाना उनकी जिम्मेदारी है। उसे उन्हें निभाना चाहिये। यदि कोई ज़िला ऐसा न कर सके तो यह उसकी कमजोरी है। उसे इसे दूर करने की कोशिश करनी चाहिये और अपने संगठन में जहाँ गड़बड़ी है उसे दूर करके जीवित दशा में हो जाना चाहिये।

आशा है इस लेख से हमारे वैतनिक कार्यकर्त्ता भी और ज़िलों के अवैतनिक कार्यकर्त्ता भी समान रूप से लाभ उठावेंगे। मेरे सुझाव केवल संकेत मात्र हैं। आवश्यक बातें इसमें और बढ़ाई जा सकती हैं।

वैज्ञानिक

प्रिंस क्रोपाटकिन

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी प्रिंस क्रोपाटकिन के बारे में लिखते हैं :--

"वह एक असाधारण प्रतिभाशाली महापुरुष है। वह महान् गणितज्ञ है और भूगर्भ-विद्या का विशेषज्ञ; वह कलाकार है और ग्रन्थकार; वह संगीतज्ञ है और दार्शनिक। बीस भाषाओं का वह ज्ञाता है, और सात भाषाओं में वह आसानी से बातचीत कर सकता है। तीस वर्ष की उम्र में, रूस के चोटी के विद्वानों में—उस महान देश के कीर्ति-स्तंभों में—प्रिंस क्रोपाटकिन की गणना होने लगती है। वह सर्वोच्च कोटि का आदर्शवादी है और अपने सिद्धान्तों पर समझौता करना जानता ही नहीं है।"

पिछले अंक में प्रिंस क्रोपाटकिन ने 'डाक्टर' को सम्बोधित करके उसके प्रति जो अपने विचारों को प्रकट किया है वह प्रकाशित हुआ है। अब "वैज्ञानिक" के प्रति उनके विचार नीचे दिये जा रहे हैं।

वैज्ञानिक

पर शायद तुम कहो कि मुझको ऐसे व्यावहारिक धन्धे से कोई सरोकार नहीं। मैं खगोल-विद्या, प्राणी-शास्त्र, या रसायन-शास्त्र में लग कर विज्ञान की उन्नति करूँगा। ऐसे काम का फल सदा अच्छा निकलेगा, भले ही वह हमको न मिल कर आने वाली सन्तान को मिले।

सबसे पहले हमें यह जानने का उद्योग करना चाहिये कि विज्ञान की उन्नति करने से तुम्हारा उद्देश्य क्या है? क्या यह उद्देश्य केवल आनन्द—उत्कृष्ट आनन्द प्राप्त करना है, जो कि प्रकृति के अध्ययन से और अपनी मानसिक शक्तियों को किसी काम में लगा कर विकसित करने से मिलता है? उस दशा में मैं तुमसे पूछूँगा कि जो दार्शनिक अपना जीवन आनन्द के साथ व्यतीत करने के लिए विज्ञान का अध्ययन करता है, उसमें और एक शराबी में, जो शराब के नशे से थोड़ी देर के लिए दिल की खुशी हासिल करता है, क्या फर्क है? इसमें सन्देह नहीं कि दार्शनिक ने अपने आनन्द का विषय अधिक बुद्धिमानी से चुना है, क्योंकि उससे शराब की अपेक्षा बहुत गहरा और बहुत स्थायी आनन्द मिलता है, पर इससे ज्यादा कुछ नहीं! दोनों ही व्यक्ति स्वार्थ पर निगाह रखते हैं और दोनों का उद्देश्य एक ही है, यानी व्यक्तिगत सुख प्राप्त करना।

पर नहीं, तुम कहोगे कि मैं अपने स्वार्थ के लिये यह काम नहीं करता। वरन् मैं विज्ञान की उन्नति के लिये, मनुष्य जाति के हित के लिये यह काम करता हूँ। मेरे अन्वेषण का यही लक्ष्य रहेगा।

यह भी एक बड़ा मज़ेदार भ्रम है! हममें से जिस किसी ने पहले पहल जब विज्ञान का कार्य आरम्भ किया था तो अवश्य ही एक बार इसका सहारा लिया था। पहले हम भी ऐसा ही कहा करते थे।

पर यदि दर असल तुम मनुष्य जाति का विचार करते हो और तुम्हारा उद्देश्य मनुष्य-समाज का हित साधन करना है तो तुम्हारे सामने एक विकट प्रश्न पैदा होता है। तुम्हारे भीतर समालोचना करने का भाव कैसा भी कम क्यों न हो तो भी तुम तुरन्त जान सकते हो कि आज कल हमारे समाज में विज्ञान सुखोपभोग का एक साधन मात्र बन गया है, जिससे थोड़े से लोग अपने जीवन को अधिक सुखी बनाते हैं, पर मनुष्य-समाज का अधिकांश भाग उस तक पहुँच भी नहीं सकता।

सौ साल से ज्यादा समय व्यतीत हो गया, जब कि विज्ञान ने विश्वब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का निश्चयात्मक रूप से निर्णय कर दिया था, पर कितने लोगों ने उन सिद्धान्तों का अध्ययन किया है, या उस सम्बन्ध में कुछ वैज्ञानिक और आलोचनात्मक ज्ञान रखते हैं? ऐसे लोगों की संख्या शायद कुछ हज़ार होगी, पर उन करोड़ों मनुष्यों के बीच में, जो अभी तक दुराग्रह और अन्धविश्वासों में फँसे हैं और इस कारण धार्मिक ठगों के हाथों में कठ-

पुतली बन जाते हैं, ऐसे लोगों की संख्या आटे में नमक के भी बराबर नहीं है।

अगर हम इससे कुछ और आगे बढ़ कर देखें तो हमको विचार करना चाहिये कि विज्ञान ने शारीरिक और चरित्र सम्बन्धी स्वास्थ्य के ज्ञान को फैलाने के लिये क्या किया है? विज्ञान हमको बतलाता है कि अपने शरीर का स्वास्थ्य कायम रखने के लिये हमको किस तरह रहना चाहिये और किस तरह देश में बसने वाली असंख्य जनता को अच्छी दशा में रक्खा जा सकता है। पर क्या इन दोनों बातों के लिये किया गया अपार परिश्रम केवल किताबों के भीतर बन्द रह कर बेकार नहीं पड़ा है! सब लोग जानते हैं कि यह परिश्रम बेकार पड़ा है। इसका कारण क्या है? कारण यह है कि विज्ञान का अस्तित्व आजकल केवल थोड़े से विशेष अधिकार-प्राप्त लोगों के वास्ते है। सामाजिक असमानता के कारण आजकल मनुष्य-जाति दो भागों में बँटी है—एक मज़दूरी करने वाले गुलाम और दूसरे धन-सम्पत्ति के स्वामी पूँजीपति। इस भेद के कारण विवेकयुक्त जीवन व्यतीत करने की सब शिक्षाएँ सौ में से नब्बे मनुष्यों के लिये एक दिल दुखाने-वाले मज़ाक के सिवाय और कुछ अर्थ नहीं रखतीं।

मैं तुम को और भी बहुत से उदाहरण बतला सकता हूँ, पर बात को ज्यादा बढ़ाना ठीक नहीं। अगर तुम अपनी तंग कोठरी से, जिसकी खिड़कियों पर धूल जमी हुई है और जिसमें रक्खी हुई पुस्तकों की आलमारियों पर सूर्य का प्रकाश भी नहीं पड़ता, बाहर निकल कर चारों तरफ आँख खोल कर देखोगे तो तुम को क़दम-क़दम पर नये प्रमाण मिलेंगे, जिनसे इस मत का समर्थन होगा।

इस समय हमको विज्ञान-सम्बन्धी ज्ञान और आविष्कारों की वृद्धि करने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि जो ज्ञान अभी तक प्राप्त हो चुका है, उसको फैलाया जाय, उसको हर रोज़ के जीवन में काम में लाया जाय और उसे सर्वसाधारण तक पहुँचाया जाय। हमको ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिए कि मनुष्य-मात्र विज्ञान के सत्य सिद्धान्तों को जान सकें और काम में ला सकें। इस प्रकार विज्ञान शौकिया चीज़ न रहेगा, वरन् मनुष्य के जीवन का आधार बन जायगा। यही न्यायानुकूल बात है—इन्साफ का यही तक़ाज़ा है।

इसके सिवाय विज्ञान के हित की दृष्टि से भी यह आवश्यक है। विज्ञान की असली उन्नति तभी होती है, जब कि जन-समूह उसके सिद्धान्तों का स्वागत करने को तैयार हो। यन्त्र द्वारा उष्णता की उत्पत्ति का सिद्धान्त गत शताब्दी में स्थिर हो चुका था, पर अस्सी वर्ष तक वह किताबों में ही बन्द पड़ा रहा और उसका उपयोग तभी हो सका, जब कि जनता में भौतिक-शास्त्र का काफ़ी ज्ञान फैल गया। डार्विन ने प्राणियों के विकास का जो सिद्धान्त मालूम किया, वह तीन पुश्त के बाद विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया और वह भी तब, जब कि उन पर सार्वजनिक मत का दबाव पड़ा। कवि और चित्रकार की तरह दार्शनिक के अस्तित्व का आधार भी वह समाज है, जिसमें वह रहता है और अपने उपदेशों का प्रचार करता है।

पर जब इस प्रकार के विचार तुम्हारे भीतर भर जायँगे तो तुम समझ जाओगे कि सबसे अधिक महत्व की बात वर्तमान स्थिति में जड़मूल से परिवर्तन करना है, जिस स्थिति के कारण थोड़े से दार्शनिकों के भीतर वैज्ञानिक सिद्धान्त ठूँस ठूँस कर भर दिये जाते हैं और शेष जन-समूह उसी दशा में पड़ा रहता है, जिसमें वह हज़ार-पाँच सौ वर्ष पहले था! अर्थात् वह गुलामों या निर्जीव मशीनों की भाँति बना रहता है और सत्य सिद्धान्तों के समझ सकने में असमर्थ रहता है। जिस दिन तुम इस विस्तृत, गम्भीर, उदारतापूर्ण और पूर्ण वैज्ञानिक सचाई को पूरी तरह से समझ जाओगे, उसी दिन से तुम को खाली विज्ञान में कुछ मज़ा न आयेगा। तुम उन उपायों को जानने के लिए उद्योग करने लगोगे, जिनसे ऐसा परिवर्तन हो सके।

यह विश्वास रक्खो कि अन्त में एक दिन ऐसा भी आयेगा—और वह भी शीघ्र ही, चाहे उस समय तक हमारे वर्तमान शिक्षक भले ही जीवित न रहें—जब कि वह परिवर्तन जिसके लिए तुम उद्योग कर रहे हो, उत्पन्न हो जायगा। उस समय जन-समूह के सम्मिलित विज्ञान-सम्बन्धी कार्य से नई शक्ति प्राप्त करके और श्रमजीवियों

[शेष पृष्ठ ३८ पर देखिये]

बच्चों से व्यवहार

श्री दयाशंकर भट्ट

प्रति दिन के जीवन में बच्चों के साथ वयस्कों का और उनके अभिभावकों का जो व्यवहार देखने में आता है वह कहाँ तक ठीक नहीं है तथा उसमें 'क्यों और क्या' परिवर्तन करने की आवश्यकता है—'सेवा' द्वारा इस पर विचार करने से शायद 'बड़ों की भूलों के शिकार' इन दीन बालकों की कुछ सेवा हो सके, इस आकांक्षा से यह लेख दे रहा हूँ।

प्रथम मिलन

मेरे एक मित्र—विदेशों से उच्च शिक्षा-प्राप्त, प्रसिद्ध पत्रकार-सौभाग्य से बरसों में जब प्रथम बार मुझ से मिलने आये तो मैं स्नानागार में था। बच्चों की जैसी आदत होती है उसी के अनुरूप मेरा छः बरस का बच्चा जब उन्हें कुर्सी पर बिठाने गया तो मेरे मित्र मेरी प्रतीक्षा में मेरे बालक से कुछ बोले बिना चुपचाप मुँह फुलाये से बैठ गये; मानो मेरे घर में मेरे बालक का, उसके स्वेच्छा पूर्वक स्वागताध्यक्ष होने का, उसके नव परिचय का, उसकी उत्सुकता या जिज्ञासा का कोई महत्व ही न हो। पत्रकार महोदय से प्रथम मिलन के कटु अनुभव से इस बेचारे बालक को ऐसा अनुभव हुआ मानो अपने चिर परिचित घर में उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। उस दिन उसे मनाने में हमें मनोविज्ञान का एक अच्छा पाठ प्रयोग में लाना पड़ा।

कुछ भद्र जन "बड़े आदमी" बच्चों से मिलने में ऐसा सकपकाते हैं, ऐसी असुविधा सी दिखाते हैं कि दंग रह जाना पड़ता है। क्या यह छोटा सा मानस पुत्र आप जैसे स्वस्थ सबल व्यक्ति के लिए हानि का कारण बन कर भय जनक हो सकता है? फिर इस प्रकार सकपकाने की चेष्टा क्यों?

प्रलोभन किस लिए?

मछली पकड़ने वाले कुछ न कुछ फांसने की सामग्री अपने पास रखते ही हैं। इसी कोटि के व्यक्ति कुछ और भी हैं—वे बच्चों को रिझाने के लिए अपने पास, रंग-बिरंगी, ज्यादातर सस्ते दामों की और स्वास्थ्य के लिए हानिकर मीठी गोलियाँ रखते हैं और जब वे बच्चों के पास जाते हैं तो बड़े प्रेम और आत्मीय भाव से उन्हें भेंट कर देते हैं और बस अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं। इससे क्या वे बालकों के मानसिक अथवा शारीरिक विकास में सहायक हुए? सोचिए, क्या यह सर्वप्रिय सुन्दर शिशु मिठाई की गोलियों से प्रसन्न किया जाने योग्य हीन प्राणी है?

महान व्यक्तित्व

बालक एक महान व्यक्तित्व है, उसे आप विनोद की सामग्री या खिलौना न समझिए! आप यदि उसके नवपरिचित हैं तो निश्चय ही आप उसके पढ़ने के लिए एक नयी पुस्तक हैं। अब आपकी जैसी मर्जी हो, उससे व्यवहार कीजिए, और अपनी योग्यता-अयोग्यता का उसे परिचय दीजिए।

आप वयस्क हैं और शिशु भी आपको अपने से बड़ा समझता है। यह भी आप जानते ही होंगे कि आप सर्वज्ञ नहीं हैं; तब उसकी अल्पज्ञता पर आप हँसते क्यों हैं? उसके अशुद्ध वाक्य-प्रयोग की आप उसके सामने नकल क्यों करते हैं? बच्चा आपको आदर की दृष्टि से देखता है और वह आपसे अपने सुधार की आशा करता है। अपने इस व्यवहार से आप उसकी दृष्टि में नकलची बन गये। और, इस नकल से आपने जो उसे चिढ़ा दिया है, नाराज़ कर दिया है, यह उस निर्दोष को किस अपराध की सजा मिली? तथा आपने उसे अपने कौन से गुण का परिचय दिया?

आपका आचरण ही उत्कृष्ट शिक्षण है

अपने मित्र से मिलन के समय यदि उनके साथ बालक विद्यमान हो तो मित्र से नमस्कारादि कर बालक की ओर मुड़ जाइए; दो-एक मीठे लफ्जों में उसे भी प्रोत्साहित कर सृष्टि के मूल स्रोत इस लघु प्राणी का भी 'लघु परिचय' प्राप्त कर लीजिए। केवल इतने से उसे मधुरभाषी होना सिखा दीजिए और अपने प्रति भी उसका प्रेम तथा आदर भाव आकर्षित कर लीजिए।

आपके परिवार को आपके सौभाग्य से यदि बालक ने अपने आगमन द्वारा चहल-पहल का केन्द्र बना दिया है तो आप अपने व्यवहार से उस पर ऐसा प्रभाव न डालिए कि इस घर में आपका ही एकमात्र प्रभुत्व है और किसी वस्तु का होना न होना आपकी प्रसन्नता-अप्रसन्नता पर ही निर्भर है। ऐसा करने से आप बालक को खुशामदी बना रहे हैं। इसमें आज्ञा उल्लंघन करने की तथा परिवार के अन्य सदस्यों की अवज्ञा करनें की प्रवृत्ति पैदा कर रहे हैं और उसके लिए उचित-अनुचित के ज्ञान के नैसर्गिक पाठ को दुर्बोध बना रहे हैं।

बालक के प्रश्नों का उत्तर देने में कभी चूकिए नहीं, उसके साथ व्यंग की शैली से बातचीत न कीजिए और किसी ऐसे काम के न करने पर उसकी आलोचना न कीजिए जो उसके अधिकार या शक्ति से परे की बात हो। यदि उस पर कभी उसकी गलतियों से चोट लग जाती है तो 'कैसे और क्यों' करके उससे प्रश्न न कीजिए। उसे यह सुनकर संकोच और साथ ही रंज होता है कि उसे पीड़ा देनेवाले काम को दुहराने के लिए कहा जा रहा है। बालक आपके हावभाव और उसके विषय में उससे अपरिचित भाषा तक में दूसरे से बातचीत करने के आपके लहजे से ही समझ जाता है कि उसके बारे में छिपाकर कुछ कहा जा रहा है। आप जानते हैं, ऐसा करके आप बच्चे के दिल में संदेह पैदा कर रहे हैं और उसे चिन्ता में डालकर हीन भाव का बना रहे हैं।

न भुलाई जाने योग्य घटना

केवल एक घटना का उल्लेख पर्याप्त होगा। प्रकृति-नटी की क्रीड़ास्थली पर्वतों की एक मनोरम उपत्यका में स्थित प्रारंभिक पाठशाला में पाँच बरस का एक बालक और आठ बरस की उसकी बहन कक्षा में बैठे बेसिक शिक्षा में विशेष योग्यता प्राप्त किये हुए अपने एक अध्यापक महोदय का चिड़ियों के आकार-प्रकार तथा उनकी बोली और विशेषताओं पर व्याख्यान सुन रहे थे, कि एक हरे रंग की चिड़िया जिसे वहां 'हिलांस' कहते हैं कूकती हुई उनके ऊपर से उड़ गई। बालक उसकी कूक की हूबहू नकल कर उसे पकड़ने के प्रयास में खड़ा होने का प्रयत्न करने लगा तो उसकी बहन ने उसे आँखें दिखाते हुए उसकी बाँह झटका कर उसे बिठा दिया और अध्यापक महोदय ने उस बालक को कान पकड़ कर दस बार उठक-बैठक करने की सजा दी। भोली बहन की यह सरल भूल, विद्वान अध्यापक महोदय का यह कर्त्तव्य-पालन, बालक की प्रकृति-प्रदत्त प्रतिभा का इस क्रूरता से हनन और कला के मौलिक उपकरणों की यह निष्ठुर उपेक्षा क्या भुलाई जाने योग्य घटना है!

बालक ही आपका आदर्श है

बालक हमेशा चाहता है कि जितना जल्दी हो वह बड़ा हो जाय; कभी-कभी तो वह अपने से बड़ी अवस्था के लोगों के बीच, जब कि वे बैठे हों — स्वयं खड़ा होकर उनसे होड़ करता है और अपने को उनसे ऊँचा देख कर प्रफुल्ल हो उठता है। बालक हर बात में बड़ों की नकल करता है, इसलिए यह आप सब पर निर्भर है कि आप उसके सम्मुख अपना आचरण रखकर उसे जैसा चाहें वैसा बना दें, अर्थात् आप उसे जैसा बनाना चाहते हैं स्वयं वैसा बन जाइए। बालक आपका ही तो आदर्श है; यानी आपका बालक जैसा कुछ है उसमें आप ही तो दिखाई दे रहे हैं 'दर्पण'। बालक आपसे सहायता चाहता है, पथ-प्रदर्शन चाहता है, आदर्श चाहता है; इसलिए क्या हम आपसे आशा करें कि आप उसके सच्चे सहायक, पथ-प्रदर्शक और आदर्श बनकर अपना कर्त्तव्य-पालन करने में न चूकेंगे।

[३६वें पृष्ठ का शेष]

(मजदूरों) के बड़े बड़े सेना दलों की शक्तिशाली सहायता से, जो कि अपने उद्योग का फल संसार की ज्ञान वृद्धि में लगायेंगे, विज्ञान और कला-कौशल इतनी शीघ्रता से उन्नति करने लगेगा, जिसके मुकाबले में उसकी वर्तमान समय की मन्दगति बच्चों के खेल के समान जान पड़ेगी। तब तुम्हें विज्ञान का मज़ा मालूम होगा, क्योंकि उस समय आनन्द का उपभोग तुम अकेले ही न करोगे, बल्कि तुम्हारे साथ साधारण जनता भी होगी।

ग़द्दार शहीद

श्री सुरेश वर्मा

"स्वदेशी ! ढोंग !"

"लेकिन तुम्हारे लिये" था उत्तर दया का।

"मेरे लिये नहीं वरन आज की सभ्यता के लिये, आज के मानव के लिये आज के युग के लिये ! बीसवीं सदी और खद्दर ! भई वाह दया। संसार का आठवां आश्चर्य" पंकज के स्वर में तीव्र व्यंग था !

"तुम और तुम्हारी बीसवीं सदी ! ईश्वर बचाए इनसे ! सभ्यता को न समझने वाला मानव सभ्यता के नाम पर क्या नहीं कर रहा है। बीसवीं सदी—इस युग का कोढ़" दया का स्वर तीव्र हो उठा।

"लेकिन कैसे" पंकज के स्वर में व्यंग था।

"सवाल आसान है परन्तु उत्तर तो ऐसा नहीं ! भारत की प्राचीन संस्कृति के तत्व को भूल जाने के कारण ही उसका इतना पतन हो चुका है ! हमारे संत जुलाहे थे यह न भूलना चाहिये ! कबीर का नाम तो सुना होगा।"

"हूँ"

"क्या कभी सोचा है कि कितना धन भारत से बाहर बह गया "स्वदेशी" को भूल जाने के कारण ! सम्भवतः नहीं" दया ने अपना मुख नीचे झुका लिया।

"लेकिन आज का युग मांगता है कुएँ से बाहर निकलना। राष्ट्रीयता का स्थान "इन्टर नैशनलिज्म" ने ले लिया है ! और स्वदेशी सिद्धान्त केवल कूप-मंडूक ही बना देगा" तर्क था पंकज का।

"बस यहीं पर तुम ग़लती कर बैठते हो पंकज ! बापू ने कहा था कि स्वदेशी तो सारे संसार के लिये संदेश है ! वह तो किसी भी देश को स्वावलम्बी बनाने का एकमात्र उपाय है और तुम जानते हो स्वावलम्बन से अधिक कोई बड़ी शक्ति नहीं..."

"बस भई ! बन्द करो इस 'लैक्चर' को ! दिमाग़ फिर गया है तुम्हारा" पंकज के मुख पर घृणा के भाव व्यक्त हो उठे।

"मैं तो चाहती हूँ कि तुम्हारा भी फिर जावे" और दया कुछ अनमने भाव से उठ कर चली गयी अन्दर !

पंकज की ३-४ मिलें थीं कानपुर में काम करते थे जिनमें हज़ारों मज़दूर !

३ माह पश्चात् !

शहर में असन्तोष की आग भभक रही थी ! मिलों के मज़दूर गर्म थे और मिल मालिक भी। बिचारे भूखों मर रहे थे फिर भी जब वे खाने को मांगते तो उन्हें मिलते पुलिस के डंडें, गोलियां और मिल मालिकों की गालियां ! उन्हें जीने का अधिकार भी तो न था !

"अबे उठता है या सोता ही रहेगा। गधे" और साथ ही उस बिचारे ११ वर्ष के बालक पर एक ज़ोर का चांटा पड़ा। बालक आंखें मलता उठ बैठा और एकदम दृष्टि दौड़ गयी उसकी पूर्व की ओर !

"उल्लू...पाजी...सूरज सिर पर आ गया और कम्बख्त सो रहा है ! सुना नहीं...मिल का भोंपू बज गया है" बालक को पीटनेवाला शायद उसका बाप था और साथ उसकी पीठपर बरस पड़े लात, घूँसे चांटे। बालक ने एक बार फिर आकाश की ओर देखा ! अभी साढ़े पांच ही त. बजे थे और उसे आश्चर्य था कि सूरज कहां था !

और दो मिनट बाद वह बालक अपने अन्य दो छोटे-छोटे रोते भाइयों को लेकर मिल की ओर चल दिया। हाथों में सूखी रोटी के हृदय हीन टुकड़े लिये वे चले जा रहे मिल की ओर और जब वे फाटक में घुसे तो जमादार की एक-एक चपत के साथ उन्होंने सुना "हरामी! इतनी देर से आया है आज।"

"हाय रोटी ! हाय रोटी" की आवाजें जब तेज हो उठीं तो दया बरबस ही खिड़की पर आकर खड़ी हो गयी ! एक लम्बा-चौड़ा जलूस चला जा रहा था सड़क पर ! असंख्य मज़दूर भी थे उसमें ! —पतले दुबले, नंगे, भूखे, काले-मैले-कुचैले, हड्डियों के ढांचे ! समाज के कीड़े !!

आज एक बहुत बड़ी सभा होने वाली थी उनकी। आज ही निश्चय होने को था कि वे क्या करें—भूखे मरें या रोटी मांगें ! आख़िर भूखों भी

कब तक मरा जावे !

"उफ़ ! नाक में दम कर रक्खा है इन उल्लुओं ने ! "तनख़ाह बढ़ाओ" । कहां से बढ़ायें । ६० रुपये कुछ कम होते हैं" कमरे में घुसते हुये पंकज ने कहा।

"तुम कितना कमाते हो। लखपतियों में गिनती है तुम्हारी। लेकिन फिर भी चोरबाजारी से बाज नहीं आते। क्यों ? और वे विचारे ६०) रुपये पाते हैं तो क्या मिलता है उन्हें।" दया ने झिड़क दिया अपने पति को !

शाम के ६ बजे थे। मैदान में असंख्य मजदूर थे ! बच्चे, बूढ़े, औरतें सब कोई ! सामने के ऊँचे से मंच पर कोई खड़ा था। हाथों की मुट्ठियां बन्द थीं। मुख लाल था ! वह सम्भवतः सहारा उन बिचारे मजदूरों का—उनका ध्रुवतारा।

"तुम भूखों मर रहे हो !...नंगे हो...घर नहीं... फिर भी चुप हो ! आज हिन्दुस्तान आज़ाद है पर तुम अभी तक गुलाम हो।...खाना मांगते हो पर मिलते हैं डंडे और गोलियां...उठो...और एक हो कर दिखा दो कि जीने का अधिकार तुम्हें...भी है...इन्कलाब...जिन्दाबाद..."

और उस दिन मज़दूरों ने तय किया कि वे परसों से काम पर न जावेंगे !

६ तारीख़ से मिलों में हड़ताल !

और मैकू जब अपने बालबच्चों सहित सभा से लौटा तो उसे काफ़ी तेज़ बुखार था ! तीन दिन से भूखा मैकू !!

कल हड़ताल है ! चारपाई पर पड़ा पड़ा सोच रहा था मैकू। हड़ताल ! हड़ताल !! बड़े सोच में था वह ! काम पर जावे या नहीं ! उसे याद आया अभी उस दिन ही तो प्रधान मंत्री नेहरू ने रेडियो पर कहा था..."तुम हड़ताल पर जाओगे तो देश की कितनी हानि होगी..पैदावार कम हो जावेगी. . तुम्हारा कर्तव्य है देश की सेवा...उत्पादन बढ़ाओ... आजादी का अर्थ केवल रोटी और कपड़ा ही नहीं है...हिन्दुस्तान के हाथ तुम ही मजबूत कर सकते हो...पहले मुल्क फिर खुद...आत्म बलिदान करो..." मैकू को याद आया कि उन्होंने यह भी कहा था "अभी तो कई मुसीबतें आएंगी..हमें डरना नहीं है...सामना करना है...तभी भारत उन्नति कर सकेगा..।" मैकू चक्कर में था ! कल हड़ताल है ! उसके नेता ने कहा था "तुम भूखों मर रहे हो... तुम्हारे बाल-बच्चे भूखे, नंगे...!" और कल हड़ताल है ! बिचारा मैकू !

सवेरा हुआ। रोज़ की तरह मिल का भोंपू बजा ! मैकू उठा ! लड़के अभी सो रहे थे ! उठाया! "बापू आज तो हड़ताल..." !

"चुप ! बदमाश ! हम काम पर जावेंगे...पहले देश...फिर पेट..."

और वे दोनों चल दिये मिल की ओर ! मैकू को अभी ज्वर था !

मिल के फाटक पर सशस्त्र पुलिस थी ! असंख्य मज़दूर बाहर खड़े थे ! मैकू भीड़ में जा पहुँचा अपने लड़के का हाथ पकड़े ! फाटक की ओर बढ़ा !

"पकड़ो उसे" भीड़ चिल्ला पड़ी ! मैकू के पैर और तेज़ी से फाटक की ओर बढ़े !

"पकड़ो उसे...ग़द्दार !" और एक साथ अनेक मज़दूर उसे पकड़ने को झपटे ! पर मैकू फाटक में पहुँच चुका था ! पर उसी समय किसी की लाठी उसके सर पर बैठी और उसका सर लहू लुहान हो गया ! उसे चिन्ता न थी इस समय इसकी। उसके कान में पं० नेहरू के शब्द गूँज रहे थे..."उत्पादन बढ़ाओ...पहले देश...फिर पेट..." !

और जब दो घंटे पश्चात मिल-मालिक पंकज मिल का दौरा करने निकले तो मैकू की जगह जा निकले ! साथ के जमादार ने उसे सिर झुकाए पाया तो डंडे से हिलाते हुये कहा 'ओ हरामी...उठ बे... यह घर नहीं है..."

पर जब मैकू न उठा तो धड़कते हृदय से पंकज ने उसके शरीर पर हाथ रख दिया। यह उनका पहला अवसर था कि उन्होंने किसी मज़दूर पर अपना हाथ रक्खा था ! अरे ! मैकू का शरीर बर्फ के समान ठंडा था ! मशीन के पुर्ज़ों पर सर से बहा रक्त जम गया था और पास खड़ा था उसका लड़का सूनी आंखों से देखता हुआ मशीन पर जमें रक्त को!

उपयोगी साहित्य

क्रांति का मूल स्रोत
बालक

यह पुस्तक बालक के विषय में आपके विचारों में उथल पुथल मचा देगी। बालक की अपरिमित शक्तियों पर प्रकाश डालेगी, और आपकी सब बालक सम्बंधी गुत्थियों को सुलझा देगी।

पृष्ट १८०, चित्र ३५, मूल्य २।।)

(युक्त प्रान्त में पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत)

तीन नई पुस्तकें

वनोपसेवनः—कैम्पिंग अथवा वनोपसेवन आदि काल से भारतवासी अपनाते रहे हैं, स्काउटिंग में उसका एक नया निखरा हुआ रूप मिलता है, वन में एक नया संसार बसा कर नवयुवकों को जीवन में संघर्ष की शिक्षा दी जाती है। श्री डा० एल० आनन्दराव ने इस उपयोगी सचित्र पुस्तक की रचना की है। मूल्य १।)

नक्षत्र दर्पण—हिन्दी में नक्षत्रों के ज्ञान पर यह पहली सरल पुस्तक है। मूल्य १।)

अन्वेषण की कहानियाँ—किस भाँति मनुष्य ने अपनी जान को जोखिम में डाल कर कई नए प्रदेशों को ढूँढ़ा है। उसका वर्णन पढ़ कर एक नूतन आनन्द मिलता है। मूल्य १।)

बालकों के लिए उपहार

जो बालक या बालिका कविता, कहानी, एकांकी अथवा और कोई अन्य लेख भेजेगा और उसे सेवा में छपने के योग्य समझा जायगा तो उसको १ वर्ष तक सेवा उपहार में मिलेगा। [संपादक सेवा]

स्काउटिंग सम्बन्धी प्रकाशन

ये पुस्तकें बहुत दिनों से अप्राप्य थीं। प्रत्येक, स्काउट, स्काउटर तथा टोलियों को अपने पुस्तकालय में रखनी चाहिएँ।

पुस्तक	लेखक	मूल्य
कोमलपद		१।।)
ध्रुवपद शिक्षण	: पं० श्रीराम बाजपेयी :	१।।।)
गुरुपद		१।।)
रसोइया		=)
पब्लिक हेल्थमैन		।।=)
गाँठ विद्या	श्री भोलानाथ चौधरी	।।=)
गमोमा चार्ट		=)
डूबतों को बचाना	श्री हरनारायण चौधरी	।)
गर्ल गाइडिंग	श्री कृष्णानन्दन प्रसाद	१।।)
टोली विधि	श्री जानकी शरण वर्मा	१।।)
स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन		=)
कमिश्नर्स गाइड अंग्रेजी		।।।)
स्काउट कमिश्नर्स कम्पेनियन		१)
दस दिन का सेकंड क्लास स्काउट ट्रेनिंग		)।।
डेली प्रोगाम फ़ार सेकंड क्लास		
विलेज स्काउट कैम्प (अंग्रेजी		)।।
हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन का इतिहास	श्रीपुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि	।।)

STORIES FROM THE RAMAYANA

Impressive and inspiring stories, written in simple English. Good printing, attractive get up, entertaining and instructive light reading.

Price Re. 1 only.

बिक्री विभाग—१, कटरा रोड, इलाहाबाद

हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन, यू० पी०, द्वारा स्थापित

हिन्दस्काउट सहकारी प्रकाशन, लि०

इस समय तक ऊँचे दर्जे की अनेक पुस्तकें विभिन्न विषयों पर प्रकाशित कर चुका है। इसके कार्य का क्षेत्र दिनोंदिन बढ़ता चला जा रहा है।

इसके हिस्से खरीद कर लाभ उठाइये

कुल बिकाऊ हिस्से १०,००० : एक हिस्से का मूल्य १०)

५) प्रार्थना-पत्र के साथ देने होते हैं। शेष ५) दो किश्त में प्रत्येक मास की दस तारीख तक लिए जायेंगे। शेयर की पूरी रकम एक बारगी भी दी जा सकती है।

× × × ×

युक्त प्रान्तीय सरकार के शिक्षा विभाग के आदेशानुसार हमने दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी की पाठ्य पुस्तक

"बेसिक रीडर भाग २"

छापी है। मूल्य ७ आने। पुस्तक हाथोंहाथ बिक रही है। हमारी बिक्री के क्षेत्र इलाहाबाद और झांसी डिवीजन हैं। पुस्तक विक्रेताओं को १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। आर्डर के साथ २५ प्रतिशत रुपया अवश्य आना चाहिए। शेष रकम वी० पी० द्वारा बिल्टी भेज कर वसूल कर ली जायगी।

हिन्द स्काउट सहकारी प्रकाशन की निम्नलिखित दो पुस्तकें हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा ७ और कक्षा ५ के लिए स्वीकृत की गई हैं।

"सुनहरा प्रभात"

यह एकांकी नाटकों का संग्रह है। [illegible] जादू, दो तलवारें, पहला कदम, मोतीराम [illegible] खेल, [illegible] आदि व्यंग तथा हास्य से पूर्ण रचनाओं को पढ़ कर आपका हृदय फड़क उठेगा। [illegible]कों के लिए इससे अच्छी दूसरी पुस्तक मिलना कठिन है। नाटक की शैली में लिखी होने के कारण स्कूल-कालेजों तथा अन्य युवक संस्थाओं में इनका अभिनय बड़ी सफलता से हो सकता है। स्काउटों के लिए तो यह विशेष उपयोगी पुस्तक है। मूल्य केवल १)

"समाज सेवा"

बालकों से लेकर बूढ़ों तक के लिए और विशेष कर रचनात्मक कार्यकर्ताओं और समाज सेवियों के लिए यह अपूर्व पुस्तक है। विभिन्न प्रकार की समाज सेवा करने का पूर्ण ज्ञान इस पुस्तक के अध्ययन से प्राप्त हो सकता है। मूल्य ॥=)

प्रकाशक—श्रीयुत प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, यू० पी०, इलाहाबाद।

मुद्रक—श्रीयुत मदनकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद।

वर्ष २६ सं० १०]

[अक्टूबर १९४१

विषय-सूची

सेवा के नियम

(१) 'सेवा' महीने के प्रथम सप्ताह तक प्रकाशित होकर सब ग्राहकों के पास भेज दी जाती है, यदि किसी ग्राहक को १५ ता० तक प्राप्त न हो तो इसकी सूचना स्थानीय पोस्टमास्टर के प्रमाणपत्र सहित कार्यालय को भेजना चाहिए।

(२) 'सेवा' का वार्षिक मूल्य तीन रुपया और एक अंक का मूल्य पाँच आना है।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या लिखनी आवश्यक है।

(४) 'सेवा' में प्रकाशनार्थ लेख सम्पादक के नाम भेजने चाहियें तथा मूल्य आदि मैनेजर के नाम। यदि आवश्यक हों तो चित्र भी लेख के साथ भेजना चाहिए।

(५) सम्पादक को अधिकार रहेगा कि वह किसी लेख को प्रकाशित करे, न करे या उसमें आवश्यक संशोधन करे। जो लेखक साथ में टिकट भेज देंगे, उनका लेख अस्वीकृत होने पर तुरंत लौटा दिया जायगा।

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दु:खतप्तानां प्राणिनामार्त नाशमनम् ॥

यू० पी०, सी० पी० तथा बरार, बिहार, अलवर, बीकानेर, ग्वालियर, जयपुर और होलकर
राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

वर्ष २९] अक्टूबर १९४९ [संख्या १०

बापू

श्रीमती तारा पांडेय

तुम हो महान् !
तुम हो महान् !
तुम परम पूज्य, तुम गुण-निधान !
सब कार्य तुम्हारे, मनभावन पद चिह्न बने हैं अति पावन,
मैं मन्त्र मुग्ध-सी देख रही, कैसे गाऊँ अब मधुर गान !
तुम हो महान् !
जीवन में जागृति को भरने, सारे जग को ज्योतित करने,
'सत्याग्रह' का यह महामन्त्र है आज तुम्हारा अमर दान !
तुम हो महान् !
ओ भारत माता के नन्दन ! युग-युग तक होवे अभिनन्दन !
आँखों के खारे पानी से मैं देती तुमको अर्ध्यदान !
तुम हो महान् !
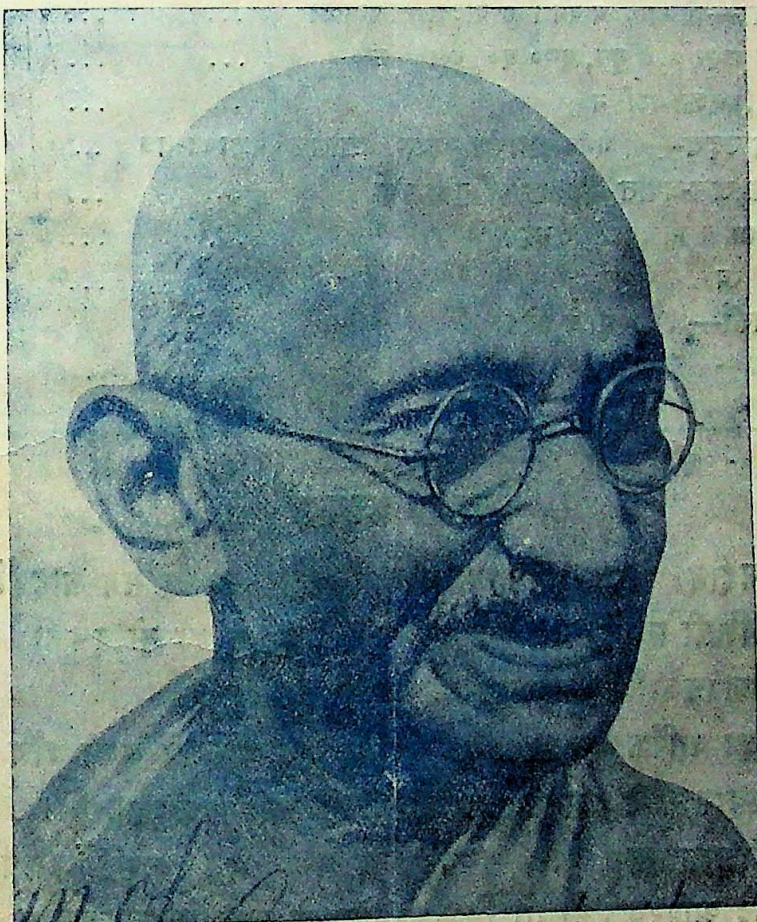
बाल विकास

श्रीमती सी० मोहिनी, संयुक्त नेशनल आर्गनाइजिंग कमिश्नर, गर्लस्काउटस्

आज हमारे देश के सामने बहुत सी समस्याएँ हैं जिनको हल करने में हमें चाहिए कि अपने नेताओं को पूरा सहयोग देने का प्रयत्न करें। इन समस्याओं में एक समस्या—जिस पर हमारे देश का भविष्य निर्भर है—यह है कि अपने बच्चों को इस योग्य बनाएँ कि वह आने वाले काल में अपने देश का सिर संसार में ऊँचा करें और बरसों के बाद पाई गई स्वतन्त्रता को सदा के लिए सुरक्षित रख सकें।

'मैं कुछ करूँ' ऐसा भाव प्रत्येक बच्चे में स्वाभाविक ही रहता है। आप बच्चे को घर में अकेला छोड़ दीजिये; वह अपने लिए कठिन से कठिन कार्य ढूंढ़ना चाहेगा। यदि और कुछ नहीं तो खिड़की का या पास वाले पेड़ का सहारा लेकर छत पर चढ़ने की कोशिश करने लगेगा। उसे पढ़ने के लिए 'राबिन हुड' किताब दे दीजिये तो कम से कम एक हफ्ता तो वह अपने को ही 'राबिन हुड' समझता रहेगा। कहने का तात्पर्य यह कि साहसिक कार्य करने की एक प्रेरणा हरएक बच्चे में मौजूद रहती है। उसी प्रेरणा से उत्साहित होकर वह एक डाकू भी बन सकता है और इसी प्रेरणा से उत्साहित होकर वह सुभाष चन्द्र बोस भी बन सकता है। अब सवाल यह उठता है कि उस प्रेरणा को उपयुक्त साँचे में किस प्रकार ढाला जाए? उसकी जो जन्मजात प्रवृत्तियाँ हैं उनका किस ढंग में व किस रूप में विकास हो?

यह तभी सम्भव हो सकता है जब माता पिता व अध्यापक यह जानते हों कि इस बच्चे के प्रति उनके क्या कर्त्तव्य हैं। कोई भी जमीन का टुकड़ा जिसकी कि परवाह नहीं की जाती व्यर्थ के घास फूस से भर जाता है। ठीक यही हालत बच्चों की रहती है। आप उन्हें अपने ही ऊपर छोड़ दीजिए तो इसका नतीजा यह होगा कि कुछ ही दिनों में उनका दिमाग़ इधर उधर के आवारा विचारों से भरने लगेगा। अब यह सोचा जाए कि किस प्रकार उन्हें ऐसे विचारों से दूर रखा जाए। इस प्रश्न का उत्तर सोचते समय हमें स्काउटिंग का ख्याल हो आता है। स्काउटिंग ही समाज के खोए हुए चरित्र को वापिस ला सकती है। आप अपने बच्चे को कैम्प में ले जाइए—वहाँ पर प्रकृति के सम्पर्क में आने के साथ साथ वह सीखते हैं कि किस प्रकार मुसीबतों को हँसते हुए झेलना चाहिये। किस प्रकार समय पर एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। पूछने पर बहुत से बच्चे ऐसे मिलेंगे जो कोयल और कव्वे में भेद नहीं बता सकते, जिन्होंने बुलबुल का शब्द कभी नहीं सुना। क्यों? इसीलिए कि उन्हें कभी प्राकृतिक सौन्दर्य से घिरे हुए वातावरण में रहने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। यदि सही वातावरण में रख कर सही ढंग से शिक्षा दी जाए तो उन्हें अनुशासन सिखाने के लिए कभी छड़ी की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। क्या यह दुख की बात नहीं कि यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाला लड़का अपनी कमीज़ में बटन नहीं टाँक सकता? एक बार उसे कैम्प में ले जाइये वह बहुत कुछ सीख कर लौटेगा। उसे अपने आप को स्काउट कहने का मौका दीजिए तो वह जरूर चाहेगा कि वह एक अच्छा नागरिक बने। हमें यह नहीं देखना है कि प्रत्येक स्काउट को अपनी प्रतिज्ञा व नियम याद हैं या नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे देश के नवयुवक व नवयुवतियां सेवा के सच्चे भाव को समझें—सड़क पर गिरे हुए व्यक्ति का मज़ाक बनाने के बजाए उसको सहारा दें। वह इस बात को अनुभव करें कि देश की उन्नति का भार उनके कंधों पर है जिसे सहन करने के लिए उन्हें अपना स्वास्थ्य व चरित्र दोनों बलवान बनाना है। उन्हें यह बोध हो कि किस तरह वह एक अच्छे नागरिक कहलाए जा सकते हैं।

हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन दिल्ली

माननीया राजकुमारी अमृत कौर का संदेश :—

दिनांक १२ सितम्बर, १९४९ को हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन दिल्ली के वार्षिक समारोह के अवसर पर माननीया राजकुमारी अमृत कौर ने निम्नलिखित संदेश दिया है :—

स्काउट-आंदोलन एक बहुत ही सुंदर आंदोलन है। इसमें सम्मिलित होने वाले बालक और बालिकाएं यदि सेवा, अनुशासन और सहकारिता की अपनी नैसर्गिक प्रवृत्ति से कार्य करें तो निसंदेह वे भारत के योग्यतम नागरिक बन सकते हैं। नगरों के अतिरिक्त गाँवों में भी मैं स्काउट-आंदोलन के प्रसार की कामना करती हूं; क्योंकि वस्तुतः गाँवों में ही वास्तविक भारत निवास करता है।

माननीय पंडित हृदयनाथ कुंजरू का हर्ष-प्रकाशन :—

स्थानिक हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन के वार्षिक समारोह के अवसर पर सात सौ से अधिक स्काउटों की रैली में भाषण देते हुए माननीय पंडित हृदयनाथ कुंजरू ने कहा—मैं स्काउट बालक तथा स्काउट बालिकाओं से यह आशा करता हूं कि वे अपनी गति-विधि जारी रखने में सदा उत्साहित और क्रियाशील रहेंगे। जाति, वर्ण, मत और प्रान्तीयता के भेदभावों से सदा मुक्त 'भारतीय स्काउट-आंदोलन' देश के युवक-युवतियों के हित के लिए एक सजीव आंदोलन है। विभिन्न विश्वासों और विचारधाराओं के व्यक्तियों के लिए इस आन्दोलन ने एक पवित्र सामूहिक मिलन-स्थल का निर्माण किया है।

स्थानिक स्काउट असोसिएशन के सदस्यों की सक्रियता पर मुझे संतोष है; और मुझे हर्ष है कि देश की वर्त्तमान स्थिति के प्रति यहाँ के स्काउट सजग होकर अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे हैं।

गाँधी युग

प्रिंसिपल मदनमोहन, प्रान्तीय कमिश्नर

गांधी जी इस युग के महापुरुष थे। हमें गौरव है कि हम भी इस युग में पैदा हुये और रहे। आने वाली पीढ़ियां इस युग को याद किया करेंगी। कृष्ण महाभारत को न रोक सके, गांधी जी भी महायुद्धों को न रोक सके, परन्तु उन्होंने पीड़ित संसार के सामने प्रेम और अहिंसा का शस्त्र रक्खा। उसी शस्त्र से उन्होंने भारत में वह वातावरण उत्पन्न किया कि अंग्रेजों को यहाँ से स्वयं ही जाना पड़ा। जो अंग्रेज हिटलर के दांत खट्टे कर चुके थे और संसार में पशुबल की भीषणतम शक्ति का दमन कर चुके थे, इस आत्मबल के सामने ठहर न सके। यह वह शस्त्र है जिससे विरोधी स्वयं ही अपनी निर्बलता और अपराध को समझ जाता है।

गांधी जी विदेशी शासन के परम शत्रु थे, परन्तु वे कहा करते थे, "मैं अंग्रेजों से उतना ही प्रेम करता हूँ जितना अपने देशवासियों से।" उनमें कुछ विचित्र चमत्कार था। जो उनके सम्पर्क में आता था वह उनका ही हो रहता था। एक जाते हुए वायसराय ने नवागत वाइसराय को परामर्श दिया, तुम कुछ ही करो, गांधी जी से स्वयं न मिलना। यदि मिले तो तुम सब खो दोगे।"

एक बार कुछ कम्यूनिस्टों ने गांधी जी को मारने की धमकी दी। उन्होंने उन्हें अपनी रक्षा का कोई प्रबन्ध किये बिना ही अपने डेरे में बुला लिया, जहां से कुछ समय पीछे वे बच्चों के समान सिसकियां भरते हुए बाहर निकले।

लन्दन में उन्हें सुझाया गया कि वे लंकाशायर न जायें, क्योंकि वहां यह भय था कि कपड़ा मिलों के कारीगर जो गांधी जी के ब्रिटिश वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन के कारण आजीविका विहीन हो रहे हैं, कहीं उन पर आक्रमण न कर दें। गाधी जी ने कहा, तो फिर मैं वहां अवश्य जाऊंगा। पुलिस की सहायता बिना ही वह वहां गये और क्रोध में अन्धी भीड़ का सामना किया। उनके कुछ ही शब्द सुनकर, उसी मजदूर मण्डली ने उनका हृदय से स्वागत किया और 'गांधी जी की जय' की हर्ष ध्वनि ने आकाश गुंजा दिया।

अन्तःकरण की पुकार को गांधी जी भगवान का संदेश कहते थे। एक बार एक पत्रकार ने उनसे पूछा "संकट के समय आप अपने कर्तव्य का निर्णय कैसे करते हैं?" गांधी जी ने उत्तर दिया, "मैं स्वयं विचारना छोड़ देता हूँ और अन्तरात्मा की—भगवान की—वाणी को सुनता हूँ।" उसने पूछा, "क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि लार्ड इरविन भी ऐसा ही करते हैं।" गांधी जी ने तुरन्त टिप्पणी की, "खेद है कि वायसराय महोदय को सदा असत्य संदेश ही मिलता है।"

बिहार में नील व्यवसायी एक गोरे ने कहा, "यदि गांधी कहीं मुझे मिल जाये तो मैं उसे गोली से ठंडा कर दूं। गांधी जी स्वयं उसके मकान पर गये और बोले, यदि आप समझते हैं कि मेरे लिये यही दण्ड उचित है तो लीजिये, मुझे मार दीजिए।" साहब पानी-पानी हो गये और गांधी जी के मित्र बन गये।

हिन्दु धर्म से अस्पृश्यता की जड़ उखाड़ना उन्हीं का काम था। वह स्वयं अपने आपको हरिजन कहते थे और अधिकतर हरिजन बस्तियों में ही ठहरा करते थे। वहीं पर राजा और रंक, वायसराय और चपरासी उनसे मिलने को जाते थे। दरिद्र नारायण के वे सच्चे भक्त थे। वे बराबर कहा करते थे कि, "जब तक दीनों को भर पेट रोटी और आवश्यकता के अनुसार कपड़ा नहीं मिलेगा, तब तक दरिद्र नारायण अमीरों से प्रसन्न न होंगे और न उनका कल्याण ही होगा।"

महादेव देसाई लिखते हैं, उनके शस्त्र क्या हैं सत्य और अहिंसा। जिनको वे पूर्ण शक्ति और वीरता से धारण करते हैं। परन्तु साथ ही साथ होता है 'विनय' जिसे वे बालकों से भी सीखने को तैयार हैं।

गांधीजी ने कहा है—'पश्चिम को ज्ञान प्रकाश पूर्व से ही मिला है। इन विद्वानों में सबसे पहले ज़रदुश्त हुए थे। वे पूर्व के थे। फिर बुद्ध देव हुये। यह भी पूर्व के (भारत) थे। ईसा पूर्व के थे, मुहम्मद पूर्व के थे। सत्य, अहिंसा और विश्व प्रेम का सिद्धान्त

हूँ एशिया का सन्देश है। उसे पश्चिमी गुरुओं से ऐटमबम की नकल करके सीखा नहीं जा सकता। यदि आप पश्चिम को सन्देश देना चाहते हैं तो वह प्रेम और सत्य का सन्देश होना चाहिये। मैं केवल मस्तिष्कों को अपील नहीं करना चाहता। यदि हम केवल अपने मस्तिष्क से ही नहीं, हृदय से भी इस संदेश के मर्म को जिसे एशिया के ये विद्वान् हमारे लिये छोड़ गये हैं, एक साथ समझने का प्रयत्न करें और यदि हम सचमुच उस महान सन्देश के योग्य बन जायें तो मुझे विश्वास है फिर हम पश्चिम को पूर्ण रूप से जीत लेंगे। हमारी इस विजय का पश्चिम स्वयं ही स्वागत करेगा।"

"पश्चिम आज सच्चे ज्ञान के लिये तरस रहा है। अणुबमों (एटम बमों) की दिन दूनी गति से वह निराश हो रहा है। क्योंकि उनकी बुद्धि से केवल पश्चिम का ही नहीं, समस्त विश्व का नाश हो जायेगा, मानों बाइबिल का भविष्यवाणी सत्य होने जा रही हो या महाप्रलय आ रही हो। यह सब आपके ऊपर है कि आप संसार की नीचता और पापों की ओर उसका ध्यान खींचें और उसे बचावें। यही वह रामराज्य है जो भारत के महर्षियों ने एशिया को दिया है।'

पं जवाहर लाल नेहरू ने ४ अप्रैल सन् १९४८ को रेडियो पर भाषण देते हुए कहा पिछले २५ वर्षों में महात्मा गांधी ने न केवल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को अपितु समस्त विश्व को शान्ति की अनुपम देन दी है। उन्होंने हमें अहिंसा का पाठ पढ़ाया। दुर्गुणों के सामने सिर झुकाने वाली अहिंसा का नहीं, प्रत्युत उस अहिंसा का जो अन्तर्राष्ट्रीय मतभेदों को शान्तिपूर्वक हल करने का क्रियाशील अचूक शस्त्र है। गांधी जी ने यह सिद्ध कर दिया है कि मानवीय आत्मा शक्तिशाली से शक्तिशाली शस्त्र से अधिक सशक्त है। अन्याय पर खड़े किये समाज में संघर्ष और विनाश के बीज का होना उस समय तक अनिवार्य है जब तक कि वह अपने को उस दुर्गुण से मुक्त न कर सके।

गाँधी जी चले गये परन्तु अपनी डगर छोड़ गये जिस पर चल कर मानव सुख और शाँति से रह सकता है।

श्री विनोबा भावे कहते हैं—'बापू ने हमारे लिये एक उदाहरण छोड़ दिया है। प्रार्थना के समय उन्हें रक्षण देने की बात चली तो उन्होंने कहा कि "उस समय तो मैं भगवान के ही हाथ में रहूँगा। उस समय किसी दूसरे रक्षण की बात मैं सहन नहीं करूंगा। प्रार्थना यदि रक्षण के अन्दर होती है तो वह प्रार्थना ही नहीं रहती हम रक्षण को लेते हैं तो भगवान को छोड़ देते हैं। उन्होंने फिर कहा, "चन्द्र के साथ चन्द्र का वातावरण रहता है मंगल के साथ मंगल का; वैसे ही मेरे साथ मेरा वातावरण रहना चाहिये। लोग कहते हैं यह तो कलियुग है। काहे का कलियुग है? कलियुग में रहना है या सतयुग में, यह तो तू अपने लिये स्वयं चुन ले। तेरा युग तेरे पास है। इसलिये हमें ऐसा नहीं मानना है कि विश्व की औषध युद्ध ही है और उसके आगे हम परवश हैं। लाचार तो जड़ होता है। हम चेतन हैं, आत्म स्वरूप हैं। अपना वातावरण हम स्वयं बनायेंगें। अब भी संसार हमारा सम्मान करता है, यद्यपि हम सब कुछ खो बैठे हैं। यह सम्मान इस लिये है क्योंकि भारत ने अपनी स्वाधीनता के लिये जिन साधनों का प्रयोग किया है, उनका किसी दूसरे देश ने नहीं किया है...... भारत के पास यदि कोई शक्ति है तो वह नैतिक ही है। भौतिक शक्ति में तो दूसरे राष्ट्र भारत से काफी बढ़े हुए हैं। उस मार्ग से जाना हो तो उन राष्ट्रों के दास और शिष्य बनकर रहना होगा। शस्त्र की शक्ति के लिये भारत को बाहर के राष्ट्रों पर ही निर्भर रहना पड़ेगा। भारत का तो अभी उदय हुआ है। परन्तु जिस विचार को लेकर वह उठा है, उस पर संसार की आंख लगी हुई है।"

अन्त में उन्होंने कहा—"संसार में यदि शान्ति और स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है, तो गांधी जी के बताये हुये मार्ग पर ही चलना होगा। मनु ने दो हजार वर्ष पूर्व ही लिख दिया था। 'भारत में जो विचारक पैदा होंगे उनसे विश्व सदाचार की शिक्षा ग्रहण करेगा।" बापू के कारण यह भविष्य वाणी आज प्रथम बार सत्य सिद्ध हुई है। बापू ने जो विचार हमारे समाने रक्खे हैं। उन पर यदि हम विचार करेंगे तो भारत जगद्गुरू बनेगा।"

गाँधी मार्ग ही संसार को सुख, शांति देगा। सत्य अहिंसा और प्रेम के वातावरण में ही मानव मानवता को प्राप्त कर सकता है।

सच्चा स्काउट

श्री जानकीशरण वर्मा

अगर मैं कहूँ कि मोहनदास करमचँद गाँधी सच्चे स्काउट थे तो मुझे आशा है कि इसे मान लेने में किसी को भी आपत्ति न होगी। यह सच है कि उन्होंने किसी भी स्काउट-कैम्प में शिक्षा न पाई थी और न किसी स्काउट-दल के वह सदस्य ही थे, फिर भी स्काउटिंग के आदर्श के अनुसार जिन-जिन गुणों का एक सच्चे स्काउट में होना आवश्यक है वे सभी उनमें विद्यमान थे।

स्काउट अपनी वर्दी के कारण या किसी और बाहरी वस्त्र के कारण स्काउट नहीं कहा जा सकता। वह अपने चरित्र के सद्गुणों के ही कारण स्काउट कहा जा सकता है। स्काउटिंग के 'आचार्यों' ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जो-स्काउट-प्रतिज्ञा और नियमों का पालन करता है वही स्काउट है, न कि वह जो स्काउट-कला में निपुण है पर प्रतिज्ञा और नियमों का पालन नहीं करता। इस दृष्टि से महात्मा गाँधी निस्सन्देह सच्चे स्काउट थे।

हमारी प्रतिज्ञा है—ईश्वर और देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करना, सदा दूसरों की सहायता करना और स्काउट-नियमों का पालन करना। महात्मा गाँधी की ईश्वर में जैसी निष्ठा थी ईश्वर करे कि औरों की निष्ठा भी वैसी ही हो। वह जो कुछ करते थे ईश्वर के नाम पर करते थे; अपने हृदय में ईश्वर की अनुमति प्राप्त कर के ही करते थे। 'अनेक' में 'एक' को देखना और 'एक' में ही 'अनेक' का अस्तित्व मानना उनकी अचल धारणा और एक मात्र साधना थी, किसी तरह के भेदभाव से विचलित हुए बिना सबों में ईश्वर की ज्योति देखना और सब को ईश्वर का ही अंश मानना उनकी अपूर्व तपस्या थी और किसी भी तरह की विघ्न-बाधा से शंकित न होकर ईश्वर-निर्देशित पथ पर सदा आरूढ़ रहना उनका एक मात्र कर्त्तव्य था।

देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का उन्होंने किस तरह पालन किया और लोकोपकार और समाज-सेवा का आदर्श उन्होंने किस तरह पूरा किया, यह संसार के किसी भी देश के किसी मानव से छिपा नहीं है। उनकी देश-सेवा की कृतियाँ संसार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायेंगी।

स्काउटिंग के प्रवर्तक बेडन पावल ने अपने सर्व-प्रथम स्काउट-ग्रंथ, Scouting for Boys (स्काउटिंग फॉर बॉयज) में अपने देश इंगलैंड के उन वीरों के नाम लिखे हैं। जिन्होंने अंगरेजी राज्य का विस्तार किया और अंगरेजी साम्राज्य की स्थापना में सहायता दी। बेडन पावल ने अपने देश के बालक-बालिकाओं और नवयुवक युवतियों को प्रोत्साहित करने के लिए उनके वीरों के नाम और उनके प्रशंसनीय प्रयासों के संबंध में बहुत कुछ लिखा है। ये वीरगण वीर थे अवश्य, पर इनमें से किसी ने भी विश्वास और विश्वबन्धुत्व के आदर्शों का सहारा लेकर अपना काम नहीं किया था। स्वयं बेडन पावल ने इन्हीं आदर्शों को स्काउट-आदर्श बताया है, पर उनके चुने हुए वीरगण, जिनकी वीरता पूर्ण कहानी की गाथा उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखी है, इन आदर्शों से प्रेरित होकर कार्यशील नहीं हुए थे। उनका आदर्श अपने देश की रक्षा करना, अपने देश को आगे बढ़ाना जरूर था, पर प्रेम और भ्रातृत्व के सिद्धान्तों के सहारे नहीं बल्कि हिंसा, नृशंसता, क्रूरता के सहारे। उन्होंने दूसरे देश और दूसरी जातियों को नीचा दिखाकर अपने देश और राष्ट्र को ऊँचा उठाया था। सच्ची बात यह है कि वे स्काउटों के आदर्श नहीं हो सकते।

संसार में महात्मा गाँधी ही एक ऐसे वीर हुए हैं, जो सत्य-प्रेम और अहिंसा के पथ से ज़रा भी विचलित न हुए, फिर भी अपने देश की ऐसी सेवाएं की जैसी आज तक किसी ने नहीं की हैं। उन्होंने स्काउट आदर्शों का अक्षरशः पालन किया और उन्हीं आदर्शों के बल पर अपने देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया। संसार में ऐसी घटना पहले कभी न हुई थी कि ६,००० मील दूरस्थित इंगलैंड जैसा एक क्षुद्र देश भारत जैसे विशाल देश पर आधिपत्य स्थापित करे और उतनी दूर से उसे

[शेष पृष्ठ ८ पर

नियत्रंण-व्यवस्था

श्री रामजियावन सिंह यादव, साहित्य रत्न

वर्तमान सरकारी कंट्रोल व्यवस्था के पक्ष एवं विपक्ष में सभी प्रकार के लोगों में जितना अधिक वाद-विवाद रहा है उतना शायद ही किसी दूसरी समस्या पर रहा हो। अधिकांश लोगों की दृष्टि में यह वर्तमान युग की एक नवीन योजना है जिसके द्वारा सरकार ने जनता के दैनिक जीवन को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया है। परन्तु यह भूत काल में भी देश-काल एवं पात्र के अनुसार अपने विभिन्न रूपों में व्यवहृत होती रही है।

प्राचीन काल

प्राचीन कालीन सामाजिक व्यवस्था को नियंत्रित करने वाली मनुस्मृति में मनु जी ने अधिक खाने वालों को निन्दित ठहराया है। उनका कहना है कि वह पदार्थ जो किसी व्यक्ति द्वारा अधिक मात्रा में खाया जाता है पाप अंश है। क्योंकि वह किसी दूसरे का भाग है। इसके अतिरिक्त अधिक खाने वाला लौकिक दृष्टि से भी निन्दा का भागी बनता है। लोग पेटू या अघी आदि अपमानजनक वाक्यों द्वारा आपस में उसकी हँसी उड़ाते हैं।

मौर्य काल

इस धार्मिक स्वरूप के अतिरिक्त सम्राट् चन्द्रगुप्त-मौर्य के समय में इसका दूसरा रूप मूल्य नियंत्रण प्रकाश में आता है। आचार्य चाणक्य ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ कौटिल्य अर्थशास्त्र में लिखा है कि राजा को चाहिए कि वह ऐसी व्यवस्था करे कि उत्पादक स्वयं अपने घर पर कोई भी वस्तु न बेचने पावें। विभिन्न वस्तुओं के लिए पृथक-पृथक स्थान निर्धारित किए जायं और केवल उन्हीं स्थानों पर उस वस्तु का विक्रय हो। राज्याधिकारी वस्तु को देख कर उसका जो मूल्य निर्धारित कर दें उसी पर उस वस्तु का विक्रय हो। बेचने वाला वस्तु के परिमाण और कीमत को पुकार-पुकार कर बेचे। यदि ग्राहकों में आपस में संघर्ष हो जाय और वस्तु का मूल्य चढ़ जाय तो वह अतिरिक्त मूल्य राज्य-कोष में जमा कर दिया जाय। आश्चर्य है कि आज से लगभग २३०० वर्ष पूर्व आचार्य चाणक्य की इस व्यवस्था से आज की नियत्रंण व्यवस्था में कितना अधिक साम्य है। इसमें मूल्य नियत्रंण और चोर बाजारी का अंत दोनों का उपाय किया गया है।

मध्य काल

अलाउद्दीन खिलजी के समय में जब कि देश की राजनैतिक परिस्थिति अत्यन्त डांवा डोल स्थिति में थी तब पुनः इस व्यवस्था का एक व्यापक एवं दृढ़ रूप प्रकट होता है। राज्य की ओर से प्रत्येक वस्तु का मूल्य निश्चित कर दिया गया था। बाजार का निरीक्षण करने के लिए एक अत्यन्त सुसंगठित सरकारी विभाग खोला गया था। उस विभाग का प्रधान अधिकारी अपने सहायकों की सहायता से बाजार पर पूर्ण नियत्रंण रखता था। राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले सरकारी कर्मचारी और व्यापारी दोनों के लिए समान कठोर दंड की व्यवस्था थी। कम तौलने वालों के पकड़े जाने पर उनके शरीर के मांस से तौल पूरी कराई जाती थी। ऐसे कठोर दंड के भय से सभी ठीक-ठीक रूप से काम करते थे।

किसानों से अनाज के रूप में लगान लिया जाता था जिसका बहुत बड़ा अंश सरकारी गोदामों में भरा रहता था, और बाजार के अन्नाभाव के समय उसी से जनता की मांग पूरी की जाती थी। सूखे अन्न के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं यथा रोटी, तरकारी, मीठा, दूध मांस विभिन्न प्रकार के वस्त्र और उपयोगी पालतू पशु आदि की बिक्री पर भी मूल्य का नियत्रंण था जिससे सभी आवश्यक पदार्थों के विनिमय का संतुलन न बिगड़ने पावे। बादशाह की यह नियत्रंण व्यवस्था इतनी सफल रही कि वह आन्तरिक एवं बाह्य उपायों से रक्षा करता हुआ राज में राज्य विस्तार में भ सफल हुआ।

आधुनिक काल

गत विश्व व्यापी महायुद्ध ने अपनी भीषणता से लगभग सभी देशों की जनता के जीवनयापन के स्तर को अस्त-व्यस्त कर दिया। अतः विवश हो कर कई देशों की सरकारों को नियंत्रण व्यवस्था की शरण लेनी पड़ी।

यदि इस व्यवस्था का आश्रय न लिया गया होता तो मूल्य वृद्धि एवं वस्तु के अभाव के कारण जन साधारण का जीवनयापन दुस्तर कार्य हो जाता। हमारे देश में नियंत्रण व्यवस्था की जो आलोचना की जाती है वह वास्तव में नियंत्रण-व्यवस्था के सिद्धान्त की नहीं प्रत्युत उसको उचित प्रयोग में न ला सकने वाले अधिकारियों और स्वार्थी प्रवृति वाले उन लोगों की है जो अनुचित लाभ की आशा करते हैं।

इस व्यवस्था से सब से अधिक कष्ट एवं असन्तोष मध्यम वर्ग को हुआ है जिसे सीमित पदार्थों द्वारा ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ रही है। मेरी समझ में युगों से पीड़ित कृषकों एवं मजदूरों को इस व्यवस्था के केवल उसी अंश से असन्तोष रहा है कि दूकानदार वस्तु वितरण के समय उनके प्रति उचित ध्यान नहीं देते या उनकी सुविधा का ख्याल नहीं रखते। इसके अतिरिक्त इस व्यवस्था द्वारा उनके जीवनयापन के स्तर में कुछ वृद्धि ही हुई है जो देश के लिए एक शुभ लक्षण है चाहे मध्यम वर्ग का व्यक्ति उसे ईर्ष्या की दृष्टि से ही क्यों न देखता हो। रही उच्च वर्ग की बात। उनके लिए तो प्रत्येक काल एवं व्यवस्था में स्वर्ग-सुख प्राप्त है चाहे राम का राज्य हो या रावण का।

आज जब चारों ओर से यह गला फाड़-फाड़ कर कहा जा रहा है कि सरकार जनता की है तो उसके लिए यह आवश्यक कर्तव्य हो जाता है कि इस नाम-मात्र की नियंत्रण व्यवस्था का क्षेत्र क्रमशः अधिकाधिक व्यापक करके उसे जीवनयापन के साधनों तक विस्तृत करे और सभी को सुख शान्ति का समान अवसर प्रदान करने का प्रयत्न करे। अन्यथा यह व्यवस्था भावी पीढ़ियों के लिए एक दुखदायी ऐतिहासिक स्मृति के रूप में ही शेष रह जायगी।

[शेष ६वें पृष्ठ के आगे से]

अपनी उँगलियों के इशारे पर नचावे और न ऐसी ही घटना पहले कभी घटी थी कि भारत जैसा विवश और निहत्था देश इंगलैंड की तरह पर बली और शस्त्र-सुसज्जित देश से अपनी स्वतंत्रता वापस ले ले। यह गाँधी के ही स्काउटोचित प्रयत्नों का चमत्कार था।

चाहे जिस दृष्टिकोण से देखा जाय, महात्मा गाँधी सभी तरह एक सच्चे स्काउट प्रमाणित होंगे। स्काउट विश्वसनीय होता है। महात्मा गाँधी अपनी विश्वसनीयता और मर्यादा शीलता के कारण मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। स्काउट सत्य-निष्ठ होता है। महात्मा गाँधी की सत्य निष्ठा सब से ऊँची पराकाष्ठा को पहुँची हुई थी। स्काउट दूसरों की सेवा करता है। सेवा ही महात्मा गाँधी की धमनियों के अन्दर प्रवाहित होने वाला रक्त था और सेवा ही उनके जीवन की साँस थी। स्काउट भ्रातृ भाव संपन्न होता है। महात्मा गाँधी ने भ्रातृत्व की ही वेदी पर आत्मसमर्पण कर अपना बलिदान किया। स्काउट विनयशील, दयालु संयम शील, प्रसन्नचित्त और मन-वचन-कर्म से पवित्र होता है। महात्मा गाँधी ये सभी थे।

स्काउट खुले मैदान के जीवन और पैदल-यात्रा का प्रेमी होता है। महात्मा गाँधी का आश्रम-जीवन, जो साबरमती और सेवाग्राम को संसार-प्रसिद्ध बनाये हुए है, उच्च कोटि का कैम्प-जीवन था। उनकी डाँडी-यात्रा और पूरब बंगाल की दिन-पर-दिन चलने वाली यात्रा-स्काउट-हाइक के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। यह सचमुच बड़े आश्चर्य साथ ही संतोष की बात है कि स्काउट-जीवन और स्काउट आदर्श का एक-एक लक्षण महात्मा गाँधी के जीवन में प्रकट और चरितार्थ होता पाया जाता है।

भारत में स्काउटिंग सफल नहीं हुआ है। इसका एक मात्र कारण यही है कि स्काउटिंग करते हुए भी हम स्काउट-आदर्शों पर चलने से हिचकते हैं। दूसरे देशों में भी शायद वह पूरा पूरा सफल नहीं हुआ है। कारण यही है कि वहां भी स्काउट- आदर्शों के पालन करने पर पूरा ध्यान नहीं दिया जाता। बिना इन आदर्शों के पालन के स्काउटिंग चल ही नहीं सकता। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे बीच एक सच्चा स्काउट एक आदर्श स्काउट हो गया है। हम उसके पद चिन्हों का अनुसरण कर सच्चे स्काउट बन सकते हैं।

नया संसार

श्री अमर नाथ गुप्त, एम० ए० एल० टी०

[सन् २५०० ई०]

पहला दृश्य

[दो मज़दूर, एक टीले पर खुदाई कर रहे हैं]

एक मज़दूर : भाई गनपत थक गये आज तो।

गनपत : अरे दो घंटे से तो बराबर शावल पर काम कर रहे हैं, मैं भी थक कर चूर हो रहा हूँ परम सुख।

परम सुख : अभी तो दो घंटे और काम करना है।

गनपत : अरे भया आजकल तो चार घंटे काम करके आनन्द करते हैं, सुनते हैं हमारे पुर्खा तो १४ घंटे पेले जाते थे।

परमसुख : कब ?

गनपत : अरे यही लगभग ६०० वर्ष पहले, जब भारत पर अंग्रेज राज करते थे।

परमसुख : आज के सुनहरे काल में, हम उन काले दिनों की क्यों सोचें ?

गनपत : तुलना तो करनी ही पड़ेगी हमें।

परमसुख : क्या लाभ ? परन्तु हां उस काल में अंग्रेजों से छुटकारा कैसे मिला ?

गनपत : उस काल में एक बड़े महात्मा हुऐ हैं भारत में, गांधी जी, उन्होंने स्वतन्त्र किया भारत को। और तारीफ़ यह है कि बिना लड़े-भिड़े।

परमसुख : अच्छा कुछ सुना तो मैंने भी है, परन्तु मैं इतिहास की कक्षा में न था। इसी कारण इतनी पुरानी बातें मुझे मालूम नहीं।

गनपत : मैं तो इतिहास का विद्यार्थी रहा हूँ !

परमसुख : ज़रा यह तो बताओ कि इन महात्मा को लोग कैसा मानते थे ?

गनपत : बहुत ! बुद्ध और ईसा से भी महान !

परमसुख : अच्छा !

गनपत : दिल्ली जाओ तो उनकी समाधि देखो, बड़ा विशाल भवन है चारों ओर सुन्दर बगीचा, और बीचों बीच बड़ा तालाब।

परमसुख : जिस दिन मन चाहेगा चला जाऊंगा।

गनपत : आओ तो फिर लगें काम पर।

परमसुख : चलो।

[दोनों शावल उठाते हैं, काम आरंभ करते हैं, और गाते हैं]

बढ़ती हों बड़वा की लपटें,
चलते हों भीषण तूफान ;
गरज रहे हों बादल लय के,
उमड़ रहा हो सिंधु महान

पर तू रुक मत बढ़ता ही जा,
अरे विश्व के श्रमिक महान !
करने को नूतन निर्माण
जब तक तन में तेरे प्राण।

[शावल ईंट से बजता है और खन की आवाज़ होती है]

परमसुख : लो भैया आ गया कोई खंडहर।

गनपत : ज़रा धीरे धीरे मट्टी हटाओ, देखें तो यहां क्या है।

[दोनों मट्टी हटाते हैं। एक अच्छा कमरा निकलता है। द्वार खोल कर दोनों अंदर जाते हैं।

परमसुख : अरे यहां तो चारपाई पर कोई लेटा है !

गनपत : हां, मालूम तो ऐसा ही होता है।

परमसुख : कहीं भूत न हो।

गनपत : अरे जा यार, क्या पुरानी बीसवीं शताब्दी की बातें करता है ! चल बढ़ अगाड़ी।

[दोनों अगाड़ी बढ़ते हैं और पलंग के पास पहुँच जाते हैं।

परमसुख : अरे यह तो सांस ले रहा है।

गनपत : सचमुच जीवित है यह तो ! देख, हाथ मत लगाना, मैं अभी डाक्टर को बुलाता हूँ।

[जेब से एक छोटा सा यंत्र निकालकर हाथ में लेता है। एक सिरा कान पर लगाता है दूसरा हाथ में लेता है और मुंह के सामने करके बोलता है।]

"हलो, डाक्टर साहब हैं क्या ?...अच्छा ज़रा टेलीफ़ोन उन्हें दे दो।... ...डाक्टर साहब......नमस्कार... देखिये डाक्टर साहब बड़े अचम्भे की बात है...टीले के नीचे...जी एक सुन्दर भवन...जी हाँ भवन...उसमें एक आदमी...जी हाँ...सो रहा है—न मालूम कब से...जी हाँ सांस ले रहा है जी...फ़ौरन आइये जी हाँ धन्वन्त्री जी को भी लेते आइये...अच्छा नमस्कार।"

परमसुख : इतने काल तक यह जीवित कैसे रहा होगा ?

गनपत : अरे भगवान की लीला है, जाको राखे साइयाँ मार न सकिहै कोय।

परमसुख : भई यह बात तो जची नहीं।

गनपत : अवश्य कहीं छेद रहा होगा। जिसमें से हवा आती जाती रही होगी। ऐसा न हुआ होता तो प्राण पखेरू उड़ जाते।

परमसुख : यह तो सच कहता है भाई फिर भी चेहरा देख कर ऐसा प्रतीत होता है जैसे गहरी नींद सो रहा हो, इसने तो कुंभकर्ण को भी मात कर दिया। वह केवल महिनों सोता था इसने शताब्दियों पर टंका लगा दिया।

[मोटर का हॉर्न बजता है]

गनपत : लो डाक्टर साहब आ गये।

[डाक्टर साहब और धन्वन्त्री जी का प्रवेश]

डाक्टर : यह तो सचमुच जीवित है। देखो तो धन्वन्त्री जी।

धन्वन्त्री जी : [नाड़ी देखते हुए] जी हाँ।

डाक्टर : इसे उठाया जाय।

धनवन्त्री : मैं तो ऐसी राय नहीं दूँगा।

डाक्टर : क्यों

धन्वन्त्री : मेरी तो यह राय है कि हमें पेरिस से डाक्टर टोसो को बुला लेना चाहिये। वह नये संसार के सबसे बड़े हिप्नोटिस्ट हैं।

डाक्टर : जी हाँ उनके आत्म बल की सब जगह चर्चा है।

[जेब से बेतार का टेलीफ़ोन निकालकर]

"हलो! डाक्टर साहब हैं। अच्छा आप स्वयं ही बोल रहे हैं...देखिये डा० टोसो...हमने आज एक बड़ी सुन्दर खोज की है...जी पटने में...जी हाँ भारत में...जी...मैं था डा० कटारा...जी हाँ कटारा...जी...संसार के इतिहास में यह नया केस है...तो फिर आप आरहे हैं न!...जी हाँ पटने में हवाई अड्डा है...जी...हवाई अड्डे पर आपको मोटर मिलेगी...अच्छा अभी आरहे हैं...बड़ी कृपा...धन्यवाद।"

धन्वन्त्री : मेरी राय तो कमरा बन्द कर दिया जाय कटारा साहब।

कटारा : ठीक। अच्छा देखो परमसुख, भाई दरवाज़ा बन्द कर दो। या तुम जाना चाहो तो मैं किसी और का इन्तजाम पहरे पर कर दूँ।

परमसुख : नहीं डा० साहब मैं और गनपत यहीं पहरे पर रहेंगे। जो तमाशा यहां देखने को मिलेगा उसे तो जीवन भर याद रक्खेंगे।

कटारा : अच्छा तो तुम यहीं रहो। हम जाते हैं।

[कटारा और धन्वन्त्री का प्रस्थान। बाहर से मोटर चलने का शब्द और हार्न]

गनपत : चलो बाहर ताज़ी हवा में न बैठें। जब सब आयेंगे तो हम भी आजायेंगे।

[दोनों का प्रस्थान]

दूसरा दृश्य

[सोये हुए आदमी के पास डाक्टर टोसो डा० कटारा। और वैद्य धन्वन्त्री खड़े हैं। एक ओर को जरा दूरी पर गनपत और परमसुख खड़े हैं]

कटारा : क्या विचार है डा० टोसो ?

टोसो : हिप्नोटिज़्म का केस है डा० कटारा।

कटारा : तो उसे चैतन्य अवस्था में लाइयेगा।

टोसो : अभी दो मिनट में। परन्तु सन्तरे का अर्क तैयार करलो।

कटारा : परमसुख, एक गिलास सन्तरे का अर्क तैयार करलो भाई।

परमसुख : बहुत अच्छा डा० साहब। [बाहर जाता है।]

टोसो : बड़ा अच्छा केस है। न जाने कब से सो रहा है यह आदमी ?

धन्वन्त्री : यह तो यही बतायेगा जब जागेगा।

टोसो : अभी जगाता हूँ वैद्य जी।

[टोसो उस आदमी की ओर आँख गड़ाते हैं, बड़ी तीव्रता से। फिर उसके ऊपर हवा में कई बार हाथ फेरते हैं।]

टोसो : उठिये.....उठिये ...महाशय,... उठिये.... उठिये।

[वह आदमी अँगड़ाई लेता है और धीरे-धीरे आँख खोलता है। अपने चारों ओर कुछ आदमियों को खड़ा देखकर अचम्भा करता है।]

आदमी : आप यहाँ कैसे ?

कटारा : हम डाक्टर हैं आप की तबियत कुछ खराब थी देखने आये हैं।

आदमी : अरे तो बैठिये साहब ! क्या कुर्सी नहीं है!...अरे गोपाल ओ गोपाल अरे कुर्सी लाओ भाई।

धन्वन्त्री : आप कुर्सी की चिन्ता न करें।

[परमसुख एक गिलास में रस लाता है]

टोसो : [गिलास आदमी को देकर] लीजिये महाशय पीजिये।

आदमी : [रस पीते हुए] धन्यवाद !

कटारा : अभी आप कमज़ोर हैं, लेट जाइये।

[आदमी लेट जाता है]

धन्वन्त्री : देखिये महाशय आज छब्बीसवीं शताब्दी आरम्भ हो रही है

आदमी : क्या कहा ! छब्बी...स...वीं...शता...ब्दी !

कटारा : जी हाँ छब्बीसवीं।

आदमी : तो यूँ कहो कि ६०० वर्ष से भी अधिक हो गये मुझे यहाँ पड़े !

टोसो : हाँ। किस सन् में सोये थे आप ?

आदमी : १९३४ में।

धन्वन्त्री : अरे, उसी साल तो विहार में भूचाल आया था।

कटारा : ठीक, यह नीचे की मंजिल में दबे रहे ऊपर का हिस्सा गिरकर टीला बन गया।

आदमी : हाय राम ! तो मेरा सारा परिवार।

धन्वन्त्री : भाई वह कोई अनहोनी बात नहीं थी। न कोई मरता है न कोई जीता है, मनुष्य केवल चोला बदलता है।

टोसो : आप इस नीचे के कमरे में अकेले क्यों सोये ?

आदमी : डाक्टर साहब, अधिक पढ़ने के कारण मेरी नींद उचट गई थी। बहुत से डाक्टरों से मशविरा लिया परन्तु कुछ लाभ न हुआ। अंत को मुझे एक हिप्नोटिज्म मिले। वह रात को आकर मुझे इस एकान्त के कमरे में सुला जाते थे और सुबह आकर जगा जाते थे।

कटारा : ठीक वह रात को सुलाकर गये होंगे और सुबह किसी कारण से लौट न सके होंगे फिर भूचाल ने सारी काया ही पलट करदी। महाशय, आपका नाम क्या है।

आदमी : शशि भूषण

टोसो : उस समय के सोने और आज के जागने में आपको कुछ अंतर मालूम होता है ?

शशि : कुछ भी नहीं

कटारा : आत्मबल सचमुच महान है।

टोसो : इसमें क्या सन्देह है।

धन्वन्त्री : आत्मा की शक्ति ही सची शक्ति है। भौतिक बल का पुजारी अमरीका आज कहां है ! एक पिछड़ा हुआ देश।

कटारा : भारतवर्ष ने सदा भौतिक शक्तियों का प्रयोग आत्मा की उन्नित के लिए किया, यही कारण है कि आज भारत सभ्यता की चोटी पर है। और सारे सभ्य संसार को अपने साथ लेकर चल रहा है।

धन्वन्त्री : इसी आत्मिकबल के सहारे तो मानव, जीवन में उस पार की भी झलक देख लेता है। हां शशि भूषण जी अपने समय में आप क्या करते थे !

शशि : मैं पटना विश्वविद्यालय में इतिहास का प्रोफ़ेसर था।

टोसो : अच्छा साथियो अब मैं जाऊंगा। अगर कोई नई बात मालूम हो तो मुझे अवश्य ख़बर दीजियेगा।

कटारा : चलिये आपको छोड़ आयें।

[टोसो, कटारा और धन्वन्त्री का प्रस्थान]

परमसुख : चलिये महाशय आपको कुछ टहला दें।

शशि : चलो भाई। [शशि भूषण एक हाथ परम-सुख के कंधे पर रखता है और दूसरा गनपत के। और धीरे धीरे तीनों बाहर जाते हैं।]

तीसरा दृश्य

[डा० कटारा का मकान। एक कमरे में एक कुर्सी पर डा० कटारा बैठे हैं और दूसरी पर शशि भूषण। दूध के प्याले उनके सामने रक्खे हैं और एक तश्तरी में मक्खन लगे टोस्ट। दोनों टोस्ट खाते जाते हैं और दूध पीते जाते हैं]

शशि : डा०साहब, मैं आपका बड़ा ऋणी हूँ। पंद्रह रोज़ से मैं आपका अतिथि हूँ आप बड़ी लगन से मेरी चिकित्सा कर रहे हैं और हर प्रकार की सुविधा दे रहे हैं। मेरे पास शब्द नहीं है जिनमें मैं आपको धन्य-वाद दे सकूं।

डाक्टर : फिर वही बीसवीं शताब्दी वाली बात! भाई शशि भूषण जी, मैं आप पर कोई एहसान नहीं कर रहा हूँ।

शशि : डाक्टर साहब मुझे आप क्यों शर्मिन्दा करते हैं। यह तो आप की उदारता है कि आप ऐसा कहते हैं।

कटारा : फिर वही बात! मगर मैं भूलता हूँ। बीसवीं सताब्दी को छब्बीसवीं शताब्दी में जमने के लिए कुछ समय तो लगेगा ही। तुम्हें अभी क्या पता कि इन ६०० वर्षों में संसार ही बदल गया है।

शशि : कैसे ?

कटारा : मानव ने केवल अणु शक्ति का ही उपयोग नहीं किया है वरन् विष्णु शक्ति को भी खोज निकाला है।

शशि : उससे क्या परिवर्तन हो गये हैं मानव समाज में ?

कटारा : अरे संसार ही बदल गया है, प्रोफ़ेसर साहब।

शशि : आज मैं प्रोफ़ेसर कहाँ हूँ ?

कटारा : जिस दिन से आप जागे हैं, उसी दिन से आप विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास के प्रोफ़ेसर नियुक्त हो चुके हैं; एक सप्ताह बाद आपका पहला लेक्चर होगा।

शशि : लेक......चर......होगा......।

कटारा : जी, आज का समाज किसी को निठल्ला नहीं बैठने देता।

शशि : मुझे क्या वेतन मिलेगा ?

कटारा : कुछ भी नहीं। इस नये संसार में किसी को वेतन नहीं मिलता।

शशि : तो गुजर कैसे होती है ?

कटारा : सब को बराबर धन मिल जाता है।

शशि : बराबर......बराबर ? कहां से ?

कटारा : संसार के कोष से।

शशि : संसार के ?

कटारा : हाँ देखिये प्रोफेसर साहब यह सीधा सादा निर्माण है। संसार की सारी आयें ले लीं; उसमें हवाई जहाज रेल बिजली आदि सब का व्यय निकाल दिया। फिर बचे में से १० प्रतिशत् रिजर्व में रख दिया। बाकी को संसार की जन संख्या पर बराबर बराबर बांट दिया

शशि : क्या स्त्री पुरुष और बच्चों को बराबर मिलता है ?

कटारा : हां

शशि : बड़े अफ़सरों को ?

कटारा : वह भी बराबर।

शशि : मिल मालिकों को ?

कटारा : नये संसार में कोई मिल मालिक नहीं है।

शशि : क्या सब सुख से रह पाते हैं ?

कटारा : हां देखो न सवारी फ्री है, बिजली फ्री, पानी फ्री, सिनेमा फ्री, मकान फ्री।

शशि : अच्छा तो पैसे किस चीज पर खर्च होते हैं ?

कटारा : अपनी इच्छा की वस्तुएँ लेने पर, जैसे कपड़ा आदि।

शशि : क्या मिल जाता होगा हर व्यक्ति को ?

कटारा : अरे यही लगभग ५०० रुपये महीना।

शशि : जब सब चीजें फ्री हैं तो इतने रुपये का क्या करते हैं आप ?

कटारा : खूब दिल खोल कर खर्च करते हैं।

शशि : मैं भी तो सुनूँ।

कटारा : जो कपड़ा आप पहन रहे हैं कैसा है ?

शशि : बड़ा सुन्दर बड़ा मुलायम, बड़ा आराम देने वाला।

कटारा : देखिये यह कपड़े रुई और रेशम मिल कर बनाये गये हैं, कुर्ता चार आने का, पाजामा पांच आने का। प्रति दिन पहनते हैं और पुराना जला देते हैं।

शशि : यह क्यों ?

कटारा : जिससे बीमारी न फैले। कोई-कोई शौकीन तो दिन में तीन बार कपड़े बदल डालते हैं।

शशि : तो यूँ कहो आज का हर मानव राजा इन्द्र बना हुआ है।

कटारा : उससे भी कुछ अधिक।

शशि : फौज पर कितना खर्च होता है ?

कटारा : पैसा भी नहीं, फौज की आवश्यकता ही नहीं है।

शशि : तो क्या युद्ध का भय नहीं है इस संसार में?

कटारा : नहीं जब बीसवीं शताब्दी के युद्धों की कहानी पढ़ते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि उस काल के लोग मूर्ख ही थे।

शशि : क्यों ?

कटारा : यूँ तो बहुत बातें हैं, परन्तु एक बात को ही ले लीजिये। परमाणु की शक्ति का प्रयोग एक दूसरे को मारने में होता था, यदि हमारी तरह उस शक्ति का प्रयोग रचना की ओर होता तो इस नये संसार के बनने में इतना समय न लगता।

शशि : हां यह तो बताओ कि यदि मैं लन्दन जाना चाहूँ तो पास पोर्ट कहां से मिलेगा ?

कटारा : कैसा पासपोर्ट ? अरे हवाई अड्डे पर पहुँचो और हवाई जहाज में सवार हो जाओ। एक घंटे में लन्दन पहुँच जाओगे।

शशि : तो क्या टिकट ?

कटारा : कैसा टिकट ? भाई आज के संसार में न टिकट है, न टिकट घर, न टिकट देने वाले—जहां जी चाहे आओ जाओ।

[टेली फोन की घन्टी बजती है]

कटारा : [जेब से टेली फून निकाल कर] हलो ! जी मैं ही बोल रहा हूँ, क्या स्वयं वाइस चान्सलर ! ... प्रोफ़ेसर साहब से मिलना... अच्छा... हां आइये... नमस्कार।

शशि : वही आ रहे हैं ?

कटारा : जी। देखिये प्रोफ़ेसर साहब आप इस संसार के एक महान व्यक्ति हैं, भारत को आप पर गर्व है, बस दूसरों से यह समझ कर ही आप बात करें।

शशि : धन्यवाद ! परन्तु अभी कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

कटारा : देखो मित्र, जो समझना हो मुझसे समझना, दूसरे से समझने की चेष्टा मत करना।

शशि : अच्छा मित्र।

कटारा : तो लाओ हाथ।

[दोनों हाथ मिलाते हैं]

शशि : कैसे आदमी हैं वाइस चान्सलर साहब ?

कटारा : बड़े भले और बड़े हृदयवान

[हान]

शशि : लो वह आगये।

कटारा : मैं उन्हें लिवा लाता हूँ [जाता है]

शशि : [स्वयं] हे भगवान ! क्या चमत्कार कर दिया है तुमने, स्वर्ग ही बना दिया है इस संसार को।

[कटारा और वा० चा० का प्रवेश]

कटारा : यह प्रोफ़ेसर शशि भूषण हैं।

शशि : नमस्कार।

वा० चांसलर : नमस्कार प्रोफ़ेसर साहब कहिये किस दिन आपका लेक्चर रक्खें ?

शशि : अगले सप्ताह में।

वा० चा० : अच्छा गुरुवार को रहा, सुबह ६ बजे।

शशि : अच्छा ! हाँ किस विषय पर बोलूँ ?

वा० चा० : उस काल के वातावरण पर बोलिये।

शशि० : अच्छा।

वा० चा० : क्षमा कीजियेगा प्रोफ़ेसर साहब, आप इस लेक्चर को जितना ही प्रभाव शाली बना सकें बनावें।

शशि : कोशिश करूँगा, परन्तु बात क्या है ?

वा० चा० : बात यह है कि आपकी खबर केवल सारे संसार में ही नहीं फैली, परन्तु दूसरे क्षेत्रों में भी पहुँच गई है, सब आपका लेक्चर सुनने के लिये उत्सुक हैं। कल ही शुक्र से टेलीफ़ोन आया है, आज चन्द्रमा से टेलीफ़ोन आया है।

शशि : (घबरा कर) मैं तो समझा था कि यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को ही...।

वा० चा० : (बीच ही में बात काट कर) नहीं प्रोफेसर साहब, यह बात नहीं है, हमारा हाल भरा रहेगा। सब देशों के प्रतिनिधि आ रहे हैं, और दूसरे नक्षत्रों के विद्वान भी आ रहे हैं।

शशि : पहले मुझे क्लास ही में बोलने दीजिये।

वा० चा० : यह कैसे हो सकता है, हर व्यक्ति तो आपका लेक्चर सुनना चाहता है।

शशि : अच्छी बात है, जैसा बन पड़ेगा बोलूँगा।

कटारा : बोलना तो अच्छा ही पड़ेगा मित्र।

वा० चा० : हमारे पुस्तकालय से जो पुस्तकें आप चाहें मांगलें।

शशि : धन्यवाद।

वा० चा० : अच्छा तो मैं जाता हूँ, नमस्कार।

शशि : नमस्कार चलिये आपको पहुँचा आएं।

[तीनों का प्रस्थान]

चौथा दृश्य

[हाल भरा हुआ है, मंच पर वाइस चान्सलर बैठे हुए हैं, प्रोफेसर शशि भूषण लेक्चर दे रहे हैं]

शशि : हां तो मुझे अब यह बताना न पड़ेगा कि बीसवीं शताब्दी में युद्ध के बादल छाये ही रहते थे, स्वार्थी मानव, दानव बना हुआ था, दूसरों को ऊपर उठाने के बजाय वह उन्हें ठुकराता था, लूटता था और उनकी छाती पर सवार रहता था। परन्तु इन काले बादलों में भी सूर्य की एक चमकती रेखा दिखाई दी। ये थे उस काल के महान पुरुष महात्मा गांधी जिन्होंने संसार को सच्चा मार्ग दिखाया। जो बीज गांधी जी ने बीसवीं शताब्दी में बोया उसी ने आज सुनहरे युग का निर्माण किया है। इस जगह मैं एक चेतावनी देना चाहता हूँ। आगे बढ़ने की राह कभी रुकती नहीं है....ज्ञान का कहीं अंत नहीं है—बढ़ते रहना ही मनुष्यता का चिन्ह है, जिस दिन हम संतुष्ट हो कर बैठ जायेंगे, उसी दिन से हम पतन की ओर चलने लगेंगे। आज कई नक्षत्रों से महानुभाव आये हैं। चन्द्रमा से चन्द्रकिरण जी, शुक्र से शंकर प्रसादजी, राहू से तारादत्त जी—परन्तु अभी लाखों नक्षत्र हमें चुनौती दे रहे हैं छब्बीसवीं शताब्दी में भी हमारी जानकारी कितनी सीमित है। क्षमा कीजियेगा महानुभावों, मेरी आलोचना का बुरा न मानियेगा, यह बीसवीं शताब्दी का मानव आज कब्र से उठ कर कई शताब्दी आगाड़ी की बात करता है। केवल इस लिये कि आज का का समाज पिछली भूलों से लाभ उठाये, और उन्नति की मर्यादा पर बराबर चलता रहे, थकना उसका काम , रुकना उसका काम नहीं उसका काम है केवल सीना खोलकर आपत्तियों का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहना, इसी में मानव-जाति का कल्याण है। जय-हिन्द।

[शशि भूषण बैठते हैं, श्रोतागण की हथेली बजाने की ध्वनि से आकाश गूँज उठता है]

वा० चा० : हम प्रोफेसर, शशि भूषण के बड़े आभारी हैं। उन्होंने उस काल के युद्ध के वातावरण का मानों चित्र खींच दिया है. आपकी भाषा सरल, आकर्षक और परिमार्जित है, और विचार धारा ठोस है। यदि आपको आज का महान विद्वान कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। आपका सौभाग्य है कि आपने अपनी आंखों से गांधी जी के साक्षात् दर्शन किये। मुझे इस सभा को यह बताते हुये हर्ष हो रहा है कि प्रोफेसर साहब कल विश्व यात्रा को जा रहे हैं, स्थान-स्थान पर आपके भाषण होंगे। दूसरे नक्षत्र वाले जरा धैर्य से काम लें, दो सप्ताह बाद वह राकेट से शुक्र जायेंगे, वहां से चन्द्रमां आदि नक्षत्रों में होते हुए आप अगले महीने तक वापस आयेंगे। यदि किसी महानुभाव को प्रोफेसर साहब से प्रश्न करना हो तो वह कर सकते हैं।

[बैठते हैं, करतल ध्वनि होती है]

चन्द्रकिरण : क्या मैं पूँछ सकता हूँ कि उस काल चन्द्रमा की कितनी जानकारी थी लोगों को ?

प्रोफेसर : उस समय हम लोग चन्द्रमा को एक सुन्दर महिला समझते थे, (हंसी) दूर से दर्शन करने की वस्तु मात्र, बस कुछ वैज्ञानिक खोज में लगे हुए थे, परन्तु चन्द्रमा की यात्रा बहुत दूर थी।

तारादत्त : राहु के बारे में आपके क्या विचार थे ?

प्रोफेसर : उस कालके लोग राहु के नाम से ही

मानते थे (अचंभा) उनका विश्वास था कि राहु उनके भाग्य पर प्रभाव डालता है, उनके दुःख और अकल्याण का कारण है।

टेलिन : रूस के बारे में आपके क्या विचार थे ?

प्रोफेसर : रूस दूसरे देशों के लिये भूल भूलैइया था, उसके ओर-छोर का पता ही न लगता था।

लिन्कन : अमरीका के बारे में क्या विचार था ?

प्रो० : केवल एक चतुर व्योपारी का, पैसे की चीज़ दो में देनी पैसा नक़द लेना, पैसा उधार में रखना और उसके तक़ाजे से दूसरे देशों को पीसे जाना।

जौन : इङ्गलैंड के बारे में क्या ख्याल था ?

प्रोफे० : अड़ियल टट्टू, टस से मस न होना। चर्चिल भारत की छाती पर सवार थे, तो मजे से सिगार पीते थे और तर्क वालों के मुँह पर धुँआं छोड़ते थे ?

हैंस : जर्मनी के बारे में क्या विचार थे ?

प्रोफेसर : जर्मनी सदा दूसरों को मुन्गा समझता रहा। इसी कारण उसका अहित हुआ।

सुशीला : स्त्री जाति की ओर आपके कैसे विचार थे ?

प्रोफेसर : हम स्त्रियों का बड़ा आदर करते थे। यदि बस आदि में वह आजाती थीं तो उन्हें सत्कार के साथ स्थान दिया जाता था और पुरुष उनके लिये अपना स्थान छोड़ देते थे। जहाज डूबते समय भी स्त्रियों को पहले बचाने वाली नौकाओं में भेजा जाता था।

सुशीला : घर में उनका क्या स्थान था ?

प्रोफेसर : वह घर की स्वामिनी होती थीं, पैसा उनके पास रहता था और यदि यह कहा जाय कि वे पुरुषों को उँगलियों पर नचाती थीं तो अत्योक्ति न होगी।

[हँसी]

वा० चा० : अब समय अधिक हो गया है। मैं आप सब की ओर से प्रोफेसर साहब को यक़ीन दिलाता हूँ कि हम आपका और आपकी शताब्दी का बड़ा आदर करते हैं। अब सभा विसर्जित की जाती है।

[सब जाते हैं]

[२६वें पृष्ठ का शेष भाग]

रोटी के टुकड़े से निकल आएगा जिससे शरीर के सारे अंग लाभान्वित होंगे। मल भी कम निकलेगा जिसे बाहर निकालने में चिरकाल से पीड़ित आंतों को कम ही परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही उन्हें वह भारीपन, थकावट और पीड़ा भी नहीं मालूम होगी जिस कष्टपूर्ण स्थिति की शिकायत वे बार-बार आपके पास पहुँचाती रही हैं। फिर इस रूखे-सूखे आहार से आपको उस सुस्वादु भोजन की अपेक्षा, जिसे यों ही गले के नीचे उतारते जाते हैं, कहीं अधिक पोषण, संतोष और शक्ति की प्राप्ति होगी।

परिवर्तन लाने के विचार से इस प्रकार खाने का क्यों नहीं प्रयत्न करते ? कभी-कभी ही सही। यह कोई जरूरी नहीं कि रूखी-सूखी रोटी ही हो। अगर उपर्युक्त विधि से केवल एक सेब खाया जाय तो वह पूर्ण भोजन का फल देगा। अगर आप कच्चे-पके प्रत्येक भोजन के साथ, जिसे चबा कर खाना पड़ता है, यह नियम बरतें तो आपको नए-नए स्वादों और प्रभावों का अनुभव होगा। समय तो कुछ अधिक लगाना पड़ेगा, पर आहार की मात्रा में काफी कमी आ जाएगी।

एक अपराध

यदि कोई गंभीरतापूर्वक इस विषय पर विचार करे तो उसे स्वीकार करना पड़ेगा कि ग्रास को निगलना, खूब चबाए बिना गले के नीचे उतारना एक अपराध है, बेचारे पेट के प्रति और यकृत के प्रति भी अन्याय और अत्याचार है और अच्छे भोजन की बरबादी है। इस प्रकार निगला हुआ आहार भीतर जाकर खमीर बनता है और शरीर के लिए क्षयकारक होकर पाचन को अस्त-व्यस्त कर डालता है।

शरीर ईश्वरप्रदत्त मन्दिर है। इसके पोषण को सावधानी, कृतज्ञता, प्रेम के साथ किया जानेवाला धार्मिक कृत्य समझना चाहिए। जिन चीजों को आप खाते-पीते हैं उनको प्यार की दृष्टि से देखें और तब आप अनुभव करेंगे कि आपके लिए एक नया संसार प्रस्तुत हो गया है, नई जीवनी शक्ति, आनन्द और कल्याण का मार्ग उन्मुक्त हो गया है जिसका पहिले कभी आपने अनुभव नहीं किया था। यह कोई नई बात नहीं है, प्राचीन काल से जानी-मानी हुई है। इन पंक्तियों द्वारा आपको स्मरण दिलाने और ध्यान आकृष्ट करने का प्रयत्न मात्र किया गया है। 'आरोग्य' से

इंजीनियर

श्री प्रिंस क्रोपाटकिन

(गतांक से आगे)

तुम एक नवयुवक इंजीनियर हो और वैज्ञानिक आविष्कारों का उपयोग व्यापार और कारीगरी में करके मजदूरों की दशा सुधारने का स्वप्न देख रहे हो। अभी तुम्हें बहुत धोखे खाने पड़ेंगे। पर वह दिन दूर नहीं, जब तुम्हारा यह भ्रम दूर हो जायगा। तुम अपनी तरुण बुद्धि और शक्ति को लगा कर एक नई रेलवे की योजना तैयार करते हो, जो बड़े ऊँचे स्थानों का चक्कर लगा कर, भारी पहाड़ों के हृदय को छेद कर, दो अलग-अलग देशों को शामिल कर देती है, जिनको प्रकृति ने भिन्न बना रक्खा था। पर जब काम शुरु होता है तो तुम देखोगे कि मजदूरों के दल-के दल अंधेरी सुरङ्गों के भीतर भूख-प्यास और बीमारी से मर रहे हैं, दूसरे बहुत से मजदूर थोड़े से पैसे और क्षय की बीमारी का बीज लेकर घर लौट रहे हैं। तुच्छ लालच के कारण रेलवे लाइन की एक-एक गज़ जमीन मनुष्यों की बलि देकर बनाई जाती है। अन्त में जब लाइन तैयार हो जाती है तो तुम देखते हो कि तुम्हारी यह रेलवे लाइन दूसरे देश पर हमला करने के लिये तोपें और सेनाएँ भेजने के काम में लाई जा रही है।

दूसरा उदाहरण देखो। तुम अपनी तरुण अवस्था को एक ऐसा आविष्कार करने में लगाते हो, जिससे माल सहज में बनाया जा सके। बहुत कोशिशों के बाद, बहुत रातों को जाग-जाग कर, अन्त में तुम अपने आविष्कार में सफल होते हो। तुम उसको व्यवहार में लाते हो और उसका नतीजा तुम्हारे अनुमान से कहीं बढ़ कर निकलता है। दस-बीस हज़ार प्राणी नौकरी से अलग कर दिये जाते हैं, केवल थोड़े से बच्चों को नौकर रक्खा जाता है और उनकी हालत भी निर्जीव मशीनों की-सी बना दी जाती है। दो-चार या दस-बीस मालदार कारखाने वाले करोड़ों रुपया पैदा कर लेते हैं और राजसी ठाठ से भोग-विलास में रहने लगते हैं। क्या यही तुम्हारा लक्ष्य था?

इसी प्रकार जब तुम आजकल की अन्य यंत्र-विद्या-सम्बन्धी उन्नति पर विचार करोगे तो तुम को मालूम होगा कि सीने की मशीन के आविष्कार से सिलाई का काम करने वाली गरीब औरतों का ज़रा भी लाभ नहीं हुआ। नई तरह की छेद करने की मशीन बन जाने पर भी खान का काम करने वाले मजदूरों को गठिया की बीमारी के कारण मरना पड़ता है। अगर तुम सामाजिक प्रश्नों पर उसी स्वाधीन भाव से विचार करोगे, जिससे यंत्र-विद्या-सम्बन्धी जाँच-पड़ताल करते हो तो तुम अवश्य इस निर्णय पर पहुँचोगे कि जब तक दुनिया में निजी जायदाद और मजदूरी की प्रथा कायम है तब तक हर एक नया आविष्कार मजदूरों का अधिक भला करने की अपेक्षा उनकी गुलामी को और ज्यादा मजबूत करता है उनके काम को और भी नीचा बनाता है, व्यापार-संकट के अवसर को बार-बार लाता है और उसके द्वारा केवल वही आदमी फायदा उठा सकता है जिसको अभी सब तरह का बड़े से-बड़ा सुख प्राप्त है।

जब तुम एक बार इस निर्णय पर पहुँच गये, तब तुम क्या करोगे? या तो तुम मिथ्या तर्कों से अपनी अन्तरात्मा को चुप करने लगोगे और अन्त में एक दिन अपनी तरुणावस्था के सच्चे विचारों को सदा के लिये विदा करके केवल अपने लिये ऐश-आराम के साधन प्राप्त करने की कोशिश करने लगोगे। तब तुम गरीबों को लूट कर खाने वालों के दल में मिल जाओगे। पर यदि तुम्हारे भीतर सहृदयता का भाव है तो तुम अपने मन में कहोगे—"नहीं, यह समय आविष्कार करने का नहीं है। पहिले हमको पैदावार तथा सम्पति के वर्तमान अधिकार को बदलने का उद्योग करना चाहिये। जब निजी जायदाद के नियम का अन्त होजायगा, तब यन्त्र विद्या की उन्नति होने से मनुष्य-मात्र फायदा उठा सकेंगे और ये असंख्यों मजदूर, जो आजकल केवल मशीनों के पुरजों के समान बने हुए हैं, तब विचारशील प्राणी बन जायँगे और अध्ययन द्वारा विकसित तथा शारीरिक परिश्रम द्वारा तीव्र बनीं हुई अपनी बुद्धी का उपयोग कला-कौशल की उन्नति में करेंगे। इससे पचास वर्ष के भीतर कला-कौशल की इतनी आश्चर्य-जनक तरक्की हो जायगी, जिसकी इस समय हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

पंचायत राज का उदय

श्री भगवन्नारायण भार्गव, सञ्चालक, पञ्चायत-राज

पंचायत-राज के उदय से एक नये युग का आरम्भ हुआ है। गांवों के प्रत्येक घर में नवजीवन का संचार हो रहा है। नई कल्पना, नई स्फूर्ति और जनता के दुःखों के निवारण के दृढ़ निश्चय प्रत्येक घर के प्राणों की धड़कन बन गये हैं। महात्मा गांधी ने जो मार्ग दिखाया है यदि हम उस पर सच्चाई और ईमानदारी से चलें तो हम अपने राष्ट्रपिता की चिरकामना को पूरी करने में सफल हो सकेंगे।

१५ अगस्त सन् १९४९ को प्रत्येक गांव-सभा ने प्रभात-फेरियां संगठित करके, राष्ट्रीय-ध्वज की बंदना करके और सार्वजनिक सभाओं में शपथ-ग्रहण करके पंचायत-राज का उद्घाटन किया। एक बार हमने फिर अपनी उस प्रतिज्ञा को दुहराया है कि हम मनसा वाचा कर्मणा सत्य, प्रेम और अहिन्सा के महान् आदर्श के लिये अपना जीवन उत्सर्ग कर देंगे।

केवल राजनैतिक स्वतंत्रता ही किसी राष्ट्र को सुखी और समृद्धिशाली नहीं बना सकती। जिस स्वतंत्रता को हमने इतनी कठिनता से प्राप्त किया है उसकी रक्षा के लिये हमें ऐसे स्त्री पुरुषों की आवश्यकता है. जो शुद्ध चरित्र और उच्च नैतिकता के हों। हममें से प्रत्येक को अपने सम्बन्ध में कुछ देर सोच विचार करने की आदत डालनी चाहिये और अपने मन की दुर्बलताओं एवं अन्य बुराइयों का उन्मूलन करने की कोशिश करनी चाहिये ताकि प्रत्येक व्यक्ति जो समाज का एक अंग है पुनीत और निष्कलुष जीवन व्यतीत कर सके।

हमें प्रतिपल निस्वार्थ सेवा और विश्व प्रेम से अपने भौतिक जीवन को आप्लावित करना चाहिये और जैसा कि महात्मा गांधी ने हमें बताया है, हमें प्रत्येक प्रकार की हिंसा का विनाश करना चाहिए। केवल इसी प्रकार हम अपने देश को वास्तव में सुखी और समृद्धिशाली बना सकते हैं। कोरी भौतिकता से स्वार्थ-दर्प एवं हिंसा की उत्पत्ति होती है। महात्मा गांधी प्राचीन भारतीय संस्कृति के सच्चे समर्थक थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर अपने हाथ में लेते ही उन्होंने हमारे राष्ट्र को प्राचीन भारतीय संस्कृति के भौतिक सिद्धान्तों से आपूरित करके उसे संगठित किया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उन्होंने गांव की ओर अधिक ध्यान क्यों दिया। गांव हमारी प्राचीन संस्कृति के केन्द्रस्थान हैं। वास्तव में भारत गांवों में बसा है। इसलिये महात्मा गांधी की इच्छा थी कि हमारे गांव आत्मभरित, स्वावलम्बी और समृद्धिशाली बनें, ताकि उनके रामराज्य या पंचायत-राज में धनी-निर्धन या वर्ण धर्म जाति का कोई भेद न हो। भूमि और शक्ति जनता के हाथ में होगी। न्याय शुद्ध कम व्ययसाध्य और जल्द हो सकेगा।

हमारे माननीय प्रधान मंत्री पं॰ गोविन्द वल्लभ पंत जी ने एक गांव में पंचों को सम्बोधित करते हुए कहा था "हमने अपने देश के लिये आजादी प्राप्त कर ली है। अब हम अपने देश में उन परिस्थितियों को वापस लाने का प्रयत्न कर रहे हैं, जो प्राचीनकाल में विद्यमान थीं।" हम अब एक स्वतंत्र राष्ट्र हैं और हमें अपनी प्राचीन संस्कृति के अनुसार अपने जीवन को बनाना है। प्राचीन कला एवं विज्ञान का अध्ययन करना और उनका प्रचार करना है। हमें अपने निहित निधि की खोज करनी है।

प्राचीन भारत में छोटे-छोटे प्रजातंत्र थे, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे औद्योगिक व्यापारिक, प्राबन्धिक, सामाजिक आदि के सम्बन्ध में अपने अधिकारों का प्रयोग करते थे। इनमें नागरिक, शिक्षा और न्याय सम्बन्धी कार्य भी सम्मिलित थे। इन अधिकारों का उपयोग अनेक नियमों के अनुसार होता था जिनमें बहुत से अलिखित थे और शेष लिखित प्रतिज्ञा-पत्र के रुप में थे। यह प्रतिज्ञा-पत्र राज्य और परिषद् या परिषद् और उसके सदस्यों द्वारा लिखे जाते थे। इन प्रजातंत्रों के अपने अनेक विभाग होते थे, जैसे जनकार्य, उद्योग, चिकित्सा, सफाई, पुलिस तथा दीवान और फौजदारी का न्याय, सार्वजनिक भवनों, मंदिरों, तालाबों, विश्रामगृहों, कुओं, जलमार्गों का

निर्माण, धार्मिक स्थानों का संरक्षण, दुखियों का दुःख निवारण और मृतकों की अन्त्येष्टि क्रिया की जिम्मेदारी भी इन प्रजातंत्रों पर होती थी। शासन की विभिन्न शाखाओं की देखभाल के लिये वे समितियों का निर्माण करते थे, जिनके सदस्य वोट द्वारा चुने जाते थे। मध्यकालीन एवं आधुनिक भारत में पंचायतों का अर्थ एक ऐसी संस्था बन गया जो दो पक्षों के झगड़े का फैसला करें चाहे जाति पंचायत हो या वैधानिक हो। नवनिर्मित पंचायतें प्राचीन प्रजातंत्र की ही प्रतिरुप हैं, जिन्हें व्यापक अधिकार प्राप्त थे। उनका मुख्य उद्देश्य जनता के नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्तर को उठाना है। यह तभी हो सकता है जब हमारा चरित्र शुद्ध हो, परमात्मा पर विश्वास रखें। महात्मा गांधी परमात्मा से अंधकार के दिनों में भी प्रेरणा प्राप्त करते थे। राजनीति को हम धर्म से अलग नहीं कर सकते, जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है राज नीति धर्म से अलग होकर मर जाती है। अनेक अनजान-व्यक्ति धर्म की निन्दा करते हैं जो कि ईश्वर की एकमात्र शक्ति है। ऐसे लोगों ने निहित भूल सिद्धान्तों को समझने का प्रयत्न नहीं किया, यद्यपि महात्मा गांधी ने अपने उपदेशों और अपने व्यावहारिक जीवन द्वारा उन्हें यह समझाने का लाख प्रयत्न किया। धर्म न तो कल्पना मात्र है न अधिनायकवाद और अंधविश्वास। यह यथार्थ सत्य है। समस्त देश संभवतः समस्त संसार को महात्मा गांधी की दैनिक प्रार्थना से आध्यात्मिक प्रेरणा-शक्ति और शान्ति प्राप्त होती थी किन्तु खेद है कि उनके पार्थिव शरीर के संसार से उठ जाते ही प्रार्थना और रामधुन का अन्त सा हो गया प्रतीत होता है, किन्तु मानव समाज के हितार्थ यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रह सकती। यदि महात्मा गांधी की अभिलाषा को, जहां तक उनकी प्रार्थना का सम्बन्ध है पूरा करने के लिये कोई महापुरुष प्रयत्न नहीं करते तो क्या उनके चिरवांछित पंचायत-राज के अंतर्गत हर एक गांव-सभा सामूहिक प्रार्थना और रामधुन की नित्य व्यवस्था का चिरस्थायी और सजीव स्मारक देश के कोने-कोने में स्थापित करेंगी ?

गांवों में मुकदमे बाजी के बोझ से दबे हुये निरीह ग्रामीणों के दुखों को देखकर महात्मा जी को बड़ा क्लेश होता और इसी कारण उन्होंने पंचायतों द्वारा मुफ्त तथा निष्पक्ष न्याय का समर्थन किया। यद्यपि कानूनन न्याय पंचायतों के अधिकार सीमित हैं फिर भी वे जनता को यही राय देंगी कि वह बड़े-बड़े मामलों में भी अदालतों में न जायं और उन्हें समझौते द्वारा अथवा प्रतिष्ठित पड़ोसियों को बीच में डाल कर तय कर डालें। यदि बड़े-बड़े मामलों में पार्टियां न्याय पंचायतों के फैसले को मानने के लिये तैयार हों तो पंचायतें ऐसे सभी मामलों को सुन सकती हैं तथा उनपर अपना निर्णय दे सकती हैं। इस प्रकार पंचायतें एविडेंस ऐक्ट अथवा क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की कार्यवाहियों के अनुसार कार्य करने के लिये बाध्य नहीं हैं। उन्हें तो बिना किसी प्रकार की जातीयता अथवा साम्प्रदायिकता का विचार किये हुये ही केवल तथ्य के आधार पर अपना निर्णय देना हैं। उन न्याय पंचायतों को जो कुशलता तथा ईमानदरी से कार्य करेंगी सरकार द्वारा अधिक अधिकार भी प्रदान किये जा सकते हैं। यदि कालान्तर में पंचायत राज ऐक्ट के अधीन स्थापित की गई पंचायतों तथा प्राचीन प्रजातंत्र की पद्धति का विस्तार सभी नागरिक क्षेत्र, नोटीफाइड एरियाओं तथा म्यूनिसिपैलिटियों में हो जाता है तो मुझे इस बात पर तनिक भी आश्चर्य न होगा। वास्तविकता तो यह है कि मध्य प्रान्त में तो नगर न्याय पंचायतें भी स्थापित हो गई हैं। वह घड़ी कितनी शुभ होगी जब हमें ऊँचे-ऊँचे वेतन पानेवाले न्याय अधिकारियों तथा खर्चीले न्याय शासन का मुंह न जोहना होगा। गांवों की भांति नागरिक क्षेत्र में भी लोग विनाशकारी मुकदमेबाजियों में फंसे रहते हैं।

यह तो अनिवार्य है कि यदि पंचों ने ऊंची शिक्षा न भी पाई हो तो भी कम से कम उन्हें शिक्षित तो होना ही चाहिये ताकि वे कानून और नियमों को पढ़ कर समझ सकें और कार्यवाहियां लिख सकें और निर्णय लिपिबद्ध कर लें। सरकार निरक्षरता-निवारण के सभी प्रबल कर रही है, किन्तु अभी भी इसमें समय लगेगा। संयुक्त प्रान्त के शिक्षा प्रसार अफसर ने स्कूलों के सभी डिप्टी इन्स्पेक्टरों को यह आदेश दे दिये हैं कि वे निरक्षर पंचों और सरपंचों इत्यादि को प्रौढ़ स्कूलों में दाखिले के लिये प्राथमिकता दें। सभी निरक्षर

...गों आदि को चाहिये कि वे इस सुविधा से लाभ उठायें । गांव के सभी साक्षर स्त्री-पुरुषों को चाहे उनकी संख्या कितनी ही कम क्यों न हो यह प्रयत्न करना चाहिये कि वे प्रतिदिन कम से कम पांच निरक्षर व्यक्तियों को पढ़ायेंगे ताकि वे तीन महीने के अन्दर साक्षर बन जायं। प्रत्येक अध्यापक तथा भारत के प्रत्येक नागरिक को यह अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझना चाहिये कि वह बिना किसी मुआविजे के निरक्षर व्यक्तियों को शिक्षित बनाये और साथ ही उन्हें केवल शिक्षा सम्बन्धी हिदायतें ही न दें अपितु अपने उन भाई या बहनों को अच्छी-अच्छी पुस्तकें तथा समाचार-पत्र पढ़ कर सुनायें और समझायें । इस प्रकार ६ महीनों के अन्दर प्रत्येक पुरुष-स्त्री तथा ग्रामीण पर्याप्तरूप से साक्षर बन सकता है ।

वस्तुतः यदि हमारी पंचायतें ठीक काम करें तो वे कालान्तर में गांव को स्वर्ग बना सकती हैं । उन्हें बड़े-बड़े अधिकार दिये गये हैं और कुछ अधिकार तो ऐसे हैं जो वैधानिक ढंग से निर्मित किसी भी स्थानीय निकाय को नहीं दिये गये हैं । जमींदारी उन्मूलन के बाद से उनके अधिकारों तथा उत्तरदायित्व में वृद्धि हो जायगी । देर-सबेर ये पंचायतें विभिन्न गांवों की, सरकारी विभागों की कार्यवाहियों के केन्द्र बन जायंगी और ये विभाग गांवों की सर्वतोमुखी उन्नति के सम्बन्ध में अपनी वैभागिक योजनाओं के सफल बनाने के लिये पंचायतों को अपना सहयोग प्रदान करेंगे । इस ऐक्ट के अधीन उन्हें म्युनिसिपल शासन सम्बन्धी, वैधानिक, सामाजिक, आर्थिक और न्याय सम्बन्धी कार्यों को भी करना है । वैधानिक अधिकारों से मेरा मतलब यह है कि गांव-पंचायत विभिन्न उद्देश्यों के लिये बाई-लाज भी बना सकती है । उन्हें यह भी अधिकार है कि वे कुछ विशेष कर्मचारियों के खिलाफ शिकायतों को करें तथा उनकी नियुक्ति, तबादले और बरखास्तगी के सम्बन्ध में सिफारिश करें ।

सच बात तो यह है कि अब पंचायत-राज की स्थापना द्वारा ही वास्तविक ग्राम्य-पुनर्निर्माण, ग्राम सुधार अथवा वास्तविक स्वराज्य की नींव पड़ी है । निरक्षरता, अज्ञान, गरीबी और शोषण ने हमारे ग्रामवासी के जीवन को शुष्क और नीरस बना दिया है । उसका जीवन चिन्ता ग्रस्त और दयनीय है तथा उसमें प्रकृति के सौंदर्य के प्रति उपेक्षा के भाव भरे हैं यद्यपि बड़ी नगरों तथा शहरों की बड़ी बड़ी जरूरतों को पूरा करता है और सारे देश को खाना और कपड़ा देकर भी स्वयं भूखा और नंगा रहता है । हम चाहते हैं कि हमारे एक लाख बारह हजार गांव एक दूसरे से मिलकर एक ऐसी शृंखला बनायें जो इतनी मजबूत हो कि उस पर कैसा भी भार क्यों न पड़े वह न मुड़े और न टूटे । पंचायत-राज के अधीन गांवों तथा भारतवर्ष का उद्धार प्रत्येक प्रौढ़ ग्रामीण के हाथ में है, जो गांव-सभा का सदस्य है । अब गांवों के प्रत्येक स्त्री-पुरुष को मिल कर पारस्परिक मनमुटाव, शत्रुता, दलबन्दी और जातीय विद्वेश के भावों को तिलांजलि देना है और श्री भगवद्-गीता के उन महान् उपदेशों पर चलने का प्रयत्न करना है, जिन्हें बापू ने अपने व्यावहारिक जीवन में अन्त तक कार्यान्वित किया यहां तक कि अन्तिम सांस भी उन्होंने "हे राम हे राम" कह कर ही छोड़ी । आज एक बार फिर हमें अपने इस प्राचीन देश में जिसकी भूमि पर गंगा-यमुना का पवित्र जल प्रवाहित हो रहा है जो ऋषियों और ब्रह्मर्षियों की तपोभूमि रहा है, जहाँ भगवान राम तथा भगवान कृष्ण ने क्रीड़ायें की हैं, राम-राज्य की स्थापना करनी है । गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में ऐसे रामराज्य में मनुष्यों को दैहिक, दैविक तथा भौतिक तापों से छुटकारा मिलेगा । मनुष्य शास्त्रों में वर्णित रीतियों के अनुसार सद्धर्म के पथ पर चलेंगे जहां पर लोग किसी से बैर न करेंगे जहां विषमता का पता भी न होगा और जहां पर निरक्षरता, दैन्य, दरिद्रता आदि का सर्वथा अभाव होगा ।

"दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ।
चलहिं सुधर्म निरत श्रुति रीती ॥
बैर न करहिं काहु सन कोई ।
राम प्रताप विषमता खोई ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ॥"

मिर्ज़ापुर जिले के जल-प्रपात

कुमारी श्री सुधा वर्मा

अन्य गर्ल स्काउटों के साथ मेरे मिर्ज़ापुर जाने और वहाँ के विख्यात जल-प्रपातों को देखने की आख़िर मुझे पिता जी से स्वीकृति मिल ही गई। मां ने भी साथ ले जाने के लिए रात का खाना बना दिया। इधर मैं तैयारी में लग गई।

स्टेशन पहुँच कर मैंने देखा कि महिला विद्यालय की लड़कियाँ और एक दो अध्यापिकाएँ खड़ी हैं। प्रिंसिपल मिस घोष टिकट आदि के प्रबन्ध में लग गईं। थोड़ी ही देर में जगततारण कालेज, नार्मल स्कूल, इन्डियन गर्ल्स स्कूल और शिल्पभवन की लड़कियाँ और अध्यापिकाएँ भी आ गईं। यूनिवर्सिटी की भी कुछ छात्राएँ थीं। गाड़ी पहले से ही लगी थी। डिब्बा रिज़र्व था ही हम सभी जा बैठीं।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब कि मैंने बाबूजी (श्री जानकीशरण वर्मा, मंत्री अखिल भारतीय हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन) को प्लेटफ़ार्म पर श्री अमरनाथ गुप्त (यू० पी० के हेडक्वार्टर्स कमिश्नर) और मिसेज़ फ़िलिस मेहरोत्रा (अवकाश ग्रहण की हुई हमारी डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर) से बातें करते देखा और हम लोगों के साथ जाने के लिए उन्हें भी तैयार पाया।

सीटी बजी और गाड़ी चल दी। ढ़ाई घंटे का समय इस प्रकार व्यतीत हुआ मानों मिनटों में ही हम लोगों ने इलाहाबाद से मिर्ज़ापुर का रास्ता तय कर लिया हो। रास्ते भर ख़ूब गाने हुए। सबसे पहले द्वारका प्रसाद कालेज की लड़कियों ने गाना आरम्भ किया। गाना ख़त्म ही हो पाया था कि जगततारण की टोली ने अपनी तान छेड़ी। एक के बाद दूसरी स्काउटों ने गाने गाये। यहाँ तक नौबत आई कि अंत में रघुपति राघव राजाराम भी गूँज उठा।

गाड़ी में हमारी डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर मिस घोष की सतर्कता देखने योग्य थी। उन्होंने ही यात्रा की आयोजना और प्रबन्ध किया था, इससे वह चिंतित थीं कि सब काम अच्छी तरह हो जाय। वह अधिकतर मुस्कराती रहती थीं, पर बीच बीच में बोल उठती थीं—'देखो लड़कियो, तुम लोग ..।' उनके ये शब्द आज भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं।

हमारी स्काउटर मिस रॉय बहुत ही सावधान थीं, पर मालूम होता था कि आज उनकी गंभीरता ने और भी गंभीर रूप धारण कर लिया है। मिसेज़ मेहरोत्रा की उपस्थिति और उनका हँसना, मुस्कराना बहुत उत्साहप्रद था। मिस एल० सिंह और मिसेज़ अरोरा हम लोगों से कुछ बोलती न थीं, पर हम उनके रहने से ख़ुश थे और वे हमारे साथ जाने के कारण ख़ुश थीं।

फिर आरम्भ हुआ—'जन गण मन।' श्री अमरनाथ गुप्त ने कहा—'एक साथ ताली बजाओ—स्टार्ट, वन, टू थ्री। आख़िर हम मिर्ज़ापुर पहुँचे। वहाँ बाबूलाल जायसवाल कालेज के प्रिन्सपल और हमारी संस्था के पुराने स्काउटर श्री कालिका प्रसाद मोहिले, कुछ स्काउट, स्काउटरों और अन्य सज्जनों ने हमारा स्वागत किया। हम बाबूलाल जायसवाल कालेज में ठहराये गये। एक बड़े से हाल में दरी बिछी हुई थी। हम लोगों ने अपनी अपनी जगहें चुन लीं।

मिस घोष की आज्ञा पाकर लड़कियों ने अलग-अलग दलों में बैठ कर अपने साथ लाये खाने को खाना शुरू किया। मालूम नहीं कि मेरी टोली में शकुन्तला की पूरियाँ अच्छी थीं या कला की, ऊर्मिला की तरकारी अच्छी थी या ऊषा की, पर तरकारी घट ही गई। आख़िर मिस मैसी की शरण लेनी पड़ी। पर यह क्या! मैं तो बाबूजी को भूल ही गई थी। वह अपने साथ खाना नहीं लाये थे। इस बखेड़े में वह पड़ते ही नहीं। और सिर्फ़ मैं ही नहीं भूली। वे स्काउटें भी, जो गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाती थीं—'काका बाबू, काका बाबू, आमि आपनार जन्ये खावा एनेछि—' वे भी चुप चाप बैठी खा रही थीं। मैंने चिन्तित होकर इधर-उधर देखा, पर देखा कि बाबूजी और श्री गुप्त जी दोनों मिस घोष के आतिथ्य से पूरा पूरा लाभ उठा रहे हैं। मैंने बाबूजी को सिर्फ़ यही कहते

हुआ—"वाह, पूरियाँ बहुत अच्छी हैं ! मिस राय, क्या और परवल हैं ?' उधर चाँदनी में मिसेज़् मेहरोत्रा का दर्बार लगा था और उनके दस्तरखान पर चहल पहल मची थी। उनकी लड़की लाली ने भी मेरा साथ छोड़ दिया था।

खाने-पीने के बाद कैम्प-फ़ायर का प्रोग्राम शुरू हुआ। कैम्प-फ़ायर निराले ढंग का था, क्योंकि न तो वहाँ 'कैम्प' था और न 'फ़ायर'। कैम्प की जगह एक बड़े हाल और फ़ायर का स्थान बिजली के बल्बों ने लिया। कुछ भी हो, यह प्रोग्राम बहुत ही अच्छा और रोचक रहा। मोहिले जी ने भी इसकी बड़ी प्रसंशा की। कैम्प-फ़ायर के कामों में नार्मल स्कूल का 'अछूत खेल' शिल्प भवन का 'बहुओं की प्रसंशा' जगततारण और इन्डियन गर्ल्स स्कूल का 'ग्राम्य नृत्य' विशेष प्रसंशनीय थे। कैम्प-फ़ायर चलता जाता पर मिस घोष की सीटी और 'देखो, लड़कियो' ने आफ़त मचा दी। समय भी आधी रात का हो चुका था।

हम सोये—सोये क्या लेटे। मोहिले साहब के चौकीदार ने 'जागो, जागो' की आवाज़् से नाकों दम कर दिया और चार बजे के बदले तीन ही बजे हमें जगा दिया। साढ़े पाँच बजे हम बिल्कुल तैयार हो और नाश्ते का प्रोग्राम समाप्त कर 'रूट मार्च' के लिए निकले। मार्ग-प्रदर्शन के लिए मोहिले साहब आगे-आगे चल रहे थे। सोचा गया था कि इस रूट मार्च से मिर्ज़ापुर में गर्ल-स्काउटिंग का प्रचार होगा, पर इस रूट मार्च को सोते हुए शहर, आधे दर्जन देहाती औरतें और कुछ गदहों ने ही देखा। लगभग एक घन्टे के बाद हम वापस आये। इधर दो बसें तैयार थीं। उनमें बैठकर हम लोग मिर्ज़ापुर के जंगली प्रदेश और जल-प्रपातों को देखने चले।

सबसे पहले 'टाँडा' प्रपात देखा गया। इसकी चढ़ाई बड़ी ही खतरनाक है। बाबूजी की हार्दिक इच्छा थी कि लड़कियाँ बस से उतर जाएँ, पर इधर वह मोहिले जी से बातें कर रहे थे और उधर निडर सिक्ख ड्राइवर ने बस को चढ़ाई के पार कर दिया। हम लोग ऊपर पहुँचे और प्रपात देखा। इतना सुन्दर दृश्य पहले न देखा था।

जंगल, झाड़ियों और चट्टानों के बीच से जल-राशि का दौड़ते आना और चौड़ी धारा में ऊपर से नीचे गिरना प्रकृति की एक बड़ी ही मनोरम लीला है, और इस लीला को टाँडे में हमने जी खोल और आँखें फाड़ फाड़ कर देखा। इसी समय फ़ोटो रोग ने हमारी पार्टी को आक्रान्त किया। बात की बात में गले और हाथों से लटकते कैमरे दिखाई पड़ने लगे। क्या लड़कियाँ, क्या अध्यापिकाएँ क्या गुप्त जी, क्या मिस घोष—सभी बावले से हो गये। टाँडा से ही फ़ोटो लेने का काम शुरू हो गया।
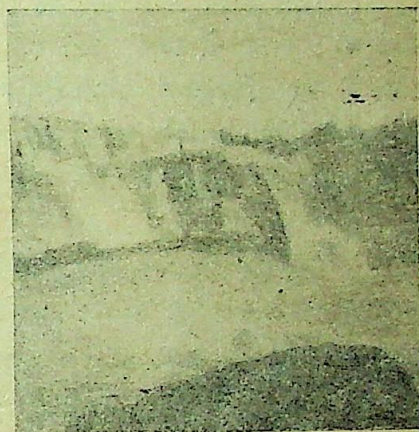
१—टांडा फ़ाल मिर्ज़ापुर

प्रकृति का यह अपूर्व दृश्य देखने योग्य है। वर्षा ऋतु में इसकी बहार है। हजारों दर्शक प्रकृति के इस मनोरम दृश्य को देखने प्रतिवर्ष जाते हैं।

प्रपात देखने के बाद हमलोग पथरीले प्रदेश में घूमे और फिर वह स्थान देखने गये जहाँ से पूरे मिर्ज़ापुर जिले को पानी पहुँचाया जाता है। यहाँ का दृश्य भी बड़ा सुन्दर था। यह एक बहुत बड़ी झील है। इसके प्रसार और जल के प्रशान्त-भाव का हृदय पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। पानी में फूल की एक पंखड़ी भी गिर जाय तो बेतरह हिलोरें उठती हैं और अनेकों मछलियाँ किनारे आ जाती हैं। है तो यह कृत्रिम झील पर प्राकृतिक झील की बराबरी करती है। यहाँ भी कई फ़ोटो ली गईं।

यहाँ से फिर हम दूसरा प्रपात देखने गये। यह प्रसिद्ध 'विंढम' प्रपात है। यह भी अपने ढंग का निराला है। यह बताना कठिन है कि टाँडा अधिक सुन्दर है या

'विंडहम' टाँडा कुछ छोटा और विंडहम बड़ा है। टाँडे के पानी तक पहुँचाना असंभव नहीं तो बहुत कठिन है, विंडहम के सीढ़ीदार प्रवाह में 'हर' 'हर' करते हुए नहाना सरल है।

विंडहम पर ही हम लोगों ने भोजन किया, जिसका प्रबन्ध पहले से ही किया गया था। मोहिले जी को हार्दिक धन्यवाद। पूरी-तरकारी मज़ा दे गई। अन्त में अगर कुछ मीठा मिल जाता तो क्या कहना था। सबको खिलाकर मोहिले साहब खाने बैठे। वह दृश्य भी देखने लायक़ था। खाया तो ज्यादा नहीं होगा, पर ढंग चौबों का ही था। विंडहम में फ़ोटो रोग ने बहुत ज़ोर पकड़ा। यहाँ रोगियों में सबसे अधिक विवश मिस घोष ही मालूम होती थीं। दूसरा नम्बर श्री गुप्त जी का अवश्य था।

विंडहम के बाद हम 'खड़ंजे' आये। खड़ंजे के सुन्दर प्रवाह को बहुत लोगों ने 'बरघाट' का प्रपात समझ लिया था। धूप भी बहुत कड़ी थी। सबों ने कहा—वाह, यह बरघाट भी बहुत अच्छा है। लेकिन मिस घोष कब मानने वाली थीं। उनका तो सिद्धान्त है—'चाहे पड़ रही धूप कड़ी हो, वर्षा की लग रही झड़ी हो........।' आख़िर उनके आदेशानुसार हम बरघाट का प्रपात देखने चले। कुछ कमज़ोर दिल वालों ने कहा, 'अगली बरसात में हम इसे देखेंगे,' और वे बस की ही छाया में टिक गये।

बरघाट प्रपात को भी देखकर हम बहुत प्रसन्न हुए इसमें मछलियाँ उछल-उछल कर इधर से उधर जा रही थीं। मिस घोष ने इन्हें अपने कैमरे से 'शूट' करने की कोशिश की, पर वही जानें कि उन्हें सफलता मिली या नहीं।

बरघाट देखकर हम जल्दी ही लौट आये। इधर गाड़ी का भी समय हुआ जा रहा था। शाम की ही ट्रेन से हमें इलाहाबाद लौटना था।

जल-प्रपातों को देखकर मन में अनेकों भाव उदय हुए और प्रकृति की सुन्दरता और वैचित्र्य का कुछ पता चला। न मालूम जल कहाँ से आता है और कहाँ चला जाता है। क्या मानव-जीवन भी ऐसा ही है? पता नहीं कि उसका भी उद्गम कहाँ है और अन्त कहाँ।
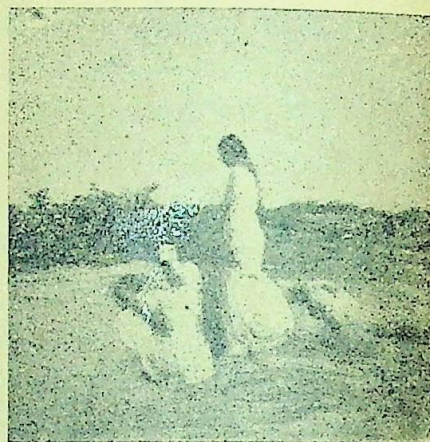
२—विंडहम फ़ाल मिर्ज़ापुर

यह एक दूसरा अपूर्व दृश्य है। इसके किनारे पर इलाहाबाद की कुछ स्काउट बालिकाएं मुंह-हाथ धो रही हैं।

स्टेशन लौटने के रास्ते में हम लोगों ने 'बरगछा' के प्रसिद्ध गुलाबजामुन खाये। वे सचमुच बहुत ही स्वादिष्ट थे, पर दाम एक का साढ़े तीन आने! मुँह में रखते ही वह ग़ायब हो जाता था।

छः बजे हम इलाहाबाद लौट आये। यह यात्रा बड़े मार्के की रही। खेद यही है कि उन जंगलों में एक-दो दिन का कैम्प न हो सका। जाड़ों में इन प्रपातों का जल बहुत कम हो जाता है, जिससे उनकी सुन्दरता में कमी हो जाती है; नहीं तो इन प्रपातों को हाइक के सिलसिले में ही देखना अच्छा होता, और तब विंडहम के पास एक रात का कैम्प बहुत उपयुक्त होता।

आहों में

श्री दयाशंकर भट्ट

(१)

पीड़ित की आहों में प्राण
पावेंगे निश्चय परित्राण;

दीनों की जीवन-होली पर
होगा पूजा का आह्वान ।

(२)

मानव के संचित जीवन के
जब मिट जावेंगे अरमान;

उनकी आहों के मरघट पर
कवि के होंगे कोमल गान ।

(३)

मूक हृदय का चिर निस्पंदन,
आशाओं का हो अवसान;

बुझती दीप-शिखा पायेगी
आहों में तब जीवन-दान ।

(४)

सभ्यों के कौशल से जग जब
डोलित हो, होगा निष्प्राण;

उसको तब कोई असभ्य ही
सदय करेगा कान्ति प्रदान ।

(५)

उस ऊजड़ में कहीं बसेगी
बस्ती कोई स्वर्ग समान;

जीवन का संदेश लिये नित
ध्वनित रहेगी मीठी तान ।

पावेंगे निश्चय परित्राण
पीड़ित की आहों में प्राण ।

गांधी काका

श्री रवीन्द्र नाथ गुप्त

जब गांधीजी गोलमेज़ सभा में भाग लेने के लिये इंगलैण्ड गए थे, तो भी वे अपनी लंगोटी में ही थे। अंग्रेज़ों को उन्हें देख कर बड़ा अचम्भा हुआ। एक बोला, "इसे कहते हैं बात को निबाहना, इतनी शीत में भी वही बाना है।"

गांधीजी वहाँ किंग्सले हाल में ठहरे थे और कुमारी म्युरीयल लेस्टर के अतिथि थे।

बालक उन्हें देखने के लिए व्याकुल हो रहे थे, इधर-उधर से झांक कर दर्शन कर रहे थे, और कह रहे थे, "हमने गांधी काका को देख लिया!"

एक दिन गांधीजी ने देखा कि एक बालक उन्हें बड़ी श्रद्धा से अधखुले किवाड़ की आड़ से देख रहा है। उन्होंने उसे बुलाया तो वह सकुचाता सा उनके पास गया। उन्होंने पूछा,

तुम कैसे खड़े हो भाई?

"आप के दर्शन करने को।"

"तुम यहां अन्दर क्यों नहीं आये?"

"इसकी किसी को इजाज़त नहीं है।"

गांधीजी ने बाल मन्दिर के बालकों से मिलने को समय दिया। किंग्सले हाल बालकों से भर गया। जब गांधीजी आये, तो बालक मुक्त कंठ से चिल्लाये, "गांधी काका की जै हो।"

बच्चों ने उन्हें घेर लिया, और कहने लगे, "व्याख्यान! व्याख्यान!"

गांधीजी ने हाथ का इशारा किया और सब चुप हो गये। बातें होने लगीं।

गांधीजी : यदि कोई तुम्हें मारे तो तुम क्या करोगे?

बालक : (चारों ओर से) हम भी उसे मारेंगे!

गांधीजी : फिर वह क्या करेगा?

एक बालक : वह हमें मारने की चिन्ता में रहेगा।

गांधीजी : लड़ाई बढ़ती है या घटती है?

दूसरा बालक : बढ़ती है।

गांधीजी : तो बताओ लड़ाई कैसे रुके?

सब चुप हो गये, किसी को कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था।

गांधीजी ने कहा : चपत का बदला चपत नहीं होता। महात्मा ईसा का कथन है,

"यदि कोई तेरे एक चपत मारे तो तू उसके सामने अपना दूसरा गाल कर दे।"

इसी को अहिंसा कहते हैं। यदि तुम ऐसा करोगे तो दूसरा चपत मारने के बजाय, वह तुम से क्षमा मांगेगा।"

थोड़े से शब्दों में गांधीजी ने बड़ी चतुराई से अपने अमर सिद्धान्त को बालकों के मस्तिष्क में उतार दिया।

उन दिनों गांधीजी भारत में विलायती कपड़े का बाईकाट करा रहे थे, इंगलैंड के कपड़े के मिल इससे परेशान थे। बहुत से मज़दूर बे रोज़गार हो रहे थे। जब गांधीजी ने लंकाशायर जाने की इच्छा प्रगट की तो अधिकारी घबराये; उन्होंने पुलिस का प्रबन्ध करने का सुझाव रखा। गांधीजी ने इस सुझाव को न माना और लंकाशायर जा पहुँचे। गांधीजी ने अपने देश की बात उनके सामने रखी, उनकी वाणी मधुर थी, उनका तर्क निपुण था। १० मिनट में ही मज़दूर प्रभावित होकर चिल्लाने लगे, "गांधी काका की जै हो।"

कुछ पत्रकार उनके लिपट गये: कि हमें बताओ कि तुम परमात्मा से कैसे भेंट करते हो?

गांधीजी ने बहुत टाला कि प्रश्न पूछने का नहीं है पर वह न माने। तब गांधीजी ने कहा, "हवा को तुम देखते हो?"

एक पत्रकार : नहीं।

गांधीजी : हवा है या नहीं?

पत्रकार : है!

गांधीजी : कैसे मालूम हुआ तुम्हें?

पत्रकार : शरीर से लगने से।

गांधीजी : मैं भी ठीक इसी प्रकार भगवान को अपनी आत्मा के पास महसूस करता हूँ।

सब पत्रकार चकित हो गए, और मुक्त कंठ से बोले, "गांधी काका की जै हो।"

महाराज जार्ज पंचम ने गांधीजी से मिलने की इच्छा प्रगट की। गांधीजी को निमन्त्रण दिया गया, वह जाने को राज़ी हो गये। जब उनसे यह कहा गया कि महाराज से मिलने के लिए उन्हें सूट आदि पहनना पड़ेगा, तो वह बोले; "भाई मैं तो भगवान् से मिलने भी इसी वेश में जाऊँगा। यदि महाराज मुझ से मिलना चाहें तो मैं जैसा हूँ वैसा ही चलूंगा। मैं अपने देश की दरिद्रता का सच्चा प्रतिनिधि हूँ।"

मंत्रियों को अंत में गांधीजी की बात माननी ही पड़ी। महाराज से खूब बातें हुईं। जब वे राज भवन से लौटे तो एक पत्रकार ने पूछा: "कहिये मुलाकात कैसी रही?"

गांधीजी: बड़ी सुन्दर।

पत्रकार: महाराज ने भारत को स्वाधीन करने की कुछ आशा दिलाई?

गांधीजी: आशा तो भगवान ही दिला सकते हैं हां महाराज से खूब गपशप रही।

पत्रकार बोला: धन्य है तुम्हें गांधी काका। भगवान् पर इतना अटल विश्वास बहुत कम का देखा है।

एक दिन गांधीजी बालकों से मिलने उनके घर गये। हर बालक ने उनका स्वागत किया, उन्हें अपने खिलौने दिखाये, नहाने का स्थान, अपनी छोटी खूंटी, अपना दांतों का ब्रश आदि दिखाया। फिर सब बालक उन्हें खेल के मैदान में ले गये। वहां बहुत खेल हुए जिन में गांधीजी भी शामिल हुए। चलते समय सब ने ज़ोर से आवाज़ लगाई "गांधी काका की जै हो।"

गांधीजी की वर्षगांठ पर एक बालक ने उन्हें लिखा,

प्रिय गांधी काका,

आपकी वर्ष गांठ हर्ष से गुज़रे और बारम्बार आये। मैं आपके लिए एक खिलौना और चाकलेट का एक पैकेट भेज रहा हूँ। यह मेरी तुच्छ भेंट है।

मैं फिर यही कहता हूँ कि गांधी काका, तुम जुग-जुग जियो।

तुम्हारा स्नेही,
पीटर

जब गांधीजो इंगलैंण्ड से लौटे तो उन बालकों को बड़ा खेद हुआ। गांधीजी के साथ असबाब में बालकों के दिये हुए उपहार, खिलौने ही थे, जहाज़ चला, गांधीजी रूमाल हिला रहे थे, और बच्चे चिल्ला रहे थे,

"गांधी काका की जै हो।"

दिव्य-मूर्ति

श्री योगेन्द्र सेन

हे! तुम अभिनन्दनीय॥

विश्व-मय रमते प्राण-गाँधी।
दीनों का करते त्राण-गाँधी॥
कर्म के तुमि ज्ञान-गाँधी।
हे! विश्वपति भगवान-गाँधी॥
तुमि सतत बन्दनीय॥
सत्य के प्रेम-पुजारी तुमि।
अहिंसा के व्रत-धारी तुमि॥
शान्ति के सच्चि-रखवारी तुमि।
नर देह में विभु-प्राण-धारी तुमि॥
हे! नर युग युग पूज्यनीय॥

लेकर तेरे उद्देश्य महान्।
अमर कीर्ति औ! अस्फुट गान॥
सदियों जीवे भारत-प्राण।
गावे विपुला यश-गीति-गान॥
महापुरुष तुमि मार्गीय॥
अहिंसा की तव दिव्य-मूर्ति।
कर विधना पुनः विश्व-पूर्ति॥
जो चला गया सो चला गया।
अमृत वाणी कुछ बता गया॥
तत्त्वज्ञ तुमि तरणीय॥

सूखी रोटी

श्री योगेन्द्र, बी० ए०

खाद्य के सम्बन्ध में हम लोग बहुत कुछ चिन्ता किया करते हैं और उसे प्राप्त करने में समय और शक्ति भी लगाते हैं, फिर भी हम उसे कैसे खाएंगे और खाने से हमें कितना संतोष और आनन्द प्राप्त होगा, इस बात पर हम कभी ध्यान नहीं देते।

कोई व्यक्ति क्या खा रहा है, यह एक महत्त्व की बात है, पर वह उसे कैसे खा रहा है, यह भी कम महत्त्व की बात नहीं है। हम सभी जानते हैं कि खाना खूब चबाकर धीरे-धीरे खाना चाहिए; हितेच्छु माँ-बाप ने हमारी शैशवावस्था में ही यह बात हमारे दिल में बैठा दी थी, पर हम उस समय इससे ऊब जाते थे और अब वयस्क होने पर धीरे-धीरे चबाकर खाने के लिए समय ही नहीं मिलता और अगर समय मिले भी तो इससे कुढ़न पैदा होती है।

सच्ची भूख

क्या आप जानते हैं वास्तविक क्षुधा में शरीर की क्या दशा होती है? उस स्थिति में आप वस्तुत: भूखे होते हैं—भीतर का हिस्सा बिलकुल खाली—बांस की नली की तरह पोला होता है। इस समय आपका अंग-प्रत्यंग, शरीर का कण-कण शरीर को कायम रखने के लिए भोजन या पोषण की मांग करता होता है। यही सच्ची भूख होती है। एक नकली और/गुमराह करने वाली भूख भी होती है जिसमें खालीपन, शिथिलता और कभी-कभी कुछ दर्द भी मालूम होता है। जब आप यह कहते हैं कि 'मैं कुछ खाना चाहता हूँ, पर क्या खाऊं' तब समझ लें कि आपको भूख नहीं है, कोई चीज खाने की ज़रूरत नहीं है। इस तरह की इच्छा होने पर दो-एक घूंट पानी पीकर भूख को बहला लेना काफी है।

रहस्यपूर्ण क्रिया

जब आप निश्चित रूप से भूखे हों, किसी चीज़ को मुंह में डालने का ख़याल होते ही मुंह में लार भर जाय और सारे शरीर में चमक-सी पैदा करने वाली सनसनी भर जाय उस समय आपको बिलकुल सूखी और बासी रोटी खाने का प्रयत्न करना चाहिए—उसके साथ ज़रा भी घी, गुड़ या तरकारी न हो। एक टुकड़ा तोड़कर मुंह में डाल लें, दांतों से चबाना शुरू करें और संकल्प कर लें कि कुछ समय—पांच मिनट—तक इसका छोटे-से-छोटा टुकड़ा भी गले के नीचे नहीं जाने देंगे। धीरे-धीरे खूब चबाएं और इसके विषय में चिन्ता न करें; किताब न खोल लें या रेडियो की तरफ कान न ले जायं—पारा ध्यान शरीर को पोषण देनेवाली खाने की इस क्रिया पर केंद्रित करें। विषय भी यह ध्यान देने योग्य है क्योंकि इस काल में एक विचित्र, आनन्ददायक और रहस्य-पूर्ण क्रिया होती रहती है। यह आश्चर्य की ही बात है कि हम नित्य चलने वाली इस रहस्यपूर्ण क्रिया को यों ही, बिना ध्यान दिए ही होने दिया करते हैं।

जबड़े, जीभ, दांत, गाल खाने के समय जो क्रिया करते हैं वह एक ऐसा अवर्णनीय, आनन्ददायक स्पंदन उत्पन्न करती है जो पुलक-जैसी ही होती है। उस समय उस सूखी रोटी के टुकड़े में ही विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का आनन्द आने लगता है और ऐसा जान पड़ता है मानो ताप पहुँचाने वाली सूर्य-रश्मियां, रससिक्त करनेवाली वर्षा की बौछार, पकते हुए अन्न को पौष्टिकता—सब कुछ ग्रहण और आत्मसात् करते जा रहे हों। इस प्रकार आस्वादन करने पर आप देखेंगे कि तब तक कई मिनट गुजर गए हैं फिर भी वह ग्रास आपके मुंह में बना हुआ है; आप उसे निगलना नहीं चाहेंगे और जब तक उसमें स्वाद का अंश शेष रहेगा, उसे गले के नीचे न जाने देंगे। इतनी देर में तो वह आप-से-आप तरल होकर गले के नीचे उतर जायगा।

शरीर पर प्रभाव

आपके इस नए कार्य से आपका पाचनक्रिया करने वाला अंग बहुत प्रसन्न होगा और अपना कार्य बड़ी कृतज्ञता के साथ संपन्न करेगा। पोषण का कण-कण उस

[शेष पृष्ठ १६ पर देखिये

विद्यार्थियों के लिए

अपनी साहित्यिक योग्यता की जाँच करो

(हर प्रश्न के पाँच अंक हैं)

[उत्तर अपने स्काउटमास्टर, अध्यापक या संरक्षक से जँचवा लो]

(१) 'वरमाला' के लेखक का नाम लिखो।

(२) सितार का अन्वेषण कर्ता कौन था ?

(३) राजपूत युग में किस स्त्री ने राज पुत्र की रक्षा के लिए अपने पुत्र का खूनी से वध करवा दिया था ?

(४) इस युग के सबसे महान भारतीय नर्तक का नाम लिखो।

(५) आधुनिक प्रसिद्ध बंगाली जादूगर का नाम लिखो।

(६) अमिताभ किन्हें कहते हैं ?

(७) भारत नाम का कारण लिखो।

(८) अजंता का पता लिखो।

(९) 'वियोगी होगा पहला कवि' इसकी दूसरी पंक्ति से पूर्त्ति करो और कवि का नाम लिखो।

(१०) "हमने भी सोना पाने की कैसी क्षमता दिखलाई" इसके कवि कौन हैं ? किस विषय पर और कब यह कविता लिखी गई थी ? पहली पंक्ति लिखकर इस कविता की पूर्त्ति करो।

(११) कौन शुद्ध रूप है ?

सर्जन या सृजन

जाग्रत या जागरित

स्रष्टा य सृष्टा

बहन या बहिन

अधिष्ठातृ या अधि ष्ठात्रि

(१२) मौर्यकाल का सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ कौन हुआ है ?

(१३) वर्षा ऋतु में गाये जाने वाले प्रमुख राग का नाम लिखो।

(१४) सबसे मीठी बोली बोलने वाले भारतीय पक्षी का नाम लिखो।

(१५) किस प्रसिद्ध पौराणिक कथा में पति के जुआ खेलने के कारण पत्नी को अनन्त कष्ट सहने पड़े ?

(१६) रंक और राजा की अनुपम मैत्री का भारतीय उदाहरण दो।

(१७) लक्ष्य-वेध परीक्षा में बाण छोड़ते समय अर्जुन को मछली दिखाई दी या क्या ?

(१८) बोधि-वृक्ष के स्थान का नाम लिखो।

(१९) पाकिस्तान में सिखों का कौन प्रसिद्ध धर्म स्थान है ?

(२०) काश्मीर के युद्ध में कौन से प्रसिद्ध भारतीय सेना नायक ने वीर गति प्राप्त की ?

अमेरिका की ओटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स-एसोसियेशन का कथन है कि अमेरिका की समस्त जन संख्या, जो लगभग १४ करोड़ ३० लाख है, एक ही समय कारों पर सवार हो सकती है। अमेरिका में ४.८ व्यक्तियों के पीछे १ मोटरकार है।

× × ×

अमेरिका के सभी कालिजों तथा यूनिवर्सिटियों में लगभग २४ लाख छात्र सितम्बर मास में भरती हुए।

× × ×

अमेरिका की विश्वव्यापी पोस्टल यूनियन अपने ७५वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में शीघ्र ही नवीन प्रकार के हवाई टिकटों को परिचालित करेगी।

अमेरिकी बालक की पं० नेहरू से मुलाकात

मायेमी का ओरिस लारी मोर नामक एक स्कूली छात्र, जो संसार का पर्यटन कर रहा है, पंडित नेहरू से नई देहली में मिला।

बालक के कथनानुसार पंडित नेहरू भारत को समृद्ध करने के लिए सिंचाई और बिजली उत्पादन के विकास की शीघ्र आशा कर रहे हैं। चीन से सबक लेकर एशिया के देशों को अपने किसानों की समस्या को हल करना चाहिए। उसने गांधी जी को प्रेमपूर्ण श्रद्धांजलि भेंट की है।

बालक ने उक्त भेंट के अवसर पर फ़र्श पर नेहरू जी के सामने बैठकर प्रश्न करने का विषय उल्लेख किया है। पंडित नेहरू ने जिस समय यह कहा कि "मैं एक राजनीतिज्ञ की हैसियत से तुम्हारे किसी भी राजनीतिक अथवा अन्य प्रश्न का उत्तर स्पष्ट रूप से देने को तैयार हूँ, किन्तु प्रधान मन्त्री की हैसियत से मैं प्रश्नों का उत्तर सरकारी तौर पर ही दूँगा। हमारे बीच बात-चीत का रास्ता खोल दिया और मैंने प्रश्न करने शुरू कर दिये।

भविष्य में पाकिस्तान और भारत के सम्बन्ध कैसे रहेंगे ! इस प्रश्न के उत्तर में नेहरू जी ने कहा कि ये दोनों भाग सांस्कृतिक, भौगोलिक और राजनीतिक दृष्टि से सदियों से एक रहे थे। पहले यातायात दोनों में एक ही इकाई के आधार पर चालू था और दोनों देश एक रहते हुए बहुत उन्नति कर सकते थे। किन्तु विभाजन से ऐसा प्रतीत होता है कि, एक जीव के दो भाग कर दिए हैं।

विभाजन यद्यपि धार्मिक आधार पर हुआ है, क्योंकि मुसलमान समझता था कि उसके प्रजातन्त्र अधिकारों को खतरा है। फिर भी मुझे आशा है कि भविष्य में हम दोनों बहुत नजदीक आ जाएंगे। साथ-साथ मिल कर ही हम दोनों वही सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

चीन में साम्यवाद की प्रगति के बारे में प्रश्न करने पर पं० नेहरू ने कहा कि चीन सिखाता है कि एशिया के के देशों में किसानों की समस्या को हल करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भारत में हम किसानों की समस्या को हल कर रहे हैं। छः महीने के अन्दर बड़ी बड़ी जमींदारियाँ खत्म हो जायगी। उसके बाद जितना किसानों का सुधार होगा उसी पर साम्यवाद की सफलता और असफलता निर्भर करेगी।

आपने १० वर्ष में नये बांध बनाने, बिजली के उत्पादन करने, और साधनों के विकास करने की आशा प्रकट की और कहा कि तभी भारत स्वात्म-निर्भर तथा समृद्ध हो जायगा।

क्या आप जानते हैं

अमेरिका के कृषि-विभाग से ज्ञात हुआ है कि विश्व में चावल-उत्पादन का स्तर युद्धपूर्व कालीन स्तर से ३ प्रतिशत बढ़ा हुआ है। अगस्त १६४८ से जुलाई १६४९ तक ७,५०,००,००,००० बुशल चावल की पैदावार का अनुमान है। युद्धपूर्व कालीन औसतन पैदावार ७,३०,००,००,००० बुशल थी। अमेरिका में केवल चावल की उच्चतम पैदावार १,१०,००,००० बुशल तक हुई थी।

× × ×

अमेरिका के जनगणना विभाग ने विदित किया है कि सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली पर सभी राज्यों की सरकारें अपने कुल व्यय के २० प्रतिशत भाग को खर्च करती हैं।

पुश्किन् और गोर्की

ले० इल्या ग्रुज़देव

ग्यारह साल की उम्र में गोर्की एक मसविदा बनाने वाले के यहां अप्रेन्टिस का काम सीख रहा था। उसे पढ़ने की इजाज़त नहीं थी और यदि उसके पास कोई पुस्तक पाई जाती तो वह उससे छीन ली जाती थी। अपने पड़ोस के लोगों से पुस्तकें उधार लेकर वह रात में आग के पास बैठकर घंटों पढ़ा करता। एक दिन उसे पुश्किन की कविताओं की पुस्तक मिली।

"मैं एक सांस में यह पुस्तक आदि से अंत तक पढ़ गया। मेरा मन इस पुस्तक के पढ़ने में इतना आकृष्ट हुआ जितना किसी को एक असाधारण रूप से सुन्दर स्थान में एक ब एक के चले जाने पर मालूम होता है। "रुसलान और लुडमिल" की भूमि का मुझे उन सुन्दर कहानियों की याद दिलाने लगी जो मेरी दादी मुझसे कभी कहा करती थी। कुछ पंक्तियां मुझे इतनी सुन्दर लगीं कि मैं उन्हें बार बार पढ़ता और मुग्ध सा हो जाता"।

"वह भूमि जहाँ के अज्ञात मार्ग पर
अज्ञात हिंसक पशु चला करते हैं"।

जब मैं अपने मन में इन आश्चर्यकारी पंक्तियों को गुनगुनाता तो मेरे मानस चक्षु के सामने अज्ञात पथ के धुंधले चित्र रजतपट की तस्वीर के समान मानों झूमने लगते। मैं देखता कि घास पर अद्भुत पदचिन्ह हैं जिनसे वह झुक सी गई है। मुझे घास पर मोती के दानों की तरह शिशिर कण चमकते नजर आते। इस संगीत मय पद्य पढ़ने से ऐसा मालूम होता मानों प्रकृति का जर्रा २ सुन्दरता में स्नान कर रहा हो। इससे मैं अत्यंत आह्लादित हुआ और मेरा जीवन सुखद और संगीत मय हो गया।"

अपने बचपन की स्मृति के सम्बन्ध में गोर्की ने ऐसा ही लिखा है। यह कोई आकस्मिक बात नहीं थी कि रुसलन और लुडमिल को पढ़कर गोर्की मंत्र-मुग्ध सा हो गया और उसे उन सुन्दर चुटकीली कहानियों की याद आने लगी जो उसकी दादी उससे कहा करती थी।

गोर्की की दादी आकुलीना काशीरीना का दिमाग मानों कविताओं का खजाना था। लोक संगीत और कथा कहानियांउसके वरजबान थीं।

चूँकि बचपन में ही गोर्की रूसी लोक संगीत तथा कथा कहानियों से भली-भांति परिचित था। इसलिये वह पुश्किन की "रूसलान और लुडमिल" के काव्य सौन्दर्य की अनुभूति इस प्रकार करने में समर्थ हुआ।

रूसी लोक संगीत तथा कथा कहानियों से पुश्किन को परिचित कराने का श्रेय उसकी नर्स एरीना रोडिओनोवना को प्राप्त है।

इस प्रकार इन दो महान् रूसी लेखकों की प्रतिभा कथा-कहानियों के स्रोत के मीठे जल से परिपुष्ट हुई है।

गोर्की की दृष्टि में पुश्किन अंत तक एक महान् प्रतिभाशाली कलाकार बना रहा। उसके हृदय में पुश्किन के लिये महान् श्रद्धा थी।

गोर्की ने लिखा है कि "साहित्य के राष्ट्रीय महत्व को समझने वाला पुश्किन ही पहिला रूसी लेखक था। रूसी साहित्य को अभूतपूर्व शिखर पर लाने वाला यह पहिला रूसी कलाकार था। उसकी दृष्टि में कवि सभी विचार एवं भावों का प्रवक्ता है। उसका कर्त्तव्य है जीवन की प्रत्येक वस्तु को समझना तथा उसकी अभिव्यक्ति करना"।

रूसी साहित्य के ऊपर अपने भाषणों में, विशेष लेखों में तथा अपने निजी पत्रों में गोर्की बार २ इस बात पर जोर देता रहा कि विश्व-संस्कृति की दृष्टि से महान् रूसी कलाकार पुश्किन का महत्व कितना अधिक है। पुश्किन की कला की राष्ट्रीयता गोर्की के लिये सब से अधिक आकर्षण की वस्तु बन गयी। गोर्की ने लिखा है कि "शेवचेंको, पुश्किन और मिकिविज़ ऐसे सत्पुरुष हैं जो जनता की आत्मा अपनी कृतियों में व्यक्त और मूर्त्तिमान करते हैं।"

पुश्किन के विषय में गोर्की ने लिखा है कि "पुश्किन रूस का राष्ट्रीय कवि है, वह सुन्दर और बुद्धिमत्ता पूर्ण कहानियों का रचयिता है; उसका "येवगेनी ओनेगीन" नामक पहिला रूसी उपन्यास है जो बिल्कुल वास्तविकता पर आधारित है; वह 'बोरिस गोडुनोव' नामक ऐतिहासिक नाटक का लेखक है; उसके ललित पद्यों की रचना तथा भावों और विचारों को शक्ति पूर्वक व्यक्त करने की

हमारी गतिविधि

हिन्दुस्तान स्काउट रैली, राँची

ता० १४-६-४६ को माननीय आचार्य बद्रीनाथ जी वर्मा, शिक्षा मंत्री बिहार सरकार प्रधान हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन बिहार के प्रधानत्व में ४ बजे से जिला स्कूल मैदान में योगी नर्मदेश्वर पाण्डेय, आयुर्वेदाचार्य स० प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर के दिग्दर्शन में आरम्भ हुआ। इसमें ३२० स्काउटों ने भाग लिया जिसमें ६५ बालिका स्काउट थीं, प्रदर्शन बड़ा प्रभावशाली रहा। बालिका शिक्षा भवन दल भोजन बनाने और शारीरिक व्यायाम में, छोटा नागपुर गर्ल्स स्कूल दल पिरामीड और प्रारम्भिक चिकित्सा में, बिहारी पर्दा गर्ल्स स्कूल फॉक डान्स में, जिला स्कूल दल 'गेम्स' में आदिम जाति सेवा-मण्डल आदिवासी छात्रावास दल प्रहसन में सर्व प्रथम रहा। इसके अतिरिक्त चडरी आदर्श पाठशाला दल कुनका यू० पी० स्कूल दल, डोमटोली यू० पी० स्कूल दल हातमा यू० पी० स्कूल दल मोरावादी यू० पी० स्कूल दल, चर्च रोड यू० पी० स्कूल दल ने भी भिन्न-भिन्न खेलों का प्रदर्शन किया।

रैली का प्रबन्ध और देखरेख श्री धर्मेन्द्र जी शास्त्री इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स स्वयं कर रहे थे। कार्यक्रम का संचालन श्री भगवत मिश्र सरायकेला स्काउट कमिश्नर और श्री शैलेश चन्द्र चौधरी जिला स्काउट कमिश्नर राँची कर रहे थे।

माननीय शिक्षा मंत्री ने अपने व्याख्यान में रैली की बड़ी सराहना की। उन्होंने कहा – मैंने इस साल से स्काउटिंग को सिलेबस में सम्मिलित कर लिया है। स्कूल समय में ही स्काउटिंग की घन्टी रहेगी अब प्रत्येक शिक्षक को स्काउटिंग शिक्षा लेनी होगी और प्रत्येक विद्यार्थियों को स्काउट बनाना चाहिए ताकि सच्चे नागरिक और राष्ट्र निर्माता प्रत्येक विद्यार्थी बन सकें। बालिका स्काउटों की सराहना करते हुए शिक्षा-मंत्री ने कहा लड़कों को इनसे अनुशासन की शिक्षा लेनी चाहिए। अन्त में जिला हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन के प्रधान श्री कन्त कुमार लाल चेयरमैन म्युनिस्पैलटी मंत्री राजेन्द्र कुमार तिवारी वकील और जिला कमिश्नर-टैगोर तथा अन्य कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिए।

क्षमता अभूतपूर्व है; वह रूसी साहित्य की नींव डालनेवाला कवि है।

पुश्किन के प्रति गोर्की की सदा से महत्वपूर्ण सेवा यह है कि उसने तमाम बुर्जुआ आलोचकों के सिद्धान्तों का पर्दाफाश करते हुए स्पष्टतः दिखला दिया कि पुश्किन उस काल के ज़ारशाही उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष करनेवालों में एक था। गोर्की ने दिखला दिया कि पुश्किन स्वतंत्रता के महत् तराने गानेवाला था। महान् प्रोलेतारियन लेखक के लिये गोर्की मुख्यतः स्वतंत्रता प्राप्ति के हेतु संघर्ष का प्रतीक था। कवि का जीवन, स्वातंत्र्य प्रेम से भरी हुई उसकी दुनियाँ तथा उसका दुख पूर्ण अंत युगानुयुग तक हमारी स्मृति में बने रहेंगे।

पुश्किन की कृतियों को सुगम और सुबोध बनाने का श्रेय एकमात्र गोर्की को है। विशेषकर गोर्की ने उन परिस्थितियों के राजनीतिक महत्व पर प्रकाश डाला है जिनके चलते पुश्किन के जीवन का दुखपूर्ण अंत हुआ। पुश्किन का द्वन्द युद्ध गोर्की की दृष्टि में महान् कवि की हत्या का एक बहाना था।

गोर्की ने दिखला दिया कि ज़ारशाही के औफीसर ने आन्थेज़ से पुश्किन का द्वन्द युद्ध ज़ारशाही, उत्पीड़न तथा मनुष्योचित सम्मान की अवहेलना के विरुद्ध संघर्ष था।

गोर्की की कला पुश्किन की कला से बहुत मिलती जुलती है। पुश्किन की तरह "माँ" नामक क्रान्तिकारी उपन्यास का लेखक स्वतंत्रता तथा मानव अधिकार की प्राप्ति के लिये अनवरत संग्राम करनेवालों में एक था। गोर्की के जीवन का अन्तिम भाग फासिस्टवाद तथा सम्राज्यवादी युद्ध भड़काने वालों के विरुद्ध संघर्ष करते बीता।

अपनी मृत्यु के कुछ पूर्व ही गोर्की ने लिखा कि 'मैं ऐसे भाव में लिख रहा हूँ जब नूतन सभ्यता के उषा काल में मानव अमर-काव्य की रचना करता है।

गोर्की का आशावाद उस महान् मानव का आशावाद है जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन लोकहित के लिये संघर्ष करने में निछावर कर दिया तथा जिसका विश्वास अपनी मातृभूमि के उज्वल और सुन्दर भविष्य में अटूट था।

पुश्किन और गोर्की दोनों ही रूस की महान विभूतियाँ हैं। दोनों ही का जीवन त्याग और देश भक्ति का ज्वलंत दृष्टांत है।

बनारस

हिंदुस्तान स्काउट ज़िला एसोसिएशन की वार्षिक बैठक ता: १८-९-४९ को हरिश्चन्द्र इन्टर कालेज में हुई जिसमें १९-९-५० के लिये पं० राम नारायण मिश्र, सभापति, श्री काशी प्रसाद अग्रवाल तथा श्री दामोदर प्रसाद जी, उप-सभापति तथा श्री सच्चिदानन्द भारतीय प्रधानमंत्री चुने गए।

श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, यू० पी० ने १६ सितम्बर से २१ सितम्बर तक बनारस में दौरा किया। इस बीच आपने लगभग बारह स्काउट दलों का निरीक्षण किया तथा स्काउट मास्टरों की एक सभा में स्काउटिंग की उपयोगिता तथा उसके प्रचार के ढंगों पर भाषण दिया। आपने यह भी बतलाया कि इसको उपयोगी और सर्वप्रिय कैसे बनाया जा सकता है।

१७ सितम्बर को बनारस ज़िले के जे० पी० मेहता कालेज के ८० स्काउटों को श्री सच्चिदानन्द भारतीय, सहायक जिला स्काउट कमिश्नर तथा प्रधानमंत्री ने दीक्षा दी तथा उनको यह बतलाया कि स्काउटिंग का उद्देश्य है कि बालक माता-पिता का भक्त होते हुए पाठशाला और गुरुजनों का भक्त बन कर समाज सेवा के लिये तैयारी करें।

बस्ती

श्री एच० विलियम्स ने २० अगस्त से ३१ अगस्त तक ८० बालचरों का एक पैट्रोल लीडर्स कैम्प किया। २६ अगस्त को श्री डाइरेक्टर महोदय शिक्षा विभाग के आगमन पर एक वृहत् स्काउट रैली हुई। इसका अन्तिम जलसा ३१ अगस्त को हुआ जिसमें बालचरों का दीक्षा-संस्कार समारोह सम्पन्न हुआ और श्री दौलत राम जी अष्ठाना डिवीजनल स्काउट कमिश्नर गोरखपुर ने स्काउटों के समक्ष प्रभाव पूर्ण भाषण दिया।

देवरिया

श्री एच० विलियम्स ने २ से ११ सितम्बर तक ४० अध्यापकों का कैम्प किया। जिसमें सभी स्थानीय स्कूलों और कालिज के स्काउट मास्टरों ने भाग लिया। शिक्षण काल में हाइक के लिए कसिया नामक ऐतिहासिक स्थान पर गये जहाँ महात्मा बुद्ध की समाधि के दर्शन किये और बौद्ध भिक्षुओं से मिल कर बौद्ध धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त की। इसका अन्तिम जलसा ११ सितम्बर को हुआ जिसमें श्री दौलत रामजी अष्ठाना ने आकर कैम्प का निरीक्षण किया और जलसे में सभापति का आसन ग्रहण करके स्काउटों को उत्साहित किया।

गोरखपुर

श्री एच० विलियम्स ने ५० बालचरों का पैट्रोल लीडर्स कैम्प १२ से २० सितम्बर तक किया। हाइक के लिए 'हुई' पार्क में गये। वहाँ पर प्रोफ़ेसर एम० ओ० बार्के साहब सहायक प्रान्तीय कमिश्नर ने स्काउटों के भोजन बनाने और डेरे लगाने का निरीक्षण किया। इसकी अन्तिम रैली कुमारी गंगा बाई बारपूते के सभापतित्व में हुई जिसमें स्काउटों ने अत्यन्त उच्च कोटि का प्रदर्शन किया। प्रोफ़ेसर बार्के साहब ने स्काउटों को आगे का कार्य-क्रम समझाया।

गाजीपुर

श्री एच० विलियम्स ने जिले के सभी स्काउट मास्टरों का शिक्षण-शिविर २२ से ३० सितम्बर तक २६ सितम्बर को माननीय प्रधान मन्त्री पं० गोविन्द वल्लभ पंत के आगमन पर स्काउट मास्टरों ने हवाई अड्डे पर स्वागत किया और गार्ड आफ आनर दिया। २७ सितम्बर को हाइक के लिए गोरा बाजार गये। इसी स्थान पर लार्ड कार्नवालिस की कब्र है। स्काउट मास्टरों ने ध्रुवपद की परीक्षा दी। २८ सितम्बर को श्री प्राणनाथ शर्मा सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर की अध्यक्षता में स्काउट मास्टरों ने माननीय श्री लाल बहादुर जी शास्त्री को ताड़ी खेत नामक स्थान पर गार्ड आफ आनर दिया। अन्तिम जलसा श्री एस० एन. पाठक डि० इ० शिक्षा विभाग के सभापतित्व में हुआ।

मेरठ (बड़ौत)

ता० १८ व १९ सितम्बर सन् १९४९ ई० को श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि तथा श्री रामदेव भार्गव

बड़ौत में पधारे। दोनों सज्जनों के आते ही नहर के किनारे भ्रमण का कार्यक्रम निश्चित हुआ। थोड़े से समय में ही ८० बालचर एकत्रित हो गये। गीत गाते व नारे लगाते हुए सब नहर के किनारे पहुँचे। आलू पकाने तथा खाने के पश्चात श्री चूड़ामणि जी ने बालचरों को उनके कर्त्तव्य बतलाते हुऐं कहा कि देश को ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो भारत का मस्तक ऊँचा रखने के लिए अपना तन, मन तथा धन सर्वस्व त्याग कर दें। स्काउटिंग की शिक्षा इसी प्रकार के बालकों तथा बालिकाओं को तैयार करती है।

ता० १६ सि० १९४९ ई० को संध्या के ५½ बजे से हि० जैन कालिज में बा० जगदीश प्रसाद जैन, एम० ए०, एल-एल० बी०, चेयरमैन म्युनिसिपल बोर्ड, बड़ौत की अध्यक्षता में एक विशाल रैली हुई जिसमें बालचरों ने शारीरिक व्यायाम प्रारम्भिक चिकित्सा, खेल, गान आदि का प्रदर्शन किया। उपस्थित सज्जनों पर इन प्रदर्शनों का बड़ा प्रभाव पड़ा।

रात्रि में कैम्प-फायर का आयोजन किया गया।

हरिद्वार

हरिद्वार में पेट्रोल लीडर्स ट्रेनिंग कैम्प का ता: ४ सितम्बर से ६ सितम्बर तक आयोजन किया गया जिस में ४० टोली-नायकों ने ट्रेनिंग पाई। कैम्प का उद्घाटन श्री ब्रजमोहन लाल सक्सेना स्काउट कमिश्नर ने किया। कैम्प के अन्तिम दिन वाली रात्रि को श्री दीनदयालुजी शास्त्री, एम० एल० ए० प्रधान स्थानीय हि० स्काउट असोसियेशन भी कैम्प में रहे। श्री शान्ति स्वरूप गर्ग ने कैम्प का संचालन किया। श्री रतन लाल जी वासुदेव श्री रतन सिंह जी, श्रीरामनारायण जी ने विशेष सहायता पहुँचाई।

ता० ८ को स्कूल छात्रों का निरीक्षण किया गया और ता० १२ सितम्बर को एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। श्री कपूर डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा विभाग ने सभापति का पद ग्रहण किया रैली का कार्यक्रम बहुत ही मनोरंजक रखा गया था। ७०० स्काउटों से ऊपर इस बार रैली में उपस्थित थे।

शाहजहाँपुर

दिनांक ३ सितंबर को राजकीय विद्यालय में एक बृहत् 'स्काउट रैली' की गई, जिसमें स्थानिक इस्लामिया हायर सेकेंड्री स्कूल, मिशन हायर सेकेंड्री स्कूल, हिंदू कालेज तथा अन्य विद्यालयों के स्काउट उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। दो घंटे के व्यस्त कार्य-क्रम के पश्चात् रैली समाप्त की गई। इस अवसर पर जिला स्काउट कमिश्नर डा० जयनारायण सक्सेना ने संक्षिप्त भाषण द्वारा स्काउटिंग के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

निश्चय किया गया कि भविष्य में प्रतिमास एक स्काउट रैली के क्रम का आयोजन किया जाय।

हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन अजमेर

असोसिएशन ने स्काउटों की साप्ताहिक रैली आयोजित करने का क्रम चालू करा दिया है। नगर की सारी स्काउट टोलियाँ प्रति रविवार को प्रातः कालीन रैली में सम्मिलित होती हैं। ड्रिल, स्काउट क्रैफ्ट, और 'स्पेशल इन्स्ट्रक्शन' के लिए दो घंटे का कार्य क्रम रहता है। रैली निश्चित समय पर प्रातः साढ़े छः बजे आरंभ होती है स्काउटों की सुविधा के लिए रैली का आयोजन प्रति सप्ताह एक ही स्थान पर नहीं किया जाता है, किंतु नगर के भिन्न भिन्न ग्राउंडों में उसका आयोजन होता है।

असोसिएशन के कार्य-वाहकों तथा प्रमुखों को असोसिएशन की गति-विधि से परिचित रखने के उद्देश्य से प्रतिमास की पाँचवीं तिथि को विवरण-पत्र प्रकाशित करने का नियम परिचालित किया गया है।

हमारा प्रकाशन

सुरुचिपूर्ण साहित्य का प्रकाशन हमारा पवित्र ध्येय है

कोमल पद—	पं० श्रीराम बाजपेयी	१।।)
ध्रुव पद शिक्षण		१।।।)
ड्रिल		१।।)
पब्लिक हेल्थ मैन		।।=)
गुरुपद शिक्षण	बा० विंद्राप्रसाद खत्री	१।।)
स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन—	श्री जानकीशरण वर्मा	१।=)
टोली विधि		१।।)
कैम्प फायर		१।)
आग बुझाने का हुनर		१।)
गांठ विद्या —	श्री भोलानाथ चौधरी	।।=)
स्काउटिंग द्वारा ग्राम सुधार—श्री डी०एल० आनन्दराव		।।=)
स्काउटिंग और समाज सेवा		।।=)
वनोपसेवन		१)
रचनात्मक कार्यक्रम		।।।)
राष्ट्रीय झंडा और उसका प्रयोग		।।)
गांवों को उन्नत बनाने की योजना (अंग्रेजी)		।=)
साम्प्रदायिक झगड़े और हमारा कर्त्तव्य		।=)
साम्प्रदायिक झगड़े और स्काउटों का कर्त्तव्य		।–)
खेल—श्री० डी० एल० आनन्दराव तथा पं० मुरारी लाल शर्मा		१।।)
सुनहरा प्रभात—श्री अमरनाथ गुप्त		१।)
देश के गीत		१।)
हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन का इतिहास—	श्री पुरुषोत्तम-लाल चूड़ामणि	।।)
ग्रामीण भारत		।।=)
प्रौढ़ शिक्षा प्रसार—श्री सीताराम जायसवाल		१)
ममोमा चार्ट		।=)
नक्षत्र दर्पण		१।।)
अन्वेषण की कहानियाँ		१।)
रामायण (अंग्रेजी में)		१)
ग्राम समस्याएँ		।।=)
घर की आग		१।)
रोवर स्काउटिंग (गाँवों के लिए)		=)
रोवर स्काउटिंग (नगरों के लिए)		=)
हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन की नियमावली		।=)
स्काउटिंग क्या है ?—डा० मोहनसिंह मेहता		=)

हमारी नई पुस्तकें

नीचे दी हुई पुस्तकें प्रेस में हैं, बहुत शीघ्र छपकर तैयार हो जायंगी :—

(१) जगमगाते तारे—(हिन्दी)

प्रिंसिपल अमरनाथ गुप्त के चौदह एकांकी नाटकों का संग्रह। ये नाटक विशेषकर छात्रों के लिए लिखे गये हैं। इनमें हास्य और व्यंग्य की पुट है; ये नाटक देशभक्ति और विश्व-कल्याण की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। मूल्य केवल १।) रु०

(2) MEN OR ANGELS ? (ENGLISH)

A collection of life-sketches of great men and women of the world by eminent writers *e.g.*, Gandhiji by Mahadeva Desai.

The beautiful cover picture depicts a Scout looking towards the sky at the angelic figures of Gandhiji, Tagore, and Sarojni Devi.

These biographies provide inspiring reading.

Price Re. 1/- only.

हिन्दस्काउट कोआपरेटिव पब्लिशर्स लि०, यू० पी०,

इलाहाबाद।

हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, यू० पी०, द्वारा स्थापित

हिन्दस्काउट सहकारी प्रकाशन, लि०

इस समय तक ऊंचे दर्जे की अनेक पुस्तकें विभिन्न विषयों पर प्रकाशित कर चुका है। इसके कार्य का क्षेत्र दिनोंदिन बढ़ता चला जा रहा है।

इसके हिस्से खरीद कर लाभ उठाइये

कुल विकाऊ हिस्से १०,००० : एक हिस्से का मूल्य १०)

५) प्रार्थना-पत्र के साथ देने होते हैं। शेष ५) दो किश्त में प्रत्येक मास की दस तारीख तक लिए जायँगे। शेयर की पूरी रकम एक बारगी भी दी जा सकती है।

× × × ×

युक्त प्रान्तीय सरकार के शिक्षा विभाग के आदेशानुसार हमने दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी की पाठ्य पुस्तक "बेसिक रीडर भाग २"

छापी है। मूल्य ७ आने। पुस्तक हाथोंहाथ बिक रही है। हमारी बिक्री के क्षेत्र इलाहाबाद और झांसी डिवीजन हैं। पुस्तक विक्रेताओं को १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। आर्डर के साथ २५ प्रतिशत रुपया अवश्य आना चाहिए। शेष रकम वी० पी० द्वारा बिल्टी भेज कर वसूल कर ली जायगी।

हिन्द स्काउट सहकारी प्रकाशन को निम्नलिखित दो पुस्तकें हिमांचल प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा ७ और कक्षा ५ के लिए स्वीकृत की गई हैं।

"सुनहरा प्रभात"

यह एकांकी नाटकों का संग्रह है। बोलता जादू, दो तलवारें, पहला कदम, मौजीराम, विष की बेल, कीमिया आदि व्यंग तथा हास्य से पूर्ण रचनाओं को पढ़ कर आपका हृदय फड़क उठेगा। भारतीय युवकों के लिए इससे अच्छी दूसरी पुस्तक मिलना कठिन है। नाटक की शैली में लिखी होने के कारण स्कूल-कालेजों तथा अन्य युवक संस्थाओं में इनका अभिनय बड़ी सफलता से हो सकता है। स्काउटों के लिए तो यह विशेष उपयोगी पुस्तक है। मूल्य केवल १।)

"स्काउटिंग और समाज सेवा"

बालकों से लेकर वृद्धों तक के लिए और विशेष कर रचनात्मक कार्यकर्ताओं और समाज सेवियों के लिए यह अपूर्व पुस्तक है। विभिन्न प्रकार की समाज सेवा करने का पूर्ण ज्ञान इस पुस्तक के अध्ययन से प्राप्त हो सकता है। मूल्य ॥=)

प्रकाशक—श्रीयुत प्राणनाथ शर्मा, बी० ए०, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन, यू० पी०, इलाहाबाद।

मुद्रक—श्रीयुत मगनकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद।

विषय-सूची

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्त नाशनम्॥

यू० पी०, सी० पी० तथा बरार, बिहार, अलवर, बीकानेर, ग्वालियर, जयपुर और होलकर
[राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत]

वर्ष ३०] जनवरी १९५० [संख्या १

२६ जनवरी !

हमारा राष्ट्रीय महोत्सव

हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन के नेशनल हेडक्वार्टर्स के निर्देशानुसार आपका ध्यान २६ जनवरी, १९ ५० को मनाये जाने वाले 'भारतीय स्वाधीनता दिवस' के प्रति आकर्षित किया जाता है। इस दिन हमारा देश एक 'पूर्ण जन-तंत्र' बन जाता है। यह हमारे लिए एक सौभाग्य और गौरव का अवसर है। अतः हमें अपने इस महान दिवस को अत्यन्त हर्ष-पूर्ण दृश्यों के मध्य समुचित रूप से मनाने में अपना गर्व समझना चाहिए।

जिला स्काउट असोसिएशनों से अनुरोध है कि वे 'स्वाधीनता-दिवस' का उपयुक्त कार्य-क्रम निर्धारित कर उसकी सूचना अपने जिला असोसिएशनों से संबद्ध समस्त स्काउट दलों को दे दें ताकि वे इस उत्सव को पूर्ण उत्साह और लगन से मनावें। उन्हें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि इस उत्सव को मनाने के अवसर पर हमारे स्काउट गण स्थानिक सरकार की ओर से आयोजित कार्य-क्रम में अपना पूर्ण सहयोग दें।

एकीकरण-नेशनल काउंसिल की बैठक

श्री प्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर

भारत की विभिन्न स्काउट संस्थाओं के एकीकरण के संबंध में अभी तक जो कार्यवाही हुई है उस पर विचार करने के उद्देश्य से हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन की अखिल भारतीय समिति की बैठक ३ व ४ दिसम्बर १९४९ को इलाहाबाद में, यू० पी० प्रान्तीय असोसिएशन के हेडक्वार्टर्स में हुई। इस समिति की कार्यवाही में निम्नलिखित प्रतिनिधि उपस्थित हुए—

माननीय डाक्टर हृदयनाथ कुंज़रू, नेशनल कमिश्नर; पं० श्रीराम बाजपेयी, नेशनल आर्गेनाइज़िंग कमिश्नर; श्रीमती प्रभा बनर्जी, श्रीमती फिलोस मेहरोत्रा, श्रीमती शीला कपूर, श्री बी० जी० राव, श्री मदन मोहन, श्री एम० ओ० बार्की, श्री अमरनाथ गुप्त, श्री वीर देव 'वीर', श्री साधूराम, श्री पृथ्वी चन्द पुरी, श्री बेनी प्रसाद गुप्त, श्री एम० एन० नाडू, श्री डी० पी० जोशी, श्री दौलतराम अस्थाना, श्री एम० मुनीर खां, श्री एम० बी० डोंडे, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री भगवान सहाय, श्री एल० एन० चौधरी, श्री ए० पी० पडोने, श्री देवनाथ सहाय, श्री राजेश्वर प्रसाद सिंह, श्री कैलाश प्रसाद सिन्हा, श्री के० जी० वैद्यनाथन, श्री एल० एस० पांडे।

अधिवेशन की कार्यवाही राष्ट्रीय गान के साथ आरम्भ हुई और सर्वसंमिति से माननीय कुंज़रू जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् उपस्थित सदस्यों ने एक दूसरों को अपना-अपना परिचय कराया।

सभापति ने अपना भाषण देते हुए स्काउट संस्थाओं के एकीकरण के संबंध में जो कुछ भी कार्यवाही अब तक [illegible]ई उस पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला। तदन्तर २२ [illegible]स्त, १९४९ को दिल्ली में हुई सभा की कार्यवाही की [illegible]ई। नेशनल कमिश्नर द्वारा स्वीकृत निम्न-[illegible]ष्टी की गई:—

[illegible]हेडक्वार्टर्स के १९४७-४८ और १९४८-४९ [illegible]य का ब्योरा।

[illegible]क्वार्टर्स के १९४८-४९ और १९४९-५० के आय-व्यय के अनुमानित (बजट)

(ग) हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के १९४७-४८ और १९४८-४९ के कार्य के वार्षिक विवरण।

निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

१—नेशनल काउंसिल की २२ अगस्त, १९४९, को दिल्ली की बैठक में किये गये निश्चयों तथा नेशनल हेडक्वार्टर्स द्वारा तदनुरूप की गई कार्रवाई की पुष्टि की जाय।

२—(अ) नेशनल हेडक्वार्टर्स का सन् १९४७-४८ तथा सन् १९४८-४९ का आय-व्यय का ब्योरा। (ब) सन् १९४८-४९ तथा १९४९-५० का संभावित बजट। (स) हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन की सन् १९४७-४८ तथा सन् १९४८-४९ की वार्षिक रिपोर्ट की पुष्टि की जाय।

३—नेशनल काउंसिल की सम्मति में नेशनल आर्गेनाइजिंग कमिश्नर स्वभावतः दो चीफ कमिश्नरों के पदों तथा परामर्शों के प्रति आस्था रखते हुए भी केवल नेशनल कमिश्नर के प्रति ही वह पूर्णतः उत्तरदायी रहेगा। काउंसिल इस राय का सर्वथा विरोध करती है कि नेशनल आर्गेनाइजिंग कमिश्नर सर्व प्रथम दो विभागों के चीफ कमिश्नरों के प्रति उत्तरदायी रहे; क्योंकि ऐसा होना लड़कों और लड़कियों के संगठित असोसिएशनों की उस प्रकृति के सर्वथा विरुद्ध होगा जो कि हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन का आधारभूत सिद्धान्त है; और यह एकीकरण-समिति के उन दोनों निश्चयों के भी विरुद्ध होगा जो दिसंबर १९४८ तथा अप्रैल १९४९ में सब पार्टियों की सहमति से स्वीकृत किये गये थे।

४—नेशनल काउंसिल ब्वाय स्काउट असोसिएशन की उन शर्तों पर खेद प्रकट करती है जिनके अनुसार वह अपने वैतनिक कर्मचारियों के लिए सम्मिलित असोसिएशन में भी असाधारण सुरक्षाओं के लिए हठ करता है, जब कि जून, १९४८ में हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन के प्रतिनिधियों ने ब्वाय स्काउट असोसिएशन के
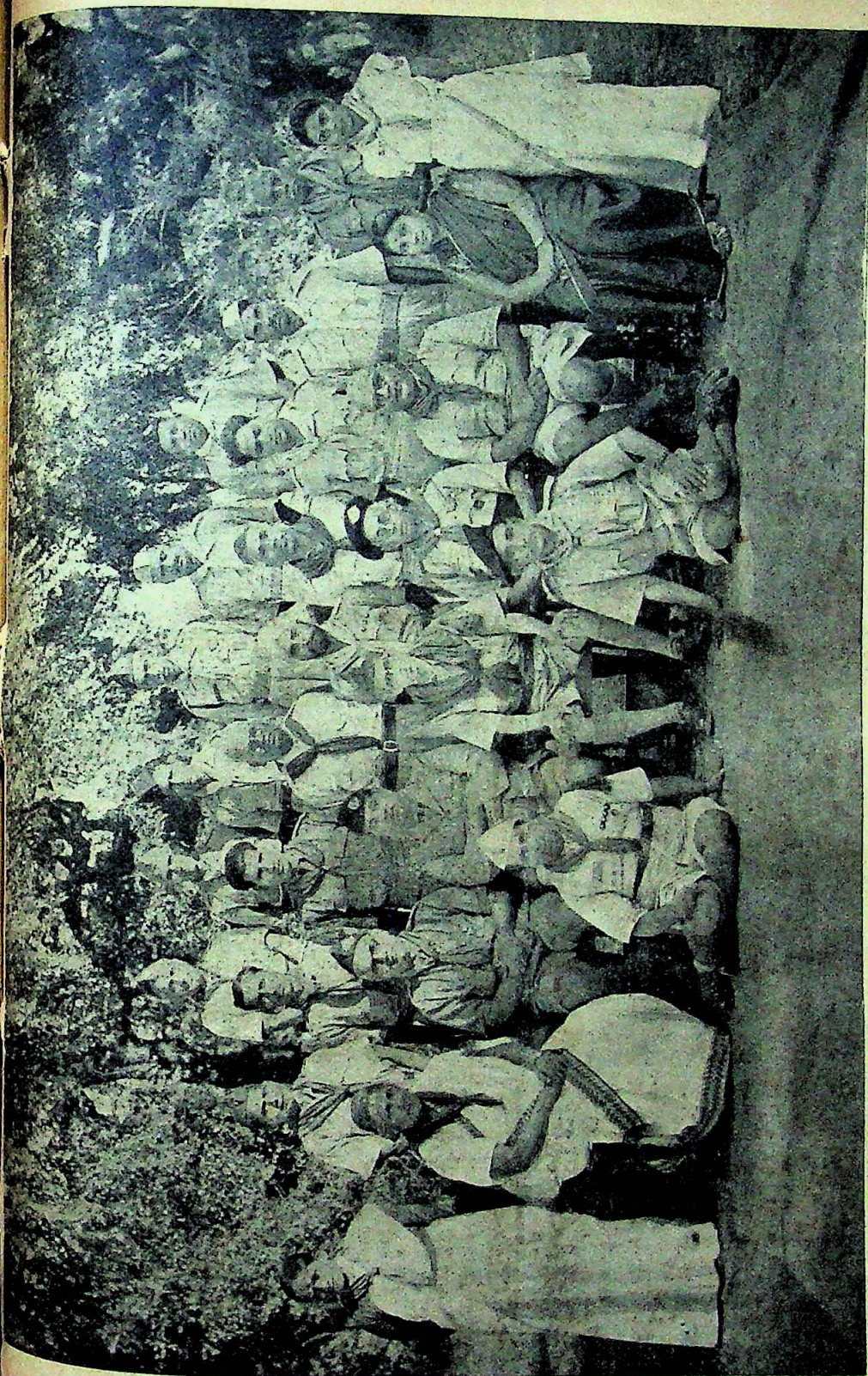
१—डा० एम० एन० नातू, पूना; श्री डी० पी० जोशी, बम्बई; श्री पृथ्वीचन्द पुरी, पंजाब; श्री देवनाथ सहाय, विहार; श्री कैलाश प्रसाद सिंह सिनहा, विहार; डा० पडोले, मध्यप्रान्त, बरार।

२—श्री के० जी० वैद्यनाथन, बम्बई; श्री राजेश्वर प्रसाद सिंह, बनारस स्टेट; श्री मुनीर खाँ अजमेर; श्री वेनी प्रसाद गुप्त, बनारस; सरदार लक्ष्मण सिंह, बम्बई; श्री एम० ओ० बार्की, गोरखपुर; श्री भगवान दास, आबू रोड; श्री लक्ष्मी नारायण चौधरी, विहार; श्री दौलतराम अष्ठाना बस्ती।

३—श्रीमती सरला शंकर, इलाहाबाद; श्रीमती प्रभा बनर्जी, इलाहाबाद; श्री एम० ओ० डांडे बम्बई; श्री वी० जी० राव, बम्बई; डा० हृदयनाथ कुँजरू, इलाहाबाद; पंडित श्रीराम बाजपेयी, इलाहाबाद; श्री मदनमोहन दिल्ली; श्रीमती शीला कपूर, पंजाब; श्रीमती सी० मोहिनी, इलाहाबाद।

प्रतिनिधियों के इन सुझावों पर अपनी सहमति दे दी थी कि आगामी तीन वर्ष के लिए ब्वाय स्काउट असोसिएशन के सेंट्रल हेडक्वार्टर्स के वैतनिक कर्मचारियों के वेतन व सर्विस की शर्तों में कोई परिवर्तन न होगा।

हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन के प्रतिनिधियों ने उक्त सुझावों पर इसलिए अपनी स्वीकृति दे दी थी कि ब्वाय स्काउट असोसिएशन के कर्मचारियों के प्रति उनकी कोई रूढ़ धारणा नहीं है और उनका विचार न्याय-संगत तथा उचित बातों के लिए व्यवहार में कदापि भेदभाव-पूर्ण नहीं है। नेशनल काउंसिल इस बात पर खेद प्रकट करती है कि स्काउट के नाते दी हुई उसके प्रतिनिधियों की उस स्वीकृति को अपर्याप्त समझा गया और अब ब्वाय स्काउट असोसिएशन अपने तथा कथित कर्मचारियों के आगामी तीन वर्षों के वेतन के लिए एक लाख अस्सी हज़ार रुपये की एक निधि सुरक्षित रखने का हठ करता है।

नेशनल काउंसिल की सम्मति में इस प्रकार का प्रबंध न केवल इस संगठित संस्था के कार्य-निर्वाह में बाधा देगा और हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन के कर्मचारियों में असंतोष पैदा करेगा, बल्कि प्रान्तों में भी सर्वत्र कठिनाइयां उत्पन्न कर देगा। अनुशासन को बनाये रखने के लिए तथा असोसिएशन के सहज कार्य-संचालन के लिए यह ठीक होगा यदि ब्वाय स्काउट असोसिएशन के सेंट्रल हेडक्वार्टर्स के कर्मचारी हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन के प्रतिनिधियों द्वारा दिये गये विश्वास से संतुष्ट न हों तो उनके सम्मुख यह विकल्प उपस्थित किया जाता है कि वे तीन वर्ष का वेतन लेकर अवकाश ग्रहण कर लें।

यदि उपर्युक्त कठिनाइयों पर ध्यान न देकर ब्वाय स्काउट, असोसिएशन अपनी मांग स्वीकृत न होने की अवस्था में संगठित होने के लिए तैयार नहीं है तो नेशनल काउंसिल अनिच्छापूर्वक भी उनके साथ सहमत हो जायगी।

५—नेशनल काउंसिल इस विचार से कि शीघ्र एक सम्मिलित असोसिएशन स्थापित हो जाय, एकीकरण समिति द्वारा स्वीकृत प्रस्तावित असोसिएशन के स्मरण-पत्र तथा नियम व व्यवस्था से इस वस्तुस्थिति को ध्यान में रखते हुए सहमत है कि वे अत्यधिक वाद विवाद के पश्चात् विभिन्न विचारधाराओं के समझौते का प्रतिनिधित्व करते हैं।

६—नेशनल काउंसिल अनुभव करती है कि एकीकरण का प्रश्न लंबा चला जा रहा है; अतः काउंसिल की यह निश्चित राय है कि अधिकतम ३१ मार्च, १९५० तक यह प्रश्न अंतिम रूप से हल हो जाना चाहिए।

७—काउंसिल, इस दृष्टिकोण से कि देश के लिए एक सम्मिलित संगठित स्काउट संस्था का अविलंब स्थापित होना अत्यंत आवश्यक और वांछनीय है, नेशनल कमिश्नर को अधिकार देती है कि वे इस परिणाम को प्राप्त करने के लिए जो कार्रवाई उचित समझें उसे प्रयोग में लावें।

बृहत्-स्काउट रैली

नेशनल कमिश्नर तथा नेशनल काउंसिल के सदस्यों के स्वागतार्थ यू० पी० असोसिएशन की ओर से इलाहाबाद के स्काउटों की एक बृहत्—रैली ४ दिसम्बर को प्रातः-काल श्रीमान् नेशनल कमिश्नर के सभापतित्व में हुई। पी० ए० सी० के कमाण्डेन्ट की कृपा से आए हुए पी० ए० सी० के बैंड ने रैली की शोभा को चार चाँद लगा दिये। इस रैली में लगभग १२०० ब्वाय तथा गर्ल स्काउट्स ने भाग लिया। एक दल बस्ती से और एक दल गोरखपुर (फरेन्दा) से भी इस अवसर पर पहुँच गया था। निम्न-लिखित दलों ने इस रैली में सम्मिलित होकर अपने कार्य का प्रदर्शन किया :—

द्वारका प्रसाद गर्ल्स इन्टर कालेज, हिन्दू महिला विद्यालय इन्टर कालेज, जगततारण गर्ल्स हायर सैकंड्री स्कूल, इण्डियन गर्ल्स स्कूल, गवरनमेन्ट नार्मल गर्ल्स स्कूल, महिला शिल्प भवन; बालचर विभाग में निम्नलिखित दलों ने भाग लिया म्यूनिसिपल बोर्ड के स्काउट्स, ऐंग्लो इन्टर कालेज, कायस्थ पाठशाला इन्टर कालेज, केसरवानी हायर सैकंड्री स्कूल, अग्रवाल विद्यालय इन्टर कालेज, कर्नलगंज हायर सैकंड्री स्कूल, अग्रसेन हायर सैकंड्री स्कूल, न्यू इंगलिश स्कूल, सी० ए० वी० हायर सैकंड्री स्कूल, मिशन ब्वायज़ स्कूल।

इन दलों के अतिरिक्त नेशनल हेडक्वार्टर्स ग्रुप और प्रान्तीय हेडक्वार्टर्स ग्रुप भी रैली में सम्मिलित थे।

रैली का संचालन श्रीमती फिलीस मेहरोत्रा, जिला गर्लस्काउट कमिश्नर, इलाहाबाद ने किया। श्री ईश्वर स्वरूप, संयुक्त मंत्री, जिला असोसियेशन इस रैली के फील्ड डाइरेक्टर थे और पं० प्राणनाथ शर्मा सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर ने रनिंग कमैन्ट्री की। रैली की पूर्ण रूप रेखा और प्रोग्राम पं० श्रीराम वाजपेयी नेशनल आर्गनाइजिंग कमिश्नर ने तैयार किया था।

नेशनल कमिश्नर और नेशनल काउंसिल के सदस्यों के रैली-मैदान में प्रवेश करते ही रैली कमांडर के आदेश पर समस्त स्काउट दलों ने सलामी देते हुए उनका स्वागत किया। बैंड ने भी सलामी बजाई। तत्पश्चात् नेशनल कमिश्नर महोदय ने परेड का निरीक्षण किया। नेशनल काउंसिल के सदस्य भी २-२ की लाइन में 'स्लो मार्च' पर उनके पीछे-पीछे चलते थे। यह दृश्य देखने से ही सम्बन्ध रखता था। निरीक्षण समाप्त होते ही परेड ने नेशनल-कमिश्नर के लिए 'हर्ष-हर्ष जय' के सिंहनाद लगाये। फिर विभिन्न स्काउट दलों ने शारीरिक व्यायाम, लाठी, लेजिम; ब्रतचारी, नृत्य, ड्रिल पिरामिड बनाना, मार्चिंग, स्काउट खेल, प्राथमिक चिकित्सा आदि के आकर्षक प्रदर्शन दिखलाए। बस्ती और करेन्दा के दलों के कार्य विशेषतः सराहनीय थे।

अन्त में एक 'अज्ञात सैनिक' का दृश्य पेश किया गया। यह दृश्य पं० श्रीराम वाजपेयी ने काठियावाड़ में देखे हुए एक अभिनय के आधार पर असोसियेशन के सहायक शिक्षक श्री दयाशंकर भट्ट से हिन्दी में तैय्यार करवाया था। श्रीमती सी० मोहिनी, संयुक्त नेशनल आर्गनाइजिंग कमिश्नर ने इसके संगीत तथा अभिनय को द्वारकाप्रसाद गर्ल्स इन्टर कालेज की गर्ल्स स्काउट्स् की सहायता से इतना वास्तविक रूप देकर प्रदर्शित किया कि देखने वालों की आँखें सजल, कंठ अवरुद्ध और हृदय विकल हो गये। इसका प्रभाव बहुत ही गहरा पड़ा।

अन्त में नेशनल कमिश्नर ने अपने भाषण में सब स्काउटों का ध्यान उस 'अज्ञात सैनिक' की ओर आकर्षित किया जिसका कि दृश्य अभी उन्होंने देखा था। माननीय कुंजरूजी ने कहा कि यदि प्रत्येक स्काउट दिखावे को छोड़कर स्काउटिंग के असली महत्व को समझ कर इसे अपनाता है तो वही इस आन्दोलन के असली महत्व का लाभ उठा सकता है। प्रत्येक स्काउट को 'अज्ञात-सैनिक' की भांति अपने अन्दर ऐसे सेवा के भाव उत्पन्न करने चाहियें कि वह सदा दूसरों की भलाई और सेवा का अवसर तलाश करता रहे और निस्वार्थभाव से परोपकार के कार्य में अपना तन-मन और धन लगा दे। जिसका कोई नहीं है उसका स्काउट स्वजन बनकर साथ दे। इस प्रकार निस्वार्थ सेवा से ही कोई व्यक्ति ऊंचे आदर्श को प्राप्त कर सकता है। दूसरों के लिए जान देने से वह सब का स्वजन और लाडला बन जाता है और यश और कीर्ति को प्राप्त होता है।

नेशनल कमिश्नर ने बिना पहिले से 'रिहर्सल' किये रैली के आयोजन में इतनी बड़ी सफलता प्राप्त करने पर रैली के संयोजकों तथा संचालकों को हार्दिक बधाई दी और जो प्रदर्शन इस रैली में दिखाये गए उनकी बड़ी प्रशंसा की। उनका यह विश्वास था कि सभी उपस्थित सज्जन इस रैली से बहुत प्रभावित हुए।

अज्ञात सैनिक

[श्री दयाशंकर भट्ट]

१

सत्य, अहिंसा के अग्रदूत, मातृभूमि के सैनिक सपूत
पड़े हुये हैं समराङ्गण में, आहत, क्षत-विक्षत, उन्मुक्त।

२

रक्त टपकते हुए कटे शिर झोलों में रख समर-सेविका
शव-परिचय के चिन्ह शेष वे, संचित करतीं समर-सेविका।

३

मरणासन्न महायात्रा हित उद्यत वीरों की देहों पर
करुणा की प्रतिमाएँ सकरुण अश्रु बहातीं समर-सेविका।

४

चलीं ढूँढ़ने निज प्रियतम, सुत और सहोदर कुल-ललनाएँ
निज-निज प्रियजन के ढिग जाकर 'विदा-गीत' गातीं ललनाएँ।

५

माँ की ममता, प्रेम पत्नि का, भगिनी का सौहार्द्र-सनेह
उस वीभत्स श्मशान भूमि को बना रहे नैसर्गिक गेह।

६

और उस रण-शिविर के मध्यस्थ था 'अज्ञात सैनिक'
एक, शायी समर-शैया पर किसी का लाडला।

७

था न जिसके निकट कोई सुहृद, प्रियवर, बंधु, परिजन
देश-गौरव पर निछावर था किसी का लाडला।

८

वीर-प्रसविनि, वीर माता, वीर भगिनी देश की तब
द्रवित आँचल, आर्द्र नयनों से चलीं तत्क्षण निकट सब।

९

मूक उस एकान्त साधक का हृदय से कर समादर
आर्त हो बोलीं विभाएँ भेंटकर निज अश्रु सादर।

१०

हे बटोही ! आँसुओं के अर्घ्य स्वागत कर रहे हैं'
पवन, जल, आकाश, पृथ्वी, अग्नि, स्वागत कर रहे हैं

११

प्रिय, यशः-सौरभ तुम्हारा कर रहा सुरभित दिशाएँ
क्यों तुम्हें कर्पूर-चंदन से सुगन्धित कर दिखाएँ!

१२

श्वेत-उज्वल वस्त्र से प्रिय, शव ढकें क्यों हम तुम्हारा !
रक्त से रञ्जित कलेवर, वीर-भूषण है तुम्हारा ।

१३

द्रवित घावों से तुम्हारे बह रहा है रक्त प्रतिपल
रक्तटीका ! रक्तज्वाला ! रक्त आभा ! व्यक्त प्रतिपल

१४

आंसुओं में आज बहनों के नहालो वीरवर तुम !
ज्वलित-ज्वाला में समाहत 'चिर-विदा' लो वीरवर तुम !

१५

मुक्त हे ! निर्बन्ध हे ! निर्द्वन्द्व हे ! निर्लिप्त ! प्रिय जन !
पा गया अमरत्व-पद, करके निछावर प्राण, प्रियतन ।

१६

था कभी नश्वर जगत में जो 'किसी का लाडला' !
आज इस विधि हो गया है वह 'सभी का लाडला' ।

[७वें पृष्ठ का शेष भाग]

लीजिए। बहुत से पिता यह नहीं बता सकते कि उनका बच्चा किस श्रेणी में पढ़ता है। बच्चा भी उनकी लापरवाही का भरसक लाभ उठाने की कोशिश में रहता है। वह जानता है कि उसके माँ बाप को कभी उसके अध्यापकों के सम्पर्क में आने की फुर्सत नहीं मिलेगी। तभी तो वह स्कूल न पहुँच कर रास्ते में ही खेल तमासे देख कर समय बिता देता है। इसमें हर्ज ही क्या है। मास्टर साहब पूछेंगे तो कह देंगे कि घर पर काम था, माँ ने रोक लिया।

हमारे शहरों में कितने ही बच्चे इन्हीं बातों का अनुसरण करते हैं पर फिर भी हम कभी कोशिश नहीं करते कि इसको सुधारा जाए। यह तो तभी हो सकता है जब हम यह सोच लें कि यह बच्चे हमारे पास हमारे प्यारे देश की धरोहर हैं और देश जब भी चाहे इनकी मांग कर सकता है।

अपना देश

श्रीमती सी० मोहिनी, संयुक्त राष्ट्रीय प्रचार कमिश्नर बालिका विभाग

हां, इसे हम अपना देश कहते हैं। अपना ही तो है अब। क्या हुआ जो पहले दूसरों का था! क्या हुआ जो पहले हम दास थे! लेकिन आज तो हम दास नहीं हैं—आज अपने ही नेता अपने देश पर राज्य करते हैं। लेकिन...शायद वर्षों से ग़ैरों का होने के कारण हम आज भी इसे अपना नहीं समझ पाते। यह जानते तो हैं कि हम ही देश के गौरव हैं। हमारे बड़े-बड़े नेता रोज़ यही तो बताते हैं लेकिन हम कभी इसे अनुभव करने की कोशिश नहीं करते, कभी इसकी गहराईतक पहुँचने की कोशिश नहीं करते। करें भी क्यों और कैसे। बरसों से जो विष हमारे खून में घोला गया है उसे एक दिन में निकाल कर कैसे फेंक दें? तुम इसे विष कहते हो पर इसे चखते-चखते हम इसकी कड़वाहट को भूल गए हैं। इसीलिए तो हम कुकर्म करते हैं। इसीलिए तो हम अपनी सरकार को धोखा देते हैं। इसी लिए तो हम नेताओं के कहने को मज़ाक में उड़ा देते हैं। और क्यों न करें। कल तक हम दास थे। और आज...आज मालिक हैं। जब हमारे अनपढ़ नौकर हमसे बातों-बातों में कहते हैं कि, "भैया, इससे तो अंग्रेज का राज्य अच्छा था," तो शर्म और ग्लानि से हमारा सर नीचा क्यों हो? वह तो सरकार को ही बुरा कहते हैं न! वह बेचारे भोले भाले देहाती लोग क्या समझें कि हमारे रहते देश की हालत भला क्योंकर सुधर सकती है! अपना राज्य है फिर भी सरकार कहती है कि बिना टिकट खरीदे गाड़ी में न बैठो। भला ऐसी भी कोई बात है! लेकिन हम भी तो अपनी बात के पक्के हैं। जब कोई रेलवे कर्मचारी आता दिखाई देता है तो अपने राम वहां से ऐसे खिसक जाते हैं जैसे गधे के सिर से सींग। अजी आप तो राशन के मामले में भी बड़े असन्तुष्ट से दिखाई देते हैं। हमें देखिए, रोज़ हलुवा व खीर बना के खाते हैं। इसमें कठिनाई ही क्या है? दो की जगह चार आदमी राशन कार्ड में लिखवा दिए और राशन के कर्मचारियों को दावत खिला दी बस—अपनी फिर पांचों उँगलियाँ घी में हैं।

सच, वास्तव में यदि देखा जाए तो अधिकतर लोग इसी वृत्ति के आप को मिलेंगे। यह हैं हमारी भारत माता के सपूत जिन पर हमारे देश का भविष्य निर्भर है। यह सच है कि ऐसे लोगों की प्रवृत्ति को बदलना कोई खाला जी का घर नहीं है पर ऐसा कौन सा कार्य है जिसे हम चाहने पर भी न कर सकें। लेकिन इसके लिए पहले हमें अपने आप को बदलना होगा। यदि हममें से एक-एक नागरिक यही सोचे कि—"इस काम का बीड़ा मेरे ही कंधों पर है। मुझे ही दूसरों को रास्ता बताना है। यदि मैं अपने दोष त्याग दूं तो मुझे देख कर सभी अपने दोष त्याग देंगे।"—तो कुछ ही वर्षों में हमें यहां की दशा बहुत बदली हुई नज़र आएगी।

हमारे देश के जितने भी अध्यापक व अध्यापिकाएँ हैं वह तो बड़े भाग्यशाली हैं। वह सचमुच में अपना उदाहरण दे के अपनी जाति के लाखों बच्चों के जीवन अच्छे सांचे में ढाल सकते हैं। और यही बच्चे आगे जा के बुराइयों के विरुद्ध एक भारी आन्दोलन चला सकते हैं। यही बच्चे हमारी जाति की नींव हैं। जैसी नींव होगी वैसा ही मकान बनेगा, कोमल हरी डाल को जिधर चाहे मोड़ लो। शक्ति व गुण तो ईश्वर ने सभी को दिए हैं पर उनका उपयोग कैसे हो या उनको बढ़ाया कैसे जाए, केवल यही सीखना बाकी रह जाता है। और यह काम सिवाय शिक्षक के और कौन भली प्रकार कर सकेगा। यह ठीक है कि माता पिता का सहयोग इसमें बहुत हद तक सहायक हो सकता है।

अब जरा आजकल के माता पिता को भी देख

(पृष्ठ ६ पर)

जादू का खिलौना

श्री अमरनाथ गुप्त, एम० ए०, एल० टी०

पहला दृश्य

[बाजपेयी जी अपने आफ़िस में बैठे एक पत्र लिख रहे हैं। मेज़ पर कुछ कागज़ रखे हैं। चारों ओर अलमारियों में पुस्तकें सजी हैं।]

बाजपेयी जी—(स्वयं) यह पत्र भी समाप्त हुआ। वर्मा जी की बीमारी ने परेशान ही कर दिया है, भगवान करे वे शीघ्र चंगे हो जायें, तो अपना काम संभालें।

[सुशील का प्रवेश]

सुशील—बाबाजी, क्या नरेन्द्र के घर चलोगे ?

बाजपेयी जी—हां ! उसके पिता के देहान्त ने उसे निस्सहाय ही बना दिया है। परन्तु एक स्काउट को कठिनाइयों का सामना वीरता और धैर्य से ही करना चाहिये।

सुशील—सुना है आज उसके पिता की वसीयत भी पढ़ी जायेगी।

बाजपेयी जी—अच्छा ! उसके पिता ने, पैसा तो काफ़ी छोड़ा है।

सुशील—छोड़ा तो है, परन्तु कुछ काल से वे एक स्वामी के चक्कर में पड़ गये थे।

बाजपेयी जी—कौन स्वामी ?

सुशील—एक सर घुटा सा है, अरुण उसके बारे में अधिक जानता है।

बाजपेयी जी—(पुकारते हैं) अरुण, अरे अरुण !

अरुण—(पास के कमरे से) आया बाबा जी।

[अरुण का प्रवेश]

बाजपेयी जी—तुम नरेन्द्र के घर गये थे ?

अरुण—हां गया था।

बाजपेयी जी—वहां किन्हीं स्वामीजी को देखा था ?

अरुण—हां, स्वामी भोगानन्द तो वहां हर समय ही बने रहते हैं।

बाजपेयी जी—कौन हैं यह स्वामी भोगानन्द ?

अरुण—राम जानें यह कौन हैं ! अपने आपको विश्वशान्ति समाज का प्रधान बताते हैं।

बाजपेयी जी—क्या यू० एन० ओ० का ?

अरुण—यू० एन० ओ० का तो उन्होंने नाम भी न सुना होगा।

बाजपेयी जी—तो फिर यह विश्वशान्ति समाज क्या बला है ?

अरुण—यह स्वामीजी के मस्तिष्क की उपज है।

बाजपेयी जी—आख़िर इसका केन्द्र कहाँ है, और इसके सदस्य कितने हैं ?

अरुण—इसका केन्द्र है, नरेन्द्र के पिताजी का निवास-स्थान, और इसके सदस्य हैं स्वामीजी और उनके एक चेले, स्वामी मल्लानन्द।

बाजपेई जी—नरेन्द्र के पिताजी ने अपना निवास-स्थान इन्हें क्यों दिया ?

अरुण—आगये उनके चक्कर में ! पिछले युद्ध में नरेन्द्र के पिता कलकत्ते में थे। जब जापानियों के आक्रमण का भय हुआ, और कलकत्ते में भगदड़ पड़ी, तो नरेन्द्र के पिता को वहां से भागकर इलाहाबाद आने में बड़ी कठिनाई हुई। उस समय जो उन्होंने दृश्य देखा, उसका उन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उनके साथ यह स्वामीजी भी आये। जब ही से स्वामीजी ने नरेन्द्र के निवास-स्थान को अपना केन्द्र बनाया।

बाजपेयी जी—तो यों कहो कि स्वामी जी नरेन्द्र के पिता से चिपट गये।

सुशील—भूत की तरह।

अरुण—जब मैं नरेन्द्र के घर जाता, तो स्वामी जी के अवश्य दर्शन होते। घुटा सर, खरदरी दाढ़ी, गोल पेट, सब बताते थे कि वे पूर्णरूप से आनन्द का भोग कर रहे हैं।

बाजपेयी जी—उनका चेला कब आया ?

अरुण—उसे आये तो दो महीने ही हुए हैं, बस इधर नरेन्द्र के पिता बीमार पड़े, और उधर मल्लानन्द ने दर्शन दिये।

बाजपेयी जी—भाई इसमें तो कुछ गड़बड़ प्रतीत होती है।

सुशील—अब तो दोनों स्वामी अपनी राह लेंगे।

बाजपेयी जी—इतनी आसानी से तो जाने वाले प्रतीत नहीं होते ये पाखन्डी।

अरुण—हम तो नरेन्द्र के साथ हैं।

बाजपेयी जी—अवश्य! क्या समय है वसीयत पढ़े जाने का?

अरुण—संध्या के चार बजे।

बाजपेयी जी—साढ़े तीन तो बज ही गये।

सुशील—तो चलो बाबाजी।

बाजपेयी जी—(खड़े होते हुए) अच्छी बात है। वसीयत किसके पास है?

अरुण—उनके परिवार के वकील के पास।

बाजपेयी जी—कौन हैं?

अरुण—चतुर्वेदी जी!

बाजपेयी जी—आदमी तो भला है।

अरुण—बहुत भला!

सुशील—चलो न बाबा जी।

बाजपेयी जी—चलो

[तीनों का प्रस्थान]

दूसरा दृश्य

[नरेन्द्र के निवास-स्थान में एक कमरा। मेज़ कुर्सियाँ लगी हैं। एक ओर लोहे का सेफ़ है। मेज़ पर एक शीशे का पेपरवेट रखा है, उसका आकार एक मछली का है, जिसका पेट दोनों ओर से चिपका हुआ है। मछली की आँखे चमकीली हैं। कमरे में एक कुर्सी पर चतुर्वेदी जी बैठे हैं दूसरी पर नरेन्द्र, तीसरी पर नरेन्द्र की छोटी बहन कुमोदनी, चौथी पर नरेन्द्र के चाचा भोलानाथ।]

चतुर्वेदीजी—मैं इस परिवार का वर्षों से वकील रहा हूँ। साहू साहब ने एक महीना हुआ जब वसीयत लिखी थी। मेरा मशवरा उस वसीयत के खिलाफ़ था, परन्तु साहू साहब ने मेरी राय नहीं मानी। मैं यह सब बातें इसलिए बता रहा हूँ कि जब वसीयत पढ़ी जाये तो आप भली भाँति समझ लें कि उसमें मेरा हाथ बिलकुल नहीं है।

भोलानाथ—परिवार में कोई झंझट है न टंटा फिर वसीयत की क्या आवश्यकता पड़ी!

चतुर्वेदी—जब वसीयत पढ़ी जायेगी तो आप स्वयं ही समझ जायेंगे कि उसकी आवश्यकता क्यों पड़ी।

[बाजपेयी, अरुण और सुशील का प्रवेश]

भोलानाथ—आइए बाजपेयी जी आइए, यहाँ पधारिये।

बाजपेयीजी—[एक कुरसी पर बैठ कर और अरुण और सुशील को चौकी पर बैठने का इशारा करके] भाई नरेंद्र, तुम्हारे पिता की अकाल मृत्यु ने तुम्हें संकट में डाल दिया है। परन्तु जो भगवान संकट देते हैं वही उसका निवारण भी करते हैं।

नरेंद्र—आपकी शिक्षा-दीक्षा के अनुसार मैं भगवान में पूर्ण विश्वास रखता हूँ।

बाजपेयी जी—तो याद रखो कि भगवान ही तुम्हारा कल्याण करेंगे।

[भोगानन्द और भजानन्द का प्रवेश]

भोगानन्द—नमो नारायण, नमो नारायण, क्षमा कीजियेगा, भगवत भजन में कुछ देर हो गई।

बाजपेयी जी—क्या आप ही का नाम भोगानन्द है?

भोगानन्द—जी! नमो नारायण, नमो नारायण

बाजपेयी जी—अच्छा जो द्वार आपने खोला है उसे तनिक बन्द कर दीजिये। [अरुण और सुशील मुस्कराते हैं, स्वामी जी पहले ही झटके में चौकड़ी सी भूल जाते हैं, और उनकी अकड़ को ठेस पहुँचती है। द्वार बन्द करके वे फिर एक कुर्सी पर बैठ जाते हैं, भजानन्द, चौकी पर सुशील के पास बैठते हैं।]

चतुर्वेदी—स्वामी जी, सेफ़ से वसीयत निकालने के लिए चाबी दे दीजिये।

बाजपेयी जी—क्या चाबी स्वामीजी के पास है?

चतुर्वेदी—एक उनके पास, और एक मेरे पास।

बाजपेयी जी—स्वामीजी आपके पास चाबी होने का मतलब है कि वसीयत में आपको दिलचस्पी है।

भोगानन्द—(आँख नचाकर, रुखाई और गर्व से) हाँ। है। नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—आपको भी कुछ रक़म दी गई है।

भोगानन्द—(अकड़ कर) जी बहुत काफ़ी! नमो नारायण!

चतुर्वेदी—भाइयो, अब वसीयत पढ़ी जानी चाहिये।

बाजपेयी जी—जब आप साहू साहब के सम्बन्धी नहीं हैं तो यह रक़म आपको उन्होंने क्यों दी।

भोगानन्द—संस्था के लिए-विश्वशान्ति समाज के लिए। नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—कितने सदस्य हैं समाज के?

भोगानन्द—आपको मतलब? नमो नारायण, नमो नारायण!

बाजपेयी जी—जी हाँ है! मैं साहू साहब का मित्र हूँ।

भोगानन्द—और मैं साहू साहब का परम मित्र हूँ। नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—और नरेंद्र के?

भोगानन्द—(कुछ सकुचाकर) उसका भी! नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—तब ही तो आप उसकी पैत्रिक संपत्ति हड़प करना चाहते हैं।

भोगानन्द—यह संपत्ति विश्वकल्याण के लिए व्यय होगी? जिसका पुन्य, केवल साहू साहब की आत्मा को ही नहीं मिलेगा, वरन्, नरेंद्र भी उसका भागी होगा! नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—यह धन व्यय किस प्रकार होगा।

भोगानन्द—शान्ति यज्ञ में! नमो नारायण, नमो नारायण!

बाजपेयी जी—और इसे व्यय कौन करेगा!

भोगानन्द—(अकड़ कर) मैं! नमो नारायण नमो नारायण!

चतुर्वेदी—भाइयो, अब वसीयत पढ़ी जानी चाहिये।

बाजपेयी जी—अच्छा निकालिए वसीयत!

[सेफ़ खोलकर चतुर्वेदी जी वसीयत निकालते हैं]

भोगानन्द—चतुर्वेदी जी, इसे पढ़ दीजिये, ताकि मैं जा सकूँ। भगवान का भोग लगाना है। नमो नारायण, नमो नारायण।

चतुर्वेदी—[लिफ़ाफ़ा फाड़कर, और वसीयत खोलकर, पढ़ते हैं] "मैं, विश्वनाथ अपनी संपत्ति को इस प्रकार विभाजित करना चाहता हूँ:—

(१) मेरा निवास-स्थान स्वामी भोगानन्द जी के पास रहेगा, और वे उसे विश्वशान्ति समाज का केन्द्र बनायेंगे। नरेन्द्र और कुमोदनी को उसमें रहने का अधिकार होगा।

(२) मेरे धन में से ७० हजार रुपया स्वामी भोगानन्द जी को जो हमारे समाज के प्रधान हैं; और मेरे परम मित्र हैं, दिया जावे, इस धन से वे विश्वशान्ति का यज्ञ करें, जिससे विश्व में शान्ति की स्थापना हो और युद्ध के काले बादल सदा के लिए अपना मुँह काला करें।

(३) मेरा बाकी रुपया मेरे पुत्र नरेन्द्र को दिया जाये।

(४) कुमोदनी के विवाह का खर्च नरेंद्र के जिम्मे रहेगा।

× × × ×

भोगानन्द—(प्रसन्नता से) नमो नारायण, नमो नारायण!

नरेंद्र—वसीयत में अवश्य कुछ गड़बड़ की गई है। पिताजी ने मुझे विश्वास दिलाया था कि वे यज्ञ के लिए १० हज़ार रुपये देंगे, और बाकी मेरे और कुमोदनी के लिए छोड़ेंगे।

बाजपेयी जी—कुल रुपया कितना होगा?

भोलानाथ—७२ हज़ार!

बाजपेयीजी—चतुर्वेदी जरा देखूँ तो वसीयत!

चतुर्वेदी—(वसीयत देकर) यह लीजिये वसीयत!

बाजपेयी जी—(पढ़कर) क्या यह आपकी लिखी हुई है?

चतुर्वेदी—जी! केवल मैंने रक़म नहीं लिखी थी; वह, साहू साहब स्वयं लिखना चाहते थे।

बाजपेयी—क्यों?

चतुर्वेदी—अब मैं क्या जानू कि क्यों?

भोगानन्द—(पेट पर हाथ फेरते हुए) नमो नारायण, नमो नारायण!

बाजपेयी जी—[पेपरवेट से खेलते हुए, अक्षरों को देख रहे हैं। सहसा वे मछुजी के पेट को देखते हैं, दूसरी ओर वस्तुएँ, इस शीशे से बहुत बड़ी प्रतीत होती हैं। वे अब ७० का-शब्द भी शीशे से देखते हैं और अचंभे में हो जाते हैं।]

नरेंद्र—चतुर्वेदी जी, क्या यह वसीयत ठीक है?

चतुर्वेदी—हां बेटा, इसमें कोई कानूनी दोष नहीं है।

भोगानन्द—नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—[शीशे पर इस प्रकार निगाह गड़ाकर, मानो भविष्य के ग्रह देख रहे हों।] कैसा स्पष्ट परिचय देता है यह जादू का खिलौना।

भोगानन्द—आप ज्योतिषी हैं क्या महाराज! नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—जी हां मैं ज्योतिषी हूँ महाराज! हरे राम, हरे राम!

भोगानन्द—क्या देखते हैं आप शीशे में? नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—स्वामी भोगानन्द के लिए आपत्तियों का पहाड़, हरे राम, हरे राम।

भोगानन्द—झूंठ! नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयीजी—सच! भोगानन्द का भविष्य मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा है। यह क्या, भोगानन्द बन्दी हो गये, सिपाही उन्हें काल कोठरी में बन्द कर रहे हैं! हरे राम, हरे राम!

भोगानन्द—(गुस्से से) तुम मुझे डराना चाहते हो! मैं डरने वाला व्यक्ति नहीं हूँ महाराज! नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—मुझे किसी को डराना नहीं है। यह देखिये चतुर्वेदी जी, १ के अक्षर की टांग रबड़ से उड़ा दी गई है, और उसके स्थान पर ७ बना दिये गये हैं। हरे राम, हरे राम।

चतुर्वेदी—[शीशे से अक्षर देखकर] बिलकुल ठीक! यह देखिये बाजपेयी जी १ और ७ स्पष्ट दिखाई देते हैं।

बाजपेयी जी—एक बात और देखिये चतुर्वेदी जी, ७ का ऊपरी भाग एक रंग की स्याही का है और नीचे का भाग दूसरी स्याही का।

चतुर्वेदी जी—(फिर देखकर) हे भगवान्!

भोगानन्द—यह सब इस वकील की चालबाज़ी है।

चतुर्वेदी—(गुस्से से) मेरी? धब्बे रंगे गीदड़ तेरी यह मजाल। उलटा चोर कोतवाल को डांटे!

बाजपेयी जी—देखो अरुण भद्मानंदजी व्याकुल हो रहे हैं ज़रा इनकी जेब तो टटोलना।

[अरुण और सुशील जेब टटोल कर एक ताली निकालते हैं]

भद्मानन्द—मुझे क्षमा किया जाये महानुभावों, मेरा कोई दोष नहीं है, मैं तो भोगानन्दजी के हाथ की कठपुतली हूँ।

बाजपेयीजी—अच्छा सच बताओ कि यह सब किसने किया?

भद्मानन्द—भोगानन्द जी ने!

भोगानन्द—एक पवित्र आत्मा पर ऐसा लांछन! सर्वनाश हो जायेगा! नमो नारायण, नमो नारायण।

बाजपेयी जी—अच्छा भद्मानन्दजी, आप तो खिसको यहां से इस समय।

[भद्मानन्द का प्रस्थान]

भोगानन्द—मैं अब यहां नहीं रुक सकता, (उठता है)

बाजपेयी जी—देखो सुशील भोगानन्दजी को जाने का कष्ट न हो तुम और अरुण इन्हें स्काउट डोले में ले चलो।

[अरुण और सुशील, भोगानन्द को गंगा डोली करके ले जाते हैं]

चतुर्वेदी जी—इस पर मुकदमा चलाना चाहिए।

बाजपेयी जी—क्या लाभ! लोग हंसेंगे कि साहू साहब का अच्छा उल्लू बना। भोगानन्द तो दो-चार साल की काट कर फिर भोले-भालों को धोका देने के लिए आयेंगे।

चतुर्वेदी जी—जेल नहीं जायगा तो इसकी हिम्मत और बढ़ेगी।

बाजपेयी जी—पापी का मन बड़ा छोटा होता है। वह निकल भागेंगे, और हम हंसेंगे। वह यह समझेंगे कि छिपे रहो कहीं पकड़े न जाओ। हम यह समझेंगे कि नरक का कीड़ा किसी नरक कुंड में छिपा पड़ा है।

नरेंद्र—बाजपेयी जी, आज तो आपने बचा लिया मुझे और कुमोदनी को

बाजपेयी जी—अरे सब का कल्याण भगवान करते हैं। चल उनका प्रसाद बांट।

[सब जाते हैं।]

अमेरिकी कांग्रेस

अमरीकी लोक सभा में ४३५ तथा सेनेट ९६ में सदस्य हैं, जिन्हें जनता ने चुनकर भेजा है। इन दोनों सभाओं को मिलाकर कांग्रेस अथवा अमेरिकन पार्लियामेंट कहते हैं। कांग्रेस को विशाल अधिकार प्राप्त हैं किन्तु उसकी जिम्मेदारियाँ भी उतनी ही बड़ी हैं। इसके सदस्य बड़े प्रतिभावान हैं और विशिष्ट योग्यता वाले हैं, किन्तु वे सदा यह ध्यान रखते हैं कि उन्हें जन साधारण की कृपा से ही अधिकार प्राप्त हुए हैं। जो इसका ध्यान नहीं रखते वे अपने पद पर अधिक देर तक टिक भी नहीं पाते।

अमेरिका की केबिनट को प्रेसिडेन्ट स्वयं नियुक्त करता है, इसलिए वहाँ की केबिनेट प्रेसिडेन्ट के प्रति ही उत्तरदायी है। इसके विपरीत भारत में केबिनेट भारतीय कांग्रेस के प्रति उत्तरदायी होती है। प्रेसिडेन्ट अमेरिकी कांग्रेस के प्रति उत्तरदायी होता है। प्रेसिडेन्ट की केबिनेट के सदस्य सेक्रेटरी कहलाते हैं, जिन्हें अकसर कांग्रेस की समितियों के समक्ष अपनी रिपोर्ट पेश करनी पड़ती है। बड़े पदों की नियुक्ति तथा सन्धियों का सेनेट के दो-तिहाई मत से स्वीकृत होना आवश्यक है। केवल कांग्रेस को ही युद्ध की घोषणा करने का अधिकार है।

औसतन प्रति ३,००,००० नागरिक लोकसभा के एक सदस्य को चुनते हैं। चुनाव के लिए विशेष जिले बने हुए हैं। यह चुनाव प्रति दो वर्ष में होता है। सेनेट में ४८ राज्यों से ९६ सदस्य चुने जाते हैं, जिनमें से एक-तिहाई प्रति दो वर्ष में लोकसभा के चुनाव के साथ दुबारा निर्वाचित होते हैं।

धारा सभाइयों को वर्ष में लगभग ६ महीने सभा की कार्रवाइयों में बिताने पड़ते हैं। शेष ६ महीने का अधिकांश समय समितियों में सुनवाई करने और कानून बनने वाले विषयों के सम्बन्ध में छानबीन करने में बीतता है। अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं को जानने के लिए वे कुछ समय अवश्य निकालते हैं।

कांग्रेस के सदस्यों को १५,००० डालर प्रति वर्ष मिलता है, जिसमें २,५०० डालर के भत्ते पर उन्हें कोई टैक्स नहीं देना पड़ता। उन्हें कुछ विशेष सुविधाएँ और अधिकार भी पदेन प्राप्त रहते हैं।

कांग्रेस में स्थायी समितियों के रखने की एक नियमित परम्परा है। लोक सभा में १९ और सेनेट में १५ ऐसी स्थायी समितियाँ रहती हैं। ये समितियाँ ही प्रत्येक बिल पर कानून बनने से पहले छानबीन करती हैं। विभिन्न कार्य क्षेत्रों के लिये अलग-अलग समितियां हैं। कोई बिल कानून तभी बन पाता है जबकि उसे दोनों सभाएँ अलग-अलग पास करदें। मतभेद होने की दशा में दोनों सभाओं की संयुक्त समिति मतभेद दूर करने का हल निकाल लेती है और वह संशोधित बिल फिर दोनों सभाएँ पास करती हैं। प्रेसिडेन्ट के हस्ताक्षर के बिना कोई कानून कानून नहीं बन पाता। कांग्रेस की कार्रवाई को प्रसारित करने के लिए वहाँ कोई सरकारी सूचना विभाग नहीं है। यह कार्य प्रेस और रेडियो के २,००० प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है।

स्काउटिंग की महत्ता

प्रान्तीय शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर महोदय श्री सुधीर कुमार घोष के उद्गार

राजकीय प्रशिक्षण विद्यालय आजमगढ़, बनारस में हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन संयुक्त प्रान्त, इलाहाबाद के रीजनल स्काउट मास्टर श्री एच० विलियम्स द्वारा संचालित स्काउट मास्टरों के शिक्षण-शिविर का दिनांक १६ दिसंबर, १६४६ को निरीक्षण करने के अवसर पर प्रान्तीय शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर श्री सुधीर कुमार घोष ने स्काउट मास्टरों के सम्मुख अपने प्रभावशाली भाषण में कहा--

"यदि हम वास्तव में अपने देश के नवयुवकों के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाना चाहते हैं और यदि राष्ट्र के सामान्य सदाचरण का समुचित रूप से निर्माण करना चाहते हैं, जो कि आज के युग की सर्वोपरि आवश्यकता है, तो निःसंकोच कहा जा सकता है कि हमारे राष्ट्र में स्काउटिंग संस्था के अतिरिक्त आज कोई दूसरी ऐसी संस्था विद्यमान नहीं है जो नवयुवकों को शरीर से सबल और मस्तिष्क से जागरित करा देने के साथ-साथ उनके नैतिक आचरण को भी उन्नत बनाने का सतत कठोरतम प्रयत्न करती हो।"

"स्काउटिंग की समस्त शिक्षा-प्रणाली मनोवैज्ञानिक क्रियाओं से परिपूर्ण खेलों की परिपाटी पर आधारित है; जिसके फल स्वरूप बालकों में देश तथा महेश के प्रति कर्त्तव्य-निष्ठा और जीवन में अनुशासन की प्रवृत्ति सहज ही विकसित हो जाती है। अतः यह नितांत आव- श्यक है कि राष्ट्रका प्रत्येक नवयुवक अनि- वार्यतः स्काउटिंग को शिक्षा द्वारा अपने को लाभा- न्वित करे।"

प्रिंस क्रोपाटकिन

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

वह एक असाधारण प्रतिभाशाली महापुरुष था। वह महान गणितज्ञ, भूगर्भ विद्या का विशेषज्ञ, वह कलाकार और ग्रन्थकार, संगीतज्ञ और दार्शनीक था। बीस भाषाओं का वह ज्ञाता था और सात भाषाओं में वह आसानी से बातचीत कर सकता था। तीस वर्ष की उम्र में, रूस के चोटी के विद्वानों में—उस महान् देशके कीर्ति-स्तम्भों में—प्रिंस क्रोपाटकिन की गणना होने लगती है। वह सर्वोच्च कोटि का आदर्शवादी था और अपने सिद्धान्तों पर समझौता करना जानता ही नहीं था।

बाल्यावस्था

प्रिंस क्रोपाटकिन को हम बाल्यावस्था में एक अत्यंत प्राचीन तथा उच्च राजवंश में उत्पन्न अपने पिता के साथ देखते हैं। यह समय है अत्याचार रूपी घनघोर अंधकार का। रूसी ज़ार निकोलस प्रथम का भयंकर पंजा जनता के सिर पर है। गुलामी की प्रथा का दौर दौरा है और गरीब जनता गुलामी के धुँये के नीचे कराह रही है। बालक क्रोपाटकिन को जीवन के दो भिन्न-भिन्न प्रकार के परस्पर विरोधी अनुभव होते हैं।

जब क्रोपाटकिन आठ वर्ष के थे, वे सम्राट जार के पार्षद बालक बना दिये गये थे। उस समय वे महाशक्तिशाली जार के पीछे-पीछे चलते थे, और एक बार तो भावी साम्राज्ञी की गोद में सो गये थे! जहां एक ओर उन्हें यह अनुभव हुआ वहां दूसरी ओर उनकी कोमल आत्मा दासत्व प्रथा के भयंकर अत्याचारों को अपनी आँखों देखकर झुलस गई। एक दिन प्रिंस क्रोपाटकिन के पिता की आज्ञा से एक सौ कोड़ों की सजा पाये हुए अपने रसोइये को जब क्रोपाटकिन ने घर की एक अंधकारमयी गली में देखा तो उन्होंने उसका हाथ पकड़कर चूमना चाहा। रसोइये ने हाथ छुड़ाते हुए कहा—"रहने भी दो। मुझे छोड़ दो, तुम भी बड़े होने पर क्या बिलकुल अपने पिता की तरह न बनोगे? बालक क्रोपाटकिन ने भरे गले से जवाब दिया—"नहीं, नहीं, हर्गिज़ नहीं।"

नाटक का पर्दा बदलता है

जार निकोलस की अंधेरी रात दूर हो गई है, उसके बाद दासत्व-प्रथा बंद होने के कारण थोड़ी देर के लिए जो उषाकाल आया था उसे प्रतिक्रिया के अंधकार ने ढक लिया और रूस फिर पुलिस के अत्याचारों से कुचला जाने लगा। सैकड़ों निरपराध आदमी फाँसी पर लटका दिये गये और हजारों ही जेल में ठेल दिये गये। सारे रूस पर भय और आतंक का साम्राज्य था; लेकिन भीतर रूस जाग्रत हो रहा था। रूसी जार अलेक्ज़ेंडर द्वितीय ने अपने शासन का सूत्र पुलिस के दो ज़ालिम अफसरों को—ट्रेपोक और शुवालोफ को—सौंप दिया था। वे चाहे जिसे फाँसी पर लटका देते थे और चाहे जिसे निर्वासित कर देते थे, लेकिन फिर भी वे क्रान्तिकारी गुप्त समितियों की कार्रवाइयों को रोकने में सफल नहीं हुए। ये समितियां दनादन स्वाधीनता तथा क्रान्ति का साहित्य जनसाधारण में बांट रही थीं। इस घोर अशान्तिमय वायुमंडल में भेड़ की खाल ओढ़े एक अद्भुत किसान, अदृश्य भूत की तरह इधर से उधर घूम रहा था। उसका नाम 'बोरोडिन' था। पुलिस के अफसर हाथ मल-मल कर कहते थे—"बस, अगर हम लोग बोरोडिन को किसी तरह पकड़ पावें, तो क्रान्ति की इस सर्पिणी का मुँह ही कुचल जाय; हां, बोरोडिन को और उसके साथी-संगियों को।"

सन् १८७४ की बसंत ऋतु—संध्या का समय है। सेंटपीटर्सबर्ग के सभी वैज्ञानिक और विज्ञान-प्रेमी ज्याग्राफिकल सोसाइटी के भवन पर महान वैज्ञानिक प्रिंस क्रोपाटकिन का व्याख्यान सुनने के लिए एकत्रित हुए हैं। फिनलैंड की यात्रा के परिणामों के विषय में उनका भाषण होता है। रूस के Dilavial (जल प्रलय) काल के विषय में वैज्ञानिकों ने जो सिद्धान्त अब तक कायम कर रखे थे वे सब एक के बाद दूसरे खंडित होते जाते हैं और अकाट्य तर्क के आधार पर एक नवीन सिद्धान्त की स्थापना होती है। सारे वैज्ञानिक जगत में क्रोपाटकिन

की धाक जम जाती है और तीस वर्ष की अवस्था के इस चोटी के विद्वान को ज्योग्राफीकल सोसाइटी के 'Physical Geography' विभाग का सभापति मनोनीत किया जाता है। भाषण के बाद ज्योंही गाड़ी में बैठकर वे बाहर निकले, दूसरी गाड़ी उनके पास से गुजरी। खुफिया पुलिस का एक आदमी उस गाड़ी में से कूद पड़ा और बोला--"मिस्टर बोरोडिन, सलाम मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूँ।" क्रोपाटकिन पकड़ लिये गये।

पलायन

क्रोपाटकिन को पीटर और पाल किले में एक अकेली कोठरी में कैद कोट दो साल बीत गये हैं--उस किले के जिसका इतिहास रूस के महान से महान और उच्च से उच्च देशभक्तों तथा कवियों की शहादत का इतिहास है। दो बरस बाद वे बीमार पड़ गये और इलाज के लिए फौजी जेलखाने के अस्पताल में भेज दिये गये, जहाँ पर उन्हें तीसरे पहर के वक्त हथियारबंद पुलिस के पहरे में अस्पताल के सहन में टहलने की आज्ञा मिल गई थी। वहाँ पर से वे जिस आश्चर्यजनक ढंग से भाग निकले--ड्यूमा के उपन्यासों को छोड़कर ऐसा सनसनी-खेज़ किस्सा शायद ही कहीं पढ़ने को मिले। उन्होंने फिनलैंड से होकर स्वीडेन की यात्रा की और वहां से इंग्लैंड जा पहुँचे।

जीवन सिध्दान्त

इस महापुरुष का जीवन दो प्रबल धाराओं से प्रभावित रहा है। एक भावना तो है बौद्धिक संसार में विजय प्राप्त करना और दूसरी मानव-समाज की स्वाधीनता के लिए उद्योग। क्रोपाटकिन के राजनैतिक सिद्धान्तों का स्रोत है उनकी वैज्ञानिक तथा प्रेमपूर्ण विचार-धारा जो उनके ग्रंथों--"Mutnal Aid" (पारस्परिक सहयोग), "In Russian and French Prisons" (रूसी और फ्रांसीसी जेलखानों में), Field, Factories and Work shops तथा 'रोटी का सवाल' और 'नवयुवकों से दो बातें' इत्यादि में प्रवाहित है। प्रिंस क्रोपाटकिन का कहना है--'जीवन का विस्तार' जीवन को कायम रखने की अनिवार्य शर्त है। अगर तुम उन सर्वोच्च आनंदों को जानना चाहते हो जिनकी कोई भी जीवित प्राणी आकांक्षा कर सकता है--तो मजबूत बनो, महान बनो और जो कुछ भी तुम करो, उसमें दृढ़ता से काम लो। तुम अपने चारों तरफ जीवन के बीज बोओ। अगर कहीं तुम्हें कोई अन्याय या अधर्म मानते हो--चाहे वह जीवन का कोई अन्याय हो, तुम उस अन्याय, उस झूठ या उस जुल्म के खिलाफ उठकर बगावत कर दो।

घोर संघर्ष करो, तभी जीवन परिपूर्ण तथा गंभीर बनेगा। तभी तुम वास्तव में जिंदा बनोगे, और इस तरह की जिंदगी के चंद घंटे घास-फूस की तरह नीरस जीवन के कई वर्षों से ज्यादा गौरवयुक्त हैं।

अंतिम जीवन

प्रिंस क्रोपाटकिन सर्वोच्च कोटि के आदर्शवादी थे, वे अपने सिद्धांतों पर समझौता करना नहीं जानते थे। ७५ वर्ष की उम्र में वे अपनी 'नीति-शास्त्र' (Ethich) नामक अंतिम पुस्तक लिख रहे थे। घोर आर्थिक संकट में किताबें खरीदने के लिए उनके पास पैसा नहीं था। जब कभी मित्र लोग थोड़ा-सा पैसा भेज देते तो एक आध आवश्यक पुस्तक वे खरीद लेते। भोजन भी उन्हें पुष्टिकर नहीं मिल पाता था जिससे उनकी कमजोरी बढ़ती जाती थी और एक धुँधले दीपक की रोशनी में उन्हें अपने ग्रंथ की रचना करनी पड़ती थी। अपनी स्त्री तथा पुत्री के साथ वे इस कठिन परिस्थिति में रहा करते थे और इस घोर संकट के समय में भी जो लोग उनके पास आते थे, उन्हें भी वे जो कुछ उनके पास होता उसमें से दे देते थे।

८ फरवरी सन् १९२१ को ७८ वर्ष की उम्र में प्रिंस क्रोपाटकिन का देहांत हो गया। अंत्येष्टि क्रिया के लिए सरकारी आयोजन उनकी पत्नी तथा पुत्री ने अस्वीकार कर दिया। अराजकवादियों ने मजदूर संघ के भवन से उनके शव का जलूस निकाला। २० हजार मजदूर साथ-साथ थे जो काले झंडे लिए हुए चिल्ला रहे थे क्रोपाटकिन के अराजकतावादी संगीसाथियों को जेल से छोड़ो!'

स्वाधीनता का वह अद्वितीय पुजारी युग-युगांतर तक अमर रहेगा। उसका व्यक्तित्व हिमालय के सदृश महान और आदर्शवादिता गौरीशंकर शिखर की तरह उच्च है।

दीन की आह

श्री भजनसिंह 'सिंह'

पहाड़ों पर एक प्रकार का वृक्ष होता है जिसे 'बांज' कहते हैं। मजबूती में इसकी बराबरी की लकड़ी दूसरी नहीं पाई जाती। अटल सत्याग्रही के तप का परिणाम पहाड़ी ख्यातनामा कवि श्री सिंहजी ने इन पंक्तियों में व्यक्त किया है। अपनी यह रचना सेवा में प्रकाशनार्थ प्रेषित करने का हमारा आग्रह स्वीकार कर श्री सिंह जी ने हमें अनुगृहीत किया है।

—संपादक

१

एक बांज का वृक्ष उगा था किसी जगह में;
उसको सुख से देख पवन ने सोचा मन में।
'जो यह दृढ़ तरु एक मार्ग में अड़ा न होता;
तो फिरने में मुझे कभी दुख बड़ा न होता॥

२

सता रहा है मुझे दुष्टतापूर्वक तब से!
कौन खड़ा है, मूर्ख, मार्ग-कंटक बन कब से!
छोटा मुँह हो, बड़ी बात करता जाता है!
होकर नीच नगण्य बड़ों से टकराता है!

३

इसका अब तो गर्व शीघ्र हरना ही होगा;
जैसे होगा इसे नष्ट करना ही होगा"
पवनदेव यह सोच, चले क्रोधित हो भारी;
मानो कर दी घोर प्रलय की आज तयारी॥

४

लखकर ऐसी दशा, डरा तरु भी बेचारा;
बोला—'प्रभुवर! क्षमा, कहो, क्या दोष हमारा?
मैं सेवक हूं पवनदेव! मत मुझे सताओ;
दीन-दुखी हूं स्वयं और क्यों मुझे दुखाओ॥

५

"एक ओर, चुपचाप, अकेला पड़ा हुआ हूँ;
मत छेड़ो प्रभु! हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ हूँ।"
पवनदेव, कर सुनी-अनसुनी, क्रूर हृदय कर—
कर ऊँची हुंकार, हँसा उसकी विनती पर!!

६

सुनकर तरु की हाय नियति का आसन डोला;
दीनों पर दुख देख प्रकृति ने भी मुँह खोला।
गरजे मेघ अशान्त, गगन ने गिरा गिराई;
अट्टहास कर बार-बार अवनी थर्रायी॥

७

बांज-बीज जब उड़े, दूर तक फैले भू पर;
उग-उग कर फिर विपुल बीज-तरु निकले ऊपर।
फिर वसन्त ने पहुँच दवा, घायल की कर दी;
टूटी शाखें नई-नई कलियों से भर दीं॥

८

हुआ पल्लवित नवजीवन पाकर तरु सारा;
लगा लहलहाने द्विगुणित, सज-धज कर न्यारा।
रहा सत्य-व्रत-व्रती, शान्त, निर्भय, निश्चल हो;
व्यर्थ पाशविक शक्ति जहां कुछ आत्मिक बल हो॥

९

सादर सत्याग्रही विटप ने शीश झुकाया;
गोदी भर फल भेंट किये प्रभु को, सुख पाया।
शोक अरे! कह पवन लगा शिर धुन पछताने;
हुआ अहित हित अहो! दैव-गति को जन जाने?

१०

'पूर्व वृक्ष था एक बड़ी बाधा थी मेरी।
हा! अब मैं क्या करूँ? हुई तरु-पांति घनेरी"
अपने सुख के लिये नीच पर—सौख्य हरे जो;
स्वयं नष्ट हो तुच्छ शत्रु से गर्व करे जो॥

११

अब उस वन की ओर पवन चलते, जलते हैं;
शीतल-मन्द सुगन्धित हो डरते चलते हैं।
इससे भी उपकार खूब बन के होते हैं;
यही सोच कर पवन प्रात रोते-धोते हैं॥

प्रसन्नता से स्वास्थ्य-साधन

श्री गंगा प्रसाद गौड़ 'नाहर'

आत्मिक प्रसन्नता ही संसार में वह वस्तु है, जिससे मनुष्य के स्वास्थ्य, सौन्दर्य, एवं आयु एक साथ बढ़ते हैं। यही वह चीज है, जिससे स्वयं को तो लाभ होता ही है, साथ ही साथ हँसमुख व्यक्ति के सम्पर्क में आने वाले जितने भी व्यक्ति होते हैं, वे सभी समान रूप से लाभ उठाते हैं। हँसमुख व्यक्ति से बात कर देखिये, आप प्रफुल्लित हो उठेंगे। इसके विपरीत किसी चिड़चिड़े मिजाज वाले रोने व्यक्ति से बातचीत कीजिये, यह असम्भव है कि उसके बुरे मिजाज का आप पर प्रभाव न पड़े और आपका मुखड़ा आप-से-आप विकृत न हो जाय। इतना गहरा प्रभाव पड़ता है मानव-हृदय पर प्रसन्नता और अप्रसन्नता—दोनों का।

प्रसन्नता, उत्तम स्वास्थ्य का सबसे बड़ा साधन है। एक बार एक रोगी युवक एक डाक्टर के पास गया। वह अपनी बीमारी का दुखड़ा रोते हुये डाक्टर से बोला, 'मुझे कोई ऐसी दवा चाहिये जिससे मेरा पिंड रोगों से तो छूटे ही, साथ-ही-साथ यह जो मैं समय से पहले ही बूढ़ा दिखने लगा हूँ, यह दोष भी दूर हो जाय।' डाक्टर बुद्धिमान था। उसने कुछ क्षणों तक युवक के उदास चेहरे, झुर्रियां पड़े एवं पचके गाल, चिन्तित मन, नीरस नेत्र, आदि का निरीक्षण एवं अध्ययन किया और अंत में एक पुर्जे पर केवल दो शब्द 'खूब हँसो' लिख-कर उसके हवाले करते हुये बोला 'इस नुस्खे से तुम्हारी सब शिकायतें दूर हो जायँगी।' कहने का तात्पर्य यह है कि प्रसन्न वदन व्यक्ति के पास चिन्ता, कुढ़न, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, भय आदि दुर्गुण नहीं फटकने पाते, और यही वजह है जो ऐसे लोगों का स्वास्थ्य असाधारण रूप से उत्तम होता है।

यह गलत नहीं है कि हमारी प्रसन्नता और अप्रसन्नता बहुत कुछ हम पर निर्भर करती है। जब हम ख्याल करते हैं कि हम प्रसन्न हैं तो हम जरूर प्रसन्न हैं। और जब ख्याल करते हैं हम अप्रसन्न और खिन्न हैं तो उस वक्त हमें अप्रसन्न और खिन्न होना ही पड़ता है। यह सिद्धान्त की बात है कि जैसा एक व्यक्ति अपने विषय में सोचेगा, वैसा ही वह हो जायगा। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने विचार की उपज होता है। वह जैसा भी अपने को बनाना चाहे, बराबर बना सकता है।

यह बात भी दृढ़ता के साथ कही जा सकती है कि संसार में विषाद का कारण, संसार की वस्तुओं में आसक्ति, और हमारी कभी न पूरी होने वाली लालसाएँ ही हैं। हम आन्तरिक प्रसन्नता चाहते हैं, पर तलाश में रहते हैं झूठे संसारी आनन्द की। यहाँ पर स्वर्गीय प्रसन्नता एवं सांसरिक आनन्द-- दोनों को एक ही चीज समझने में हम भारी भूल करते हैं। हम मधु के अक्षय भण्डार की तलाश करते हैं एक क्षण भंगुर साधारण पुष्प में जो आज खिलता है और कल मुर्झा जाता है। इस तरह से हम ठगे जाते हैं और चिन्ता और अप्रसन्नता के सिवा कुछ हाथ नहीं लगता।

उस मनुष्य को जो संसार में सदा-सर्वदा प्रसन्न और खुश रहना चाहता है, चाहिये कि वह संसार की किसी भी वस्तु से दिल न लगाये। केवल काम भर काम रखे। यही अनासक्ति योग हमें सिखलाता है। अपने को संसार से अलग रख कर मस्त रहना चाहिये ठीक उसी तरह जैसे एक जल-विन्दु कमलपत्र पर रह कर मस्ती से इधर-उधर हिलता-डुलता रहता है, और हमेशा प्रसन्न और आनन्दित दिखता है। जीवन-सरिता का बहना कभी रुकने वाला नहीं है' हमें उसके किनारे खड़े होकर केवल लखते रहना चाहिये उसमें उठती हुई तरङ्गों को। कभी-कभी उसमें से थोड़ा जल लेकर हम अपनी प्यास बुझा सकते हैं, पर उसमें

एक बारगी ही कूदकर जान दे देने वाले को कोई बुद्धिमान न कहेगा। शायद इसी वजह से इंग्लैंड के महान विचारक लार्ड एववरी को कहना पड़ा था कि जहाँ बुद्धि है वहीं प्रसन्नता है।

वास्तव में प्रसन्नता वह अपूर्व शक्ति है जो हतोत्साह होने पर हमें धैर्य्य प्रदान करती है, दरिद्रावस्था में धन बन जाती है, तथा असहायावस्था में सच्ची मैत्री और सहानुभूति दिखलाती है।

प्रसन्नता-प्राप्ति के साधन

१--खिलखिला कर हँसना—अँग्रेजी में एक कहावत है 'एक सेब रोज खाओ और डाक्टर को पास न फटकने दो।' इसमें इंग्लैंड के एक दूसरे प्रसिद्ध डाक्टर ने इस प्रकार संशोधन किया है 'एक बार रोज खिलखिला कर हँसो और बीमारियों को पास न आने दो'। इस डाक्टर का कहना है कि बालकों को फुर्तीला और नीरोग रखने के लिये उनका हँसते रहना अत्यन्त आवश्यक है। यदि बालकों के शिक्षक, जिनसे उनका साथ बहुत रहता है, क्रोधी और रुखे मिजाज वाले हुये तो वे बालक निर्बल, दब्बू और अस्वस्थ अवश्य होंगे।

हँसने के विषय में एक बात यह भी प्रसिद्ध है कि हँसो और मोटे हो जाओ। अर्थात् हँसने से आदमी मोटा होता है। ऐसा देखा भी जाता है कि मोटा आदमी अधिकतर हँसोड़ होते हैं। इस कथन में अतिशयोक्ति भले ही हो पर यह ध्रुव सत्य है कि खिलखिला कर हँसने से भूख दूनी हो जाती है। जो व्यक्ति हँसोड़ होते हैं, उन्हें कभी क़ब्ज़ नहीं होता। वे ख़ूब खाते हैं और मस्त रहते हैं। कारण, हँसने से पेट की माँसपेशियाँ जाग्रत होकर कर्मशील हो जाती हैं; जिससे पाचक रस अधिक मात्रा में उत्पन्न होने लगता है, फलतः शरीर में ख़ून का दौरा तेज़ी से होने लगता है, जो उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने में सहायक होता है।

हँसना, एक प्रकार का सुखकर व्यायाम भी है, जिसमें मुंह, गर्दन, छाती, एवं उदर के बहुत उपयोगी स्नायुओं को एक साथ भाग लेना पड़ता है, जिससे वे सबल, सुदृढ़, तथा क्रियाशील बनते हैं। मस्तिष्क के ज्ञानतन्तुओं, तथा मुँह और उदर की माँसपेशियों, नसों और नाड़ियों की, हँसना सबसे अच्छी कसरत है। हँसोड़ व्यक्ति के गाल सुन्दर, गोल, चमकीले होते हैं, और चेहरा गुलाब के फूल के सदृश खिला रहता है। जिन्हें हँसने की आदत है, उन्हें फेफड़ों वाले रोग कम होते हैं, क्योंकि हँसने से फेफड़ों में हरवक्त ताजी हवा भरती रहती है, जो स्वास्थ्य के लिये उत्तम है।

हँसना, कितने ही रोगों की रामवाण औषधि भी है। क्षय जैसे भयङ्कर रोगों में हँसना जादू का काम करता है। पुराने क़ब्ज़ के मरीज हँसने से अच्छे होते देखे गये हैं। पेरिस में एक डाक्टर अपने रोगियों को केवल हँसाकर उनके रोगों को आश्चर्यजनक ढंग से दूर किया करता है। वह प्रत्येक रविवार को सवेरे एक हॉल में अपने मरीज़ों को, उनकी आँखों में पट्टी बाँध कर बैठाता है। फिर वह ग्रामोफ़ोन पर एक ऐसा रिकार्ड रखकर बजाता है जो हास्यरस से परिपूर्ण होता है, और जिसको सुनकर सारे के-सारे मरीज एक साथ हँसना आरम्भ करते हैं, और सारा हॉल क़हक़हों से गूँज उठता है। उपर्युक्त डाक्टर का कहना है कि इस प्रकार हँसने और दूसरों का हँसना सुनने से मरीज़ों का स्वास्थ्य बहुत जल्द सुधर जाता है।

कुछ दिन होते हैं, किसी पत्र में, छपा था कि एक बार एक व्यक्ति तीव्र ज्वर से पीड़ित पड़ा हुआ था। डाक्टर ने उसे पीने की दवा दी। बीमार का एक पालतू बन्दर था। मालिक को दवा पीते देखकर बन्दर को भी उसकी नकल बनाने की सूझी, और उसने मौका पाकर थोड़ी-सी दवा स्वयं पी ली। दवा कड़वी थी। पीते ही बन्दर बुरा मुँह बनाने लगा और उस सम्बन्ध में मालिक का दोष समझकर उसको घुड़कने लगा। बन्दर की उस वक्त की विचित्र भाव-भङ्गी देखकर रोगी को बड़ी हँसी आयी। वह हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया और उसी तरह लगातार आध घंटे तक हँसता रहा। डाक्टर ने दो घंटे बाद आकर देखा तो बीमार का

भयङ्कर ज्वर नाम को भी न था, और वह उसी क्षण से बिल्कुल अच्छा हो गया।

दूसरी गोलमेज सभा के समय जब गान्धी जी लन्दन गये थे तो वे ग़रीबों की बस्ती 'पूर्वी लन्दन' में ठहरे थे। एक दिन पड़ोस के कुछ बच्चे गाँधी जी के पास आये और उनसे अपने लिये कोई संदेश माँगा। गाँधी जी ने सन्देश दिया 'सुबह उठते ही तुम सब जोर से दो-तीन मिनट तक रोज हँसो। एक सप्ताह बाद मेरे पास फिर आना।' बच्चों ने अपने मित्र गाँधी जी कहना अक्षरशः माना। सुबह ही हर गली-कूचे तथा घर से बच्चों के खिल-खिलाने की आवाज आने लगी। बिना बात ही वे हँसते, खूब हँसते, देर तक हँसते। मुहल्ले और घर वालों को यह देखकर बड़ा अचम्भा हुआ। सारी बात का पता लगाने पर वे गाँधी जी के पास गये और पूछा--'यह आपने क्या सिखा दिया?' गाँधी जी ने कहा 'यह सप्ताह बीत लेने दो।' एक सप्ताह बाद जब बच्चे पुनः गाँधी जी के पास गये तो गाँधी जी ने देखा और उनके कहने पर बच्चों के घर वालों ने भी देखा कि बच्चों का स्वास्थ्य पहले से बहुत अच्छा है। उनके गालों की सुर्खी कुछ अधिक है और आँखों की चमक बढ़ गयी है। बच्चे अब घरों में मचलते नहीं। अतः बच्चों की माताओं ने खास तौर से गांधी जी को उनकी इस शिक्षा के लिये धन्यवाद दिया।

प्रश्न हो सकता है कि अकारण कोई हर समय कैसे हँस सकता है। हँसने का भी मौका होता है। ठीक है। मौके पर ही हँसिये, पर हँसने का मौका ढूंढिये और हँसिये। खूब हँसिये और जरूर हँसिये। बहुत से लोग ऐसे मिलेंगे जिनको हँसना आता नहीं। ऐसे लोगों को हँसने की कला सीख लेनी चाहिये और प्रयोग करना चाहिये। जब अकेले बैठे हों तो किसी हास्योत्पादक मनोरंजक घटना का स्मरण करें और अपने आप हँस पड़ें। दर्पण के सामने बैठ कर कहकहा लगायें। छोटे-छोटे बच्चों से बातें करें। उनकी तोतली भाषा में आपके प्रश्नों के जो विचित्र उत्तर मिलेंगे उनमें हँसने का काफ़ी मसाला निकलेगा। प्रत्येक व्यक्ति को हर रोज कम-कम-से एक बार खिलखिला कर जरूर हँसना चाहिये।

२--मुसकुराना--मुसकुराना हास्य का छोटा भाई है। मुसकुराता हुआ चेहरा सभी को पसंद है। मुसकुराने से स्वयं को तो प्रसन्नता-प्राप्त होती ही है, साथ-ही-साथ उस मुसकुराहट को देखनेवालों का भी चित्त बिना प्रसन्न हुये नहीं रहता। बड़ी-से-बड़ी तकलीफ़ का सामना करना हो, हँसते-मुसकुराते उसका सामना करने की कोशिश कीजिये, तकलीफ़ आधी रह जायगी। बालचरों को हर मुश्किल में मुसकुराते रहने की शिक्षा इसी वजह से दी जाती है। किसी से मिलना हो, मुसकुराते हुये मिलिये, मेह-मान और मेजबान--दोनों की तबिअत प्रसन्न हो जायगी। रोगी को देखना हो, उसके पास मुसकुराते हुये जाइये और मुसकुराते हुये ही बातें कीजिये, आप उसका आधा दुख-दर्द हर लेंगे। जो व्यक्ति दुःख और सुख-दोनों में समान रूप से मुसकुराता रहता है, वह धन्य है।

४--गुनगुनाना--प्रसन्नता का तीसरा साधन गुनगुनाना है। मुँह से सीटी बजाना अथवा किसी गीत की प्रिय कड़ी को निम्न स्वर में, धीमे-धीमे मौज से बराबर दोहराना, गुनगुनाना कहलाता है। इससे हृदय को काफ़ी शान्ति मिलती है।

४--गाना--गायन, प्रसन्नता का माना हुआ साधन है। पर इसके यह मानी नहीं हैं कि प्रसन्नता-प्राप्ति के लिये, सब लोग अपना काम-धाम छोड़ कर चोटी के गवय्या बनने के लिये प्राण-पण से जुट जायँ। नहीं, बल्कि जो भी अच्छा-बुरा गाना आता हो, उसी को कभी-कभी खुले दिल से मस्त होकर गाने से प्रसन्नता की काफ़ी उपलब्धि होगी। वैसे गायक होना भी कोई बुरी बात नहीं है। गान-विद्या सभी विद्याओं का सिरमौर है, क्या इसमें भी कोई इन्कार कर सकता है? संगीत के सम्बन्ध में एक बहुत बड़े अनुभवी व्यक्ति का कथन है:—

मानव तो मानव है, संगीत की मादक स्वर-लहरी का प्रभाव मानवेतर जीवों सर्प, हिरन आदि पर भी आश्चर्यजनक रूप से पड़ता है, जो किसी से छिपा नहीं है। इतना ही नहीं, हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को पुनरुज्जीवित करने की जो एक स्निग्ध एवं विस्मयजनक शक्ति संगीत में है, उस बात का प्रत्यक्ष अनुभव संसार के श्रेष्ठ चिकित्सकों को अस्पतालों और गवेषणालयों के प्रयोगों द्वारा होने लगा है, और वह दिन दूर नहीं है जब कि विज्ञ चिकित्सक अपने रोगियों के लिये कड़वी दवाओं की व्यवस्था न करके उनकी जगह दिन रात में दो-तीन बार सुमधुर संगीत श्रवण का व्यवस्था-पत्र देंगे।

५—खेलना—खेलना भी प्रसन्नता का एक अच्छा-खासा साधन है। बच्चे तो खेल के नाम से ही मारे खुशी के विह्वल हो जाते हैं। प्रतिदिन काम-काज समाप्त कर लेने के बाद मनोरञ्जन के लिये थोड़ी देर तक कोई-सा प्रिय खेल खेलना हर एक के लिये बहुत जरूरी है।

६—मनोविनोद—मनुष्य के लिये विनोद-प्रिय होना एक उत्तम गुण है। ग़म ग़लत करने के लिये, तथा प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये वह एक अच्छा नुस्खा है। मनुष्य का शारीरिक और मानसिक विकास बहुत कुछ मनोविनोद पर निर्भर करता है। पशुओं तक में मनोविनोद की भावना देखने में आती है। कुत्ते आपस में दौड़ने की प्रतिद्वन्द्विता करते हैं। उनका एक दूसरे पर झूठा आक्रमण करना, झपटना, एक दूसरे को काटने का नाट्य करना आदि मनो-विनोद होता है। चिड़ियाँ भी उड़ने की प्रतिद्वन्द्विता कर अपना मनोविनोद करती हैं। छोटे बच्चे तो स्वभावतः विनोदी होते हैं। बालकों की प्रकृति कुछ इस प्रकार की होती है कि यदि उन्हें मनोविनोद में शिक्षा दी जाय तो वे उसे अति शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं। कारण, खेल में बहुत अधिक शारीरिक या मान-सिक परिश्रम करने पर भी उन्हें थकावट नहीं मालूम होती, बल्कि इसके विपरीत उनके शरीर के स्नायुपुञ्ज एवं माँसपेशियाँ विकसित और पुष्ट होती हैं। प्राचीन भारत में बालकों के लिये शिक्षा की व्यवस्था जंगलों में की जाती थी जहाँ उन्हें मनो-विनोद के कितने ही साधन उपलब्ध होते थे। आज भी भारत के सिवा अन्य देशों में बालकों के लिये केवल मनोविनोद के साधनों पर करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं। सन् १९३७ ई० में रूस ने बालकों के शारीरिक विकास सम्बन्धी मनोविनोद के साधनों के लिये एक करोड़ से अधिक रुपया खर्च किया था। इंग्लैंड की शिक्षा-समिति ने तो मनोविनोद के लिये एक अलग कमेटी ही कायम कर रखी है, जिसका काम ही नित नूतन मनोविनोद के साधनों का अध्ययन और प्रचार करना है। इसी तरह फ्रान्स, इटली, जापान आदि सभी देशों में मनो-विनोद के लिये अलग-अलग विभाग कायम हैं। इससे पता चलता है कि मनुष्य के लिये मनो-विनोद कितनी जरूरी चीज़ है, जिसके अभाव में जीवन सुखमय बन ही नहीं सकता।

मनोविनोद के लिये हम सामूहिक ढंग से पिक-निक कर सकते हैं। किसी रमणीक स्थान की सैर से भी वही लाभ उठाया जा सकता है। पहाड़ों की सैर, गाँवों की सैर, तथा कैम्प जीवन आदि से भी मनोविनोद की काफी सामग्री प्राप्त की जा सकती है।

७—सत्कार्य करना—कोई अच्छा काम करने के बाद जो हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होती है, वह स्व-र्गीय होती है। भूखे को भोजन देना, प्यासे को जल पिलाना, अन्धे को रास्ता बता देना, तथा किसी प्रकार की सहायता चाहने वाले को सहायता प्रदान कर देना, आदि सत्कार्य कहलाते हैं। इनसे हृदय को परमानन्द एवं परम प्रसन्नता प्राप्त होती है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन कम-से-कम एक सत्कार्य जरूर करना चाहिये।

प्रसन्नता के शत्रु

१—चिन्ता—प्रसन्नता का सबसे बड़ा दुश्मन चिन्ता है। इससे सदैव दूर रहना चाहिये। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में जहाँ चिता और चिन्ता की तुलना की गई है, वहाँ स्पष्ट कहा गया है कि चिता तो मरे हुये को जलाती है, पर चिन्ता जीवित मनुष्य

को ही भस्म कर देती है।

चिन्तित मनुष्य का स्वास्थ्य हमेशा ख़तरे में रहता है। नींद हराम हो जाती है, और भोजन का पाचन ठीक तौर से न होने के कारण शरीर शिथिल पड़ जाता है। दिल और फेफड़े कमज़ोर हो जाते हैं, और जीवन भार-स्वरूप बन जाता है। चिन्ताग्रस्त मनुष्य को राजयक्ष्मा रोग बहुत जल्द पकड़ता है।

२—उदासी—उत्साहहीनता या उदासी, प्रसन्नता का दूसरा जानी दुश्मन है। इसको अँग्रेज़ी में 'मेलङ्कोलिया' कहते हैं। इसकी गिनती रोगों में की जाती है। जिसे यह रोग लग जाता है, उसे संसार असार दिखाने लगता है और वह अपने जीवन का अंत करने के लिये उतावला हो उठता है। प्रसन्नता के चाहने वालों को अपने तईं इसकी हवा भी न लगने देना चाहिये।

३—रुदन—आँसू बहाना बुज़दिली की निशानी है। रोने वालों से प्रसन्नता कोसों दूर रहती है।

४—चिड़चिड़ापन—चिड़चिड़े व्यक्ति प्रायः कमज़ोर और दुर्बल होते हैं। ऐसा व्यक्ति हँसोड़ का ठीक उलटा होता है।

५—क्रोध—क्रोध और प्रसन्नता में पूरब और पश्चिम का अन्तर होता है। क्रोधी मनुष्य क्रोध की ज्वाला में हमेशा जला-भुना करता है। प्रसन्नता ऐसे मनुष्यों के भाग्य मेंभला कहाँ ?

६—भय—भयभीत व्यक्ति, प्रसन्नता के आनन्द की कल्पना भी नहीं कर सकता।

७—ईर्ष्या—ईर्ष्या, द्वेष प्रसन्नता के पथ में सबसे बड़े रोड़े होते हैं। ईषालु कभी प्रसन्न रह नहीं सकता। खिन्नता और कुढ़नसे आदमी जल्द बूढ़ा हो जाता है।

[स्वास्थ्य साधन से]

गीत

श्री वाचस्पति शर्मा

गीत मुझे भी गाने दो,
आज अनश्वर जग जीवन में
नश्वर स्वर मिल जाने दो।

मुक्त-गगन में गाऊँ कैसे
मैं तो मानव पंख-विहीन-;
मिल गाऊँ कैसे सागर में
मैं तो सघन तरलताहीन।
तारों के झिलमिल नर्तन में
क्योंकर दूँ वैसा स्वरताल,
मैं नश्वरता का पुतला हूँ
दाँयें-बाँये काल-कराल।
कोलाहल से भरे जगत में
एकाकी, मेरा स्वर एक,
नहीं मिलेगा उन तानों में
मेरे स्वर का भर उद्रेक।

अस्थिर मैं, मेरा जग अस्थिर,
अस्थिरता में बह जाने दो
गीत मुझे भी गाने दो।

चौबे जी का पहला मुकदमा

(गतांक से आगे)

श्री राजेन्द्र कुमार, स्काउट जैन कालिज, सहारनपुर

चौबेजी भांग का गोला चढ़ाकर, अदालत में बैठे, उनके चेले चांटे, उनकी हां में हां मिलाने को चारों ओर बैठ गए। मुकदमा पेश हुआ। तीन बहनों की ओर से अर्जी थी कि उनके भाई स्वार्थीराम ने उन्हें और उनके पिता को पीटा है।

चौबेजी ने अर्जी पढ़ी, और पार्वती, कलावती, रूपवती के बयान लिए। स्वार्थीराम कठघरे में मौजूद थे, उनके पिता भी लकड़ी का सहारा लिए एक ओर खड़े थे।

चौबेजी ने पार्वती से पूछा, "झगड़ा किस बात पर आरंभ हुआ?"

पार्वती ने उत्तर दिया, "हम बहनों के विवाह के प्रश्न पर।

चौबेजी, "यह कैसे?"

पार्वती, "पिताजी कहते थे कि हर विवाह में ४ हज़ार लगेंगे, परिवार की मर्यादा को इससे कम में ठेस पहुँचेगी, भाई कहते थे कि सब रुपया व्यापार में लगा है, इधर-उधर करने से व्यापार बिगड़ जायेगा। अधिक से अधिक वह विवाह के लिए १ हज़ार दे सकेंगे।"

चौबेजी, "फिर?"

पार्वती, "आगादी की बात पिताजी से ही पूंछ ली जाये।"

चौबेजी, "अच्छा श्रीमान्, आपही बतायें।"

बूढ़ा, "मैंने कहा रुपया मेरा है, लगभग ५० हज़ार होगा, क्या तीनों बहनें १२ हज़ार की भी अधिकारी नहीं हैं? इस पर इस धूर्त ने उत्तर दिया, 'रुपया परिवार का है, न तुम्हारा है न मेरा है। लड़कियों को अधिक देने से वह दूसरे परिवार में चला जायेगा, इसलिए मैं उसका विरोध करता हूँ।"

चौबेजी, धर्म के नाम पर यह अत्याचार?"

स्वार्थी राम, "परिवार की सम्पत्ति को मैं कैसे छिन्न-भिन्न होने देता?"

चौबेजी, "क्या यह भी तुम हिन्दू संस्कृति की हिमायत में कर रहे थे।'

स्वार्थी राम, "और क्या, अपनी हिमायत में कर रहा था?"

चौबेजी, "बस अब अधिक सबूत की आवश्यकता नहीं है। लिखो फैसला।"

एक चेला लिखने बैठा, और चौबे जी ने बोलना आरम्भ किया:

"हम, चौबे माखनचोर, आज्ञा देते हैं कि स्वार्थीराम सचमुच स्वार्थी है। वह अपनी बहनों का हक ही नहीं मारना चाहता बल्कि वह उन्हें तरह-तरह की यातनाएं भी देता रहा है। पिता का रुपया होते हुए भी वह उन्हें पीटता है। इसलिए उस पर १००००) जुरमाना किया जाता है; ५०००) पार्वती के विवाह के लिए, और ५०००) हमारे कोष में जमा कर दिये जायें। मुकदमा करने की उजरत।"

स्वार्थी राम, "मुकदमा करने के ५०००)?"

चौबे जी: नहीं तो क्या मैं तुम्हारा नौकर हूँ? या बादशाह मुझे वेतन देता है! अरे जुरमानों से ही तो अपना खर्च चलाते हैं, नहीं तो भांग कहाँ से घुटे, और लड्डू कहा से उड़े?"

स्वार्थीराम, "इस तो मैं बिला लड़े झगड़े ४०००) ही दे देता तो अच्छा रहता।"

चौबे जी, "और क्या! यदि लोग अपने झगड़े-अपने आप ही निबटा लिया करें तो अदालत का खर्चा उन पर क्यों पड़े। परन्तु यह सब बाद में सूझती है। जब घड़ा फूट गया तो फिर बनता क्या है।"

स्वार्थीराम, "यह अदालत है या रुपया लूटने का साधन?"

चौबेजी, "तुम पर अदालत की तौहीन करने के जुर्म में १०००) जुरमाना किया जाता है न देने में १ साल की कैद सख्त।"

स्वार्थी राम, 'हरे राम, पिताजी अब क्षमा करो, और मुकदमा वापस लेलो, मैं पार्वती के विवाह के लिए ४०००) दे दूँगा।"

चौबेजी, "अब पछताये क्या होता है, जब चिड़िया चुग गईं खेत।"

चलो बाहर जाओ, अब दूसरा मुकदमा किया जायेगा। चेले-चांटे सब को बाहर कर देते हैं।] (क्रमशः)

कैम्प-फायर

एक बड़ा लड़का और दूसरा छोटा (बाप और बेटा) घूमते हुए आते हैं।

बाप—देखा अजायबघर।

बेटा—हाँ पिता जी, बहुत जानवर हैं यहाँ तो।

बाप—अभी तुमने पक्षी ही देखे हैं, अब चलो दूसरे जानवर देखो

बेटा—(एक शरारती लड़के की तरफ संकेत करके) पिता जी, यह कौन सा जानवर है ?

बाप—यह अफ्रीका का बन्दर है।

बेटा—पिता जी, यह तो बोलता भी है।

बाप—यह डारविन साहब के सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य बनने की चेष्टा कर रहा है।

बेटा - कब तक बना जायेगा पिता जी ?

बाप—दस वर्षों में।

बेटा—(एक बेवकूफ से लड़के की ओर संकेत करके) यह कौन जानवर है पिता जी ?

बाप – बेटा, यह बनमानस है।

बेटा—पिता जी, क्या यह भी आदमी बन सकता है ?

बाप—यह तो बन्दर से जंगली पशु की ओर जा रहा है।

बेटा—(एक क्रोधी लड़के की ओर संकेत करके) पिता जी, इस जानवर का क्या नाम है।

बाप—भालू।

बेटा—इससे तो डर लगता है पिता जी।

बाप—डरो मत बेटा यह जंगल का भालू थोड़े ही है अजायबघर का तो ही है।

बेटा- तो यह काटेगा तो नहीं ?

बाप—पिंजड़े में रहते-रहते और चाबुक खाते-खाते यह काटना ही भूल गया, अब तो।

बेटा—(एक चलते-पुरजे लड़के की तरफ इशारा करके) यह कौन जानवर है पिता जी।

बाप—लोमड़ी

बेटा—चालक लोमड़ी।

बाप—हाँ, बेटा चालक, लोमड़ी।

बेटा—(बड़े अफसर की तरफ इशारा करके) इस बड़े जानवर को क्या कहते हैं, पिता जी।

बाप—बेटे, यह शेर है, जंगल का राजा है।

बेटा—इससे तो डर लगता है, पिता जी।

बाप- शेर से डरना ही चाहिए।

बेटा—बहुत डर लगता है, पिता जी अब तो घर चलना चाहिये।

बाप—अच्छा, बेटा चलो।

कुछ जानने योग्य बातें

श्री शान्ति स्वरूप गर्ग

(१) मनुष्य के मस्तिष्क का वजन १½ सेर होता है।

(२) एक स्वस्थ मनुष्य की नाड़ी एक मिनिट में ७० से ८० बार चलनी चाहिये।

(३) भारतवर्ष में सबसे अधिक मृत्यु मलेरिया से होती है।

(४) भारतीय भाषाओं में सबसे पहिला अखबार बंगाल गजट' था जो २६ जनवरी १७८० को कलकत्ते से निकला था।

(५) यदि एक इंच वर्षा हो तो एक एकड़ में २८००० मन पानी गिर जाता है।

(६) भारतवर्ष में लगभग ६ अरब डाक के टिकट प्रति वर्ष खर्च होते हैं, जिनका मूल्य ६ करोड़ रुपया होता है। इसमें लगभग ८०० मन कागज लगता है

(७) इंगलैन्ड में डाक के टिकटों पर इंगलैन्ड देश का नाम नहीं छपा होता।

जनतंत्र की घोषणा

गांधी जी भारत में रामराज्य की स्थापना करना चाहते थे, अयोध्या के राम की नहीं, बल्कि भगवान राम की जो सब प्राणियों का समान देखते हैं और जिनकी दृष्टि में न कोई छोटा है न बड़ा, न धनवान, न कंगाल, न छूत न अछूत, न स्त्री न पुरुष—सब मानव हैं, सब बराबर, प्रेम के सूत्र में बँधे सब भाई-भाई।

उस रामराज्य में आज का सा कलेश नहीं होगा, दूध और शहद की नदियाँ बहेंगी, जिसका तात्पर्य यह है कि राजनैतिक तथा सामाजिक समानता के साथ-साथ आर्थिक समानता भी होगी। जब सब सुख और शान्ति से रह सकते हैं जैसा कि वैज्ञानिकों का मत है तो करोड़ों मनुष्य भूखों क्यों मरें? मानव ने स्वार्थ में पड़कर मानव का अहित किया है, कुछ ने दूसरों पर शासन किया है, उन्हें लूटा है, और भूखों मारा है। यदि इन सब दुष्कृत्यों के स्थान सब फूले फलें तो इसमें किसी की क्या हानि है?

यही गांधी जी का संदेश है। यही रामराज्य का अर्थ है जिसमें सभी आनन्द का जीवन व्यतीत कर सकेंगे। विज्ञान, परिश्रम और सहयोग के संगम से जो सुन्दर एवं पवित्र धारा प्रवाहित होगी वह मरुभूमि को भी उद्यान में परिणत कर देगी। फिर युद्ध का भय सदा के लिए मिट जायगा और सभी रक्त-पिपासु राष्ट्र स्वयं, अपनी सेनाओं और रण-सामग्रियों पर से विश्वास हटा लेंगे। मानव उत्साह और सहृदयता से कल्याणकारी पथ की ओर अग्रसर होगा।

हमारा जनतंत्र अन्य सब देशों से उत्तम और निराला है। न पूर्ण स्थायी है और न नितान्त परिवर्तनशील ही। कालचक्र के अनुसार आवश्यकता पड़ने पर उसमें यथार्थ परिवर्तन किया जा सकता है। जनतंत्र हमारे देश के लिए कोई नवीन वस्तु नहीं है एक न एक रूप में सदैव उसका अस्तित्व विद्यमान रहा है। प्राचीन काल में तो जनतंत्र का पूर्ण प्रभाव था। मध्य काल में बड़े-बड़े साम्राज्य, आज के वैज्ञानिक साधनों जैसे, रेल, तार टेलीफोन, रेडियो, वायुयान आदि के अभाव में भी इसीलिए शताब्दियों तक चलते रहे कि प्रान्त, नगर, ग्राम आदि शासन की सभी इकाइयों को पूर्ण स्वराज्य प्राप्त था।

हमारे जनतंत्र में प्रत्येक बालक राष्ट्र का प्रधान तक बनने का स्वप्न देख सकता है उसके लिए उन्नति करने के सम्पूर्ण साधन नये विधान में दिये हैं। प्रत्येक प्रकार का भेदभाव मिटा कर हमारा जनतंत्र आरम्भ में ही पुकार कर कहता है।—

प्रस्तावना

"हम भारतवासी, दृढ़ प्रतिज्ञा करके कि हम भारत को पूर्ण जनतंत्र राष्ट्र बनाएँगे, और सब नागरिकों को दिलाएँगे :

न्याय—सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक;

स्वतन्त्रता—विचारों की, वाणी की, विश्वास की, धर्म की और पूजा की;

समानता—सामाजिक स्थिति और सुअवसरों की; और उनमें मिलकर वृद्धि करने की;

भ्रातृभाव—जिसमें व्यक्ति की प्रतिष्ठा और राष्ट्र की एकता सुरक्षित रहे;

अपने विधान परिषद् में आज २६ नवम्बर १९४९ को, ग्रहण करते हैं, स्थापित करते हैं और अपने आपको यह विधान देते हैं।"

विधान परिषद के प्रधान देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा है, "इस विधान को पूर्ण नहीं कहा जा सकता; इसमें भी त्रुटियाँ होंगी। चन्द्रमा में भी कलंक है परन्तु उसके कारण उसकी चमक में कोई अन्तर नहीं आता।" हमारा विधान दुनिया के प्रचलित विभिन्न विधानों की आवश्यक बातों का समाहार है, यदि बाहर की चीजें उपयोगी हों तो उन्हें अपनाने में क्याहानि है? यह हमारी भूल होती कि हम दुनिया की ज्ञान-विषयक प्राप्तियों से आँख मूँद लेते।

विधान की रूप-रेखा भी मिश्रित है। इसमें कुछ अंग तो अमरीका के ढंग के 'फेडरल' सरकार के हैं, जैसे निर्वाचित राष्ट्रपति और कुछ ब्रिटेन के ढंग की पार्लियामेन्टरी व्यवस्था के, जैसे लोकसभा के प्रति उत्तरदायी मंत्रिमंडल हमारे विधान की विशेषताएँ हैं :—

१—पूर्व विधानों की भाँति यह विदेशी प्रभुओं की

देन नहीं है प्रत्युत हमारे ही निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा बनाया गया है।

२—शक्ति का स्रोत जनता है।

३—विधान की रूप-रेखा जनतंत्र के सिद्धान्तों पर आधारित है।

४—विधान की दृष्टि में प्रत्येक नागरिक को समानता प्राप्त है। सारे भेदभाव मिटा दिए गये हैं।

५—प्रत्येक वयस्क स्त्री-पुरुष को मताधिकार प्राप्त है।

६—देशी रियासतों की तानाशाही समाप्त करके वहाँ भी जनतंत्र स्थापित कर दिया गया है और इस प्रकार बिखरी हुई समस्त देशी रियासतें भी हमारे जनतंत्र में मिल गई हैं।

७—विषाक्त पृथक निर्वाचन-पद्धति के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन पद्धति स्थापित की गई है।

८—विदेशी भाषा के स्थान पर भारतीय भाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद प्रदान किया गया है।

९—ग्राम पंचायतों की स्थापना और ग्रामीण उद्योग-धंधों के विकास की पूर्ण व्यवस्था की गई है।

हमारे राष्ट्र का विधान महात्मा गांधी के सिद्धान्तों पर निर्धारित है। पंडित नेहरू के नेतृत्व, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता और डाक्टर अम्बेदकर के अगाध परिश्रम से यह पवित्र त्रिवेणी प्रवाहित हुई है जिसमें केवल वर्तमान पीढ़ी ही नहीं प्रत्युत भावी पीढ़ियाँ भी चिरकाल तक, इसमें स्नान करके अपने जीवन को शुद्ध, सुखमय और सफल बनाएँगी।
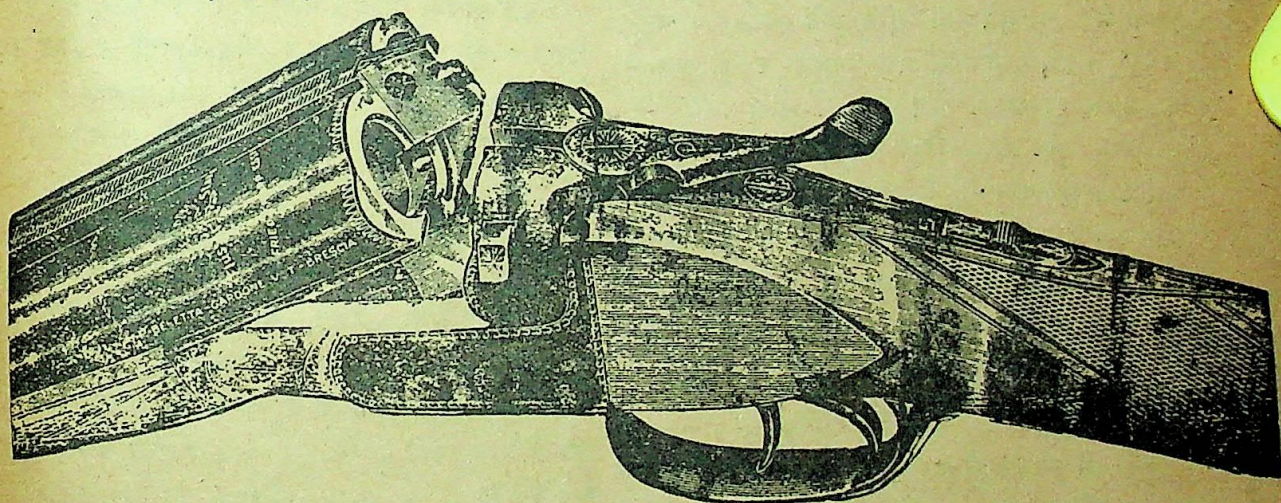
विकास-पथ

कुमारी लीला कृपलानी, गर्लस्काउट केपटिन, आबू रोड

हमारा देश 'सैकड़ों वर्षों' की गुलामी के पश्चात् स्वतंत्र हुआ है। सोया हुआ भारत फिर से जगा है, गिरा हुआ देश फिर से उठा है। धीरे-धीरे चलना सीखेगा और चलते-चलते दौड़ने लगेगा; परन्तु इस सफलता को प्राप्त करने की कुञ्जी किसके हाथ में है? देश के सुपुत्रों तथा सुपुत्रियों के हाथ में है। आज के बालक तथा बालिकायें कल के पिता व माताएँ तथा देश के पथ-प्रदर्शक होंगे।

पचास वर्षों से सारे संसार में स्त्री-शिक्षा का प्रचार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बालकों की भाँति बालिकाएँ भी विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्राप्त करने लगी हैं तथा पुरुषों की समता करने के लिए समर्थ हो रही हैं; किन्तु आधुनिक स्कूलों तथा कालेजों में शिक्षा पाकर क्या हमारी बहिनें स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, वीर तथा अपने उत्तर-दायित्व को पूरा करने की क्षमता रखने वाली सुनागरिक बनती हैं? क्या भेड़ों के झुण्ड की भाँति डन्डे के डर से चार-दीवारी के भीतर, पुस्तकों के अक्षर पढ़कर उनकी आत्म-शक्ति उन्नति हो सकती है? क्या वे कॉलेज का उच्च शिक्षण प्राप्त करके अपने सबसे आवश्यक उत्तरदायित्व, जिसमें उन्हें सुशील नारी, सेविका और गृहलक्ष्मी बनना है, समझती हैं? और कातना, पाकविद्या, सीना, ललित कला, इन सब बातों में क्या परिपूर्ण हो जाती हैं? नहीं, आधुनिक शिक्षा बालिकाओं को सुनागरिक नहीं बना सकती। जब कि वह बालकों को ही सुनागरिक नहीं बना सकती तो बालिकाओं की तो बात ही क्या?

आज की बालिकाओं के नेतृत्व में ही भविष्य के नेता देश की शान ऊँची करने को आने वाले हैं।

जब बालिकाओं को आगे चलकर इतनी भारी जिम्मे-वारी अपने सिर पर उठानी है तो यदि उनको बचपन से ही ऐसी शिक्षा दी जाय कि वे उस योग्य बनें तो मनुष्य जाति का कितना उपकार हो जाय।

स्काउटिंग के जन्मदाता की धर्मपत्नी लेडी बैडन पावेल लिखती हैं, "गर्लस्काउटिंग का उद्देश्य है—भविष्य लिए के सच्चे नागरिक पैदा करना जो घर की स्वामिनी व माताएँ बनें। इसका तरीका यह है कि बालिकाओं को इस प्रकार की शिक्षा दी जाय कि उनका उमंगों को बढ़ने का पूर्ण मौका मिले और वे अपने लक्षण अपने आप सुधार सकें, हाथ का हुनर सीखें दूसरों की सहायता करें और अपना स्वास्थ्य कायम रखें"

जीवन के प्रत्येक पग पर स्त्रियों को "स्त्री" होने के कारण और अनेक सामाजिक बँधनों के कारण पुरुषों से अधिक संकटों का सामना करना पड़ता है। वे किसी न किसी तरह उन सबका सामना करती रही हैं। यदि सचमुच बालिकाओं को स्काउटिंग की शिक्षा दी जाय तो अवश्य ही उनके जीवन सुखमय हो जायँ और वह अपने उत्तरदायित्व को समझने लगें।

यह सोचना बिल्कुल गलत है कि स्काउटिंग एक नई संस्था है और इसका आरम्भ बीसवीं सदी में ही हुआ है। यदि गौर से देखा जाय तो पता चलता है कि यह प्राचीन समय से ही चली आ रही है। लेकिन हाँ, तब इसका रूप कुछ और था और अब और है। भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास देखा जाय तो सैकड़ों उदाहरण पूर्ण-रूप से स्काउट्स तथा गर्लस्काउट्स के मिलेंगे। राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम, प्रताप, अभिमन्यु आदि स्काउट्स तथा सीता, द्रौपदी, पद्मिनी, दमयन्ती और झाँसी की रानी इत्यादि गर्लस्काउट्स के नाम आज भी हमारी नस नस में जोश बहाते हैं और हम गौरव से शीश ऊँचा उठाते हैं। यह भारत एक समय उच्च स्थान पर था और सारे संसार में प्रसिद्ध था। धीरे धीरे नाना प्रकार के परिवर्तन होते गये और मनुष्य समाज अपने नैतिक पतन की ओर बढ़ता गया, प्राचीन सिद्धान्तों को भूलता गया, आपस के झगड़े बढ़ते गये और अन्त में अपनी स्वतन्त्रता खोकर गुलामी की जंजीरों से जकड़ लिया गया। इन समस्त घटनाओं का सबसे बुरा असर स्त्रियों की जिन्दगी पर पड़ा। स्त्रियों को शिक्षा देना या दिलाना, घर से बाहर

निकलने देना, उनके चेहरे को घूंघट से बाहर प्रकृति की साफ तथा खुली हवा में निकलने देना धर्म के विरुद्ध समझा जाने लगा। इसका परिणाम क्या निकला !—स्त्रियाँ मूर्ख, डरपोक, कमजोर और संकुचित विचारों वाली होने लगीं और उसी का प्रभाव उनकी संतान पर भी पड़ा जिसका नमूना आज हमारे सामने है। अब यह बिगड़ी हुई हालत कैसे सुधरे ? प्रत्येक वस्तु के लिये पहले यह सोच लेना आवश्यक है कि इस दुर्गुण का कारण क्या है ? गिरावट या बिगाड़ की हालत देखो, फिर वहीं से उसका सुधार शुरू करो तो सुधार हो सकता है। नींव को पक्का बनाना आवश्यक है। जब तक नींव मजबूत न होगी, ऊपर चाहे कितनी अच्छी ही इमारत अच्छे से अच्छा सामान लगाकर तैयार क्यों न की जाय, कभी देर तक नहीं रह सकेगी। जैसी-जैसी शिक्षा लड़कियाँ प्राप्त करेंगी वैसी ही वे आगे चलकर बनेंगी। जैसा बीज बोवोगे वैसा ही फल भी पाओगे।

इसलिये राष्ट्र की उन्नति निर्माण में सब का धर्म है कि लड़कियों को स्काउट शिक्षण दिलवाने में कोई कोशिश बाकी न रखे; किन्तु इसे अपना प्रथम कर्त्तव्य समझें। लड़कियों का शिक्षण ही समस्त जाति के शिक्षण की नींव है। एक लड़की के शिक्षित होने से एक जाति का शिक्षण हो जाता है, जब कि एक लड़के के शिक्षण से केवल एक ही पुरुष का शिक्षण होता है।

बनें हम तेजस्वी गुण खान

श्री यज्ञदत्त अक्षय, विशारद

विश्वासी हों, सत्य प्रेममय, मधु रसमय वाणी होवें,
शुभचिंतक हों, निष्ठामय बन, सुख-दुख के साथी होवें;
रहे पर सेवा का नित ध्यान।
बनें हम तेजस्वी गुण खान ॥

सब के सच्चे मित्र परस्पर, भाई चारा अपनावें,
जाति धर्म समभाव भक्ति मय, स्नेह सुधारस सरसावें;
रहे संगठन दृढ़ बलवान।
बनें हम तेजस्वी गुण खान ॥

विनयशील हों, मिलनसार बन, दया अहिंसा अपनावें,
आज्ञा पालक, धीर-संयमी, निज पर काबू रख पावें;
रहें सुख-दुख में एक समान।
बनें हम तेजस्वी गुण खान ॥

स्वस्थ साहसी आत्मजयी बन, वीर बालचर बन विचारें,
शुद्ध रहें मन वचन कर्म, दिन-दिन जीवन में निखरें;
देश का होवे अभ्युत्थान।
बनें हम तेजस्वी गुण खान ॥

अन्तरप्रान्तीय समाचार

गया—

गया शहर के हिन्दुस्तान स्काउटों ने 'राजेंद्र जयन्ती' श्री शत्रुघ्न शरण सिंह, जिला स्काउट कमिश्नर के नेतृत्व में मनाया। स्काउटों ने 'देशरत्न' के चित्र को '६५' स्काउट रायफल से गार्ड ऑफ ऑनर दिया। इसके उपरांत स्काउटों की सभा में डा० : केशव प्रसाद सिनहा, (सभापति जिला संस्था) श्रीबाल मुकन्द जी, जिला स्काउट मास्टर, तथा श्री वीरेंद्र कुमार जी ने अपने भाषण में 'राजेन्द्र बाबू' का बिहार स्काउट संस्था से घनिष्ट सम्बन्ध बताया। उन्होंने चीफ स्काउट के रूप में हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन की सेवा किया है। उनका आशीर्वाद बिहार के हर समाज सेवा करने वाली संस्था पर रहता है। अन्त में सबने 'राजेन्द्र बाबू' के दीर्घायु के लिए मौन प्रार्थना किया। इस समारोह का आयोजन स्वयं श्री केदार नाथ सहाय जिला स्काउट प्रचारक ने राजेन्द्र आश्रम में किया था।

अजमेर

स्थानीय श्री टीकमचंद जैन हाई स्कूल के वार्षिकोत्सव पर तारीख २०-११-४६ का सायंकाल पुलिस सुपरिटेंडेन्ट श्री सुघड़सिंह जी की अध्यक्षता में शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन एवं बालचरों के खेल व दीक्षा संस्कार हुआ। बालचरों द्वारा बनाये गये स्तूप निर्माणों को देखकर जनता बहुत ही खुश हुई। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री सुघड़ सिंह ने शारीरिक व्यायाम की उपादेयता और स्काउटिंग की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यद्यपि मैं सिपाही हूँ फिर भी मैं देश के बालकों को रणभूमि के योधा ही नहीं जीवन के मैदान में एक सच्चे नागरिक के रूप में देखना चाहता हूँ। स्काउट कमिश्नर के नाते आपने कहा कि इस स्कूल के बालचरों के कार्यों को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ और मैं चाहता हूँ कि इस स्कूल के बालचर अपने स्काउट मास्टर श्री सुशील चन्द्र जैन के साथ रह, शिक्षा प्राप्त कर एक सच्चे नागरिक बनने में अभी से ही प्रयत्नशील हों।

जबलपुर—

दुर्गापूजा के अवसर पर नगर के विभिन्न भागों में स्काउटों ने अपार भीड़ के मध्य सेवा कार्य किया। श्री वी० पी० तिवारी ग्रुप लीडर कन्टूमेन्ट क्षेत्र में जहाँ पर विशेष भीड़ की जनता को शान्त करने का कार्य सराहनीय रहा। घमापुर क्षेत्र में जहाँ पर रामलीला के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी, श्री एन० आर० चौधरी डि० स्का० कमिश्नर और प्रधान मंत्री श्री के० एच० सैन्डरे ने समय समय पर जाकर स्काउटों के कार्य का निरीक्षण किया। नेता जी और सिविल लाइन ग्रुप का कार्य विशेष सराहनीय रहा। माननीय मंत्री श्री मेहता जी ने स्काउटों के कार्य की सराहना की और जिला स्काउट कमिश्नर श्री एन० आर० चौधरी के प्रति धन्यवाद प्रकट किया।

× × ×

ग्रामों के सुधार सम्बन्धी एक बैठक में श्री के० एच० सेन्डरे और श्री पी० एल० शर्मा तथा श्री आर० आर० बहाल आदि ने बड़े उत्साह के सब भाग लिया। श्री एम० वी० पिल्लई हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन के पुस्तकालय के अध्यक्ष चुने गये।
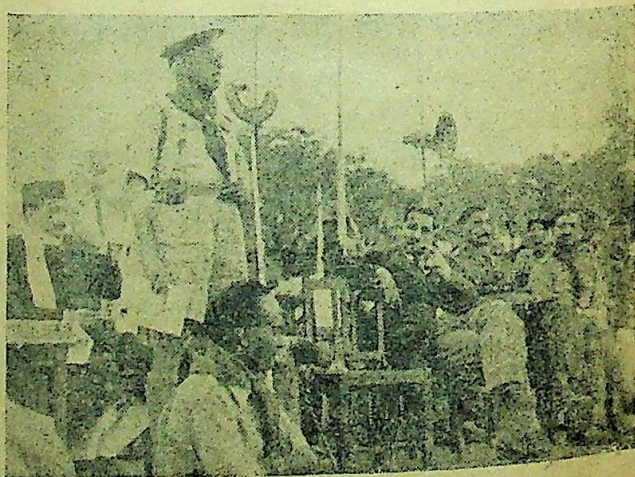
अजमेर में हिन्दुस्तान स्काउट्स की रैली में पंडित श्रीराम वाजपेयी नेशनल आर्गनाइजिंग कमिश्नर भाषण दे रहे हैं।

हमारी गतिविधि

पत्र द्वारा मित्रता

नजीबाबाद असोसिएशन के कुछ रोवर स्काउट दूसरे प्रान्तों के स्काउट भाइयों को पत्र-व्यवहार के लिए निमंत्रित करते हैं। वीरों को चाहिए कि वे अपने यहाँ के प्राकृतिक दृश्य आदि के विषयों में लिखें।

१. जगदीश प्रसाद अग्रवाल स्काउट
श्यामली स्ट्रट, नजीबाबाद

२. शिवचरन दास जालेटिया रोवर स्काउट नजीबाबाद

३. राधेमोहन मिश्र बालकराम स्ट्रट
नजीबाबाद

४. कैलाश चंद वशिष्ठ
हिन्दुस्तान स्काउट, नजीबाबाद

कानपुर—

१ दिसम्बर को सरकारी श्रमिक हितकारी केन्द्र, मीरपुर में विभिन्न केन्द्रों के १५० स्काउटों ने भाग लिया। स्काउट रैली में स्काउट गान, ड्रिल, मार्च, पिरापिड आदि का कार्यक्रम रक्खा गया। स्काउटों के उत्साह का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

इलाहाबाद—

२४ नवम्बर स्वदेशी प्रदर्शनी में प्रान्तीय प्रधान कार्यालय के स्काउटों ने अपनी स्काउट कलाओं का जो प्रदर्शन किया उसका दर्शकों पर विशेष अच्छा प्रभाव पड़ा। श्रीविद्या प्रसाद जी जिला सुपरिंटेन्डेन्ट फिजिकल कलचर, इलाहाबाद ने एक पत्र द्वारा स्काउटों के कार्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि आशा है स्काउट इस प्रकार के कार्यों में सदैव भाग लिया करेंगे।

एटा—

१६ से १८ नवम्बर तक एटा में गवर्नमेंट हायर सैकिन्ड्री स्कूल में एक कैम्प हुआ। श्री पंचम लाल जी चतुर्वेदी, डि० स्काउट कमिश्नर तथा ज़िला इन्सपेक्टर ने स्वयं उपस्थित रह कर इसका संचालन किया। ६०० रोवर्स और स्काउटों ने भाग लिया। अन्तिम कैम्प फायर श्रीमती एक० अग्रवाल की अध्यक्षता में हुआ। ८ ता० को पारितोषिक वितरण माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी शिक्षा-मन्त्री, यू० पी० द्वारा हुआ। शिक्षा-मन्त्री जी ने कैम्पर्स के उत्साह की बड़ी प्रशंसा की।

बरैली

ता: २७ नवम्बर को गोविन्द बल्लभ पार्क में ठा० रामरूप सिंह जी जिला धीश बरेली की अध्यक्षता में डिवीज़नल

अजमेर की बालिका स्काउटों द्वारा पंडित श्रीराम जी वाजपेयी को गार्ड आफ आनर दिया जा रहा है।

स्काउट कैम्प का विराट समाप्ति-उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली से हमारे प्रान्त के प्रान्तीय कमिश्नर श्रीयुत मदन मोहन जी जो अब राजस्थान के शिक्षा-संचालक के पद को सुशोभित करेंगे पधारे और उन्होंने बताया कि आज़ाद देश के बच्चों को कैसा होना चाहिये तथा स्काउटिंग का इस प्रकार के बच्चों की शिक्षा से कितना घनिष्ट सम्बन्ध है!

कैम्प में बरेली, मुरादाबाद, बिजनौर, रामपुर, बदायूं आदि अनेक ज़िलों के स्काउटों तथा स्काउट मास्टरों और म्युनिस्पल बोर्ड के ३५० शीरबच्चों ने शिक्षा प्राप्त की, शिविराध्यक्ष का भार श्रीयुत पुरुषोत्तम लाल जी चूड़ामणि सहायक, प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर पर था, सौभाग्य से बरेली डिवीज़न के स्काउटों ने पूरे समय तक श्रीयुत

रामदेवजी भार्गव डिप्टी कैम्प डाइरैक्टर युक्त प्रान्त की सेवाओं से पूर्ण लाभ उठाया, श्री सूर्य प्रकाश जी एडवोकेट सहायक प्रान्तीय कमिश्नर के अथक परिश्रम तथा दिलचस्पी के परिणाम-स्वरूप ही इतना विराट कैम्प तथा रैली और वृहद कैम्पफ़ायर हो सका है। कैम्पफायर श्री जगदीश शरण चेयरमैन की अध्यक्षता में हुआ।

शाहजहाँपुर

ता० ५, ६ दिसम्बर को श्री ओ३म प्रकाश गोयल रीज़नल स्काउट अर्गिनाइज़र रुहेलखण्ड व कुमांऊ ने शाहजहाँपुर सुमुक्ष आश्रम के अखिल भारतीय वार्षिक महोत्सव के अवसर पर, श्री बाजपेई स्काउट ट्रुप रामसेवक स्काउट फोर्स तथा गोशाला स्काउट ट्रुप और नार्मल स्कूल के स्काउटों के साथ सेवाकार्य किया। ज़िला स्काउट कमिश्नर श्री डा० जयनारायण जी सक्सेना तथा श्री भगवती प्रसाद जी माथुर मेले में समय-समय पर आकर उत्साहित करते रहे।

पीलीभीत

१० दिसम्बर को पीलीभीत में स्थानीय गवर्मेंट हायर सेकन्डरी स्कूल में लगभग ३०० स्काउट व शेर बच्चों की रैली ज़िला स्काउट कमिश्नर श्री रामबहादुर जी सक्सेना की अध्यक्षता में हुई !

शेर बच्चों के व्यायाम, सिंह गर्जना आदि देख कर दर्शकगण चकित हो गये !

श्री ज़िला इन्स्पेक्टर आफ़० स्कूल्स भी रैली में उपस्थित थे। कैम्प का संचालन श्री ओ३म प्रकाश गोयल रीज़नल स्काउट आर्गनाइज़र ने ८ ता० से किया था ! सिटी स्काउट कमिश्नर श्री देवदत्त जी शास्त्री तथा श्रीयुत विश्वम्भर नाथ जी कपूर प्रिन्सिपल उक्त स्कूल ने रैली में पूर्ण सहयोग दिया !

फ़ैज़ाबाद (अकबरपुर)—

१६ नवम्बर से १ दिसम्बर तक बी० एन० इन्टर कालेज, अकबरपुर के १५ स्काउटों का शिविर, गोविन्द साहेब के मेले में यात्रियों की सेवा के निमित्त किया गया। वहाँ मन्दिर के फाटक पर दर्शनार्थियों की अपार भीड़ में स्काउटों ने बड़ी वीरता तथा तत्परता से लोक सेवा का कार्य किया। उनके इस सद्कार्य से जनता बहुत प्रभावित हुई। रात्रि में उन्होंने कुछ घंटों के लिये पेट्रोलिङ्ग और मार्ग खोजने का अभ्यास भी किया। यह शिविर बड़ा उत्साहपूर्ण रहा और निर्विघ्न समाप्त हुआ। इसकी सफलता का मुख्य श्रेय श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद उपाध्याय एम० ए०, सी० टी०, स्काउटर को है।

गोंडा—

जिला बोर्ड अध्यक्ष महोदय श्री ठाकुर नौरङ्ग सिंह की आयोजनानुसार आर्गनाइजिङ्ग स्काउट मास्टर श्रीशिवकुमार लाल श्रीवास्तव रोवर लीडर डी० ए० वी० हाई स्कूल नवाबगंज गोंडा ने जिला शिक्षालय निरीक्षक महोदय की अध्यक्षता में जू० हा० स्कू० ससकनवा सेन्टर पर ५ दिसम्बर से १२ दिसम्बर तक डि० बोर्ड के ३१ स्काउट मास्टरों का रिफ़ेशर ट्रेनिङ्ग कैम्प किया। साथ ही सचल शिक्षा दल के भी लगभग ८० राजकीय पाठ शाला के अध्यापकों ने कोमलपद स्काउट शिक्षा प्राप्त की।

इस कैम्प के लिये महत्वपूर्ण समाचार यह है कि वर्तमान जिला शिक्षालय निरीक्षक महोदय श्रीमान रमेशचन्द्र बनर्जी स्वयं एक आदर्श स्काउट हैं, उनके कैम्प जीवन के आदर्श से सभी अध्यापक बड़े ही प्रभावित हुये। उन्हीं की सच्ची भावनाओं तथा प्रेरणाओं से प्रभावित होकर ज़िले के तीन प्रमुख व्यक्तियों ने १—श्रीमान राजा साहब मनकापुर, २—श्रीमान ठाकुर नौरंग सिंह जिला बोर्ड अध्यक्ष तथा ठाकुर चन्द्रभान शरण सिंह जी, एम० एल० ए० ने विधिवत हि० स्का० अ० के झण्डे के नीचे दीक्षा ली।

बस्ती—

राजकीय प्रशिक्षण विद्यालय बस्ती में १२६ भावी अध्यापकों क हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन की ओर से श्री विलियम महोदय द्वारा स्काउटिंग की ट्रेनिंग सुचारु रूप से दी गई। दो अन्य शिक्षकों ने श्री विलियम के शिक्षा कार्य में हाथ बटाया। दिनांक १२-११-४६ को विभिन्न प्रकार की खेल, प्रदर्शन तथा सायंकाल को शिक्षाप्रद कैम्पफ़ायर का कार्य श्री कैलाशचन्द मित्तल जिलाधीश महोदय के सभापतित्व में किया गया। जिसमें जिला इन्सपेक्टर शिक्षा-विभाग, डिप्टी कलक्टर, जिले के अन्यान्य अधिकारीवर्ग तथा महिलाओं ने इस प्रदर्शन को सफल बनाया।

कैम्पफायर के पश्चात् स्काउटस् दीक्षा संस्कार तथा बैज वितरण किया गया। अन्त में सभापति महोदय का उल्लासवर्द्धक तथा शिक्षाप्रद भाषण हुआ। पुनः जिलाधीश महोदय की ओर से स्काउटस के निमित्त कुछ द्रव्य जलपान के लिए तथा स्काउट एसोसियेशन बस्ती की ओर से स्काउटों को २५) प्रदान किया गया। तदन्तर हर्षध्वनि तथा सिंहनाद के साथ-साथ सभा विसर्जन हुआ।

नजीबाबाद—

हिन्दुस्तान स्काउट असोसियशन की ओर से सरस्वती हायर सैकन्डरी स्कूल में मैदान में श्री ओ३म् प्रकाश गोयल की अध्यक्षता में दूसरा जिला बालचर कैम्प ता० २५ दिसम्बर से २९ दिसम्बर १९४९ तक हुआ, जिसमें धरमपुर, धामपुर और शहर के स्काउट तथा म्युनिसिपल टीचर्स ने भाग लिया, कैम्पर्स के कार्य को देख कर क़दम-क़दम पर स्काउटिंग की लहर दौड़ती थी। श्री ओंकार सिंह जी प्रिंसिपल, गवर्नमेन्ट हायर सैकन्डरी स्कूल व सरकारी डाक्टर श्री पी० डी० गुप्त का क्रमशः चरित्र व फर्स्ट ऐड पर अति उत्तम भाषण हुआ। शेर बच्चों की सिंह-गरजना ने लोगों को प्रभावित कर दिया। ता०-२९-१२-४९ को कैम्प का अंतिम जलसा हुआ, इस जलसे में सभापति श्री अन० अच० सैन जिला इन्सपैक्टर आफ स्कूल थे। जिन्होंने कार्य से प्रभावित होकर आश्वासन दिलाया है कि वह अपने प्रत्येक स्कूल में स्काउटिंग को पूर्णरूप से स्थान देंगे, इस कैम्प के कैम्प इन्चार्ज श्री शिवचरन दास जाखेटिया अवैतनिक प्रचार स्काउट मास्टर थे। जलसे के बीच श्री राय साहब लाला फ़तेचन्द जी जिला स्काउट कमिश्नर पधारे जिन्होंने अपने भाषण से स्काउटों में और भी उत्साह पैदा कर दिया।

बहराइच—

ता: २३-१२-४९ ई० को हिज़ हाईनेस महाराज एवं महारानी कपूरथला जगतजीत हायर सेकेन्डरी स्कूल इकौना में पधारे। विद्यालय के बालचरों ने गार्ड आफ़ आनर दिया और प्रदर्शिनी, स्पोर्टस, फैन्सी ड्रेस और स्काउट बाज़ार का आयोजन किया। महाराजा ने बालचरों के इन कार्यों की बड़ी प्रशंसा की। चलते समय ५१ रु० बालकों को मिठाई के लिए और दो दिवस की छुट्टी प्रदान की।

१ दिसम्बर को जिले के ३२५ स्कूलों में स्काउट दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। स्काउट-दिवस के रोज श्री बुद्धिसागर श्रीवास्तव आर्गनाइजर ने २० स्कूलों का निरीक्षण भी किया। अन्त में बहराइच के सभी स्कूलों ने मिल करके प्र-ब्रांच बड़ीहाट में राय बहादुर भागवत प्रसाद जिला स्का० कमि के सभापतित्व में जलसा मनाया। जनता की भीड़ काफी थी स्काउट आर्ग० श्री बुद्धिसागर श्रीवास्तव एवं श्री अकबाल कृष्ण शिक्षा सुपिरन्टेन्डेन्ट द्वारा जनता पर स्काउटिंग का प्रकाश डाला गया और असोसियशन के तरफ से तीन गर्ल्स स्काउट तथा एक स्काउट को पुरष्कार दिया गया।

लखनऊ—

जनाना पार्क में लखनऊ में ३-१२-४९ से ९-१२-४९ तक बालिका स्काउटों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शिक्षण शिविर हुआ। कैम्प का उद्घाटन ३-१२-४९ को श्रीमती सनवाल द्वारा दिया गया। ८ दिसम्बर को कैम्प फायर हुआ। ता० ९ दिसम्बर को श्रीमती माननीय ए० जी० खेर की अध्यक्षता में रैली की गई।

जौनपुर—

८ दिसम्बर को श्रीमती लक्ष्मी मेहरोत्रा के सभापतित्व में जिला स्काउट रैली हुई जिसमें सभी स्थानीय कन्या पाठशालाओं की बालिका स्काउटों ने भाग लिया।

स्थापन्न प्रांतीय-प्रचार-कमिश्नर हरिद्वार में

पश्चिमी जिलों का दौरा करते हुए श्री अमरनाथ गुप्त स्थापन्न प्रान्तीय प्रचार-कमिश्नर ता० १०-१२-४९ को सहारनपुर से हरिद्वार पधारे। हर की पैड़ी कार्यालय पर लोकल स्काउट दल के बालचरों ने उनका स्वागत किया। श्री गुप्त जी ने कार्यालय के अर्थ का निरीक्षण किया। पश्चात् श्री गुप्त जी व श्री शान्तिस्वरूप गर्ग मेला आफ़ीसर से मिले और आगामी कुम्भ मेला के अवसर पर स्काउटों द्वारा सेवा कार्य के विषय में विचार विनिमय किया।

हरिद्वार में रैली—

श्री अमर नाथ जी गुप्त प्रा० प्रचार कमिश्नर के स्वागत में श्री शान्ति स्वरूप जी भगत प्रधान अध्यापक नार्मल स्कूल ने स्थानीय स्काउटों की एक विराट रैली ज्वालापुर हाई स्कूल में आयोजित की। रैली में सभी

संस्थाओं के बालचरों ने अपना-अपना कार्य दिखाया। जो अति सराहनीय था। श्रीगुप्तजी ने बालचरों को उपदेश दिया और शास्त्रीजी ने धन्यवाद।

पंचपुरी के बालचर मंडल की ओर से एक अभिनन्दन पत्र श्री गुप्त जी को भेंट किया गया।

अंत में संध्या समय एक पार्टी दी गई जिसमें स्थानीय सभी संस्थाओं का पूर्ण सहयोग रहा। श्रीदीनदयालु शास्त्री, एम० एल० ए०, प्रधान-स्काउट असोसिएशन (पंचपुरी) हरिद्वार भी हमारे मध्य में थे।

मुजफ्फरनगर

स्थानापन्न प्रांतीय-प्रचार-कमिश्नर ता० १४-१२-४६ को मुजफ्फरनगर पधारे। मुजफ्फरनगर के स्काउट मास्टरों की एक सभा का आयोजन किया गया। श्रीगुप्त जी ने स्काउट मास्टरों से स्काउट प्रचार के विषय में १½ घन्टे तक विचार विनिमय किया तथा स्काउट अध्यापकों द्वारा उठाये नये प्रश्नों का संतोषजनक हल बतलाया। कुछ संस्थाओं का दौरा भी किया। श्री शांतिस्वरूपजी भी साथ थे।

नारसन में

गुरुकुल नारसन के वार्षिक उत्सव पर श्री उदय भान शर्मा, सब डि० इंस्पेक्टर महोदय ने एक विराट स्काउट रैली का आयोजन किया। उसी समय पर कोआपरेटिव के जिला स्काउट मास्टर जी ने ग्राम स्काउटों की रैली। की स्काउट रैली के अवसर पर प्रां० प्रचार-कमिश्नर गुप्तजी व जिला स्काउट कमिश्नर श्री रूपचन्द्रजी जैन नारसन पधारे। रैली श्री गुप्त जी के सभापतित्व में हुई। श्री जैन साहब ने उद्घाटन किया। रैली में निकट ग्रामों के जूनियर प्राइमरी स्कूलों ने हिस्सा लिया। मंगलोर का नेशनल हाईस्कूल दल भी शामिल हुआ। रैली का संचालन शांतिस्वरूप द्वारा किया गया था।

मुरादाबाद

१८ दिसम्बर को १०० रोवर स्काउट श्री पुरुषोत्तम लाल जी चूड़ामणि के निरीक्षण में मनोहरपुर ग्राम में ग्रामसेवा के लिए गये। वहाँ पर टोलियों के हिसाब से भोजन बनाया। मार्ग में स्काउट चिन्हों की मदद से निश्चित स्थान पर पहुँचे। गाँव के लोगों की सभा बुलाई गई जिसमें प्रो० रामशरन, एम० ए०, एल० टी०, श्री पुष्प-दत्त पंत जिला शिक्षा निरीक्षक, श्री शम्भूनाथ खन्ना और श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि के ग्रामोपयोगी, विषयों पर भाषण हुये। श्री रामदेव जी भार्गव ने ग्रामीण भाइयों के मनोरंजन के लिए हल्के टिकट कलक्टर का पार्ट अदा किया। स्काउटों ने दिए हुये प्रश्नों को दृष्टि में रखते हुये गाँव का सर्वे किया। १२ ता० को श्री अमरनाथ जी गुप्त हेडक्वाटर्स कमिश्नर के सभापतित्व में रैली और कैम्प फायर सम्पन्न हुआ।

सहारनपुर—

दिसम्बर १०, ११ और १२ को स्काउट और शेर बच्चों को श्री चूड़ामणि जी और श्री भार्गव ने ट्रेनिंग दी।

१३ दिसम्बर से २२ दिसम्बर तक श्री पुरुषोत्तम लाल जी चूड़ामणि बरेली, मेरठ, लखनऊ में भी रहे। स्थानीय कार्यकर्त्ताओं से वार्षिक रैली के सम्बन्ध में विचार किया और लखनऊ और बरेली में शिक्षा-संचालक और उपशिक्षा संचालक से क्रमशः शीतलाखेत स्काउट विद्यालय की आर्थिक सहायता के सम्बन्ध में भेटें कीं।

इटावा—

ता० ६-११-४६ से १०-११-४६ तक टोली नायकों का शिक्षा शिविर किया गया। इसमें शिक्षार्थियों की संख्या ४६ थीं। जिनको श्री प्रेमविहारी भान डी० स्का० ग्रा० ने ट्रेनिंग दी। इस शिविर में ३ दिनों तक श्रीप्राणनाथ शर्मा, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर भी उपस्थित रहे और उन्होंने शिक्षार्थियों को चरित्र-गठन पर विशेष रूप से समझाया! अन्तिम जलसा उपसभापती हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन इटावा की अध्यक्षता में हुआ। इस जलसे में बालिका स्काउटों ने भी भाग लिया।

फरुखाबाद—

१३ से २३ नवम्बर तक फतेहगढ़ में शिक्षण शिविर श्री प्रेमविहारी जी भान द्वारा किया गया। इसमें १३६ बालचरों ने भाग लिया जिसमें १०३ टोली नायक व उपनायक और ३३ ध्रुवपद स्काउट ट्रेन्ड हुये। १६ ता० को फतेहगढ़ से फरुखाबाद रूट मार्च हुआ और २३ नवम्बर को जिला इन्स्पेक्टर स्कूल की अध्यक्षता में अन्तिम जलसा हुआ। इस शिविर की सफलता का श्रेय श्रीमिश्रा जी प्रधानाध्यापक गवर्नमैन्ट नार्मल स्कूल, श्री जे० एस० राम जिला स्काउट कमिश्नर व श्री विद्यासागर जी को है।

हमारा प्रकाशन

सुरुचिपूर्ण साहित्य का प्रकाशन हमारा पवित्र ध्येय है

कोमल पद—पं० श्रीराम बाजपेयी १॥)
प्रथमपद शिक्षण १।॥)
ड्रिल १॥)
पब्लिक हेल्थ मैन ॥=)
गुरुपद शिक्षण बा० विंद्राप्रसाद खत्री १॥)
स्काउट मास्टरी और ट्रुप संचालन—श्री जानकीशरण वर्मा १।=)
टोली बिधि १।)
कैम्प फायर १)
आग बुझाने का हुनर १)
गांठ विद्या—श्री भोलानाथ चौधरी ॥=)
स्काउटिंग द्वारा ग्राम सुधार—श्री डॉ० एल० आनन्दराव ॥=)
स्काउटिंग और समाज सेवा ॥=)
वनोपसेवन १)
समाज सेवा १॥)
रचनात्मक कार्यक्रम ॥।)
राष्ट्रीय झंडा और उसका प्रयोग ॥)
गांवों को उन्नत बनाने की योजना (अंग्रेजी) ।=)
साम्प्रदायिक झगड़े और हमारा कर्त्तव्य ।=)
साम्प्रदायिक झगड़े और स्काउटों का कर्त्तव्य ।-)
खेल—श्री० डॉ० एल० आनन्दराव तथा पं० मुरारी लाल शर्मा १॥)
सुनहरा प्रभात—श्री अमरनाथ गुप्त १)
जगमगाते तारे १)
देश के गीत १)
हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन का इतिहास—श्री पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि ॥)
ग्रामीण भारत ॥=)
प्रौढ़ शिक्षा प्रसार—श्री सीताराम जायसवाल १)
ममोमा चार्ट ।=)
नक्षत्र दर्पण १॥)
अन्वेषण की कहानियाँ १।)
गर्ल गाइडिंग—श्री कृष्णनन्दन प्रसाद १॥)
स्कीम आफ ट्रेनिंग (अंग्रेजी में) ।)
कमिश्नर कैम्पेनियन (अंग्रेजी में) १)
रामायण (अंग्रेजी में) १)
ग्राम समस्याएँ ॥=)
घर की आग १।)
रोवर स्काउटिंग (गाँवों के लिए) =)
रोवर स्काउटिंग (नगरों के लिए) =)
हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन की नियमावली ।=)
स्काउटिंग क्या है ?—डा० मोहनसिंह मेहता =)
ग्राम स्काउट दल (अंग्रेजी व हिन्दी) ।=)
भारतीय व्यायाम
बाल गीत
साधारण रोग और उनकी चिकित्सा

(D) MEN OR ANGELS ? (ENGLISH

A collection of life-sketches of great men and women of the world by eminent writers *e.g.*, Gandhiji by Mahadeva Desai.

The beautiful cover picture depicts a Scout looking towards the sky at the angelic figures of Gandhiji, Tagore, and Sarojni Devi.

These biographies provide inspiring reading.

Price Re. 1/- only.

हिन्द स्काउट कोआपरेटिव पब्लिशर्स लि०, यू० पी०,
इलाहाबाद ।

"देश के युवकों को योग्य नागरिक बनाने का जो काम आपकी संस्था कर रही है उसकी मैं हृदय से सफलता चाहता हूँ।" —पंडित नेहरू

हमारी नवीन पुस्तकें

सुनहरा प्रभात

प्रिंसिपल अमरनाथ गुप्त के एकांकी नाटकों का संग्रह 'सुनहरा प्रभात' हिंदुस्तानी और एँग्लो हिंदुस्तानी स्कूलों की कक्षा छः के लिए युक्त प्रान्तीय सरकार द्वारा हिन्दी की सहायक पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकृत हुआ है। मूल्य केवल पाँच आने। पृष्ठ संख्या ५६।

सुरुचि पूर्ण सत्साहित्य के प्रकाशन संबंधी अपने ध्येय के अनुरूप ही 'सुनहरा प्रभात' की रचना हुई है। इसके एकांकी पढ़ने में मनोरंजक तथा अभिनय में सफल और सुन्दर हैं। हास्य, व्यंग्य, चुटकी इनकी विशेषताएं हैं। भाषा सरल, प्रवाह-युक्त और मुहावरेदार है। बालक-बालिकाएं एक बार पढ़ने से ही इन्हें हृदयंगम कर लेंगे।

पुस्तक का एक-एक पृष्ठ राष्ट्रीय भावनाओं तथा विश्व-बंधुत्व के विचारों से ओत-प्रोत है। इसके विक्रय से प्राप्त धन संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्काउटिंग द्वारा बालक-बालिकाओं को योग्य नागरिक बनाने के कार्य में ही व्यय किया जायगा।

पचास से अधिक पुस्तकें मँगाने वाले सज्जनों को पुस्तकें पंद्रह प्रतिशत न्यून मूल्य में प्रेषित की जायंगी।

भारतीय व्यायाम (सचित्र)

लेखक—श्री एम० एल० चौबे, टेकनिकल असिस्टेंट काउंसिल आफ फिजिकल कल्चर, युक्त प्रान्त। अधिकारी लेखक ने अनेक वर्षों के अनुभवों के आधार पर इसकी रचना की है। मूल्य केवल १।)

बाल-गीत

प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों की सरल, सुमधुर और शिक्षाप्रद गाई जाने योग्य कविताओं का संग्रह। मूल्य केवल ॥=)

साधारण रोग और उनकी चिकित्सा

लेखक—राजवैद्य कविराज प्रताप सिंह वैद्यरत्न 'गवर्नमेन्ट आव इंडिया' पी० ए०, आर० ए०, बी०एम०, डारेक्टर आयुर्वेदिक विभाग, संयुक्त राजस्थान उदयपुर। मूल्य केवल १)

हिन्द स्काउट सहकारी प्रकाशन, १ कटरा रोड, इलाहाबाद

प्रकाशक—श्रीयुत श्रीनाथ शर्मा, बी० ए०, सहायक प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन, यू० पी०, इलाहाबाद।
मुद्रक—श्रीयुत मनमथकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद।